रचनानुवाद-कौमुदी

(नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत-व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की पुस्तक)

(संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण)

लेखक—

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य,

एम ए. (संस्कृत, हिन्दी), एम ओ एल, डी फिल् (प्रयाग), पी ई. एस.,

विद्याभास्कर, साहित्यरत्न, व्याकरणाचार्य,

संस्कृत-प्रोफेसर,

गवर्नमेण्ट कालेज, नैनीताल।

प्रणेता—'अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन'

(उ० प्र० सरकार द्वारा सम्मानित पुस्तक), प्रौढ-रचनानुवादकौमुदी आदि।

पोस्ट बाक्स नं. ६९, वाराणसी.



विश्वविद्यालय प्रकाशन

मूल्य—तीन रुपया पचीस नये पैसे

तृतीय संस्करण ५००० प्रति

सन् १९६० ई०

प्रकाशक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, नखास चौक, गोरखपुर

मुद्रक—ओम्प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस) ५५८५-१६

समर्पण

संस्कृत-भाषा के अनन्य भक्त, विद्वन्मूर्धन्य,

महामान्य

डॉ० कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी,

राज्यपाल, उत्तरप्रदेश

की सेवा में

सादर सविनय समर्पित ।

कपिलदेव द्विवेदी

विषय-सूची

विवरण

परिशिष्ट

आत्मनिवेदन

(१) पुस्तक-लेखन का उद्देश्य —पुस्तक को पढने के साथ ही पाठको के हृदय मे प्रश्न होगा कि अनेको अनुवाद और व्याकरण की पुस्तको के होते हुए इस पुस्तक की क्या आवश्यकता है। प्रश्न का सक्षेप मे उत्तर यही दिया जा सकता है कि यह पुस्तक उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए लिखी गई है, जिसकी पूर्ति अबतक प्रकाशित पुस्तको से नही हो सकी है। पुस्तक-लेखन का उद्देश्य है —

(१) सस्कृत भाषा को सरल, सुबोध और सर्वप्रिय बनाना। (२) सस्कृत-व्याकरण की कठिनाइयो को दूर कर सुगम मार्ग-प्रदर्शन करना। (३) 'सस्कृत भाषा अतिक्लिष्ट भाषा है' इस लोकापवाद का समूल खडन करना। (४) किस प्रकार से सस्कृत-भाषा से अपरिचित एक हिन्दी-भाषा जाननेवाला व्यक्ति ४ या ६ मास मे सुन्दर, स्पष्ट और शुद्ध सस्कृत लिख और बोल सकता है। (५) सस्कृत भाषा के व्याकरण और अनुवाद-सम्बन्धी सभी अत्यावश्यक बातो को एक स्थान पर सग्रह करना तथा अनावश्यक सभी बातो का परित्याग करना। (६) अनुवाद और वाक्य-रचना द्वारा सभी व्याकरण के नियमो का पूर्ण अभ्यास करना। व्याकरण को रटने की क्रिया को न्यूनतम करना। (७) सस्कृत के प्रत्ययो के द्वारा सैकडो शब्दो का स्वय निमाण करना सीखना, जिनका प्रयोग हिन्दी आदि भाषाओ मे प्रचलित है।

इस पुस्तक के लेखन मे लेखक का उद्देश्य यह भी है कि यह पुस्तक तीन भागो मे पूर्ण हो। यह द्वितीय भाग है, जो कि सस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए प्रारम्भिक सस्कृत-प्रेमियो को लक्ष्य मे रखकर लिखा गया है। इसमे अत्यावश्यक विषयो का ही सग्रह किया गया है। सरल ओर शुद्ध सस्कृत किस प्रकार सरलतापूर्वक निःसकोच लिखी और बोली जा सकती है, इसका ही इसमे ध्यान रखा गया है। अत्यावश्यक व्याकरण का ही इसमे सग्रह है जो कि प्रारम्भकर्ताओ के लिए जानना अनिवार्य है। तृतीय भाग मे उच्च व्याकरण तथा प्रौढ सस्कृत के लेखन के प्रकार का सग्रह रहेगा। अभीतक बी० ए०, एम० ए० तथा शास्त्री और आचार्य के छात्रो के लिए अनुवाद ओर निबन्ध की उत्तम पुस्तके नही है। तृतीय भाग के द्वारा इस आवश्यकता की पूर्ति करना लेखक का लक्ष्य है।

(**विशेष**—इस पुस्तक का प्रथम भाग 'प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी नाम से और तृतीय भाग 'प्रौढ-रचनानुवादकौमुदी' नाम से प्रकाशित हो चुका है।)

(२) **पुस्तक की शैली**।—पुस्तक कतिपय नवीनतम विशेषताओ के साथ प्रस्तुत की गई है। हिन्दी, सस्कृत, इग्लिश्, फारसी और अरबी मे

अभी तक इस पद्धति पर लिखी गई कोई पुस्तक नही है। जर्मन और फ्रेंच भाषाओ मे इस शैली पर कुछ पुस्तके जर्मन और फ्रेंच भाषाएँ सिखाने के लिए लिखी गई है, विशेषरूप से प्रो० ओटो जीपमान (Otto Siepmann) की जर्मन और फ्रेन्च भाषा की पुस्तके। मुझे विशेष प्रेरणा प्रो० जीपमान की मनोरम शैली से मिली है। मैने कतिपय और नवीनताओ का इसमे समावेश किया है, जैसे प्रत्येक अभ्यास मे नवीन शब्दो की सख्या समान ही हो। इस पुस्तक म प्रत्येक अभ्यास मे गिनकर २५ नए शब्द दिए गये है। हिन्दी और संस्कृत के अतिरिक्त इग्लिश और रूसी भाषा मे अनुवाद और निबन्ध के विषय मे जो नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति अपनाई गई है, उसका भी मेने यथासभव और यथाशक्ति पूर्ण उपयोग किया है।

(३) अभ्यास :—पुस्तक मे केवल ६० अभ्यास दिए है। प्रत्येक अभ्यास दो भागो मे विभक्त है। बाई ओर प्रारम्भ मे शब्दकोष है, जिसमे २५ नए शब्द है। तत्पश्चात् शब्दरूप, धातुरूप, कारक, समास, कृत् प्रत्यय आदि व्याकरण सबन्धी अश दिया गया है। नियमो के उदाहरण आदि भी साथ ही दिए गए है। दाई ओर प्रारम्भ मे सस्कृत मे उदाहरण-वाक्य है। तत्पश्चात् सस्कृत मे अनुवाद के लिए हिन्दी के वाक्य है। बाद मे अनुवाद मे होनेवाली विशेष त्रुटियो का निर्देश करके उनका शुद्धरूप दे दिया गया है। तत्पश्चात् अभ्यास के लिए कार्य दिया गया है, जैसे एकवचन को बहुवचन बनाना, वर्तमानकाल को अन्य कालो मे परिवर्तित करना आदि। वाक्य-रचना, रिक्त-स्थानो की पूर्ति आदि का उसके बाद अभ्यास कराया गया है। प्रत्येक अभ्यास मे दोनो ओर की पक्तियाँ गिनकर रक्खी गई है। प्रत्येक अभ्यास उसी पृष्ठ पर समाप्त होता है। किसी अभ्यास की १ भी पक्ति दूसरे पृष्ठ पर नही जाती है।

(४) शब्दकोष :—विद्यार्थियो की सुविधा के लिए शब्दकोष को ४ भागो मे बॉटा गया है। शब्दकोश के अन्तर्गत (क) सकेत का अर्थ है कि ये 'सज्ञा या सर्वनाम शब्द' है। सर्वनाम शब्दो के अन्त मे (सर्वनाम) यह सकेत भी किया गया है। (ख) चिह्न का अर्थ है कि ये 'धातु या क्रिया शब्द' है। (ग) का अर्थ है कि ये 'अव्यय' हैं, इनका रूप नही चलता है। (घ) का अर्थ है कि ये 'विशेषण' शब्द है, इनका रूप विशेष्य के तुल्य चलेगा। इन शब्दो के तीनो लिगो मे रूप चलेगे। सुविधा के लिए प्रत्येक विभाग के अन्त मे शब्दो की सख्या गिनकर रख दी गई है, अर्थात् इस अभ्यास मे इतने सज्ञा शब्दो का प्रयोग सिखाया गया है, इतनी धातुओ का, इतने अव्ययों या विशेषणो का।

शब्दकोष के विषय मे यह भी ध्यान रक्खे कि प्रयत्न किया गया है कि जिस शब्द या धातु का प्रयोग उस अभ्यास मे सिखाया गया है, उस प्रकार के अन्य शब्द या धातु भी उसी पाठ मे रक्खे जाएँ और उनका भी अभ्यास कराया जाय। शब्दकोष के ऊपर स्पष्टरूप से निर्देश किया गया है कि विद्यार्थी अबतक कितने शब्द सीख चुका है तथा उसका शब्दकोष कितना हो गया है। शब्दकोष के अन्त मे सूचना दी गई है कि इस शब्द से लेकर इस शब्द तक के रूप इस प्रकार चलेगे या इतनी धातुओ के रूप इस प्रकार चलेगे। सक्षेप के लिए सर्वत्र यह नही लिखा गया है कि इस शब्द से इस शब्द तक के रूप ऐसे चलेगे, अपितु—(डैश) चिह्न का प्रयोग किया गया है। 'तुल्य रूप चलेगे' के लिए 'वत्' का प्रयोग किया है। जैसे—(क) राम–विद्यालय, रामवत्। इसका अर्थ हुआ कि (क) भाग मे दिए हुए राम शब्द से विद्यालय शब्द तक के सारे शब्दो के रूप राम शब्द के तुल्य चलेगे। इसी प्रकार (ख) भाग के लिए सकेत है।

कई स्थानो पर शब्दकोष मे (क) (ख) (ग) (घ) मे से (क) (ख) (ग) या (घ) नही मिलेगा। इसका अभिप्राय यह है कि उस विभाग या उस श्रेणी का शब्द उस शब्दकोष मे नही है। जैसे—अभ्यास ४ का शब्दकोष (ख) से प्रारम्भ होता है, इसका अर्थ है कि यहाँ पर (क) अर्थात् कोई सज्ञा शब्द नही है। (ख) न होने का अर्थ है, क्रिया शब्द नही है। (ग) नही का अर्थ है कि 'अव्यय' नही है। (घ) नही का अर्थ है कि कोई विशेषण शब्द इस शब्दकोष मे नही है। यह भी स्मरण रक्खे कि (क) भाग मे दो-तीन अभ्यासो मे कुछ विशेषण शब्द है, जिनका प्रयोग सज्ञा शब्द और विशेषण शब्द दोनो के तुल्य होता है। उनका उल्लेख (क) भाग मे इसलिए किया गया है कि उनके रूप उस भाग के मुख्य शब्द के तुल्य चलते है।

प्रत्येक अभ्यास मे २५ नए शब्द है, अत. ६० अभ्यासो मे १५०० शब्दो का शब्द-कोष हो जाता है। प्राय: इतने ही शब्द कृत् प्रत्ययो आदि के द्वारा विद्यार्थी स्वय भी बना लेता है, अत प्राय. ३००० शब्दो का ज्ञान छात्र को हो जाता है। शब्दकोष के शब्दो का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है :—

(क) अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम शब्द	**८२८**
(ख) अर्थात् धातु या क्रिया शब्द	**३५४**
(ग) अव्यय शब्द	**१४५**
(घ) विशेषण शब्द	**१७३**
पठित एव अभ्यस्त शब्दो का योग	**१५०० (शब्दकोष)**

५. पुस्तक की विशेषताएँ

सक्षेप मे पुस्तक की विशेषताएँ निम्नलिखित है :—

(१) इग्लिश, जर्मन, फ्रेंच और रूसी भाषाओ मे अपनाई गई नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति इस पुस्तक मे अपनाई गई है ।

(२) सस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए अनिवार्य सम्पूर्ण व्याकरण अनुवाद और अभ्यासो के द्वारा अति सरल और सुबोध रूप मे समझाया गया है ।

(३) ६० अभ्यासो मे सम्पूर्ण आवश्यक व्याकरण समाप्त किया गया है। प्रत्येक अभ्यास मे व्याकरण के कुछ विशेष नियमो का अभ्यास कराया गया है। नियमो को पूर्णरूप से स्पष्ट करने के लिए उदाहरण-वाक्य दिए गए है। प्रत्येक अभ्यास मे छात्रो से जो त्रुटियाँ सम्भव है, उनका निर्देश करके शुद्ध वाक्य बताया गया है। साथ ही नियम भी बताया गया है ।

(४) अभ्यास-प्रश्नो द्वारा सैकडो नए वाक्य स्वय बनाने का अभ्यास कराया गया है। रिक्त-स्थलो की पूर्ति का अभ्यास, नए शब्दो से वाक्य-रचना का अभ्यास, अशुद्ध वाक्यो को शुद्ध करने का अभ्यास, सन्धि, समास तथा कृत् प्रत्ययो से रूप बनाने आदि का विशेष अभ्यास कराया गया है ।

(५) प्रत्येक अभ्यास की विशेषता यह है कि एक अभ्यास के लिए केवल दो पृष्ठ दिए गए है। प्रत्येक अभ्यास की पक्तियाँ गिनकर रक्खी गई है। एक भी पक्ति एक अभ्यास की दूसरे पृष्ठ पर नही जाती है। प्रत्येक अभ्यास दो भागो मे विभक्त है। बाई ओर :—(१) शब्दकोष, (२) व्याकरण के नियम, (३) शब्दरूप, (४) धातुरूप, (५) सन्धि या समास आदि, (६) कृत् प्रत्ययो से शब्द बनाने के नियम आदि है। दाई ओर :—(१) उदाहरण-वाक्य, (२) अनुवादार्थ हिन्दी वाक्य, (३) अशुद्ध-वाक्यो के शुद्ध-वाक्य, (४) अभ्यास (वचन-परिवर्तन, काल परिवर्तन आदि), (५) वाक्य-रचना, (६) रिक्त-स्थलो की पूर्ति का अभ्यास आदि ।

(६) प्रत्येक अभ्यास मे गिनकर २५ नए शब्द दिए गए है। उनका विशेषरूप से प्रयोग सिखाया गया है ।

(७) अभ्यासो के पश्चात् (१) सभी आवश्यक शब्दो तथा धातुओ के रूप दिए गए है। (२) १ से १०० तक की पूरी गिनती तथा महाशख तक की सख्याएँ है। (३) सक्षिप्त धातुकोष है, इसमे पुस्तक मे प्रयुक्त सभी धातुओ के ५ लकारो के रूप हैं। (४) कृत् प्रत्ययो से बने हुए रूपो का सग्रह। (५) आवश्यक सधि नियमो का सग्रह।

(८) संस्कृत मे पत्र लिखना, प्रस्ताव, अनुमोदन आदि करना, व्याख्यान का प्रारम्भ करना, इसका प्रकार उदाहरणो द्वारा बताया गया है।

(९) पुस्तक के अन्त मे संस्कृत मे निबन्ध लिखने के लिए आवश्यक-निर्देश तथा उदाहरणरूप मे २० निबन्ध अत्युपयोगी विषयो पर लिखे गए है। अन्त मे २८ विषयो पर अनुवादार्थ हिन्दी-सन्दर्भ भी दिए गए है।

(१०) पुस्तक बी० ए० और मध्यमा कक्षा तक के छात्रो के लिए संस्कृत-अनुवाद, व्याकरण और निबन्ध के लिए सर्वथा पर्याप्त है।

६ अध्यापको से

(१) प्रत्येक अभ्यास मे दिए शब्दकोष और व्याकरण के अश को छात्रो को अच्छे प्रकार से स्पष्ट कर दे और छात्रो को निर्देश दे कि वे उसको ठीक स्मरण कर ले। दूसरे दिन उदाहरण-वाक्यो का हिन्दी मे अर्थ करावे और नियमो के प्रयोग को स्पष्ट कर दे। तत्पश्चात् कक्षा मे ही प्रत्येक छात्र से मौखिक संस्कृत मे अनुवाद करावे। एक छात्र की त्रुटि को दूसरे छात्र से शुद्ध करावे। छात्रो को अपनी त्रुटि स्वय शुद्ध करने का अधिक अवकाश दे।

(२) संस्कृत मे मौखिक अनुवाद या संस्कृत-भाषण के प्रति छात्रो के सकोच को सर्वथा दूर करे। छात्र निर्भीक होकर अनुवाद करे और संस्कृत बोले।

(३) छात्रो के उच्चारण की शुद्धता पर विशेष ध्यान दे और उच्चारण की त्रुटि को प्रारम्भ से ही दूर करे।

(४) प्रत्येक अभ्यास को एक या दो बार मे समाप्त करे। प्रत्येक पाठ के अन्त मे दिए गए अभ्यास को मौखिक और लिखित दोनो प्रकार से करावे। छात्रो की लेख-सम्बन्धी त्रुटि को भी दूर करे।

(५) प्रत्येक अभ्यास मे दिए गए नए शब्दो और धातुओ के द्वारा स्वय भी वाक्य बनाकर उनका संस्कृत मे अनुवाद करावे। छात्रो को संस्कृत-सभाषण के लिए विशेषरूप से प्रेरित करे। कक्षा मे भी अधिक वार्तालाप संस्कृत मे करे।

(६) पूर्व-पठित शब्दो, धातुओ और व्याकरण के नियमो को छात्र न भूले, अतः उनका भी अभ्यास बार-बार कराते रहे। निबन्ध-लेखन का भी अभ्यास करावे।

(७) छात्रो के हृदय मे संस्कृत भाषा के प्रति विशेष अनुराग उत्पन्न करे। उनके हृदय से यह भाव निकाल दे कि संस्कृत भाषा कठिन भाषा है। छात्रो से अनुवाद आदि का अभ्यास कराकर सिद्ध करे कि संस्कृत भाषा अन्य भाषाओ की अपेक्षा अधिक सरलता से सीखी जा सकती है और सरलता से लिखी या बोली जा सकती है।

७. विद्यार्थियो से

(१) सस्कृत भाषा को अति सरल, सुबोध और सुगम बनाने के लिए यह पुस्तक प्रस्तुत की गई है। अतः अदम्य उत्साह के साथ पुस्तक के पठन मे प्रवृत्त हो। प्रत्येक भाषा मे शुद्ध बोलना या लिखना निरन्तर अभ्यास के बाद ही आता है। मातृभाषा हिन्दी मे शुद्ध बोलना या लिखना वर्षो के निरन्तर अभ्यास के बाद ही आता है। यह स्मरण रक्खे कि बिना अभ्यास के कोई विद्या नही आती है। अत. सकोच छोडकर सस्कृत मे बोलने और लिखने का अभ्यास करे।

(२) पुस्तक मे ६० अभ्यास है। सस्कृत-भाषा से अपरिचित भी कोई हिन्दी जाननेवाला व्यक्ति १ अभ्यास को १ या २ घटा प्रतिदिन समय देने पर सरलता से २ दिन मे पूरा कर सकता है। इस प्रकार ४ मास मे यह पुस्तक सरलता से समाप्त हो सकती है। बहुत अल्प आयुवाले छात्र ४ दिन मे एक अभ्यास समाप्त कर सकते है, इस प्रकार वे भी ८ मास मे पुस्तक पूरी पढ सकते है।

(३) सस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए जितने शब्दो, धातुओ और नियमो के जानने की अत्यन्त आवश्यकता होती है, वे सभी बाते इस पुस्तक मे है। इस पुस्तक का ठीक अभ्यास हो जाने पर छात्र नि सकोच शुद्ध सस्कृत लिख और बोल सकता है। बी० ए० कक्षा तक के लिए इतने व्याकरण का ज्ञान पर्याप्त है।

(४) **शब्दकोष** :—शब्दकोष मे एक प्रकार से रूप चलनेवाले शब्द या धातु प्राय. एक ही स्थान पर दिए गए है। अति प्रसिद्ध शब्द या धातु ही प्रायः दिए गए है, कठिन शब्दो को छोड दिया गया है। किस शब्द या धातु के रूप किस प्रकार चलेगे, यह भी अन्त मे सूचना द्वारा स्पष्ट कर दिया है। (क) (ख) (ग) (घ) सकेतो का अर्थ सज्ञा, क्रिया आदि स्मरण रक्खे। आगे के अभ्यासो मे पूर्व पठित शब्दावली का नि सकोच प्रयोग किया गया है, अतः प्रत्येक पाठ की शब्दावली को ठीक स्मरण करे।

(५) **व्याकरण** :—(क) व्याकरण मे कुछ विशेष शब्दो या धातुओ का प्रयोग सिखाया गया है। उस अभ्यास मे उस शब्द और धातु को ठीक स्मरण कर ले। उसी प्रकार मे रूप चलनेवाले शब्द या धातु भी उसी पाठ मे दिए गए है। उनके रूप भी उसी प्रकार चलावे। शब्दो और धातुओ के 'सक्षिप्तरूप' भी दिए गए हैं, उस प्रकार से चलनेवाले सभी शब्दों या धातुओ के अन्त मे वह अश रहेगा।

(ख) नियमो के साथ पाणिनि के प्रामाणिक सूत्र भी कोष्ठ मे दिए है। उन्हे न स्मरण करना चाहे तो छोड सकते है। हिन्दी मे दिए पूरे नियम की अपेक्षा सस्कृत का छोटा सूत्र स्मरण करना सरल है। केवल २०० नियम पूरी पुस्तक मे है।

(ग) व्याकरण के नियमो के उदाहरण भी साथ ही दिये गये है। कुछ नियमो के उदाहरण उदाहरण-वाक्यो मे मिलेगे। उन्हे ध्यानपूर्वक समझ ले।

(घ) सक्षेप के लिए कतिपय सकेतो का उपयोग किया गया है। उनका यथा-स्थान निर्देश किया गया है। जैसे—प्रथमा, द्वितीया आदि के लिए प्र०, द्वि० आदि। चिन्ह > का प्रयोग 'का रूप बनता है' इस अर्थ मे किया गया है, स्मरण रक्खे। जैसे—भू > भवति, अर्थात् भू धातु का भवति रूप बनता है। इस पुस्तक मे ह्रस्व ऋ और दीर्घ ॠ इस प्रकार से छपे है, स्मरण रक्खे। ह्रस्व ऋ, दीर्घ ॠ।

(६) **उदाहरण-वाक्य :**—व्याकरण के जो नियम उस अभ्यास मे दिये गए है तथा जो नये शब्द दिए गए है, उनका प्रयोग उदाहरण वाक्यो मे किया गया है। उदाहरण वाक्यो को बहुत ध्यानपूर्वक समझ ले। प्रत्येक वाक्य मे किसी विशेष नियम या शब्द का प्रयोग सिखाया गया है। उदाहरण-वाक्यो को ठीक समझ लेने से अनुवाद मे कोई कठिनाई नही होगी।

(७) **अनुवाद :**—जो व्याकरण के नियम या नए शब्द उस अभ्यास मे दिए गए है, उनका विशेषरूप से अभ्यास कराया गया है। अनुवाद बनाने मे जहाँ भी कठिनाई हो, वहाँ उदाहरण वाक्यो को देखे। उनसे आपकी कठिनाई दूर होगी। अशुद्ध वाक्यो के शुद्ध वाक्य जो दिए गए है, उनसे भी सहायता लीजिए।

(८) **शुद्धवाक्य :**—अशुद्ध-वाक्यो के जो शुद्ध-वाक्य या शुद्ध रूप दिये गए है, उनको ध्यानपूर्वक स्मरण कर ले। प्रयत्न करे कि वह त्रुटि आगे न हो। जो त्रुटियाँ एक बार बता दी है, उनका बार-बार निर्देश नहीं किया गया है। शुद्ध-वाक्य के आगे नियम की सख्या दी है, उस नियम को व्याकरणवाले अश मे देखे।

(९) **अभ्यास:**—अभ्यासो मे काल-परिवर्तन, वचन-परिवर्तन आदिका अभ्यास कराया गया है। अभ्यास मे जितने प्रश्न दिए गए है, उनको पूरा करने का पूर्ण यत्न करे। तभी अनुवाद और व्याकरण का अभ्यास परिपक्व होगा। वाक्य-रचना आदि के कार्य को भी न छोडे। कही कठिनाई प्रतीत हो तो अध्यापक की सहायता ले।

(१०) अभ्यासो के अन्त मे १२२ पृष्ठ से सभी आवश्यक शब्दो और धातुओ के रूप दिए गए है। उनको शुद्ध रूप मे स्मरण करे और उनका प्रयोग करे।

(११) पुस्तक मे जितनी धातुओ का प्रयोग हुआ है, उन सबके पाँचो लकारो के रूप सक्षिप्त धातुकोष मे है। उन्हे वहाँ देखे।

(१२) पत्र लिखने का प्रकार भी दिया गया है। अन्त मे निबन्ध लिखने का प्रकार तथा उदाहरण-रूप मे २० निबन्ध है, तदनुसार अन्य निबन्ध स्वय लिखे।

८ कृतज्ञता-प्रकाशन

इस पुस्तक के लेखन मे मुझे जिन महानुभावो से विशेष आवश्यक परामर्श, प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला है, उनमे विशेष उल्लेखनीय निम्नलिखित है। परामर्शो, सुझावो आदि के लिए इन सभी का कृतज्ञ हूँ।

सर्वश्री माननीय डा० कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी (राज्यपाल उ० प्र०), डा० सम्पूर्णानन्द (मुख्य मन्त्री, उ० प्र०), डा० सुनीतिकुमार चटर्जी (कलकत्ता), डा० मगलदेव शास्त्री (बनारस), डा० बाबूराम सक्सेना (प्रयाग), डा० वासुदेवशरण अग्रवाल (बनारस), आचार्य हरिदत्त शास्त्री (कानपुर), श्री रूपनारायण शास्त्री (हि० सा० सम्मेलन, प्रयाग), श्री पुरुषोत्तमदास मोदी एम० ए०।

अन्त मे विद्वज्जन से निवेदन है कि वे पुस्तक के विषय मे जो भी सशोधन, परिवर्तन, परिवर्धन का विचार भेजेगे, वह बहुत कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जाएगा।

सेंट एन्ड्यूज कालेज, गोरखपुर
दीपावली, २००९ वि०
कपिलदेव द्विवेदी

द्वितीय संस्करण की भूमिका

सस्कृत-प्रेमी अध्यापको, विद्यार्थियो और जनता ने इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत किया है, तदर्थ मै उन सबका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। जिन विद्वानो ने आवश्यक सशोधनादि के विचार भेजे है, उनको विशेष धन्यवाद देता हूँ। उनके सशोधनादि के विचारो का यथासभव पूर्ण पालन किया गया है। पुस्तक को और उपयोगी बनाने के लिए उच्च कक्षाओ मे निर्धारित व्याकरण के अश सन्धि-नियम, शब्दरूप, धातुओ के पूरे १० लकारो के रूप आदि इस सस्करण मे बढाए गए है। अनुवादार्थ गद्य सग्रह भी अन्त मे बढाया गया है। आशा है प्रस्तुत सस्करण विद्यार्थियो के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

गवर्नमेंट कालेज, नैनीताल
ता० २०-१२-५५ ई०
कपिलदेव द्विवेदी

तृतीय संस्करण की भूमिका

सस्कृत-प्रेमी अध्यापको, छात्रो और जनता ने इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत किया है, तदर्थ उन सबका विशेष कृतज्ञ हूँ। इस सस्करण मे धातुरूप सग्रह के ५० पृष्ठ नए ढग से लिखे गए है। सभी धातुओ के १० लकारो के रूप एकत्र दिए गए है। पुस्तक मे यथास्थान अन्य आवश्यक परिवर्तन भी किए गए है। आशा है प्रस्तुत सस्करण जनता को विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

गवर्नमेंट कालेज, नैनीताल
ता० २०-९-५९ ई०
कपिलदेव द्विवेदी

१. 'संस्कृत'—शब्द का अर्थ है—शुद्ध, परिमार्जित, परिष्कृत। अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है—शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।

२. संस्कृत में ३ वचन होते हैं—एकवचन (एक०), द्विवचन (द्वि०), बहुवचन (बहु०)। तीन पुरुष होते हैं—प्रथम या अन्य पुरुष (प्र० पु०), मध्यमपुरुष (म० पु०), उत्तमपुरुष (उ० पु०)। संबोधन को लेकर आठ कारक (विभक्तियाँ) होते हैं। (विवरण के लिए देखें पृष्ठ ४)।

३ संस्कृत में क्रिया के १० लकार (वृत्तियाँ) होते हैं। ये दसों लकार इस पुस्तक में दिए गए हैं। इनके नाम तथा अर्थ ये हैं:—(१) लट् (वर्तमानकाल), (२) लोट् (आज्ञा अर्थ), (३) लृट् (भविष्यत् काल), (४) लङ् (अनद्यतनभूत), (५) विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ), (६) लिट् (परोक्षभूत), (७) लुट् (अनद्यतन भविष्यत्), (८) आशीर्लिङ् (आशीर्वाद), (९) लुङ् (सामान्यभूत), (१०) लृङ् (हेतुहेतुमद् भविष्यत्)।

४ धातुओं के तीन प्रकार से रूप चलते हैं, अतः धातुएँ ३ प्रकार की हैं—परस्मैपदी (प० , ति, तः, अन्ति)। आत्मनेपदी (आ० , ते एते अन्ते)। उभयपदी (उ० , दोनों प्रकार के रूप)।

५ संस्कृत में १० गण (धातुओं के विभाग) होते हैं। प्रत्येक धातु किसी एक गण में आती है। इनके लिए कोष्ठगत संकेत हैं। भ्वादिगण (१), अदादि० (२), जुहोत्यादि० (३), दिवादि० (४), स्वादि० (५), तुदादि० (६), रुधादि० (७), तनादि० (८), क्र्यादि० (९), चुरादि० (१०)।

६. इंग्लिश् के Tenses (लकारों) का अनुवाद कोष्ठ में दी विधि से कीजिए। १. Present Ind. (लट्), २. Pres. Cont (लट् या धातु से शतृ प्रत्यय + अस्, लट्), ३. Pres Perfect (लङ् या धातु से क्त प्रत्यय + अस्, लट्), ४. Pres. Per. Cont (२ के तुल्य)। ५ Past Ind (लङ्), ६. Past Cont (लङ् या धातु से शतृ प्रत्यय + अस्, लङ्), ७ Past Perfect (लङ् या धातु से क्त प्रत्यय + अस्, लङ्), ८ Past Per Cont. (६ के तुल्य)। ९ Future Ind (लृट्), १० Future Con (लृट् या धातु से स्य, शतृ + अस्, लृट्), ११ Future Perfect (धातु से क्त प्रत्यय + अस्, लृट्), १२ Future Per. Cont. (१० के तुल्य)।

७. प्रत्येक अभ्यास को प्रारम्भ करने से पूर्व बाईं ओर के शब्दकोष और व्याकरण को ठीक स्मरण कर लें। उनका ही अभ्यास कराया गया है। * चिन्ह वाले नियम अत्यावश्यक हैं। शब्दकोष में (क) में सर्वनाम शब्दों का संकेत कर दिया गया है, शेष संज्ञाशब्द हैं।

८. शब्दों और धातुओं के पूरे रूप, संक्षिप्त धातुकोष, सन्धि-नियम, प्रत्ययों का विवरण, निबन्ध आदि परिशिष्ट में दिए गए हैं, वहाँ देखें।

शब्दकोष—२५] **अभ्यास १** (व्याकरण)

(क) स (वह), तौ (वे दोनों), ते (वे सब), भवान् (आप, पुरुष), भवती (आप, स्त्री) (सर्वनाम शब्द)। राम. (राम), ईश्वर (ईश्वर या स्वामी), बालक. (बालक), मनुष्य (मनुष्य), नर (मनुष्य), ग्राम (गाँव), नृप (राजा), विद्यालय. (विद्यालय)। (१३)। (ख) भू (होना), पठ् (पढ़ना), लिख् (लिखना), हस् (हँसना), गम् (जाना), आगम् (आना)। (६)। (ग) अत्र (यहाँ), इह (यहाँ), यत्र (जहाँ), तत्र (वहाँ), कुत्र (कहाँ), क्व (कहाँ)। (६)

सूचना—१. शब्दकोष के लिए ये संकेत स्मरण कर लें :—

(क) = संज्ञा या सर्वनाम शब्द। (ख) = धातु या क्रिया शब्द।
(ग) = अव्यय या क्रिया विशेषण। (घ) = विशेषण शब्द।

२. (क) चिह्न—(अर्थात् लकीर) 'तक' अर्थ का बोधक है। जैसे, १—१० अर्थात् १ से १० तक। राम—विद्यालय, राम से विद्यालय तक के शब्द। (ख) 'वत्' अर्थात् तुल्य, सदृश। जैसे—'रामवत्' अर्थात् राम के तुल्य रूप चलेंगे। 'भवतिवत्' भवति के तुल्य रूप चलेंगे।

३. (क) राम—विद्यालय, रामवत् अर्थात् राम शब्द से विद्यालय शब्द तक के रूप राम शब्द के तुल्य चलेंगे। (ख) भू—आगम्, भवतिवत्।

व्याकरण (लट्, परस्मैपद, कर्तृवाच्य)

				संक्षिप्तरूप			
१ रामः	रामौ	रामाः	प्रथमा (कर्ता)	(अकारान्त पुं.)	अः	औ	आः प्र०
रामम्	रामौ	रामान्	द्वितीया (कर्म)		अम्	औ	आन् द्वि०

संक्षिप्तरूप शब्द के अन्त में रहेगा। जैसे, बालकः बालकौ बालकाः बालकम् आदि।

२. 'भू' धातु 'लट्' लकार (वर्तमानकाल)				संक्षिप्तरूप		
भवति	भवतः	भवन्ति	प्रथमपुरुष	अति	अतः	अन्ति प्र० पु०

संक्षिप्त रूप अन्त में लगाकर अन्य धातुओं के रूप बनाइए, जैसे पठति, लिखति, हसति, गच्छति, आगच्छति आदि। लट् आदि में गम् को गच्छ् हो जाता है। लट् = वर्तमानकाल।

※ नियम १—कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे, स पठति, कर्ता प्रथमपुरुष एकवचन है तो क्रिया भी प्रथमपुरुष एकवचन होगी।

नियम २—'भवत्' (आप) शब्द के साथ सदा प्रथमपुरुष आता है।

नियम ३—तीनों लिंगों में धातु का रूप वही रहता है।

※ नियम ४—कर्ता में प्रथमा आती है और कर्म में द्वितीया आती है।

※ नियम ५—(अपदं न प्रयुञ्जीत) बिना प्रत्यय लगाये शब्द या धातु का प्रयोग न करें।

नियम ६—एक अर्थवाले (पर्यायवाची) शब्दों में से एक शब्द का ही प्रयोग करें।

अभ्यास १

१ उदाहरण-वाक्य :—१. वह पढता है—सः पठति । २. वे दो पढ रहे है—तौ पठतः । ३. वे सब पढते है—ते पठन्ति । ४. आप यहाँ आते है—भवान् अत्र आगच्छति । ५. आप दो हँसते है—भवन्तौ हसत. । ६. आप सब जाते है—भवन्तः गच्छन्ति । ७ आप लिखती है—भवती लिखति । ८. बालक होता है (या है)—बालक. भवति ।

२ संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह लिखता है । २ वह गाँव को जाता है । ३ वह आता है । ४ बालक पढता है । ५. राम लिखता है । ६. मनुष्य हँसता है । ७. राजा यहाँ आता है । ८ राम विद्यालय को जाता है । ९ आप वहाँ जाते है । १०. वह मनुष्य कहाँ जाता है ?

(ख) ११. वे दो हँसते है । १२. वे दो कहाँ जाते है ? १३ दो आदमी यहाँ आ रहे है । १४. दो राजा वहाँ जा रहे है । १५ वे दोनो जहाँ जाते है, वहाँ हँसते है । १६ आप दोनो आते है ।

(ग) १७ वे सब यहाँ आते है । १८ सब बालक विद्यालय को जा रहे है । १९. वे मनुष्य कहाँ जा रहे है ? २० आप सब पढ रहे है ।

३ अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम सख्या (देखिए)
(१) राम विद्यालय गच्छति ।	रामः विद्यालय गच्छति ।	४
(२) भवान् तत्र गच्छन्ति ।	भवान् तत्र गच्छति ।	१
(३) मनुष्यौ आगच्छन्ति ।	मनुष्यौ आगच्छत. ।	१
(४) यत्र गच्छत तत्र हसन्ति ।	यत्र गच्छत. तत्र हसतः ।	१
(५) बालकाः विद्यालय गच्छति ।	बालकाः विद्यालय गच्छन्ति ।	५, १

४ शुद्ध करो तथा नियम बताओ —स. पठन्ति । तौ लिखति । ते आगच्छति । भवान् पठन्ति । भवती हसतः । ईश्वर· भवन्ति । नरा. पठति । नरौ आगच्छन्ति । विद्यालयः गच्छति । नृप गच्छति । नृप गच्छन्ति । बालक हसत. । नरा. हसति ।

५ अभ्यास (संस्कृत मे)—(क) २ (क) के वाक्यो को द्विवचन और बहुवचन मे बनाओ । (ख) २ (ख) के वाक्यो को एकवचन और बहुवचन मे बनाओ । (ग) पठ्, लिख्, गम्, आगम् के प्रथमपुरुष के रूप बताओ । (घ) बालक, नर, नृप, विद्यालय के प्रथमा (कर्ता) और द्वितीया (कर्म) विभक्ति के रूप बताओ ।

शब्दकोष—२५ + २५ = ५०] **अभ्यास २** (व्याकरण)

(क) त्वम् (तू), युवाम् (तुम दोनों), यूयम् (तुम सब) (सर्वनाम)। फलम् (फल), पुस्तकम् (पुस्तक), पुष्पम् (फूल), पत्रम् (चिट्ठी, पत्ता), भोजनम् (भोजन), जलम् (जल), राज्यम् (राज्य), सत्यम् (सत्य), गृहम् (घर), वनम् (वन) (१३)। (ख) रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), पत् (गिरना), नम् (नमस्कार करना)। (५)। (ग) अद्य (आज), सम्प्रति, इदानीम्, अधुना (तीनों का अर्थ है 'अब'), यदा (जब), तदा (तब), कदा (कब)। (७)

सूचना—(क) फल—वन, फलवत्। (ख) रक्ष्—नम्, भवतिवत्।

व्याकरण (लट्, मध्यमपुरुष, कारक-परिचय)

१	फलम्	फले	फलानि	प्रथमा (कर्ता)	संक्षिप्तरूप	अम्	ए	आनि	प्र०
	फलम्	,,	,,	द्वितीया (कर्म)	(अकारान्त नपु०) ,,		,,	,,	द्वि०

पुस्तक आदि के रूप ऐसे ही चलेंगे। यथा—पुस्तकम् पुस्तके पुस्तकानि। परन्तु पुष्प और पत्र मे आनि के स्थान पर 'आणि' लगेगा—पुष्पाणि, पत्राणि।

२	'भू' (लट्, मध्यमपुरुष)			संक्षिप्तरूप—असि अथः अथ म० पु०
	भवसि	भवथः	भवथ	म० पु० एक० मे असि, द्वि० मे अथः, बहु० मे अथ लगेगा।

रक्ष् आदि के रूप इसी प्रकार चलेंगे। जैसे—रक्षसि, वदसि, पचसि, पतसि, नमसि आदि।

३. संस्कृत मे तीन वचन होते है—एकवचन, द्विवचन, बहुवचन। एक के लिए एकवचन (एक०), दो के लिए द्विवचन (द्वि०), तीन या अधिक के लिए बहुवचन (बहु०)।

४ तीन पुरुष होते है —(१) प्रथम (या अन्य) पुरुष (प्र० पु०) अर्थात् वह, वे दोनों, वे सब, किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम। (२) मध्यम पुरुष (म० पु०) अर्थात् तू, तुम दोनों, तुम सब। (३) उत्तम पुरुष (उ० पु०) अर्थात् मैं, हम दोनों, हम सब। ये नाम स्मरण कर ले।

५ संस्कृत मे संबोधनसहित ८ विभक्तियाँ (कारक) होती है। उनके नाम और चिह्न ये है —

विभक्ति	कारक	चिन्ह	विभक्ति	कारक	चिन्ह
(१) प्रथमा (प्र०)	कर्ता	–, ने	(५) पचमी (पं०)	अपादान	से
(२) द्वितीया (द्वि०)	कर्म	को	(६) षष्ठी (ष०)	सबन्ध	का,के,की
(३) तृतीया (तृ०)	करण	ने,से,द्वारा	(७) सप्तमी (स०)	अधिकरण	में, पर
(४) चतुर्थी (च०)	सम्प्रदान	के लिए	(८) संबोधन (सं०)	सबोधन	हे,अये,भो.

नियम ७—(अच्हीनं परेण संयोज्यम्) हल् व्यंजन आगे के स्वर से मिल जाता है। (यह नियम ऐच्छिक है)। जैसे—त्वम् + अद्य = त्वमद्य। यूयम् + इदानीम् = यूयमिदानीम्।

अभ्यास २

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ तू बोलता है—त्व वदसि। २ तुम दोनो बोलते हो—युना वदथ । ३. तुम लोग बोलते हो—यूय वदथ। ४. त्वम् ईश्वर नमसि। ५. युवा भोजन पचथः। ६ यूय पुस्तकानि पठथ। ७ त्वमत्र पुस्तक पठसि। ८ यदा यूय गच्छथ, तदा स पत्र लिखति। ९. त्व राज्य रक्षसि। १० यूय पुष्पाणि रक्षथ। ११. त्व गृह गच्छसि।

२ **सस्कृत बनाओ** —(क) १. तू पढता है। २. तू पत्र लिखता है। ३. तू भोजन पकाता है। ४ तू राज्य की रक्षा करता है। ५. तू फल की रक्षा करता है। ६ तू सत्य बोलता है। ७ तू घर को जाता है। ८. तू असत्य बोलता है। ९ तू राजा को प्रणाम करता है।

(ख) १०. तुम दोनो यहाँ आते हो। ११. तुम दोनो कब भोजन बनाते हो? १२ तुम दोनो अब गाँव को जाते हो। १३. आप दोनो अब बोलते है। १४ दो पत्ते गिरते है।

(ग) १५. तुम लोग राज्य की रक्षा करते हो। १६ तुम लोग ईश्वर को प्रणाम करते हो। १७ तुम लोग पुस्तक पढते हो। १८. तुम् लोग अब हँसते हो। १९. तुम लोग पुस्तके पढते हो। २० तुम लोग पत्र लिखते हो।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	त्व राज्यस्य रक्षसि।	त्व राज्य रक्षसि।	४
(२)	युवाम् आगच्छथ।	युवामागच्छथः।	१, ७
(३)	भवन्तौ वदथः।	भवन्तौ वदत'।	२
(४)	पत्रानि पतथ।	पत्राणि पतन्ति।	शब्दरूप, १

४. **शुद्ध करो तथा नियम बताओ** —त्व पठति। युवा गच्छतः। यूय लिखन्ति। यूय वदसि। युवा पतथ। त्व भोजन पचति। भवान् सत्यः वदति। भवान् रक्षसि। यूय राज्य. रक्षथः। त्व राज्यस्य रक्षसि।

५. **अभ्यास (संस्कृत मे)** —(क) २ (क) के वाक्यो को द्विवचन और बहुवचन मे बनाओ। (ख) २ (ख) के वाक्यो को एकवचन और द्विवचन मे बनाओ। (ग) रक्ष्, वद्, पच्, पत्, गम्, लिख्, के म० पु० के रूप बताओ। (घ) पुस्तक, पुष्प, पत्र, जल, राज्य के प्रथमा और द्वितीया मे रूप बताओ।

६. **वाक्य बनाओ** '—सत्यम्, राज्यम्, इदानीम, कदा, तदा, यदा।

शब्दकोष—५० + २५ = ७५] **अभ्यास ३** (व्याकरण)

(क) अहम् (मैं), आवाम् (हम दोनों), वयम् (हम सब) (सर्वनाम)। रमा (लक्ष्मी), बाला (लड़की), कन्या (लड़की), लता (लता), कथा (कथा, कहानी), क्रीडा (खेल), पाठशाला (पाठशाला), विद्या (विद्या)। (११)। (ख) दृश् (देखना), स्था (रुकना), सद् (बैठना), पा (पीना), घ्रा (सूंघना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना)। (७)। (ग) इतः (यहाँ से), ततः (वहाँ से), यतः (जहाँ से), कुतः (कहाँ से), किम् (क्या), कथम् (क्यों, कैसे), न (नहीं), (७)।

सूचना—(क) रमा—विद्या, रमावत्। (ख) दृश्—जि, भवतिवत्।

व्याकरण (लट्, उत्तमपुरुष, वर्णमाला)

१. रमा रमे रमाः प्रथमा (कर्ता) | **संक्षिप्तरूप** आ ए आः प्र०
रमाम् ,, ,, द्वितीया (कर्म) | आकारान्त स्त्री. आम् ,, ,, द्वि०
बाला आदि के रूप संक्षिप्तरूप लगाकर बनाइए, जैसे—बाला बाले बालाः, बालाम् आदि।

२. 'भू' (लट्, उत्तमपुरुष)
भवामि भवावः भवामः

संक्षिप्तरूप—आमि आवः आमः उ० पु०
उ० पु० एक० में आमि, द्वि० में आवः, बहु० में आमः लगेगा।

सूचना—(विशेष) लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में इन धातुओं का यह रूप होता है—दृश्>पश्य्, पश्यति पश्यामि। स्था>तिष्ठ्, तिष्ठति। सद्>सीद्, सीदति। पा>पिब्, पिबति। घ्रा>जिघ्र्, जिघ्रति आदि। गम्>गच्छ्, आगम्>आगच्छ्। स्मृ का स्मरति आदि। जि का जयति।

३. वर्णमाला—कोष्ठ में पारिभाषिक नाम हैं, इन्हें शुद्ध स्मरण कर लें।

(क) स्वर—अ, इ, उ, ऋ, लृ, (ह्रस्व) ए, ऐ, ओ, औ (मिश्रित)
आ, ई, ऊ, ॠ, (दीर्घ)

(ख) व्यंजन—क, ख, ग, घ, ङ (कवर्ग) च, छ, ज, झ, ञ (चवर्ग)
ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग) त, थ, द, ध, न (तवर्ग)
प, फ, ब, भ, म (पवर्ग) य, र, ल, व (अन्तःस्थ)
श, ष, स, ह (ऊष्म), ं (अनुस्वार) ँ (अनुनासिक) ः (विसर्ग)

सूचना—वर्ग के प्रथम अक्षर का अर्थ है—क च ट त प। द्वितीय—ख छ ठ थ फ। तृतीय—ग ज ड द ब। चतुर्थ—घ झ ढ ध भ। पंचम—ङ ञ ण न म। सन्धि-नियमों में प्रथम आदि के स्थान पर क्रमशः १, २, ३, ४, ५, गिनती दी जायेगी।

नियम ८—'स्मृ' धातु के साथ साधारण स्मरण अर्थ में द्वितीया होती है। विशेष स्मरण में षष्ठी। (देखो अभ्यास १४)। जैसे—पाठं स्मरति, ईश्वरं स्मरति।

अभ्यास ३

१ उदाहरण-वाक्य—१. मैं पढ़ता हूँ—अहं पठामि। २. हम दोनों पढ़ते हैं—आवां पठावः। ३. हम लोग पढ़ते हैं—वयं पठामः। ४. वयं विद्यां पठामः। ५. अहं कन्यां पश्यामि। ६ आवां क्रीडां पश्यावः। ७ अहं पुष्पं जिघ्रामि। ८ वयं जलं पिबामः। ९ वयमत्र तिष्ठामः। १० अहं कथां स्मरामि।

२ संस्कृत बनाओ—(क) १ मैं लिखता हूँ। २ मैं यहाँ बैठता हूँ। ३. मैं वहाँ से आता हूँ। ४ मैं जहाँ से आता हूँ, वहीं जाता हूँ। ५ मैं खेल देखता हूँ। ६ मैं विद्या पढ़ता हूँ। ७. मैं क्या देखता हूँ? ८. मैं लड़की को देखता हूँ। ९ मैं पुस्तक स्मरण करता हूँ। १०. मैं राज्य को जीतता हूँ। ११ मैं जल पीता हूँ। १२. मैं फूल सूँघता हूँ।

(ख) १३ हम दोनों पाठशाला जाते हैं। १४. हम दोनों लता देखते हैं। १५. हम लोग सत्य बोलते हैं। १६ हम लोग यहाँ क्यों बैठे हैं?

(ग) १७ वह क्या स्मरण करता है। १८ वे लोग जल क्यों नहीं पीते हैं? १९. तुम कहाँ से आ रहे हो? २० हम वहाँ से नहीं आ रहे हैं।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	(१) अहं स्थामि।	अहं तिष्ठामि।	धातुरूप
	(२) वयं दृश्यामः।	वयं पश्यामः।	,,
	(३) वयं घ्रावः।	वयं जिघ्रामः।	,, , १
	(४) अहं जलं पामि।	अहं जलं पिबामि।	,,
	(५) वयं सदामः।	वयं सीदामः।	,,

४ शुद्ध करो तथा नियम बताओ—अहं दृशामि। आवां स्थावः। वयं पामः। अहं सदामि। पाठशालायां गच्छामि। वयं पुष्पं घ्रामः। वयं जलं पामि।

५ अभ्यास—(क) २ (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाओ। (ख) २ (ख) को एकवचन में बनाओ। (ग) दृश्, सद्, स्था, पा, घ्रा के लट् के तीनों पुरुष के पूरे रूप बताओ। (घ) बाला, लता, विद्या, कथा, क्रीडा के प्र० और द्वि० के रूप बताओ।

६ वाक्य बनाओ—पश्यामि, तिष्ठामि, सीदामि, पिबामि, जिघ्रामि, इतः, ततः, कुतः।

७ रिक्त स्थानों में लट् उ० पु० का रूप रक्खो—१. अहं फलं (दृश्)। २. आवामत्र (सद्)। ३. वयं जलं (पा)। ४. आवां पुष्पाणि (घ्रा)। ५ वयमीश्वरं (स्मृ)।

शब्दकोष—७५+२५=१००] अभ्यास ४ (व्याकरण)

(ख) कृ (करना), अस् (होना)। चुर् (चुराना), चिन्त् (चिन्तन करना, सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना)। (६)। (ग) इत्थम् (ऐसे), तथा (वैसे), यथा (जैसे), कथम् (कैसे), अपि (भी), एव (ही), च (और), किन्तु, (किन्तु), परन्तु (परन्तु)। (९)। (घ) एक (एक), द्वौ (दो), त्रय (तीन), चत्वार (चार), पञ्च (पाँच), षट् (छ), सप्त (सात), अष्ट (आठ), नव (नौ), दश (दस) (१०)।

व्याकरण (कृ, अस् , लट् , प्रत्याहार बनाना)

१ कृ (करना) लट्				२ अस् (होना) लट्			
करोति	कुरुत	कुर्वन्ति	प्र० पु०	अस्ति	स्त	सन्ति	प्र० पु०
करोषि	कुरुथ	कुरुथ	म० पु०	असि	स्थ	स्थ	म० पु०
करोमि	कुर्वः	कुर्म	उ० पु०	अस्मि	स्व	स्म	उ० पु०

३ चुर् आदि धातुओ के निम्नलिखित रूप बनाकर 'भवति' के तुल्य रूप चलेंगे—
चुर्>चोरयति, चिन्त्>चिन्तयति, कथ्>कथयति, भक्ष्>भक्षयति।

४ प्रत्याहार बनाने के लिए इन १४ माहेश्वर सूत्रो को शुद्ध स्मरण कर ले—

१ अइउण्। २ ऋलृक्। ३ एओङ्। ४ ऐऔच्। ५ हयवरट्। ६ लण्। ७ ञमङणनम्। ८ झभञ्। ९ घढधष्। १० जबगडदश्। ११ खफछठथचटतव्। १२ कपय्। १३ शषसर्। १४ हल्।

इन सूत्रो मे पूरी वर्णमाला इस प्रकार रक्खी हुई है—पहले स्वर, फिर अन्तःस्थ, फिर क्रमशः वर्ग के पचम, चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम अक्षर, फिर अन्त मे ऊष्म है।

५ 'प्रत्याहार' सक्षेप मे कथन को कहते है। इन सूत्रो से प्रत्याहार बनाने के नियम ये है—(क) सूत्रो के अन्तिम अक्षर (ण् , क् आदि) प्रत्याहार म नहा गिने जाते है। अन्तिम अक्षर प्रत्याहार बनाने के साधन है। (ख) जो प्रत्याहार बनाना हो, उसके लिए प्रथम अक्षर सूत्र मे जहाँ हो, वहाँ ढूँढना चाहिए। अन्तिम अक्षर सूत्र के अन्तिम अक्षरो मे ढूँढिए। बीच के सारे अक्षर उस प्रत्याहार मे माने जाएँगे। जैसे—'अल्' प्रत्याहार—अ से लेकर अन्त तक। प्रारम्भ मे अ है, अन्तिम सूत्र म ल् है। अल्= पूरी वर्णमाला। अच्=अ से ऐऔच् के च् तक, अर्थात् सारे स्वर। हल्=ह से हल् के ल् तक, अर्थात् सारे व्यजन। अक्=अ इ उ ऋ ऌ। इक्=इ उ ऋ ऌ। यण्= य व र ल। शर्=श ष स।

नियम ९—'च' (और) का प्रयोग उससे एक शब्द के बाद कीजिए। जैसे—फल और फूल—फलं पुष्पं च। फलं च पुष्पम् , अशुद्ध है।

अभ्यास ४

१ उदाहरण-वाक्य —१ एक मनुष्य अस्ति। २ द्वौ बालकौ स्त.। ३. त्रयः नृपा सन्ति। ४ चत्वार' ग्रामा.। ५. पञ्च पुष्पाणि। ६. षट् फलानि। ७ सप्त पुस्तकानि। ८ अष्ट बाला। ९. नव कथा. करोति। १० दश ग्रामा एव सन्ति। ११. वय कथा क्रीडा च कुर्म। १२ स दश पुस्तकानि चोरयति। १३ ईश्वर चिन्तयति। १४. पुस्तक फल च स्त।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १. ईश्वर एक ही है। २. दो बालक फूल सूँघते है। ३. तीन आदमी खाना खाते है। ४. चार बालक क्रीडा करते है। ५ वे पॉच पुस्तकें चुराते है। ६ रमा छ' कहानियॉ कहती है। ७. वे सातों बालक ईश्वर का चिन्तन करते हैं। ८ यहॉ आठ लताएँ हे।९. नौ आदमी भोजन करते है।१० वहॉ दस पुस्तकें है।

(ख) ११. वह है। १२ तू कैसे है? १३ मैं इस प्रकार खाता हूँ। १४ वह वैसे सोचता है। १५. जैसी कथा है वह वैसी ही कहता है। १६ तू कैसे खाता है?

(ग) १७ वे ऐसे सोचते है। १८ हम कथा कहते है। १९. हम खेल भी करते है और भोजन भी करते है। २० तुम सब कथा ही कहते हो, परन्तु वे सोचते भी है।

३	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
	(१) द्वौ बालका।	द्वौ बालकौ।	१
	(२) चत्वार नर।	चत्वार. नरा।	१
	(३) अष्ट लता अस्ति।	अष्ट लता सन्ति।	१
	(४) दश पुस्तकम् अस्ति।	दश पुस्तकानि सन्ति।	१
	(५) च भोजनम् अपि०।	भोजन च अपि०।	९

४ शुद्ध करो तथा नियम बताओ —ईश्वर. सन्ति। वयम् अस्मि। अहम् स्म.। त्व स्थ। यूयम् अस्मि। त्व करोति। स कुर्वन्ति। अह कुर्म। वय करोमि। राम. च कृष्ण पठति। पुष्प च फलम्। स करोषि। आवा कुरुत.। यूय कुरुथ।

५ अभ्यास —(क) १ से १० तक गिनती के १० वाक्य बनाओ। (ख) २ (ख) को बहुवचन बनाओ। (ग) २ (ग) को एकवचन बनाओ। (घ) अस् और कृ के लट् के रूप बताओ। (ङ) ये प्रत्याहार बनाओ—अक् , अच् , अट् , एङ् , एच् , ऐच् , यण् , हश् , झश् , झल् , जश् , छव् , चर् , शर्।

६ वाक्य बनाओ —त्रय., चत्वार, दश, अस्ति, सन्ति, अस्मि, स्थ, करोति, करोमि।

७ रिक्त स्थान भरो —(लट् लकार)—१ अहमत्र (अस्)। २ ते तत्र (अस्)। ३. यूयमिह (अस्)। ४ ते किं (कृ)। ५. अह भोजन (कृ)। ६ त्व तत्र किं (कृ)। ७. यूय किं (कृ)।

शब्दकोष—१०० + २५ = १२५] अभ्यास ५ (व्याकरण)

(क) जनक (पिता), पुत्र (पुत्र), सूर्य (सूर्य), चन्द्र (चन्द्रमा), सज्जन (सज्जन), दुर्जन (दुर्जन), प्राज्ञ (विद्वान्), लोक (संसार, लोग), उपाध्याय (गुरु), शिष्य (शिष्य), प्रश्न (प्रश्न), क्रोश (कोस), धर्म (धर्म), सागर (समुद्र)। (१४)। (ख) तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), प्रच्छ् (पूछना)। (४)। (ग) अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (दुःख, खेद), प्रति (ओर), अनु (ओर, पीछे) (७)।

सूचना—(क) जनक—सागर, रामवत्। (ख) तुद्—प्रच्छ्, भवतिवत्।

व्याकरण (राम, लट्, प्रथमा, संबोधन, द्वितीया)

१ शब्दरूप—राम शब्द के पूरे रूप ठीक स्मरण कर ले। (देखो शब्दरूप सं० १)। जनक आदि शब्दों में संक्षिप्त रूप लगाकर रूप बनावें। नियम १६ इन शब्दों में लगेगा-राम, पुत्र, सूर्य, चन्द्र, शिष्य, धर्म, सागर। सभी अकारान्त पुंलिंग शब्द राम के तुल्य चलेंगे।

२. धातुरूप—'भू'—लट् (वर्तमान)				संक्षिप्तरूप	एक०	द्वि०	बहु०	
भवति	भवतः	भवन्ति	प्र० पु०		अति	अतः	अन्ति	प्र० पु०
भवसि	भवथः	भवथ	म० पु०		असि	अथः	अथ	म० पु०
भवामि	भवावः	भवामः	उ० पु०		आमि	आवः	आमः	उ० पु०

सूचना—तुद् आदि के रूप भवति के तुल्य चलेंगे। जैसे—तुदति, इच्छति, स्पृशति, पृच्छति। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में इष्>इच्छ्, प्रच्छ्>पृच्छ् हो जाता है।

कारक (प्रथमा, संबोधन, द्वितीया)

*नियम १०—कर्ता (व्यक्तिनाम, वस्तुनाम आदि) में प्रथमा होती है। जैसे—रामः पठति।

नियम ११—किसी को संबोधन करने में 'संबोधन' विभक्ति होती है। जैसे—हे राम! हे कृष्ण!

नियम १२—(कर्तुरीप्सिततमं कर्म) कर्ता जिसको (व्यक्ति, वस्तु या क्रिया को) बहुत चाहता है, उसे कर्म कहते हैं।

*नियम १३—(कर्मणि द्वितीया) कर्म में द्वितीया होती है। जैसे—रामः विद्यालयं गच्छति। सः पुस्तकं पठति। सः रामं पश्यति। सः फलम् इच्छति। ते प्रश्नं पृच्छन्ति।

*नियम १४—अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, अनु के साथ द्वितीया होती है। जैसे—ग्रामम् अभितः (गाँव के दोनों ओर)। वनं निकषा समया वा (वन के समीप)।

*नियम १५—गति (चलना, हिलना, जाना) अर्थवाली धातुओं के साथ द्वितीया होती है। जैसे—ग्रामं गच्छति। वनं विचरति। तृप्तिं गच्छति। स्मृतिं गच्छति।

अभ्यास ५

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ राम गॉव को जाता है—रामः ग्रामं गच्छति। २. ग्रामम् अभितः (गॉव के दोनो ओर) जलम् अस्ति। ३. ग्रामं परितः (गॉव के चारो ओर) वनम् अस्ति। ४ ग्रामं समया (गॉव के पास) पाठशाला अस्ति। ५. विद्यालयं निकषा (विद्यालय के पास) वनम् अस्ति। ६ दुर्जन के लिए खेद है—हा दुर्जनम्। ७. विद्यालयं प्रति (विद्यालय की ओर) गच्छति। ८. रामम् अनु (राम के पीछे) गच्छति। ९ गृहं गच्छति। १०. क्रोशं गच्छति। ११. जलं पिबति। १२ पुस्तकं पठति।

२ **संस्कृत बनाओ** —१ बालक विद्यालय को जाता है। २ बालिका विद्यालय की ओर (प्रति) जाती है। ३ कन्या फल चाहती है। ४ गुरु प्रश्न पूछता है। ५. पुत्र फूल छूता है। ६ पिता सूर्य को देखता है। ७ पुत्र चन्द्रमा को चाहता है। ८. दुर्जन सज्जन को दुःख देता है। ९ पुत्र गॉव के पास बैठा है। १०. विद्वान् धर्म की ओर (अनु) जाता है। ११. गुरु के पास शिष्य बैठा है। १२ शिष्य समुद्र को (के विषय में) पूछता है। १३. संसार ईश्वर को नमस्कार करता है। १४. हे पुत्र! पिता कहाँ है? १५. हे दुर्जन! धर्म को क्यों नहीं स्मरण करता। १६ राम घर कब जाता है? १७. फूल के चारो ओर जल है। १८ विद्या धर्म की ओर जाती है। १९ विद्यालय के दोनो ओर फल और फूल है। २० राजा दुर्जन को दुःख देता है।

३	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
(१)	विद्यालये गच्छति।	विद्यालयं गच्छति।	१५
(२)	विद्यालयस्य प्रति०।	विद्यालयं प्रति।	१४
(३)	ग्रामस्य निकषा (समया)०।	ग्रामं निकषा (समया)०।	१४
(४)	धर्मस्य अनुगच्छति।	धर्मम् अनुगच्छति।	१४
(५)	पुष्पस्य परितः०।	पुष्पं परितः०	१४

४ **अभ्यास**—(क) २ के वाक्यों का बहुवचन बनाओ। (ख) तुद्, इष् , स्पृश् , प्रच्छ् , पठ् , लिख् , गम् , आगम् के लट् के पूरे रूप लिखो। (ग) राम के तुल्य १० नये शब्दों के रूप बनाओ।

५ **वाक्य बनाओ**—अभितः, परितः, समया, निकषा, प्रति, अनु, इच्छति, पृच्छति।

६ **रिक्त स्थान भरो** —१ ग्रामम् जलमस्ति। २. विद्यालयं वनमस्ति। ३ जनकः सत्यम् गच्छति। ४ त्वं धनम् । ५. वयं प्रश्नं । ६. ईश्वरः लोकं ।

शब्दकोष—१२५ + २५ = १५०] अभ्यास ६ (व्याकरण)

(क) धनम् (धन), नगरम् (नगर), आसनम् (आसन), अध्ययनम् (पढना), ज्ञानम् (ज्ञान), कार्यम् (कार्य), ओदनम् (चावल), वर्षम् (वर्ष), दिनम् (दिन)। (९)। (ख) खाद् (खाना), धाव् (दौड़ना), क्रीड् (खेलना), चल् (चलना)। अधिशी (सोना), अधिस्था (बैठना), अध्यास् (बैठना)। (७)। (ग) उभयत (दोनो ओर), सर्वत (चारो ओर), धिक् (धिक्कार), उपरि (ऊपर), अध (नीचे), अधि (अन्दर), अन्तरा (बीचमे), अन्तरेण (बिना), विना (बिना)। (९)।

सूचना—(क) धन—दिन, गृहवत्। (ख) खाद्—चल्, भवतिवत्।

व्याकरण (गृह, लोट्, द्वितीया)

१ शब्दरूप—'गृह' शब्द के पूरे रूप स्मरण कर ले। (देखो शब्दरूप स० २०)। सक्षिप्त रूप लगाकर धन आदि के रूप बनावे। सभी अकारान्त नपुसक शब्द गृह के तुल्य चलेगे।

❀ **नियम १६—र् और ष् के बाद न को ण हो जाता है, यदि अट् (स्वर, ह, य, व, र), कवर्ग, पवर्ग, आ, न्, बीच मे हो तो भी। जैसे—इन शब्दो मे यह नियम लगेगा—गृह, नगर, कार्य, वर्ष, पुष्प, पत्र। अत इनमे प्र० द्वि० बहु० में 'आणि' तृ० एक० मे 'एण', ष० बहु० मे 'आणाम्' लगेगा।**

१. धातुरूप—'भू' लोट् (आज्ञा अर्थ)				सक्षिप्तरूप एक०	द्वि०	बहु०	
भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्र० पु०	अतु	अताम्	अन्तु	प्र० पु०
भव	भवतम्	भवत	म० पु०	अ	अतम्	अत	म० पु०
भवानि	भवाव	भवाम	उ० पु०	आनि	आव	आम	उ० पु०

सूचना—खाद् आदि के रूप भवतु के तुल्य चलेगे। जैसे, खादतु, धावतु, क्रीडतु, चलतु, कथयतु, भक्षयतु। लट् मे अधिशी>अधिशेते, अधिस्था>अधितिष्ठति, अध्यास्>अध्यास्ते।

कारक (द्वितीया)

❀ **नियम १७—उभयत, सर्वत, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽध, अध्यधि के साथ द्वितीया होती है। जैसे—ग्रामम् उभयत। ग्राम सर्वत। धिक् नास्तिकम्।**

❀ **नियम १८—(अन्तरान्तरेणयुक्ते) अन्तरा, अन्तरेण, विना के साथ द्वितीया होती है।** जैसे—गङ्गा यमुनां च अन्तरा प्रयाग अस्ति (गंगा-यमुना के बीच मे प्रयाग है।) ज्ञानमन्तरेण न सुखम्।

❀ **नियम १९—(अधिशीङ्स्थासां कर्म) अधिशी, अधिस्था, अध्यास् धातु के साथ द्वितीया होती है। जैसे—आसनम् अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा।**

❀ **नियम २०—(कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे) समय और स्थान की दूरीवाची शब्दो में द्वितीया होती है। जैसे—दश दिनानि (१० दिन तक) लिखति। पञ्च वर्षाणि (५ वर्ष तक) पठति। क्रोशं (कोसभर) गच्छति।**

अभ्यास ६

१ **उदाहरण-वाक्य**—१ वह पुस्तक पढे—स. पुस्तक पठतु। २ तू गॉव को जा—त्व ग्राम गच्छ। ३ मै भोजन खाऊँ—अह भोजन खादानि। ४. आसन पर बैठता है—आसनम् अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा। ५ घर मे सोता है—गृहम् अधिशेते। ६. ग्रामम् उभयत. (गॉव के दोनो ओर) जलम् अस्ति। ७ विद्यालय सर्वत (विद्यालय के चारो ओर) पुष्पाणि सन्ति। ८. धिक् दुर्जनम्। ९. लोकम् उपर्युपरि (ससार के ऊपर-ऊपर), अधोऽध. (नीचे नीचे), अध्यधि (अन्दर अन्दर), ईश्वर· अस्ति। १० क्रोश चलतु।

२ **सस्कृत बनाओ—(क)** १ वह पुस्तक पढे। २ वह खाना खावे। ३ वह दौडे। ४ वह खेले। ५. वह यहॉ से चले। **(ख)** ६ तू धन की इच्छा कर। ७. तू नगर को जा। ८. तू फलो को देख। ९ तू ज्ञान की इच्छा कर। १० तू घर के कार्य को ही देख। **(ग)** ११ मै चावल पकाऊँ। १२. मै दोडूँ। १३ मे खेलूँ। १४ मै चलूँ। १५. मै फल खाऊँ। **(घ)** १६ नगर के दोनो ओर वन है। १७. घर के चारो ओर फल हे। १८. दुर्जन को धिक्कार। १९. ससार के ऊपर सूर्य है। २० गॉव के नीचे-नीचे जल है। २१ लोक के अन्दर अन्दर राम है। २२ गॉव और विद्यालय के बीच मे (अन्तरा) जल है। २३ धर्म के बिना (अन्तरेण, विना) सुख नही। २४ बालक आसन पर बैठता है। २५ पुत्र घर मे सोता है। २६ वह दश वर्ष तक अध्ययन करता है। २७ वह पॉच दिन तक लिखता है। २८ वह कोस भर चलता है।

३	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
	(१) त्व पुष्पानि पश्यतु।	त्व पुष्पाणि पश्य।	१६, १
	(२) नगरस्य उभयत.०।	नगरम् उभयत·०।	१७
	(३) लोकस्य उपर्युपरि०।	लोकम् उपर्युपरि०।	१७
	(४) धमस्य अन्तरेण (विना)०।	धर्मम् अन्तरेण (विना)०।	१८
	(५) आसने अधितिष्ठति।	आसनम् अधितिष्ठति।	१९

४ **अभ्यास**—(क) २ (क) (ख) (ग) को बहुवचन बनाओ। (ख) पूरे रूप बताओ—ज्ञान, धन, कार्य, आसन, वर्ष, दिन, फल, पुस्तक, गृह। (ग) लोट् के पूरे रूप बताओ—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, कथ्, भक्ष्, खाद्, धाव्, क्रीड्, चल्।

५ **वाक्य बनाओ**—उभयतः, सर्वत·, अन्तरा, अन्तरेण, अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते।

६. **रिक्त स्थलों को भरो**—१ उभयतः जलम्। २. · सर्वतः पुष्पाणि सन्ति। ३. · · अन्तरेण न सुखम्। ४ च अन्तरा प्रयाग.। ५. · · अधिशेते। ६ · अध्यास्ते।

शब्दकोष—१५० + २५ = १७५] अभ्यास ७ (व्याकरण)

(क) अजा (बकरी), वसुधा (भूमि), सुधा (अमृत), जटा (जटा), क्षमा (क्षमा)। तण्डुल (चावल)। दुग्धम् (दूध), शतम् (सौ, या सो रु०)। (८)। (ख) भ्रम् (घूमना), रुह् (चढ़ना, उगना), त्यज् (छोड़ना), वस् (रहना), नी (ले जाना), हृ (ले जाना), कृष् (खोदना, खींचना), वह् (ले जाना, ढोना)। दुह् (दुहना), याच् (माँगना), दण्ड् (दंड देना), रुध् (रोकना), चि (चुनना), ब्रू (बोलना), शास् (बताना), मथ् (मथना), मुष् (चुराना)। (१७)।

सूचना—(क) अजा—क्षमा, रमावत्। तण्डुल—रामवत्। (ख) भ्रम्—पठ्, भवतिवत्।

व्याकरण (रमा, लृट् , द्वितीया द्विकर्मक)

१. शब्दरूप—'रमा' के पूरे रूप स्मरण कर ले। (देखो शब्दरूप स० १३)। संक्षिप्तरूप लगाकर अजा आदि के रूप बनाओ। नियम १६ इन शब्दो मे लगेगा—रमा, क्षमा। सभी आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द रमा के तुल्य चलेगे।

२. धातुरूप—'भू'—लृट् (भविष्यत्)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र पु
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म पु
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ पु.

संक्षिप्तरूप	एक०	द्वि०	बहु०
प्र पु.	(इ) स्यति	(इ) स्यतः	(इ) स्यन्ति
म पु.	(इ) स्यसि	(इ) स्यथः	(इ) स्यथ
उ.पु.	(इ) स्यामि	(इ) स्यावः	(इ) स्यामः

* सूचना—१. (क) इन पूर्वोक्त धातुओं मे 'इष्यति' ही लगाकर रूप बनावे—पठिष्यति, लेखिष्यति, गमिष्यति, हसिष्यति, आगमिष्यति, रक्षिष्यति, वदिष्यति, पतिष्यति, स्मृ>स्मरिष्यति, कृ>करिष्यति, अस्>भविष्यति, चुर्>चोरयिष्यति, चिन्त्>चिन्तयिष्यति, कथ्>कथयिष्यति, भक्ष्>भक्षयिष्यति, इष्>एषिष्यति, खाद्>खादिष्यति, धाविष्यति, क्रीडिष्यति, चलिष्यति, भ्रमिष्यति, हृ>हरिष्यति, ज्वलिष्यति, चरिष्यति, वृष्>वर्षिष्यति।

(ख) इनमे 'स्यति' लगेगा—पच्>पक्ष्यति, नम्>नंस्यति, दृश्>द्रक्ष्यति, सद्>सत्स्यति, स्था>स्थास्यति, पा>पास्यति, घ्रा>घ्रास्यति, जि>जेष्यति, तुद्>तोत्स्यति, स्पृश्>स्प्रक्ष्यति, प्रच्छ्>प्रक्ष्यति, रुह्>रोक्ष्यति, त्यज्>त्यक्ष्यति, वस्>वत्स्यति, नी>नेष्यति, कृष्>कर्क्ष्यति, वह्>वक्ष्यति, दह्>धक्ष्यति, तप्>तप्स्यति, गै>गास्यति।

२ 'नी' आदि के क्रमशः लट् मे ऐसे रूप चलेगे—नयति, हरति, कर्षति, वहति (भवतिवत्)। दोग्धि, याचते, दण्डयति, रुणद्धि, चिनोति, ब्रवीति, शास्ति, मथ्नाति मुष्णाति।

नियम २१—ये धातुएँ द्विकर्मक हैं। (इन अर्थों की अन्य धातुएँ भी)। इनके साथ दो कर्म होते हैं—दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह्।

अभ्यास ७

१ उदाहरण-वाक्य —१. वह पढेगा—स. पठिष्यति । २. तू जाएगा—त्व गमिष्यसि । ३ मै आऊँगा—अहम आगमिष्यामि । ४ स. द्रक्ष्यति । ५. बकरी से दूध दुहता है—अजा दुग्ध दोग्धि । ६ राजा से क्षमा माँगता है—नृप क्षमा याचते । ७. चावलो से भात पकाता है—तण्डुलान् ओदन पचति । ८. राजा दुर्जन पर सौ रुपए दण्ड लगाता है—नृप. दुर्जन शत दण्डयति । ९ घर मे बकरी को रोकता है—गृहम् अजा रुणद्धि । १०. गुरु से धर्म पूछता है—उपाध्याय धर्म पृच्छति । ११. लता से फूलो को चुनता है—लता पुष्पाणि चिनोति । १२ पुत्र को धर्म बताता है—पुत्र धर्म ब्रवीति, शास्ति वा । १३. राम से सौ रुपए जीतता है—राम शत जयति । १४. समुद्र से अमृत को मथता है—सागर सुधा मथ्नाति । १५. राम के सौ रुपए चुराता है—राम शत मुष्णाति । १६. बकरी को गाँव मे ले जाता है—अजा ग्राम नयति, हरति, कर्षति, वहति वा ।

२ सस्कृत बनाओ .—(क) १ वह लिखेगा । २. वह पढेगा । ३. वह हँसेगा । ४. वह ऊपर जाएगा । ५ वह नीचे आएगा । ६. वह रक्षा करेगा । ७. वह बोलेगा । ८. वह पकाएगा । (ख) ९ तू गिरेगा । १० तू नमस्कार करेगा । ११. तू देखेगा । १२. तू बैठेगा (स्था, सद्) । १३. तू जल पीएगा । १४ तू फूल सूँघेगा । १५. तू स्मरण करेगा । १६ तू जीतेगा । (ग) १७ मै धन नही चुराऊँगा । १८. मै सोचूँगा । १९. मै कथा कहूँगा (कथ्) । २०. मै खाना खाऊँगा (भक्ष्) । २१. मै धन चाहूँगा । २२. मै फूल छूऊँगा । २३. मै प्रश्न पूछूँगा । २४ मै यहाँ रहूगा । (घ) २५. वह राजा से भूमि माँगता है । २६ वह चावलो से भात पकाएगा । २७ वह पुत्र से प्रश्न पूछेगा । २८ वह शिष्य को सत्य बताएगा (वद्) । २९ वह दुर्जन से सौ रुपए जीतेगा । ३०. वह नगर मे बकरी को लाएगा (नी, हृ कृष्, वह्) ।

३	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
	(१) त्व तिष्ठिष्यसि ।	त्व स्थास्यसि ।	धातुरूप
	(२) नृपात् वसुधा याचते ।	नृप वसुधा याचते ।	२१
	(३) नगरे अजा नेष्यति ।	नगरम् अजा नेष्यति ।	,,

४ अभ्यास —(क) २ (क) (ख) (ग) को बहुवचन बनाओ । (ख) पूरे रूप लिखो—रमा, अजा, वसुधा, सुधा, गङ्गा, यमुना । (ग) लृट् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम, वद्, कृ, अस्, कथ्, भक्ष्, पच्, दृश्, स्था, पा, घ्रा, जि, प्रच्छ्, त्यज्, वस्, नी, वह् ।

५ वाक्य बनाओ.—पास्यामि, द्रक्ष्यामि, स्थास्यामि, स्प्रक्ष्यति, प्रक्ष्यति, वत्स्यति, धारयति, जेष्यति, याचते, पचति, ब्रवीति, नयति ।

शब्दकोष—१७५ + २५ = २००] **अभ्यास ८** (व्याकरण)

(क) हरि (विष्णु, सूर्य, किरण, सिंह, बन्दर), कवि (कवि), यति (सन्यासी), भूपति (राजा), सेनापति (सेनापति), प्रजापति (प्रजापति, ब्रह्मा), रवि (सूर्य), कपि (बन्दर), मुनि (मुनि), अग्नि (आग), गिरि (पहाड), मरीचि (किरण)। मेघ (बादल), दण्ड (डंडा)। कन्दुकम् (गेंद)। (१५)। (ख) दह् (जलाना), ज्वल् (जलना), तप् (तपना, तपस्या करना), चर् (चलना, घूमना), वृष् (बरसना), गै (गाना)। (६)। (ग) सह, साकम्, सार्धम्, समम् (चारो का अर्थ है, साथ) (४)।

सूचना—(क) हरि—मरीचि, हरिवत्। मेघ—दण्ड, रामवत्। कन्दुक, ज्ञानवत्। (ख) दह्—गै, भवतिवत्।

व्याकरण (हरि, लङ्, तृतीया)

१. शब्दरूप—हरि शब्द के पूरे रूप स्मरण कर ले। (देखो शब्द सं० २)। संक्षिप्त रूप लगाकर कवि आदि के रूप बनाओ। सभी इकारान्त पुलिंग शब्द हरिवत्। नियम १६ इन शब्दो मे लगेगा—हरि, रवि, गिरि। जैसे—हरिणा, हरीणाम्।

%नियम २२–(पति समास एव) पति शब्द किसी शब्द के अन्त में समस्त होगा तो उसका रूप हरि के तुल्य चलेगा। जैसे—भूपतिना, भूपतये, भूपते आदि।

२. धातुरूप—'भू' लङ् (भूतकाल)।

अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र० पु०
अभवः	अभवतम्	अभवत	म० पु०
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ० पु०

संक्षिप्तरूप	एक०	द्वि०	बहु०	
(धातु से	अत्	अताम्	अन्	प्र० पु०
पहले अ +)	अः	अतम्	अत	म० पु०
	अम्	आव	आम	उ० पु०

सूचना—लङ् मे धातु के पहले 'अ' लगेगा, बाद मे संक्षिप्तरूप। जैसे—अपठत्, अलिखत्, अदहत्, अज्वलत्, अतपत्, अचरत्, अवर्षत्, अगायत्। यदि धातु का प्रथम अक्षर स्वर हो तो 'आ' लगेगा और वृद्धि होगी। जैसे इष् > ऐच्छत्, आगम् > आगच्छत्, अस् > आसीत्।

कारक, (तृतीया, करण)

नियम २३–(साधकतम करणम्) क्रिया की सिद्धि मे सहायक को करण कहते है।

%नियम २४–(कर्तृकरणयोस्तृतीया) करण मे तृतीया होती है और कर्मवाच्य या भाववाच्य मे कर्ता मे। जैसे—कन्दुकेन क्रीडति। दण्डेन चलति। रामेण गृहं गम्यते, रामेण भूयते।

%नियम २५–(सहयुक्तेऽप्रधाने) सह, साकम्, सार्धम्, समम् (साथ अर्थ मे) के साथ तृतीया ही होती है। जैसे—जनकेन सह, साकं सार्धं समं वा गृहं गच्छति।

%नियम २६–(इत्थंभूतलक्षणे) जिस चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसमे तृतीया होती है। जैसे–जटाभिः यति (जटा से सन्यासी ज्ञात होता है)।

%नियम २७–(हेतौ) कारणबोधक शब्दो मे तृतीया होती है। अध्ययनेन वसति।

अभ्यास ८

१ **उदाहरण-वाक्य** —१. उसने पढा—सः अपठत्। २ तूने लिखा—त्वम् अलिखः। ३ मैंने कहा—अहम् अवदम्। ४ भूपतिना सह सेनापति चरति। ५ यतिना सार्धं कविः गायति। ६ मुनिः सत्येन लोक जयति। ७ रविः मरीचिभिः अतपत्। ८ अग्नि ग्रामम् अदहत्। ९ अग्नि ज्वलति। १० गिरि निकषा कपय चरन्ति। ११. मेघ वर्षति। १२ प्रजापति (हरिः) लोकं करोति। १३. अध्ययनेन (अध्ययन के उद्देश्य से) वसति। १४ विद्यया ज्ञान भवति। १५ धर्मेण हरिमपश्यत्।

२ **संस्कृत बनाओ** —१ राम गेंद से खेला। २ हरि डंडे से चला। ३ कवि ने गाया। ४ आग ने नगर को जलाया। ५ सूर्य ने किरणों से लोक को तपाया। ६ आग कब जली ? ७ सन्यासी ने वहाँ तप किया। ८ राजा कवि के साथ घूमा। ९ राजा (भूपति) के साथ सेनापति यहाँ आया। १० जटा से सन्यासी ज्ञात होता है। ११ कवि ने किस प्रकार गाया ? १२ यति मुनि के साथ हरि के पास गया। १३ पहाड के ऊपर-ऊपर सूर्य तपा। १४ बालक बन्दरों के साथ खेला। १५ मुनि राजा के साथ बैठा। १६ मेघ बरसा। १७ कवि और मुनि ने पुस्तकें लिखी। १८ राजा और सेनापति ने लोक की रक्षा की। १९ यति ने सूर्य को नमस्कार किया। २०. बन्दर बालकों के साथ खेला।

३	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
	(१) कविना अगायत्।	कवि अगायत्।	१०
	(२) अग्निना नगरम् अदहत्।	अग्नि नगरम् अदहत्।	१०
	(३) भूपत्यु सह अगच्छत्।	भूपतिना सह अगच्छत्।	२२,२५
	(४) यतिः मुनेः सह०।	यति मुनिना सह०।	२५
	(५) ०सेनापतिना च लोकस्य अरक्षत्।	०सेनापतिः च लोकम् अरक्षताम्।	१०,१३,१

४ **अभ्यास** —(क) २ के वाक्यो को लट्, लोट् और लट् मे परिवर्तित करो। (ख) पूरे रूप लिखो—हरि, कवि, रवि, अग्नि, मुनि, भूपति, प्रजापति। (ग) लङ् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, प्रच्छ्, दह्, ज्वल्, चर्।

५ **वाक्य बनाओ** —सह, साकम्, सार्धम्, समम्। अदहत्, अतपत्, अचरत्, अगायत्।

६ **रिक्त स्थान भरो** —(लङ् लकार) १ रामः कन्दुकेन (क्रीड्)। २ यतिः सूर्यम् (नम्)। ३. कवि कथम् (गै)। ४. गिरि निकषा कपिः (भ्रम्)। ५ कपिभिः सह बालः (क्रीड्)।

शब्दकोष—२०० + २५ = २२५] अभ्यास ९ (व्याकरण)

(क) गुरु (गुरु, वि० भारी, बडा), भानु (सूर्य), इन्दु (चन्द्रमा), शत्रु (शत्रु), शिशु (बालक), वायु (वायु), पशु (पशु), तरु (वृक्ष), साधु (सज्जन, सरल, अच्छा, निपुण)। काण (काना), कर्ण (कान), बधिर (बहरा), पाद (पैर) खञ्ज (लगडा), शब्द (शब्द), अर्थ (१ अर्थ, २ धन, ३ प्रयोजन), विवाद (विवाद)। नेत्रम् (ऑख), तृणम् (तिनका), सुखम् (सुख), दु खम् (दु ख), प्रयोजनम् (प्रयोजन), हसितम् (हँसना)। प्रकृति (स्वभाव)। (२८) (ग) अलम् (१ बस, २ पर्याप्त, समर्थ, शक्त)। (१)

सूचना—(क) गुरु—साधु, गुरुवत्। काण—विवाद, रामवत्। नेत्र—हसित, गृहवत्। प्रकृति, मतिवत्।

व्याकरण (गुरु, विधिलिङ्, तृतीया, अनुस्वारसधि)

१. शब्दरूप—गुरु शब्द के पूरे रूप स्मरण कर ले। (देखो शब्द० स० ४) सक्षिप्त-रूप लगाकर भानु आदि के रूप गुरुवत् बनावे। सभी उकारान्त पुलिंग शब्द गुरु के तुल्य चलेगे। नियम १६ इन शब्दो मे लगेगा—गुरु, शत्रु, तरु। जैसे—गुरुणा, गुरूणाम्, शत्रुणा, शत्रूणाम्।

२. धातुरूप—'भू' विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

				संक्षिप्त रूप	एक०	द्वि०	बहु०	
भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र० पु०		एत्	एताम्	एयु'	प्र पु.
भवेः	भवेतम्	भवेत	म० पु०		ए	एतम्	एत	म. पु.
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ० पु०		एयम्	एव	एम	उ पु.

सक्षिप्तरूप लगाकर पठ् आदि के रूप बनावे। जैसे पठेत्, लिखेत्, गच्छेत्, पश्येत्।

कारक (तृतीया, अनुस्वार सन्धि)

*नियम् २८—किम्, कार्यम्, अर्थ, प्रयोजनम् (चारो प्रयोजन अर्थ मे हो तो) के साथ तृतीया होती है। जैसे मूर्खेण पुत्रेण किम्, किं कार्यम्, कोऽर्थ, किं प्रयोजनम् (मूर्ख पुत्र से क्या लाभ या क्या प्रयोजन)। तृणेन अपि कार्यं भवति।

*नियम २९—अलम् (बस, मत) के साथ तृतीया होती है। जैसे—अलं हसितेन (मत हँसो), अलं विवादेन (विवाद मत करो)।

*नियम ३०—(येनाङ्गविकार) शरीर के जिस अंग मे विकार से बिकृत दिखाई पडे, उसमें तृतीया होती है। जैसे—नेत्रेण काण (एक आँख से काणा), कर्णेन बधिर।

*नियम ३१—(प्रकृत्यादिभ्य उपसख्यानम्) प्रकृति (स्वभाव) आदि क्रियाविशेषण शब्दो में तृतीया होती है। प्रकृत्या साधु (स्वभाव से सरल)। सुखेन जीवति। दु खेन जीवति। सरलतया लिखति।

*नियम ३२—(सधि)—(मोऽनुस्वार) पदान्त (शब्द के अन्तिम) म् के बाद कोई हल् (व्यंजन) हो तो म् को अनुस्वार (—) हो जाता है, स्वर बाद मे हो तो नहीं। रामम् + पश्यति = रामं पश्यति। रामम् + अपश्यत = राममपश्यत्।

अभ्यास ९

१ उदाहरण-वाक्य :—१. उसे पढना चाहिए (वह पढे)—स. पठेत्। २. तुझे लिखना चाहिए—त्व लिखे.। ३ मै गुरु को नमस्कार करूँ—अह गुरु नमेयम्। ४. दुर्जनेन कोऽर्थ, कि प्रयोजनम्, कि कार्यम् (दुर्जन से क्या लाभ)। ५ अल भोजनेन (भोजन मत करो)। ६ पादेन खञ्ज। ७ गुरु. शिशु प्रश्न पृच्छेत्। ८. सूर्यः मरीचिभि. तपेत्। ९ इन्दु. सुधा वर्षेत्। १० भूपति. शत्रून् जयेत्। ११. साधु पशुभिः सह चरेत्। १२ तरुः फलै. नमेत्। १३ सज्जना विद्यया सह नमेयु। १४ प्रकृत्या साधुः।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ दुर्जन शिष्य से क्या लाभ? २ मत हँसो। ३ मत खाओ। ४ शत्रु आँख से काना है। ५ शिशु कान का बहरा है। ६. पशु पैर से लगडा है। ७ गुरु स्वभाव से सज्जन है। ८ वायु सुख से बहती है। (ख) (विधि-लिङ्) ९ शिशु गुरु को नमस्कार करे। १०. तू सूर्य को देख। ११ मै चन्द्रमा को देखूँ। १२ वे शत्रुओ को जीते। १३ हवा बहे (वह्)। १४ शिशु पशुओ के साथ पहाड पर जावे। १५. साधु वृक्षो के पास बसे। १६. तू घर को जा। १७. मै वृक्षो को देखूँ। १८. हम सूर्य को देख। १९ साधु चावल पकावे। २०. शिशु दूध पीए।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	(१) अल हसितस्य।	अल हसितेन।	२९
	(२) नेत्रस्य काण.।	नेत्रेण काण।	३०
	(३) सुखात् वहति।	सुखेन वहति।	३१
	(४) गिरौ गच्छेत्।	गिरि गच्छेत्।	१५
	(५) दुग्धम् पिबेत्।	दुग्ध पिबेत्।	३२

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को लोट्, लट् और लृट् मे बदलो। (ख) पूरे रूप लिखो—गुरु, भानु, इन्दु, शिशु, शत्रु, वायु, साधु। (ग) विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, प्रच्छ्, चर्, त्यज्, खाद्, धाव्।

५ वाक्य बनाओ —कोऽर्थ', कि प्रयोजनम्, अलम्, प्रकृत्या, काण', खञ्ज। पठेत्, लिखेत्, गच्छेः, वदे., पश्येत्, तिष्ठेत्, पिबेत्, पृच्छेत्, त्यजेयम्, खादेम।

६. रिक्त स्थान भरो —१. अल .। २. प्रकृत्या..। ३. बधिरः। ४... कोऽर्थ.। ५ .पश्येत्। ६ ..पठेम। ७ गच्छेम। ८ नमेयम्।

७. संधि करो :—किम् + कार्यम् + करोति। अहम् + गृहम् + गच्छामि। पुस्तकम् + पठति। गुरुम् + नमति। शिशुम् + प्रश्नम् + पृच्छति। जलम् + पिबति। त्वम् + पठसि। अहम् + लिखामि।

शब्दकोष—२२५ + २५ = २५०] अभ्यास १० (व्याकरण)

(क) तत् (वह), यत् (जो), एतत् (यह), किम् (कौन), सर्व (सब), पूर्व (पहला), विश्व (१ सब, २ संसार), अन्य (और), इतर (और) (सर्वनाम) । विप्र (ब्राह्मण), इन्द्र (इन्द्र), दैत्य (राक्षस) । प्रभु (१ स्वामी, २ समर्थ), पितृ (१ पिता, २ पितर लोग) । (१४) । (ख) दा (यच्छ्) (देना), वितृ (देना), दा (देना) । (३) । (ग) नमः (नमस्कार, प्रणाम), स्वस्ति (आशीर्वाद), स्वाहा (देवताओं के लिए अग्नि में आहुति), स्वधा (पितरों के लिए अन्नादि), अलम् (पर्याप्त, समर्थ), वषट् (आहुति, साधुवाद), (६) । (घ) शक्त (समर्थ), समर्थ (समर्थ) । (२)

सूचना—(क) तत्—इतर, सर्ववत् । (ख) दा—वितृ, भवतिवत् ।

व्याकरण (सर्वनाम पुंलिंग, चतुर्थी, यण्सन्धि)

१ सर्व शब्द के रूप पुंलिंग में स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० २९ क) । नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—सर्व, पूर्व, विप्र, इन्द्र, प्रभु, पितृ ।

※ **सूचना**—(क) अकारान्त सर्वनाम शब्दों में 'राम' शब्द के रूप से ये ५ अन्तर होते हैं—१ प्र बहु में 'ए' । २ च एक में 'स्मै' । ३ प. एक. में 'स्मात्' । ४ ष बहु में 'एषाम्' । ५ स. एक में 'स्मिन्' लगेगा । शेष रामवत् । (ख) तत्, यत्, एतत्, किम् को पुंलिंग में क्रमशः त, य, एत, क रूप हो जाता है, इनके ही रूप चलते हैं । केवल तत् और एतत् को प्र एक. में क्रमशः सः, एषः हो जाता है । जैसे, तत्>सः तौ ते ।

२ धातुरूप—लट् में यच्छ्>यच्छति । वितृ>वितरति । दा>ददाति ।

※ **नियम ३३**—सर्वनाम शब्दों और विशेषण शब्दों का वही लिंग, विभक्ति और वचन होता है, जो विशेष्य का होता है । जैसे, कः नरः, कं नरम्, केन नरेण । का बाला ।

नियम ३४—(कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्) दान आदि क्रिया जिसके लिए की जाती है, उसे संप्रदान कहते हैं ।

※ **नियम ३५**—(चतुर्थी सम्प्रदाने) सम्प्रदान कारक में चतुर्थी होती है । विप्राय धनं ददाति ।

※ **नियम ३६**—(नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् (तथा पर्याप्त अर्थवाले अन्य शब्द), वषट् के साथ चतुर्थी होती है । जैसे, गुरवे नमः । शिष्याय स्वस्ति । अग्नये स्वाहा । पितृभ्यः स्वधा । इन्द्राय वषट् । हरिः दैत्येभ्यः अलम्, प्रभुः, समर्थः ।

※ **नियम ३७**—(सन्धि) (इको यणचि) इ, ई, को य्, उ, ऊ, को व्, ऋ ॠ को र्, ऌ को ल् हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर हो तो । सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं । जैसे, प्रति + एक = प्रत्येक, इ को य् । पठतु + एक = पठत्वेक, उ को व । पितृ + आ = पित्रा । ऌ + आकृति = लाकृति ।

अभ्यास १०

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ वह उस ब्राह्मण को धन देता है—स तस्मै विप्राय धन ददाति, यच्छति, वितरति वा। २ गुरु को नमस्कार—गुरवे नमः। ३ पुत्राय स्वस्ति। ४. राम शत्रुओ के लिए पर्याप्त है—रामः शत्रुभ्यः अलम्, समर्थः, शक्तः, प्रभुः वा। ५ एतस्मै बालकाय फल यच्छ, वितर वा। ६ कस्मै शिष्याय ज्ञान वितरसि। ७. सर्वेभ्यः (विश्वेभ्यः) शिशुभ्य भोजन वितर, इतरेभ्यः (अन्येभ्यः) फलानि यच्छ। ८. तिष्ठत्यत्र कः? ९ लिखत्वेक, पठत्वन्यः। १० आगच्छत्विह रामः।

२ **संस्कृत बनाओ** —(क)१. उस बालक को दूध दो (यच्छ्, वितृ)। २ इस मुनि को धन दो। ३ सूर्य को जल दो। ४ किस राजा को धन देते हो? ५ उस कवि को भोजन दो। ६. जिस बालक को फल देते हो, उसी को फूल भी दो। ७ पिता को नमस्कार। ८ शिष्य को आशीर्वाद। ९ दुर्जन के लिए राजा पर्याप्त है। १० ज्ञान के लिए गुरु के पास जाओ। ११ अग्नि के लिए स्वाहा। १२ पितरो के लिए स्वधा। **(ख)** १३ इन कवियो को फल और फूल दो। १४ जो बालक विद्यालय नही जाता, उसको पिता दण्ड देता है। १५ इन फलो के लिए उन वृक्षो को देखो। १६ इस प्रश्न को उस शिष्य से पूछो। १७ सारे (सर्व, विश्व) विद्वानो को वहाँ ले जाओ। १८ किस बालक को पूछते हो? १९ किस विद्यालय मे पढते हो? २०. इन बालको को पुस्तक दो और उन बालको को गेद दो।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	(१) त बालक दुग्ध वितर।	तस्मै बालकाय दुग्ध वितर।	३३, ३५
	(२) एत मुनिं धन यच्छ।	एतस्मै मुनये धन यच्छ।	३३, ३५
	(३) जनक नम।	जनकाय नमः।	३६
	(४) एत प्रश्न तस्मात् शिष्यात् पृच्छ।	एत प्रश्न त शिष्य पृच्छ।	२१, ३३

४ **अभ्यास** —(क) २ (क) को बहुवचन मे परिवर्तित करो। (ख) तत्, यत्, एतत्, किम्, सर्व, विश्व के पुलिग मे पूरे रूप लिखो। (ग) यच्छ्, वितृ के लट्, लोट्, विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो।

५ **वाक्य बनाओ** —नमः, स्वस्ति, अलम्, प्रभुः, कस्मै, तस्मै, एतस्मै, यस्मै, सर्वेभ्यः।

६ **संधि करो** —प्रति + एक। इति + उवाच। इति + आह। इति + अवदत्। आगच्छतु + अत्र। पठतु + एषः। सुधी + उपास्य। मधु + अरिः। धातृ + अशः। लृ + आकृतिः।

७ **संधि-विच्छेद करो** —यद्यपि, प्रत्युपकारः, इत्येतत्, इत्युवाच, पठत्वत्र, गच्छत्वन्यः।

शब्दकोष—२५० + २५ = २७५] **अभ्यास ११** (व्याकरण)

(क) ब्राह्मण (ब्राह्मण), क्षत्रिय (क्षत्रिय), वैश्य (वैश्य), शूद्र (शूद्र), वर्ण (वर्ण), मोक्ष (मोक्ष, मुक्ति), मूर्ख (मूर्ख), चोर (चोर), अश्व (घोड़ा)। मोदकम् (लड्डू), पापम् (पाप)। (११)। (ख) क्रुध् (क्रोध करना), कुप् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय (बुराई निकालना), धारि (धारण करना, किसी का ऋणी होना), स्पृह् (चाहना), निवेदि (कहना, निवेदन करना), उपदिश् (उपदेश देना), भज् (सेवा या भजन करना), क्रन्द् (रोना)। रुच् (१. अच्छा लगना, २ चमकना)। (१२) (ग) अर्थम् (लिए), कृते (लिए) (२)।

सूचना —(क) ब्राह्मण—अश्व, रामवत्। मोदक—पाप, गृहवत्।

व्याकरण (सर्वनाम नपुं०, चतुर्थी, अयादिसंधि)

१ **शब्दरूप** —सर्व के नपु० के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० स० २९ ख)। सक्षिप्तरूप लगाकर तत् आदि (अभ्यास १०) के पूरे रूप बनाओ। **सूचना**—सर्व आदि के तृतीया से सप्तमी तक पुलिंग के तुल्य रूप होगे। प्र द्वि मे अम्, ए, आनि लगेगा। तत् आदि के प्र द्वि एक मे ये रूप होते है—तत्, यत्, एतत्, किम्, अन्यत्, इतरत्।

२ **धातुरूप** —क्रुध् आदि के ये रूप बनाकर लट् आदि मे 'भवति' के तुल्य रूप चलेंगे। क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति, धारयति, स्पृहयति, निवेदयति, उपदिशति, भजति, क्रन्दति। रुच् का लट् मे रोचते (देखो अभ्यास १६)।

***नियम ३८–(रुच्यर्थानां प्रीयमाण)** रुच् (अच्छा लगना) अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। जैसे, बालकाय मोदकं रोचते। पुत्राय दुग्धं रोचते।

***नियम ३९–(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोप)** क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय अर्थकी धातुओ के साथ जिस पर क्रोध किया जाय, उसमे चतुर्थी होती है। राम. मूर्खाय (राम मूर्ख पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति।

***नियम ४०–कथ्**, निवेदय, उपदिश्, धारय (ऋणी होना), स्पृह्, कल्पते (होना), संपद्यते (होना) तथा हितम् (हित), सुखम् के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—शिष्याय (शिष्य को) कथयति। राम देवदत्ताय शत (राम देवदत्त का सौ रु०) धारयति। विद्या ज्ञानाय कल्पते, संपद्यते।

***नियम ४१–(तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या)** जिस प्रयोजन के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उसमे चतुर्थी होती है। जैसे मोक्षाय हरिं भजति। शिशु दुग्धाय क्रन्दति।

नियम ४२–चतुर्थी के अर्थ मे 'अर्थम्' और 'कृते' अव्ययो का प्रयोग होता है। कृते के साथ षष्ठी होती है। भोजनार्थम्, भोजनस्य कृते (खाने के लिए)।

***नियम ४३–(सधि) (एचोऽयवायाव)** ए को अय्, ओ को अव्, ऐ का आय्, औ को आव् हो जाता है, बाद मे कोई स्वर हो तो। जैसे ने+अनम् = नयनम्। हरे + ए = हरये। गुरो + ए = गुरवे। गै + अक = गायक। द्वौ + अत्र = द्वावत्र।

अभ्यास ११

१ उदाहरण-वाक्य —१ बालक को लड्डू अच्छा लगता है—बालकाय मोदक रोचते। २ नृप. दुर्जनेभ्य (राजा दुर्जनो पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति। ३ गुरुः शिष्याय (शिष्य को) कथयति, निवेदयति, उपदिशति। ४ हरिः पुष्पेभ्यः (फूलो को) स्पृहयति। ५ विद्या अर्थाय कल्पते, सपद्यते, भवति (धन के लिए है)। ६ ब्राह्मणाय (ब्राह्मण का) हितम्, सुख वा भवेत्। ७ शिशु दुग्धाय (दुग्धार्थम्, दुग्धस्य कृते) क्रन्दति। ८ तत् पुस्तक पठ। ९ एतत् राज्य रक्ष। १०. कि कार्य करोषि? ११ सर्वाणि पुस्तकानि शिष्येभ्य. सन्ति। १२ अन्यत् (इतरत्) पुस्तक पठ। १३ द्वावत्र आगच्छत'। १४ बालकावद्य क्रीडत.।

२ संस्कृत बनाओ —१ इस लडकी को यह फूल अच्छा लगता है। २ उस बालक को यह पुस्तक अच्छी लगती है। ३ गुरु शिष्य पर क्रोध करता है। ४. यह दुर्जन उस सज्जन से द्रोह करता है। ५ वह मूर्ख इस विद्वान् से ईर्ष्या करता है (ईर्ष्य, असूय)। ६ वह गुरु इन शिष्यो को उपदेश देता है। ७ राजा सेनापति से कहता है। ८ शिष्य गुरु से भोजन के लिए (अर्थम्, कृते) निवेदन करता है। ९ वह मुनि मोक्ष के लिए ईश्वर को भजता है। १० चार वर्ण है, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ११. वह गुरु इन शिष्यो को विद्या देता है। १२ राम ये फल चाहता है (स्पृह्)। १३. सारे पापो को छोडो। १४. ये क्षत्रिय उन वैश्यो और शूद्रो की रक्षा करे। १५ यह दूसरी (अन्य, इतर) पुस्तक है। १६. वह मनुष्य राम का सौ रु० का ऋणी है। १७. शिष्य का हित हो (हितम्, सुखम्)।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	बालक पुस्तक रोचते।	बालकाय पुस्तक रोचते।	३८
(२)	शिष्ये क्रुध्यति।	शिष्याय क्रुध्यति।	३९
(३)	शिष्य कथयति, उपदिशति।	शिष्याय कथयति, उपदिशति।	४०

४ अभ्यास —(क) यत्, तत्, एतत्, किम्, सर्व, विश्व के नपु० के पूरे रूप लिखो। (ख) इनके लट्, लोट्, विधिलिङ् के रूप लिखो—क्रुध्, उपदिश्, भज्, निवेदय, धारय।

५ वाक्य बनाओ —रोचते, क्रुध्यति, द्रुह्यति, धारयति, स्पृहयति, कथयति, भजति, अर्थम्।

६. संधि करो —मुने + ए, कवे + ए, जे + अति, जे + अ, शे + अनम्, गुरो + ए, पो + अन', भो + अति, नै + अक, कै + अ, पौ + अकः, प्रभौ + अ', द्रौ + अकः।

७ सधि-विच्छेद करो —सज्जनावत्र, बालावद्य, ब्राह्मणाविदानीम्, द्वावेतौ, भावक, परिचायक, यतये, कवये, शिशवे, साधवे, गुरवे।

शब्दकोष—२७५+२५=३००] अभ्यास १२ (व्याकरण)

(क) वृक्ष: (वृक्ष), प्रासाद (महल)। शैशवम् (बाल्यकाल), उपवनम् (वाटिका)। प्रजा (प्रजा), वेला (समय)। (६)। (ख) भी (डरना), त्रै (रक्षा करना), अधि+इ (पढना), आनी (लाना)। (४)। (ग) ऋते (बिना), आरात् (१ समीप, २ दूर), प्रभृति (उक्त समय से लेकर), आरभ्य (आरम्भ करके), बहि (बाहर)। (५)। (घ) पूर्व (१ पूर्वदिशा, २ पहले), पश्चिम (पश्चिम दिशा), उत्तर (उत्तर दिशा), दक्षिण (१ दक्षिण दिशा, २ चतुर) प्राक् (१ पूर्व की ओर, २ पहले), प्रत्यक् (पश्चिम की ओर), उदक् (उत्तर की ओर), दक्षिणा (दक्षिण की ओर), भिन्न (अतिरिक्त, अलावा), अतिरिक्त (भिन्न)। (१०)।

सूचना—(क) वृक्ष—प्रासाद, रामवत्। शैशव—उपवन, गृहवत्। प्रजा—वेला, रमावत्।

व्याकरण (सर्वनाम स्त्रीलिंग, पचमी, गुणसंधि)

१ सर्व शब्द के स्त्रीलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द स २९ ग)। सक्षिप्तरूप लगाकर विश्व आदि (अभ्यास १०) के रूप बनाओ। सूचना—रमा शब्द से सर्व आदि के स्त्रीलिंग मे ५ स्थानो पर अन्तर होगे। १ च एक अस्यै। २ ३ प और ष. एक. अस्या। ४ ष बहु आसाम्। ५ स एक अस्याम्। तत् आदि का प्रथमा एक मे सा, या, एषा, का होता है। आगे ता, या, एता, का, का रूप रमावत् चलावे।

२ भी आदि के लट् मे क्रमश ये रूप होगे—बिभेति, त्रायते (सेवतेवत्), अधीते, आनयति (भवतिवत्)।

नियम ४४–(ध्रुवमपायेऽपादानम्) जिससे कोई वस्तु आदि अलग हो, उसे अपादान कहते हैं।

*नियम ४५–(अपादाने पञ्चमी) अपादानमे पचमी होती है। जैसे, वृक्षात् पत्र पतति।

*नियम ४६–(अन्यारादितरर्ते०) अन्य, आरात्, इतर (तथा अन्य अर्थवाले ओर भी शब्द), ऋते, पूर्व आदि दिशावाची शब्द (इनका देश, काल अर्थ हो तो भी), प्रभृति, बहि, शब्दो के साथ पचमी होती है। जैसे—ज्ञानाद् ऋते न मोक्ष.। ग्रामात् पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण प्राक् आदि (गाँव से पूर्व आदि की ओर)। शैशवात् प्रभृति (बचपन से लेकर)। ग्रामाद् बहि।

*नियम ४७–(भीत्रार्थाना भयहेतु) भय और रक्षा अर्थ की धातुओ के साथ भय के कारण में पंचमी होती है। चोराद् बिभेति। चोरात् त्रायते।

नियम ४८–(आख्यातोपयोगे) जिससे विद्या आदि पढी जाए, उसमें पंचमी होती है। उपाध्यायादधीते। गुरो पठति।

नियम ४९–(अदेङ् गुण)। अ, ए, ओ को गुण कहते है।

*नियम ५०–(सधि) (आद्गुण) अ या आ के बाद इ या ई को ए, उ या ऊ को ओ, ऋ या ॠ को अर्, ऌ को अल् होता है। जैसे, रमा+ईश=रमेश:, पर+उपकार:=परोपकार, महा+ऋषि=महर्षि., तव+ऌकार,=तवल्कार।

अभ्यास १२

१ **उदाहरण-वाक्य** — १ उस वृक्ष से यह पत्ता गिरता है—तस्माद् वृक्षाद् एतत् पत्र पतति। २. तस्माद् अश्वात् स नर पतति। ३ प्रासादाद् बाल. अपतत्। ४ तस्माद् गुरो. अधीते, पठति वा। ५ चोराद् बिभेति। ६ चोरात् त्रायते। ७ रामाद् अन्यः (इतर, भिन्न, अतिरिक्त) क सत्य वदेत्। ८ धनाद् ऋते न सुखम्। ९ एषा बालिकेच्छति लतामेताम्। १० एता सर्वा. (विश्वा) प्रजा. धर्म रक्षन्ति। ११ प्रजेच्छति नृपम्। १२ पश्येदानीम्। १३. नेदानी गच्छ। १४ पश्योपरि। १५ केदानीं वेला।

२ **सस्कृत बनाओ** —१. इस वृक्ष से ये फूल गिरे। २. उस महल से वह लडकी गिरी। ३ किस घोडे से वह सेनापति गिरा? ४ जिस नगर से वह राजा इस गॉव मे आया, उसी नगर को अब गया है। ५ उस पाठशाला से वह लडकी यहाँ आई। ६ उस गुरु से वह शिष्य पढता है (अधि+इ)। ७ उसने गुरु से पढा। ८ यह लडकी चोर से डरती है। ९ वह ब्राह्मण इस कन्या को उस राक्षस से बचाता है। १० प्रजा से राजा के लिए धन लाओ। ११ क्षत्रिय के अतिरिक्त (अन्य, इतर, भिन्न, अतिरिक्त) कौन इस प्रजा को दु ख से बचाता है? १२ धर्म के बिना (ऋते) सुख नहीं। १३ गॉव के पास (आरात्) सारी प्रजा है। १४ गॉव के पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर कौन लोग रहते है? १५ बाल्यकाल से लेकर यहाँ ही रहता हूँ। १६ गॉव के बाहर जाओ। १७ अब क्या समय है? १८ वाटिका से फूल लाओ। १९. वृक्ष से फल गिरे। २० उस गुरु से विद्या पढो।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) इद वृक्षात् एते फलानि०।	एतस्माद् वृक्षाद् एतानि फलानि०	३३
(२) त नगरम् अगच्छत्।	तद् नगरम् अगच्छत्।	३३
(३) तेन गुरुणा अधीते।	तस्माद् गुरो अधीते।	४८
(४) चोरेण बिभेति।	चोरात् बिभेति।	४७
(५) ग्रामस्य पूर्व, प्राक्०।	ग्रामात् पूर्व, प्राक्०।	४६

४ **अभ्यास** —यत्, तत्, एतत्, किम्, सर्व, पूर्व के स्त्रीलिंग के पूरे रूप लिखो।

५ **वाक्य बनाओ** —बिभेति, त्रायते, अधीते, आनयति, ऋते, आरात्, प्रभृति, बहिः, पूर्व, भिन्न।

६ **सन्धि करो** —का+इदानीम्। एषा+इच्छति। न+इदम्। पर+उपकार। महा+उदय। महा+उत्सव। वीर+इन्द्र.। महा+ऋषि। राजा+ऋषि.। पश्य+उपरि।

७ **सन्धि-विच्छेद करो.**—नेच्छति, गच्छोपरि, ब्रह्मर्षि., सप्तर्षि, केह, तस्योपरि, सूर्योदय।

शब्दकोष—३०० + २५ = ३२५] अभ्यास १३ (व्याकरण)

(क) इदम् (यह), अदस् (वह) (सर्वनाम)। अङ्कुर (अंकुर), तिल (तिल), माष (उडद), यव (जौ)। बीजम् (बीज)। (७)। (ख) विरम् (रुकना), प्रमद् (प्रमाद करना), निवृ (हटाना), प्रभू (१ उत्पन्न होना, २ समर्थ होना), उद्भू (निकलना), प्रतिदा (बदले मे देना)। जुगुप्स (घृणा करना), जन् (उत्पन्न होना), निली (छिपना)। (९)। (ग) पृथक् (अलग)। (१)। (घ) दूर (दूर), अन्तिक, समीप, निकट, पार्श्व, सकाश (इन ५ का अर्थ है, समीप)। पटु (पटुतर) (१ चतुर, २. उससे चतुर), गुरु (गुरुतर) (१ भारी या श्रेष्ठ, २ उससे भारी या अच्छा)। (८)।

सूचना—(क) अकुर—यव, रामवत्। बीज, गृहवत्।

व्याकरण (इदम्, अदस् (पु०), पञ्चमी, वृद्धिसन्धि)

१ इदम्, अदस के पुलिंग के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द स ३७, ३८, क)।

२ 'विरम्' आदि धातुओ के लट् मे क्रमश ये रूप होगे, विरमति, प्रमाद्यति, निवारयति, प्रभवति, उद्भवति, प्रतियच्छति, (उक्त रूप बनाकर भवतिवत्)। जुगुप्सते, जायते, निलीयते, (उक्त रूप बनाकर सेवतेवत्, देखो अभ्यास १६)।

नियम ५१—(जुगुप्साविराम०) जुगुप्सते, विरमति, प्रमाद्यति के साथ पंचमी होती है। पापात् जुगुप्सते, विरमति। धर्मात् प्रमाद्यति।

※ नियम ५२—(वारणार्थानामीप्सित) जिस वस्तु से किसी को हटाया जाए, उसमे पचमी होती है। यवेभ्य पशु वारयति। पुत्र पापाद् वारयति, निवारयति वा।

※ नियम ५३—जायते, उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति, (उत्पन्न या निकलना अर्थ मे), निलीयते, प्रतियच्छति के साथ पचमी होती है। प्रजापते लोक जायते। हिमालयाद् गङ्गा प्रभवति, उद्भवति। नृपात् चोर निलीयते। तिलेभ्य माषान् प्रतियच्छति।

※ नियम ५४—तुलना मे जिससे तुलना की जाती है, उसमे पंचमी होती है। रामात् कृष्ण पटुतर। धनात् ज्ञान गुरुतरम्।

नियम ५५—(पृथग्विना०) पृथक् और विना के साथ पचमी, द्वितीया और तृतीया तीनो होती है। रामात्, रामेण, रामं विना पृथक् वा।

नियम ५६—(दूरान्तिकार्थेभ्यो०) दूर और निकटवाची शब्दो मे पचमी, द्वितीया और तृतीया तीनो होती है। ग्रामस्य दूरात्, दूरेण, दूरम्।

नियम ५७—(वृद्धिरादैच्) आ, ऐ, औ को वृद्धि कहते है।

※ नियम ५८—(वृद्धिरेचि) अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो 'ऐ', ओ या औ हो तो 'औ' होता है। तदा + एक = तदैक। तस्य + ऐश्वर्यम् = तस्यैश्वर्यम्। तण्डुल + ओदनम् = तण्डुलौदनम्। महा + औषधि = महौषधि।

अभ्यास १३

१ **उदाहरण-वाक्य**—१ यह बालक पाप से घृणा करता है—अयं बालः पापाद् जुगुप्सते, विरमति वा। २ यवेभ्यः इमान् पशून् निवारयति। ३ अमुं पुत्रं पापाद् निवारय। ४ एभ्यः तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छति। ५ अमुष्माद् बालकाद् अयं बालकः पटुतरः। ६ विद्यायाः (विद्या, विद्यया) विना न ज्ञानम्। ७ अस्माद् ग्रामात् पृथक् वस। ८ जनकस्य समीपात् (अन्तिकात्, पार्श्वात्, निकटात्, सकाशात्) आगच्छामि। ९ बालिकैषा आगच्छति। १० तदैकः नरः आगच्छत्। ११ पश्यैताम् लताम्। १२. निवारयैतस्मात् पापात् पुत्रम्।

२ **संस्कृत बनाओ**—(इदम्, अदस् का प्रयोग करो) १ यह बालक धर्म से प्रमाद करता है। २ वह शिष्य इस पाप से रुकता है। ३ मेरा पुत्र पाप से घृणा करता है। ४ यह गुरु उस शिष्य को इस पाप से हटाता है। ५ जौ से इन पशुओं को हटाओ। ६ प्रजापति से यह लोक उत्पन्न होता है। ७ गङ्गा हिमालय से निकलती है। ८ बीजों से अंकुर उत्पन्न होते हैं। ९ वह बालक पिता से छिपता है। १० वह वैश्य इन चावलों से उड़द को बदलता है। ११ उस यति से यह कवि अधिक चतुर है। १२ धन से ज्ञान अधिक बड़ा है। १३ इस कवि के बिना कौन कथा कहेगा। १४. उस गुरु के पास से इस ग्राम में आया हूँ। १५ नगर से दूर वह विद्यालय है। १६. उस गुरु से विद्या पढ़ो।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	अनेन पापेन निवारयति।	अस्मात् पापाद् निवारयति।	५२
(२)	एभिः तण्डुलैः प्रतियच्छति।	एभ्यः तण्डुलेभ्यः०।	५३
(३)	धनेन ज्ञानं गुरुतरं।	धनात् ज्ञानं गुरुतरम्।	५४, ३३
(४)	अस्मिन् ग्रामे आगच्छम्।	इमं ग्रामम् आगच्छम्।	१५

४ **अभ्यास**—(क) इदम् और अदस् के पुंलिंग के पूरे रूप लिखो। (ख) पंचमी किन किन स्थानों पर होती है, उदाहरण सहित बताओ।

५ **वाक्य बनाओ**—जुगुप्सते, विरमति, प्रमाद्यति, जायते, उद्भवति, प्रभवति, प्रतियच्छति, निलीयते, पटुतर, गुरुतर, पृथक्, विना, दूरात्, अन्तिकात्।

६ **संधि करो**—विद्या + एषा। पश्य + एतम्। देव + ऐश्वर्यम्। यदा + एकः। कदा + एकेन। तस्य + एव। सर्वदा + एव। अत्र + एकः। सा + एव। महा + औषधम्। महा + ओषधिः। सदा + एषा। न + एष। का + एषा। अद्य + एव। अथ + एक।

७ **सन्धि-विच्छेद करो**—पश्यैताम्। आनयैतस्याः। निवारयैतस्मात्। सैषा। नैतत्। नैव।

शब्दकोष—३२५ + २५ = ३५०] अभ्यास १४ (व्याकरण)

(क) छात्र (विद्यार्थी), अन्नम् (अन्न)। (२)। (ख) निन्द् (निन्दा करना), अर्च् (पूजा करना), शुच् (शोक करना), जप् (जप करना), आलप् (बात करना), आह्वे (बुलाना), तॄ (तैरना), ध्यै (ध्यान करना), अभिलष् (चाहना), जीव् (जीना), खन् (खोदना)। (११)। (ग) निमित्तम्, कारणम्, हेतु (तीनों का अर्थ है 'कारण'), उत्तरत (उत्तर की ओर), दक्षिणत (१ दक्षिण की ओर, २ दाहिनी ओर), पुर॰ (सामने), पुरस्तात् (सामने), उपरिष्टात् (ऊपर की ओर), अवस्तात् (नीचे की ओर), पश्चात् (पीछे), अग्रे (आगे)। (११)। (घ) श्रेष्ठ (श्रेष्ठ), [पटुतम (सबसे अधिक चतुर)] (१)।

सूचना—(क) छात्र, रामवत्। अन्न, गृहवत्। (ख) निन्द्—खन्, भवतिवत।

व्याकरण (इदम्, अदम् (नपु०), षष्ठी, पूर्वरूपसन्धि)

१ इदम्, अदस् के नपुसक लिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द ३७, ३८ख)।

२ संक्षिप्त रूप लगाकर भवतिवत् निन्द् आदि के दसों लकारो मे रूप चलाओ। जैसे, निन्दति, शोचति, आह्वयति, तरति, ध्यायति, अभिलषति, जीवति, खनति।

सूचना—षष्ठी दो या अधिक शब्दो का केवल सम्बन्ध बताती है, उसका क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध नही है, अत॰ संस्कृत मे षष्ठी को कारक नही मानते है।

*नियम ५९—(षष्ठी शेषे) सम्बन्ध का बोध कराने के लिए षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, गङ्गाया जलम्। रामस्य पुस्तकम्। देवदत्तस्य धनम्। रामायणस्य कथा।

*नियम ६०—(षष्ठी हेतुप्रयोगे) हेतु शब्द के साथ षष्ठी होती है। अन्नस्य हेतो॰ वसति।

*नियम ६१—(निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्) निमित्त अर्थवाले शब्दों (निमित्त, कारण, हेतु, प्रयोजन) के साथ प्राय सभी विभक्तियाँ होती है। किं निमित्तं वसति, केन निमित्तेन, कस्मै निमित्ताय। कस्य हेतो, कस्मात् कारणात्, केन प्रयोजनेन।

*नियम ६२—(अधीगर्थदयेशां कर्मणि) स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ कर्म में षष्ठी होती है। मातु स्मरति (खेदपूर्वक माता का स्मरण करता है)।

*नियम ६३—(षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन) उपरि, उपरिष्टात्, अध, अवस्तात्, पुर, पुरस्तात्, पश्चात्, अग्रे, दक्षिणत, उत्तरत के साथ षष्ठी होती है। ग्रामस्य दक्षिणत, उत्तरत आदि।

*नियम ६४—(यतश्च निर्धारणम्) बहुतो मे से एक छाँटने अर्थ मे जिसमे से छाँटा जाए, उसमे षष्ठी और सप्तमी दोनो होती है। छात्राणां छात्रेषु राम श्रेष्ठ, पटुतम॰।

*नियम ६५—(एङ पदान्तादति) पद (सुबन्त या तिङन्त) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो, अ को पूर्वरूप (ए या ओ जैसा रूप) हो जाता है। (इस सन्धि के निर्देश के लिए ए ओ के बाद ऽ चिह्न लगता है)। हरे + अव = हरेऽव। विष्णो + अव = विष्णोऽव।

अभ्यास १४

१ उदाहरण-वाक्य—१ यह देवदत्त की पुस्तक है—इद देवदत्तस्य पुस्तकम् अस्ति। २ रामस्य पुत्रम् आह्वय। ३ स गृहस्य कार्यं ध्यायति। ४ अजाया दुग्धम् अभिलषति। ५ अध्ययनस्य हेतो (पढाई के लिए) जीवति। ६ त्व कस्य हेतो॰ (कस्मात् कारणात्) शोचसि। ७ मातु स्मरति। ८ ग्रामस्य पुर, पुरस्तात्,अग्रे, पश्चात् वनम् अस्ति। ९ गृहस्याग्रे वसुधा खनति। १० शिष्याणा शिष्येषु वा कृष्ण॰ श्रेष्ठ, पटुतम॰। ११ नराणा नरेषु वा ब्राह्मण श्रेष्ठ। १२ अधीतेऽत्र शिष्य। १३. त्रायतेऽधुना नृप॰। १४ दुर्जन ब्राह्मण निन्दति। १५ प्राज्ञ ईश्वरमर्चति, जपति वा। १६ छात्र गुरुमालपति। १७ बाल गङ्गा तरति (गङ्गाया जले वा तरति)।

२ सस्कृत बनाओ—(क) १ यह गगा का जल है। २ इस वृक्ष के ये फूल है। ३ बालक की यह पुस्तक है। ४ यह धन किसका है? ५ तुम यहाँपर किसलिए रहते हो? ६ राम पिता को स्मरण करता है। ७ मै धन के निमित्त जीता हूँ। ८ इस नगर के उत्तर और दक्षिण की ओर वृक्ष है। ९ घर के ऊपर, नीचे, आगे और पीछे की ओर आग जल रही है। १० पुस्तको मे गीता श्रेष्ठ है। (ख) ११ मूर्ख गुरु की निन्दा करता है। १२ राम सज्जन की पूजा करता है। १३ कृष्ण शोक करता है। १४. यति प्रभु को जपता है। १५ यह बालक बालिका से बात करता है। १६ राम श्याम को बुलाता है। १७ यह फूल जमुना के जल मे तैर रहा है। १८ तू ईश्वर का ध्यान करता है। १९ वह धन चाहता है (अभिलष्)। २० मूर्ख धन के निमित्त ही जीते है।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	(१) जनक स्मरति।	जनकस्य स्मरति।	६२
	(२) वृक्षस्य एते पुष्पानि।	वृक्षस्य एतानि पुष्पाणि।	३३,१६
	(३) गुरो॰ निन्दति।	गुरु निन्दति।	१३

४ अभ्यास—(क) २ (ख) को लोट्, लट्, विधिलिङ् मे परिवर्तित करो। (ख) इदम्, अदस् के नपुसक लिंग के पूरे रूप लिखो। (ग) इन धातुओ के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—निन्द्, जप्, अर्च्, आह्वे, तॄ, जीव्, खन्, शुच्।

५ वाक्य बनाओ—हेतो॰, निमित्तेन, स्मरति, श्रेष्ठ, पुर, अग्रे, पश्चात्, दक्षिणत॰।

६ सन्धि करो—याचते+अधुना। हरे+अव। विष्णो+अव। अधीते+अधुना। रोचते+अग्नि। पुस्तके+अस्मिन्। विनाल्ये+अस्मिन्। याचते+अमुम्।

७ सन्धि-विच्छेद करो—अधीतेऽत्र। त्रायतेऽधुना। लोकेऽस्मिन्। केऽत्र। तेऽस्मिन्।

शब्दकोष—३५०+२५ = ३७५] **अभ्यास १५** (व्याकरण)

(क) पाक (पचना), उपदेश (उपदेश)। शयनम् (सोना), गमनम् (जाना), पठनम् (पढ़ना), दानम् (दान), वस्त्रम् (वस्त्र)। (७)। (ख) गर्ज् (गरजना), मूर्छ् (मूर्छित होना), श्रि (१ आश्रय लेना, २ सेवा करना), भृ (पालन करना), सृ (चलना), वे (बुनना), भूयात् (होवे, आशीर्वाद)। (७)। (ग) समक्षम् (सामने), मध्ये (बीचमें), अन्तः (अन्दर), अन्तरे (अन्दर), तुल्यः, सदृशः, समः (तीनों का अर्थ है, समान), आयुष्यम्, कुशलम्, भद्रम्, शम् (चारों आशीर्वाद अर्थ में आते हैं, कुशल हो)। (११)

सूचना—(क) पाक—उपदेश, रामवत्। शयन—वस्त्र, गृहवत्। (ख) गर्ज्—वे, भवतिवत्।

व्याकरण (इदम् अदस् (स्त्री०), षष्ठी, दीर्घसंधि)

१ इदम्, अदस् के स्त्रीलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३७, ३८ ग)

२ गर्ज् आदि के रूप भवतिवत्। जैसे, गर्जति, श्रयति, भरति, सरति, वयति।

***नियम ६६**—(कर्तृकर्मणोः कृति) कृदन्त शब्द [जिनके अन्त में कृत् प्रत्यय अर्थात् तृच् (तृ), क्तिन् (ति), अच् (अ), घञ् (अ), ल्युट् (अन) आदि हों] के कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है। जैसे—शिशोः शयनम् (बच्चे का सोना), रामस्य गमनम्। सूचना—पुस्तक पढ़ता है, इस प्रकार के वाक्यों का दो प्रकार से अनुवाद होता है, पुस्तकं पठति या पुस्तकस्य पठनं करोति। स्मरण रक्खें कि धातु का कृदन्तरूप बनने पर उसके साथ षष्ठी होगी और शुद्ध धातु के साथ द्वितीया।

***नियम ६७**—कृते (लिए), समक्षम्, मध्ये, अन्तः, अन्तरे के साथ षष्ठी होती है। भोजनस्य कृते। गुरोः समक्षम्। छात्राणां मध्ये। गृहस्य अन्तः, अन्तरे वा।

***नियम ६८**—(दूरान्तिकार्थैः षष्ठी०) दूर और समीपवाची शब्दों के साथ षष्ठी और पचमी दोनों होती हैं। ग्रामस्य ग्रामाद् वा दूरं, समीपं, पार्श्वं, सकाशम्।

***नियम ६९**—(तुल्यार्थैः ०) तुल्यवाची शब्दों (तुल्य, सदृश, सम) के साथ षष्ठी और तृतीया दोनों होती हैं। कृष्णस्य कृष्णेन वा तुल्यः, सदृशः, समः।

***नियम ७०**—(चतुर्थी चाशिष्यायुष्य०) आशीर्वादसूचक शब्दों (आयुष्यम्, भद्रम्, कुशलम्, सुखम्, हितम्, अर्थः, प्रयोजनम्, शम्, पथ्यम् आदि) के साथ षष्ठी और चतुर्थी दोनों होती हैं। कृष्णस्य कृष्णाय वा भद्रम्, कुशलम्, शम्, भूयात्।

***नियम ७१**—(अकः सवर्णे दीर्घः) अक् (अ इ उ ऋ) के बाद सवर्ण अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर दीर्घ अक्षर हो जाता है। अ या आ+अ या आ = आ। इ या ई+इ या ई = ई। उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ। ऋ या ॠ + ऋ या ॠ = ॠ। विद्या + आलयः = विद्यालयः। करोति + इदम् = करोतीदम्। गुरु+उपदेशः= गुरूपदेशः।

अभ्यास १५

१ उदाहरण-वाक्य —१. बच्चे का सोना—शिशोः शयनम्। २ पुस्तकस्य पठनम्। ३. धनस्य दानम्। ४ भोजनस्य कृते (लिए)। ५ गृहस्य मध्ये, अन्तः, अन्तरे वा। ६ अस्याः समक्षम्। ७ ग्रामस्य दूरात्। ८ जनकस्य समीपात्, पार्श्वात्, सकाशाद् वा। ९ शिष्यस्य आयुष्य भद्र कुशल श वा भूयात्। १०. पठतीय बाला। ११. पठतूपदेशम्। १२ वसतीतासौ बाला (यह लडकी यहाँ रहती है)। १३ मेघाः गर्जन्ति। १४ वस्त्र वयति। १५ शिशु मूर्छति। १६. शिष्यः गुरु श्रयति। १७ जनकः पुत्र भरति। १८ वायु सरति।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ इस लडकी का पढना उसे अच्छा लगता है। २ उस कन्या का खाना पकाना इसे अच्छा लगता है। ३. इस लडकी का जाना देखो। ४ उस बालिका का सोना देखो। ५. इस गुरु का उपदेश कैसा है? ६. यह कन्या धन का दान करना चाहती है। ७ अध्ययन के लिए (कृते) गुरु के सामने जाओ। ८. भोजन के लिए घर के अन्दर आओ। ९. गाँव के समीप दूर से इस लडकी के लिए फूल लाओ। १० राम के तुल्य कोई नही है। ११ इस बालक का कुशल हो। १२. इस लडकी की पुस्तके है। (ख) १३ यह बादल गरजता है। १४. वह पुत्र मूर्छित होता है। १५ यह बालक पिता का आश्रय लेता है। १६. राजा प्रजा का पालन करता है। १७ हवा चलती है। १८. वह वस्त्र बुनता है। १९. तू खाता है, पीता है, बात करता है और जीता है। २० मै ध्यान करता हूँ, तैरता हूँ, आता हूँ और जाता हूँ।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	(१) अस्य बालिका पठनम्०।	अस्याः बालिकायाः पठनम्०।	६६,३३
	(२) भोजनस्य पाकः अमु रोचते।	भोजनस्य पाकः अस्मै रोचते।	३८
	(३) इमे पुस्तकानि०।	इमानि पुस्तकानि०।	३३

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को लोट् और लङ् मे बदलो। (ख) इदम्, अदस् के स्त्रीलिंग के पूरे रूप लिखो। (ग) इन धातुओ के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—गर्ज्, मूर्छ्, श्रि, भृ, सृ, वे। (घ) षष्ठी विभक्ति किन-किन स्थानो पर होती है। सोदाहरण लिखो।

५. वाक्य बनाओ —गमनम्, पाकः, उपदेशः, समक्षम्, मध्ये, अन्तः, कुशलम्, शम्।

६ संधि करो —हिम + आलयः। दैत्य + अरिः। शिष्ट+आचार। तदा + अगच्छत्। रत्न+आकरः। श्री+ईशः। पठति+इदम्। गच्छति+इयम्। विष्णु+ उदयः। होतृ+ऋकारः।

७. संधि-विच्छेद करो —लिखतीदम्। वसतीहासौ। हसतीयम्। इतीह। भानूदयः। इहायम्।

शब्दकोष—३७५ + २५ = ४००] **अभ्यास १६** (व्याकरण)

(क) युष्मद् (तू) (सर्वनाम) । सिंह (सिंह), प्रातःकाल (प्रातःकाल), मध्याह्न (दोपहर), सायंकाल (सायंकाल), मार्ग (मार्ग) । निशा (रात्रि) । (७) । (ख) सेव् (सेवा करना), लभ् (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहना), [याच् (माँगना)], वृत् (होना), ईक्ष् (देखना), निरीक्ष् (१ देखना, २ निरीक्षण), वन्द् (प्रणाम करना), भाष् (कहना), कूर्द् (कूदना), यत् (यत्न करना), शिक्ष् (सीखना), कम्प् (काँपना), भिक्ष् (माँगना), ईह् (चाहना), शुभ् (शोभित होना), रम् (१ लगना, २ रमण करना) । (१८) ।

सूचना—(क) सिंह—मार्ग, रामवत् । (ख) सेव्—रम् , सेवतेवत् ।

व्याकरण (युष्मद् , लट् (आ०), सप्तमी, श्चुत्वसंधि)

१. युष्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ३५) ।

२	सेव् , लट् (आत्मनेपद)			संक्षिप्त	एक०	द्वि०	बहु०	
सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र०पु०	रूप	अते	एते	अन्ते	प्र०पु०
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म०पु०		असे	एथे	अध्वे	म०पु०
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ०पु०		ए	आवहे	आमहे	उ०पु०

संक्षिप्तरूप लगाकर लभ् आदि के रूप बनाओ । जैसे, लभते, वर्धते, मोदते, वर्तते ईक्षते, वन्दते, भाषते, कूर्दते, यतते, शिक्षते, भिक्षते, ईहते, शोभते, रमते । सूचना—भ्वादिगण (१) की सभी आत्मनेपदी धातुओं के रूप सेव् के तुल्य चलेंगे । पूर्वोक्त रुच् , त्रै आदि आत्मनेपदी धातुओं के भी रूप सेव् के तुल्य चलेंगे ।

नियम ७२–(आधारोऽधिकरणम्) किसी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं, जहाँ पर या जिसमें वह कार्य किया जाता है ।

ꣳनियम ७३–(सप्तम्यधिकरणे च) अधिकरण कारक में सप्तमी होती है । विद्यालये पठति । पाठशालायाम् उपाध्यायाः सन्ति । (नियम ६४ भी देखो) ।

ꣳनियम ७४–'विषय में, बारे में' अर्थ में तथा समय-बोधक शब्दों में सप्तमी होती है । मोक्षे इच्छास्ति (मोक्ष के विषय में इच्छा है) । दिने, दिवसे, प्रातःकाले, मध्याह्ने, सायंकाले कार्यं करोति । शैशवे, यौवने, वार्धके (बाल्य, यौवन, वृद्धत्व समय में) ।

ꣳनियम ७५–(स्तोः श्चुना श्चुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः श् और चवर्ग हो जाता है । जैसे, रामस् + च = रामश्च । कस् + चित् = कश्चित् । सत् + चित् = सच्चित् । शार्ङ्गिन् + जय = शार्ङ्गिञ्जय । याच् + ना = याच्ञा । सूचना—स्मरण रक्खें कि राम , बाल , क आदि पुंलिंग एकवचन में विसर्ग स् के स्थान पर ही रहता है, अतः सन्धि के कार्यों में स् रक्खा जाता है । आगे भी स् = ः ही सन्धिनियमों में समझें ।

अभ्यास १६

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ घर मे बालक है—गृहे बालकः वर्तते । २. विद्यालये छात्राः बालिकाश्च वर्तन्ते । ३ स बाल. तत्र फलम् आसने वर्तते । ४ विद्या धर्मेण शोभते । ५ सिंह वने निशाया भ्रमति । ६ यति. धर्मे रमते । ७ सायकाले मार्गे बालाः कूर्दन्ते । ८ त्व गुरु सेवसे, सुख लभसे, मोदसे, वर्धसे च । ९ कवि नृप धन याचते, त भाषते वन्दते च । १०. य. दु ख सहते, विद्या शिक्षते, अन्न भिक्षते, ज्ञानमीहते, स लोके मोदते । ११ त्वया सहाय क अस्ति ? १२. तुभ्य कि रोचते ? १३. तव पुस्तकमहमीक्षे । १४ त्वयि सत्य वर्तते । १५ वन्दे मातरम् ।

२ **सस्कृत बनाओ** —(क) १. तू राजा की सेवा करता है, सुख पाता है और सुखपूर्वक रहता है । २ नगर मे मनुष्य है । ३ बालक मार्ग मे सन्यासी को देखता है (ईक्ष्) । ४. मोक्ष के विषय मे तुम यत्न करते हो । ५ तुम दु.ख सहते हो, गुरु की सेवा करते हो और ससार मे शोभित होते हो । ६ वह धन मे रमता है । ७ वृक्ष हिलता है (कम्प्) । ८ साधु राजा से अन्न माँगता है (भिक्ष्) । ९ बालक पिता को प्रणाम करता है, घर मे कूदता है और सत्य ही बोलता है (भाष्) । १० विद्या सत्य से शोभित होती है । ११ तुम क्या चाहते हो (ईह्) ? १२ पशुओ मे सिंह श्रेष्ठ है । (ख) १३. मध्याह्न मे तू यहाँ आना । १४ मै तुमको बुलाता हूँ । १५ तेरे साथ कौन है ? १६. तुझे फल अच्छा लगता है । १७ तेरी पुस्तक कहाँ है ? १८ तुझमे ज्ञान है । १९. तू बाल्यकाल मे विद्या सीखता है । २०. तू धन, सुख और ज्ञान पाता है ।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	(१) त्व नृपस्य सेवसे ।	त्व नृप सेवसे ।	१३
	(२) साधुः नृपात् अन्न भिक्षते ।	साधु नृपम् अन्न भिक्षते ।	२१
	(३) विद्या सत्यात् शोभते ।	विद्या सत्येन शोभते ।	२४

४ **अभ्यास** —(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) युष्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो । (ग) इनके लट् के पूरे रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, वृत्, ईक्ष्, भाष्, यत्, शिक्ष्, भिक्ष्, शुभ्, रम् । (घ) परस्मैपद और आत्मनेपद की पहचान बताओ ।

५ **वाक्य बनाओ** —श्रेष्ठः, दिने, शैशवे, सायकाले, सेवते, लभते, वर्तते, ईक्षे, यतसे ।

६ **सधि करो**.—रामस् + च । हरिस् + च । बालस् + चलति । सिंहास् + चरन्ति । तत् + च । उत् + चयः । सन् + जयः । हरिस् + शेते । सत् + जन । उत् + चारणम् । तत् + चरित्रम् । कस् + चन ।

७ **सधि-विच्छेद करो**.—बालिकाश्च । हरिश्च । तच्च । इतश्च । उच्चरति । सच्चरित्रः । दुश्चरित्रः ।

शब्दकोष—४०० + २५ = ४२५] अभ्यास १७ (व्याकरण)

(क) अस्मद् (मैं) (सर्वनाम)। स्नेह (स्नेह), विश्वास (विश्वास), अभिलाष (इच्छा), मृग (हरिण), शर (बाण)। शास्त्रम् (शास्त्र)। श्रद्धा (श्रद्धा), निष्ठा (विश्वास), रति (१ प्रेम, २ कामदेव की स्त्री)। (१०)। (ख) स्निह् (स्नेह करना), क्षिप् (फेंकना), मुच् (छोडना), अस् (फेंकना), विश्वस् (विश्वास करना), आदृ (आदर करना), कृत (क्रिया), सति (होने पर)। (८)। (ग) आसक्त (१ अनुरक्त, २. लगा हुआ), युक्त (लगा हुआ), लग्न (लगा हुआ), अनुरक्त (प्रेमयुक्त), प्रवीण, कुशल, निपुण (तीनों का अर्थ है चतुर)। (७)

सूचना—(क) स्नेह—शर, रामवत्। शास्त्र, गृहवत्।

व्याकरण (अस्मद्, लोट् (आ०), सप्तमी, ष्टुत्वसन्धि)

१ अस्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० म० ३६)

२ सेव्—लोट् (आत्मनेपद)				संक्षिप्त रूप	एक०	द्वि०	बहु०	
सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र०पु०		अताम्	एताम्	अन्ताम्	प्र०पु०
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म०पु०		अस्व	एथाम्	अध्वम्	म०पु०
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ०पु०		ऐ	आवहै	आमहै	उ०पु०

संक्षिप्तरूप लगाकर पूर्वोक्त (अभ्यास १६) लभ् आदि के रूप बनाओ।

३ स्निह् आदि के लट् में क्रमश ये रूप होंगे—स्निह्यति, क्षिपति, मुञ्चति, अस्यति, विश्वसिति, आद्रियते। उपर्युक्त रूप बनाकर प्रथम चार के रूप भवतिवत्।

*नियम ७६–प्रेम, आसक्ति या आदरसूचक धातुओं और शब्दों (स्निह्, अभिलष्, अनुरञ्ज्, आदृ, रति, आसक्त आदि) के साथ सप्तमी होती है। मयि स्नेह।

*नियम ७७–(यस्य च भावेन भावलक्षणम्) एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रिया में सप्तमी होती है। रामे वनं गते दशरथः मृत.।

*नियम ७८–(आयुक्तकुशलाभ्याम्०, साधुनिपुणाभ्याम्०) संलग्न अर्थवाले शब्दों (व्यापृत., लग्न, आसक्त., युक्त, व्यग्र, तत्पर.) और चतुर अर्थवाले शब्दों (कुशलः, निपुण, साधु, पटु, प्रवीण, दक्ष., चतुर) के साथ सप्तमी होती है। कार्ये लग्न., तत्पर,। शास्त्रे कुशल, निपुण., दक्ष।

*नियम ७९–क्षिप्, मुच, अस् (फेंकना अर्थ की) धातुओं के साथ तथा विश्वास और श्रद्धा अर्थ वाली धातुओं और शब्दों (विश्वसिति, विश्वास, श्रद्धा, निष्ठा, आस्था) के साथ सप्तमी होती है। मृगे बाणं क्षिपति। न विश्वसेदविश्वस्ते।

*नियम ८०–(ष्टुना ष्टु) स् या तवर्ग के बाद में या पहले ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमश ष् और टवर्ग हो जाते हैं। जैसे—रामस् + षष्ठ.= रामष्षष्ठः। तत् + टीका=तट्टीका। इष् + तम्=इष्टम्। राष् + त्रम्=राष्ट्रम्।

अभ्यास १७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह बालक से स्नेह करता है—सः बालके स्निह्यति। २. तस्य मम पुत्रे स्नेहः वर्तते। ३. अस्माकं धर्मेऽभिलाषः वर्तताम्। ४. नृपः प्रजासु आद्रियते। ५. धर्मे रतिः वर्तताम्। ६. सत्ये मम श्रद्धा, निष्ठा, विश्वासः वा वर्तते। ७. जनकः पुत्रे विश्वसिति। ८. कार्ये कृते सति अहं वनमागच्छम्। ९. भोजने कृते सति सः विद्यालयमगच्छत्। १०. रामः तस्यां कन्यायाम् अनुरक्तः अस्ति। ११ कृष्णः शास्त्रेषु निपुणः, कुशलः, प्रवीणः अस्ति। १२ अहं कार्ये लग्नः, युक्तः, आसक्तः अस्मि। १३ सेनापतिः मृगे शरान् मुञ्चति, क्षिपति, अस्यति वा। १४. छात्रः गुरुं सेवताम्, विद्यां लभताम्, दुःखं सहताम्, ज्ञानेन वर्धतां मोदतां च। १५ त्वं मोदस्व, अहं शिक्षै।

२ संस्कृत बनाओ—(क) १. पिता पुत्र से स्नेह करता है। २. वह सत्य में विश्वास करता है। ३ गुरु शिष्यों में आदर पाता है। ४ हरि रमा पर अनुरक्त है। ५. हमारी धर्म में रति है। ६ मेरी ईश्वर में श्रद्धा और निष्ठा है। ७. मेरी सत्य में अभिलाषा बढ़े। ८ मेरे भोजन कर लेने पर बालक आया। ९ बालक के सोने पर पिता घर से बाहर आया। १०. मैं इस समय अध्ययन में लगा हुआ हूँ। ११ हरि शास्त्रों में निपुण और कुशल है। १२ राजा ने मृगों पर बाण चलाए (मुच्, क्षिप्)। (ख) १३. साधु भिक्षा माँगे (भिक्ष्)। १४. वृक्ष काँपे। १५. मैं सत्य में रमण करूँ (रम्)। १६. तू प्रसन्न हो (मुद्)। १७. तू बूढ़े। १८. मैं कूदूँ। १९ मैं सेवा करूँ। २० मैं देखूँ (ईक्ष्)।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	मम भोजन कृते सति०।	मयि भोजने कृते सति।	७७, ३३
(२)	पुत्रस्य शयन कृते सति०।	पुत्रे शयने कृते सति।	७७, ३३
(३)	नृपेण मृगेषु शराः अक्षिपत्।	नृपः मृगेषु शरान् अक्षिपत्।	४

४ अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ। (ख) अस्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो (ग) सप्तमी किन स्थानों पर होती है, सोदाहरण लिखो। (घ) लोट् (आ०) के संक्षिप्तरूप बताओ।

५. वाक्य बनाओ :—स्निह्यति, आद्रियते, विश्वसिति, क्षिपति, मुञ्चति, अस्यति, आसक्तः, लग्नः, निपुणः, साधुः, मह्यम्, अस्माकम्, मयि, सेवस्व, वर्तताम्।

६ सन्धि करो—हरिस् + षष्ठः। एतत् + टीका। इष् + तः। आकृष् + तः। इष् + तिः। उत् + डीनः। उत् + टङ्कनम्। पृष् + तम्। सृष् + तिः। स्रष् + ता। कृष् + नः। विष् + नुः।

७ सन्धि-विच्छेद करो:—रामष्षष्ठः। उड्डयनम्। तट्टीका। विसृष्टिः। विष्णुः।

८. शुद्ध करो—अहं सेवताम्। त्वं मोदै। सः रमतु। सः लभतु। त्वम् ईक्षताम्। ते वर्तताम्। त्वं लभताम्। अहं यतताम्। ते सहन्तु। त्वं भाषै। अहं वर्धताम्।

शब्दकोष—४२५ + २५ = ४५०] अभ्यास १८ (व्याकरण)

(क) पात्रम्, भाजनम् (दोनो का अर्थ है १ स्थान, २ बर्तन), आस्पदम्, स्थानम्, पदम् (तीनो का अर्थ है, स्थान), प्रमाणम् (प्रमाण)। एकदेश (एक स्थान)। एकता (एकत्व)। (८)। (ख) स्पर्ध् (स्पर्धा करना), शङ्क् (शंका करना), चेष्ट् (चेष्टा करना), कृप् (होना), परा + अय् (भागना), द्युत् (चमकना), वेप् (काँपना), त्रप् (लज्जित होना)। (८)। (ग) एकदा (एकबार), सदा (सर्वदा), एकत (एक ओर से), एकधा (एक प्रकार से), एकमात्रम् (एकमात्र), एकवारम्,-रे (एकबार, एकबार मे)। (६)। (घ) एकाकिन् (अकेला), एकान्त (एकान्त), एकविध (एक प्रकार का)। (३)

सूचना—(क) पात्र—प्रमाण, नित्य एकवचन, नपु०। (ख) स्पर्ध्—त्रप् सेवतेवत्।

व्याकरण (एक शब्द, एकवचनान्त शब्द, लट्, जश्त्वसधि)

१. एक शब्द के तीनो लिगो के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द स० ३९)। एक शब्द का सख्या अर्थ मे केवल एकवचन मे ही रूप चलेगा, 'अन्य' अर्थ मे बहुवचन मे भी।

२. सेव्—लृट् (आत्मनेपद) सक्षिप्त रूप एक० द्वि० बहु०

सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र. पु.	(इ) स्यते	(इ) स्येते	(इ) स्यन्ते	प्र पु.
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म. पु	(इ) स्यसे	(इ) स्येथे	(इ) स्यध्वे	म. पु
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ पु	(इ) स्ये	(इ) स्यावहे	(इ) स्यामहे	उ. पु

सक्षिप्तरूप लगाकर स्पर्ध् आदि के लृट् मे रूप बनाओ। लट् मे स्पर्धते, कल्पते।

*सूचना—(क) इन धातुओ मे 'इष्यते' आदि लगेगा :—सेविष्यते, वर्धिष्यते, मोदिष्यते, सहिष्यते, याचिष्यते, वर्तिष्यते, ईक्षिष्यते, वन्दिष्यते, भाषिष्यते, कूर्दिष्यते, यतिष्यते, शिक्षिष्यते, कम्पिष्यते, भिक्षिष्यते, शोभिष्यते, स्पर्धिष्यते, शङ्किष्यते, चेष्टिष्यते, कल्पिष्यते, पलायिष्यते, द्योतिष्यते, वेपिष्यते, त्रपिष्यते, शयिष्यते, रोचिष्यते। (ख) इनमे 'स्यते' आदि लगेगा.—लप्स्यते, रस्यते, त्रास्यते, अध्येष्यते।

*नियम ८१–पात्र, आस्पद, स्थान, पद, भाजन, प्रमाण शब्द जब विधेय के रूप मे प्रयुक्त होगे तो इनमे नपुसक लिग एक० ही रहेगा। उद्देश्यरूप में होंगे तो अन्य वचन भी होगे। जैसे, गुणा पूजास्थान सन्ति। यूयं मम कृपापात्रं स्थ। भवन्त प्रमाणं सन्ति। अत्र सप्त पात्राणि सन्ति।

*नियम ८२–(संख्याया विधार्थे धा) सभी संख्यावाचक शब्दो से 'प्रकार से' अर्थ मे 'धा' लगता है। 'प्रकार का' अर्थ मे 'विध', 'गुना' अर्थ में 'गुण' तथा 'बार' अर्थ मे 'वारम्' लगता है। जैसे, एकधा, द्विधा, त्रिधा, बहुधा। एकविधः, द्विविध।

*नियम ८३–(झला जशोऽन्ते) झलों (१, २, ३, ४, ऊष्म) को जश् (३, अपने वर्ग के तृतीय अक्षर) होते हैं, झल् यदि पद के अन्त मे हो तो। (पद अर्थात् सुबन्त और तिङन्त)। जगत् + ईश = जगदीशः। षट् + दर्शनम् = षड्दर्शनम्।

अभ्यास १८

१. उदाहरण-वाक्य—१. एक बालक—एकः बालकः। २. एका बालिका। ३ एक फलम्। ४. एक बालकम्, एका बालिकाम्, एक फल चात्रानय। ५ एकस्मै बालकाय, एकस्यै बालायै च फलानि वितर। ६ त्व धनाना पात्रम्, आस्पद, स्थान, पद, भाजन वा असि। ७ पात्रेषु भाजनेषु वा जल वर्तते। ८. आस्पदेषु स्थानेषु वा ते तिष्ठन्ति। ९ भवन्तः प्रमाण सन्ति। १० सः एकाकी अध्ययनात् पलायिष्यते। ११. सूर्यः प्रातःकाले द्योतिष्यते। १२ स. गुरु सेविष्यते, दु.ख सहिष्यते, मोदिष्यते, वर्धिष्यते च। १३. एके एव वदन्ति, अन्ये एव कथयन्ति।

२ संस्कृत बनाओ—**(क)** १ यहाँ एक बालक है। २. वहाँ एक बालिका है। ३ वहाँ एक बर्तन है। ४ एक शिष्य और एक लडकी को ये पुस्तकें दो। ५. एक बालक और एक बालिका की पुस्तकें यहाँ हैं। ६. एक विद्यालय मे मै पढता हूँ और एक पाठशाला मे वह पढती है। **(ख)** ७ तुम सारी विद्याओ के एकमात्र पात्र हो। (पात्र, आस्पद, स्थान पद, भाजन)। ८ तुम सारे ज्ञानो के स्थान हो। ९ आप विद्या मे प्रमाण है। १० यहाँ पर दस बर्तन है। **(ग)** ११ वह स्पर्धा करेगा। १२ वह शका करेगा। १३ तू चेष्टा करेगा। १४ विद्या धर्म के लिए होगी (क्लृप्)। १५ चोर भाग जाएगा। १६ सूर्य एक बार फिर चमकेगा। १७. शिष्य काँपेगा। १८ लडकी लज्जित होगी। १९. वह सेवा करेगा, विद्या सीखेगा, वन्दना करेगा, यत्न करेगा, भिक्षा माँगेगा, प्रसन्न रहेगा और बढेगा। २० मै धन पाऊँगा (लभ्), पढूँगा (अधि+इ) और आनन्द करूँगा (रम्)। **(घ)** २१. इन छात्रो मे एकता है, ये एक प्रकार से ही सब कार्य करते है। २२ एक स्थान पर एक बार मै अकेला एकान्त मे बैठा था, वहाँ एक ओर से एक सिह आ पहुँचा।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	(१) सर्वेषा विद्याना पात्राणि०।	सर्वासा विद्याना पात्रम्।	८१,३३
	(२) भवन्त विद्याया प्रमाणा. सन्ति।	भवन्त विद्याया प्रमाण सन्ति।	८१

४ अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन बनाओ। (ख) एक शब्द के तीनो लिगो के पूरे रूप लिखो। (ग) इन धातुओ के लट् के पूरे रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, वृत्, भाष्, यत्, शिक्ष्, शुभ्, शी, त्रै, रम्, अधि + इ, क्लृप्, ईक्ष्।

५ वाक्य बनाओ—पात्रम्, आस्पदम्, स्थानम्, पदम्, भाजनम्, प्रमाणम्, एकस्यै, एकस्मात्, एकस्या, एकस्मिन्, सेविष्यते, लप्स्यसे, वर्धिष्ये, अध्येष्ये, रस्ये।

६ सन्धि करो—अच् + अन्त.। इक् + अन्तः। दिक् + अम्बर.। वाक् + ईश.। दिक् + ईश.। सत् + आचार.। सत् + उपदेश.। पट् + दर्शनम्। उत् + देश्यम्।

७ सन्धि-विच्छेद करो—सच्चिदानन्द.। सदानन्द.। जगदीशः। दिगन्त.। तदेकम्। दिग्गज.।

शब्दकोष—४५० + २५=४७५] अभ्यास १९ (व्याकरण)

(क) द्वि (दो), उभ (दोनों), उभय (दोनों) (सर्वनाम)। द्विज (१ ब्राह्मण, २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, ३ पक्षी, ४ दाँत), द्विरेफ (भौंरा)। बलम् (बल)। दम्पती (पति-पत्नी), पितरौ (माता-पिता), अश्विनौ (दोनों अश्विनीकुमार) । (९) । (ख) दीक्ष् (दीक्षा देना), भास् (चमकना), आ + लम्ब् (१ सहारा देना, २ सहारा लेना), स्रंस् (गिरना), ध्वंस् (नष्ट होना), व्यथ् (दुःखित होना) (८)। (ग) द्विधा (दो प्रकार से), द्विवारम् (दो बार) । (२) । (घ) द्वयम् (द्वयी) (दो), द्विविध (दो प्रकार का), द्विगुण (दुगुना), युगल, युग, द्वन्द्व (जोड़ा) । (६) ।

सूचना—(क) दम्पती-अश्विनौ, नित्य द्विवचनान्त । (ख) दीक्ष्–व्यथ्, सेवतेवत् ।

व्याकरण (द्विशब्द, द्विवचनान्तशब्द, लङ् (आ०), जश्त्वसंधि)

१. द्विशब्द के तीनों लिंगों के रूप (केवल द्विवचन में) स्मरण करो । (देखो शब्द० स ४०) ।

२. सेव्—लङ् (आत्मनेपद)

				संक्षिप्तरूप	एक	द्वि०	बहु०
असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र पु.	धातुसे पहले	अत	एताम्	अन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म पु	अ +	अथाः	एथाम्	अध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ पु		ए	आवहि	आमहि

संक्षिप्तरूप लगाकर दीक्ष् आदि के रूप चलाओ। अदीक्षत, अभासत, आलम्बत, अक्षमत।

❀ नियम ८४–द्वि और उभ शब्द सदा द्विवचन में ही आते हैं । उभय (दोनों) शब्द तीनों वचनों में आता है। (उभ और उभय के रूप तीनों लिंगों में सर्ववत् चलेंगे)

❀ नियम ८५–(क) दम्पती, पितरौ, अश्विनौ, इनके रूप द्विवचन में ही चलते हैं। इनके साथ क्रिया द्विवचन में आती है। दम्पती, पितरौ, अश्विनौ वा गच्छतः, हसतः, मोदेते। (ख) द्वय, युगल, युग, द्वन्द्व, ये चारों 'दो' अर्थ के बोधक हैं। ये शब्द के अन्त में जुड़ते हैं और नपुंसक लिंग एकवचन रहते हैं। इसके साथ क्रिया एक० में रहती है। जैसे—छात्रद्वयम्, छात्रयुगलम्, छात्रयुगं पुस्तकानि पठति।

❀ नियम ८६–(सापेक्ष सर्वनाम) यत् और तत् शब्द सापेक्ष सर्वनाम हैं (जो वह)। अतः यत् शब्द में जो लिंग, विभक्ति और वचन होगा, वही तत् शब्द में भी होगा। बुद्धिर्यस्य बलं तस्य ।

❀ नियम ८७–'यत्' शब्द 'कि' अर्थ में भी आता है, तब वह नपुंसकलिंग एक० ही रहता है। उसने कहा कि मैं अब जाऊँगा–स अभाषत यत् अहमधुना गमिष्यामि।

❀ नियम ८८–(झलां जश् झशि) झलों (१, २, ३, ४, ऊष्म) को जश् (३, अपने वर्ग का तृतीय अक्षर) होता है, बाद में झश् (३, ४) हो तो। (यह नियम पद के बीच में लगता है।) जैसे, सिध् + धिः = सिद्धिः, ध् को द् । दघ् + धः = दग्धः । क्षुभ् + धः = क्षुब्धः । ऋध् + धः = ऋद्धः ।

अभ्यास १९

१ उदाहरण-वाक्य —१ दो बालक—द्वौ बालकौ। २. द्वे बालिके। ३. द्वे पुस्तके। ४ द्वाभ्या बालकाभ्या, द्वाभ्या बालिकाभ्या च पुस्तकानि वितर। ५. एतयो. द्वयो छात्रयो. रामः पटुतर.। ६ दम्पती भ्रमत। ७ पितरौ आगच्छत.। ८ अश्विनौ बल वितरताम्। ९ उभौ बालकौ उभय पुस्तक (उभयानि पुस्तकानि) पठत.। १० पशुयुगल, पशुयुग, पशुद्वन्द्व, पशुद्वय, पशुद्वयी वा अत्र चरति। ११. द्विजः शिष्यम् अदीक्षत, आलम्बत, शिष्यश्च अवर्धत, अमोदत च। १२. नगरम् अध्वसत. नरा. अव्यथन्त च। १३ सिंह वन गाहते, छात्रश्च जल गाहते।

२ सस्कृत बनाओ —(क) १ दो शिष्य दो बार दो पुस्तक पढते है। २ दो कन्याएँ दो प्रकार से दो पत्र लिखती है। ३ दोनो (उभ, उभय) बालक दुगुना खाना खाते है। ४ दो छात्र (युगल, युग, द्वयम्, द्वयी) वहाँ खेलते है। ५. दो प्रकार से भौरे घूम रहे है। ६ दम्पती ने पुत्र को अवलम्बन दिया। ७. अश्विनीकुमार ज्ञान दे। ८. जो लडकी यहाँ आई थी, वह गई। ९ जिस मनुष्य मे विद्या है, उसमे बल है। १० माता-पिता ने बालक से कहा कि जल लाओ। (ख) ११. गुरुने दीक्षा दी। १२ सूर्य चमका। १३ भौरे ने वृक्ष का सहारा लिया। १४ राजा ने चोर को क्षमा कर दिया। १५ बालक जल मे घुसा (गाह्)। १६ बालिका का वस्त्र पैर से हटा (स्रस्)। १७. घर गिर गया और बालक दु.खित हुआ (व्यथ्)। १८ चोर को शका हुई (शक्), वह डरा, काँपा और भागा। १९ मैने गुरु की सेवा की, सुख पाया (लभ्), बढा और प्रसन्न हुआ। २० बालक ने सीखा, यत्न किया, भिक्षा माँगी, खेला, कूदा और सुखपूर्वक रमा (रम्)।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) छात्रद्वय क्रीडत ।	छात्रद्वय क्रीडति।	८९ (ख)
(२) दम्पती पुत्रम् अभाषत ।	दम्पती पुत्रम् अभाषेताम्।	८५ (क)
(३) या बाला आगच्छत्, स ०।	या बाला आगच्छत्, सा०।	८६

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ। (ख) द्वि और उभ शब्द के तीनो लिंगो के पूरे रूप लिखो। (ग) नित्य द्विवचनान्त शब्द कौनसे है ? लिखो। (घ) इनके लङ् के पूरे रूप लिखो .—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, वृत्, भाष्, यत्, शिक्ष्, रम्, स्पर्ध्, चेष्ट्।

५ वाक्य बनाओ —द्वौ, द्वे, उभौ, उभयम्, दम्पती, पितरौ, द्वयम्, यत्, अवर्धत, अमोदत, अयाचत, अशिक्षत, अचेष्टत, अद्योतत, आलम्बत, अक्षमत, अगाहत।

६ सन्धि करो —सिध्+धि.। बुध्+धि। शुध्+धि। रुध्+ध.। लुभ्+ध.। लभ्+धः। आरभ्+धः। बध्+ध.। वृध्+धि·। बुध्+धः। विध्+धः। दुघ्+धम्। युध्+ध·।

७ सन्धि-विच्छेद करो.—शुद्धः। समृद्ध.। वृद्ध। क्रुद्ध·। लुब्धः। प्रारब्ध.। सिद्धः। बुद्धि·। दग्धः।

शब्दकोष—४७५+२५=५००] अभ्यास २० (व्याकरण)

(क) त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम, तीनों), त्र्यम्बक (शिव), त्रिपुरारि (शिव)। त्रिपथगा (गंगा), त्रिवेणी (गंगा-यमुना का संगमस्थान), त्रिभुवनम् (तीनों लोक)। दार (स्त्री), अक्षत (अक्षत चावल), लाज (खील), असु (प्राण), प्राण (प्राण)। वर्षा (वर्षा), सिकता (रेत), समा (वर्ष), अप् (जल), अप्सरस् (अप्सरा), सुमनस् (फूल)। (१७)। (ग) त्रिधा (तीन प्रकार से), त्रिवारम् (तीन बार)। (२)। (घ) त्रि (तीन), कति (कितने), त्रयम् (तीन), त्रयी (१ तीन, २ तीन वेद ऋक्, यजु, साम), त्रिगुण (तिगुना), त्रिविध (तीन प्रकार का)। (६)

व्याकरण (त्रि, बहुवचनान्तशब्द, विधिलिङ्, चर्त्वसंधि)

१. त्रिशब्द के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ४१)।

२ सेव्—विधिलिङ् (आत्मनेपद)

सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र०पु०
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म०पु०
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ०पु०

संक्षिप्त रूप	एक०	द्वि०	बहु०	
	एत	एयाताम्	एरन्	प्र०पु०
	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्	म०पु०
	एय	एवहि	एमहि	उ०पु०

संक्षिप्तरूप लगाकर लभ्, स्पर्ध्, दीक्ष् आदि पूर्वोक्त के रूप चलाओ।

*नियम ८९–(क) दार, अक्षत, लाज (लाजा), असु, प्राण, इनके रूप पुंलिंग में और बहुवचन में ही चलते हैं। (ख) अप्, अप्सरस्, वर्षा, सिकता, समा, सुमनस्, इनके रूप स्त्रीलिंग में और बहुवचन में ही चलते हैं। (अप्सरस्, वर्षा, समा, सुमनस् इनका कहीं-कहीं एकवचन में भी प्रयोग मिलता है)। दाराः, अक्षताः, लाजाः, असवः, प्राणाः, आपः, अपः, अप्सरसः, वर्षाः आदि।

*नियम ९०–त्रि से अष्टादशन् (३ से १८) तक के सारे शब्द तथा कति शब्द सदा बहुवचन में ही आते हैं। कति के रूप हैं —कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु।

*नियम ९१–(क) (आदरार्थे बहुवचनम्) आदर प्रकट करने में एक के लिए भी बहु० हो जाता है। गुरवः पूज्याः। (ख) (अस्मदो द्वयोश्च) अहम् और आवाम् के स्थान पर 'वयम्' का प्रयोग होता है, यदि वक्ता विशिष्ट व्यक्ति हो तो। (ग) (जात्याख्यायाम्०) जातिवाचक शब्दों में एक० और बहु० दोनों होते हैं। ब्राह्मणः पूज्यः, ब्राह्मणाः पूज्याः। (घ) देशवाचक शब्दों में बहु० का प्रयोग होता है। नगरनाम या 'देश' अन्त में होने पर एक० होगा। अहम् अङ्गान् बङ्गान् कलिंगान् विदर्भान् गौडान् अगच्छम्। पाटलिपुत्रम्, अङ्गदेशं वा अगच्छम्।

नियम ९२–(खरि च) झलों (१, २, ३, ४, ऊष्म) को चर् (१, उसी वर्ग का प्रथम अक्षर) होता है, बाद में खर् (१, २, श, ष, स) हो तो। सद्+कार= सत्कार। उद्+पन्न=उत्पन्न।

अभ्यास २०

१ उदाहरण-वाक्य —१ त्रय· छात्राः, तिस्र· कन्या·, त्रीणि पुस्तकानि चात्र सन्ति। २ त्रयाणा छात्राणा, तिसृणा कन्यानाम् एतानि त्रीणि वस्त्राणि सन्ति । ३ कति छात्रा अत्र क्रीडन्ति ? ४ छात्रत्रयमत्र क्रीडति। ५ छात्रत्रयी वेदत्रयीं पठति। ६. त्र्यम्बक· त्रिपुरारि वा त्रिभुवन भयात् त्रायते। ७ त्रिवर्ग· मनुष्यस्य धनमस्ति। ८ त्रिवेण्या त्रिपथगाया अप· शिष्य पिबति। ९ स· प्राणान् असून् वा अत्यजत्। १०. इमे दारा·, अमी अक्षता·, एते लाजा सुखाय भवन्तु। ११ वर्षासु सिकतासु अप्सु च सुमनस तरन्ति।। १२ एता· अप्सरस त्रिभुवने मोदेरन्, वर्धेरन्। १३. एता· पञ्च समा स गुरु सेवेत, मोदेत च।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ तीन गुरु, तीन लडकियाँ, तीन वस्त्र वहाँ है। २ तीन छात्रो को, तीन छात्राओ को, तीन पुस्तके तीन बार दो। ३ ये तीन छात्र त्रिवर्ग के लिए त्र्यम्बक की सेवा करे। ४ त्रिवेणी मे त्रिपथगा का जल शोभित होता है। ५ तीन कन्याएँ वेदत्रयी को तीन बार तीन प्रकार से पढे। ६ न दुगुना खाओ और न तिगुना काम करो। ७ कितने वर्ष (समा) हुए जब उसने प्राण छोडे थे ? ८ उस स्त्री (दार), इस अक्षत और इन खील को यहाँ लाओ। ९ वर्षा मे रेतपर जल (अप्) और फूलो (सुमनस्) को देखो। १०. ये अप्सराएँ है। (ख) (विधिलिङ्) ११ वह गुरु की सेवा करे। १२ मै धन पाऊँ (लभ्)। १३. वह बढे और प्रसन्न हो। १४ यहाँ सुख होवे (वृत्)। १५ बालक खेले और कूदे। १६ मै देखूँ (ईक्ष्), बोलूँ (भाष्), यत्न करूँ, सीखूँ, दु ख सहूँ और आनन्द करूँ (रम्)। १७ चोर तिगुनी चेष्टा करे और भाग जाए। १८ वह तीन बार स्पर्धा करे। १९ वह तीन प्रकार से शका करे। २० वह भिक्षा माँगे।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) त दारम्, इमम् अक्षतम्, इम लाजम्०।	तान् दारान्, इमान् अक्षतान्, एतान् लाजान्०।	८९, ३३
(२) वर्षाया सिकतायाम् आपम्०।	वर्षासु सिकतासु अप· सुमनसश्च०।	८९(ख)
(३) कति समा अगच्छत्, स प्राणम्०।	कति समा· अगच्छन्, स प्राणान्०	८९, ९०

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ। (ख) २ (ख) को लट्, लोट्, लङ् मे बदलो। (ग) त्रिशब्द के तीनो लिगो के रूप लिखो। (घ) नित्य बहुवचनान्त शब्दो के नाम और उनके लिग बताओ। (ङ) किन स्थानो मे एक० के स्थान पर बहु० होता है, सोदाहरण लिखो।

५ वाक्य बनाओ —त्रय·, तिस्र, त्रीणि, कति, दारा·, असून्, प्राणान्, अप, वर्षासु।

६ संधि करो —सद् + कम। उद् + पथ·। तद् + पर। उद् + साह·।

७. संधि-विच्छेद करो —सत्क्रिया। सत्पथ·। सत्कर्म। उत्कृष्टम्। उत्पन्न·।

शब्दकोष—५०० + २५ = ५२५] अभ्यास २१ (व्याकरण)

(क) गुण (१ गुण, २ रस्सी, धागा, ३ गुना), चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारो), चतुर्भुज (विष्णु)। (३)। (ख) [नी, हृ (ले जाना), आनी (लाना)], अनुनी (मनाना), अभिनी (अभिनय करना), अपनी (हटाना), उपनी (यज्ञोपवीत देना), परिणी (विवाह करना), प्रणी (ग्रन्थ लिखना), निर्णी (निर्णय करना)। प्रहृ (प्रहार करना), आहृ (१ लाना, २ सग्रह करना), सहृ (१ नष्ट करना, २ रोकना) विहृ (विहार करना), परिहृ (छोडना), अपहृ (चुराना), उपहृ (भेंट मे देना), उद्धृ (उद्धार करना), उदाहृ (बोलना), व्यवहृ (व्यवहार करना), व्याहृ (बोलना)। (१८)। (ग) चतुर्धा (चार प्रकार से), चतुर्वारम् (चार बार)। (२)। (घ) चतुर् (चार), चतुर्गुण (चौगुना)। (२)।

सूचना—(क) गुण—चतुर्भुज, रामवत्। (ख) नी—व्याहृ, भवतिवत्।

व्याकरण (चतुर्, नी, हृ, (उभय०), उपसर्ग, भ्वादिगण, विसर्गसंधि)

१ चतुर् शब्द के तीनो लिंगो के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द स० ४२)।

२. नी और हृ धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० स० २४, २५)।

*नियम ९३—(उपसर्ग-परिचय) (उपसर्गाः क्रियायोगे) (क) धातु से पहले लगने वाले प्र, परा आदि को उपसर्ग कहते है। ये धातुओं और कृदन्त शब्दों के पहले ही लगते है। इनके लगाने से धातु का अर्थ प्राय बदल जाता है। (देखो ऊपर शब्दकोष ख) उपसर्गो के साथ धातुओं के अर्थ जहाँ दिये गये है, वहाँ उन्हे शुद्ध स्मरण कर ले। कहा भी है—उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहारसहारविहारपरिहारवत्॥ (ख) ये २२ उपसर्ग है —प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप। इसके लिए यह श्लोक स्मरण कर ले— प्रपरापसमन्ववनिर्निसो, दुरतिदुष्यातिसूदभिपर्यपि। (तदनु) व्याङधिनी उप विंशतिर्द्विसहितेत्युपसर्गसमाह्वया॥

*नियम ९४—(गण-परिचय, भ्वादिगण) भ्वादिगण की धातुओं की ये विशेषताएँ है। इनसे गण पहचाने। (१) (कर्तरि शप्) धातु और प्रत्यय (ति, त आदि) के बीच मे लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् मे 'अ' लगता है। जैसे, अति, अन आदि। (सूचना—धातु और प्रत्यय के बीच मे आनेवाले को 'विकरण' कहते हैं।) (२) धातु को गुण होता है, अर्थात् अन्तिम स्वर या अन्तिम स्वर से पूर्व इ, उ, ऋ, को क्रमश ए, ओ, अर् हो जाता है। (भ्वादि० की धातुएँ अभ्यास १,२,३,६,७,८, मे है।) (३) लृट् मे गण के कारण कोई अन्तर नही होता।

*नियम ९५—(विसर्जनीयस्य स) विसर्ग के बाद खर् (१, २, श, ष, स) हो तो विसर्ग को स् हो जाता है। (चवर्ग बाद मे हो तो श्चुत्वसंधि भी)। जैसे, हरि+ त्रायते=हरिस्त्रायते। राम + तरति=रामस्तरति। नि + चल=निश्चल।

अभ्यास २१

१ उदाहरण-वाक्य —१. चत्वार: छात्रा:, चतस्र: कन्या:, चत्वारि पुस्तकानि अत्र वर्तन्ते। २ चतुर्णां छात्राणां, चतसृणां कन्यानाम् एतानि चत्वारि वस्त्राणि सन्ति। ३. चतुर्भुजं चतुर्वर्गार्थं सेवते। ४ स: अजां हरति, शत्रुषु प्रहरति, जलम् आहरति, शत्रून् संहरिष्यति, वने विहरिष्यति, असत्यं परिहरति, धनम् अपहरति, देवेभ्य: बलिमुपहरति, वेदम् उद्धरति, वचनम् उदाहरति, धर्मं व्यवहरति, सत्यं च व्याहरति। ५ स: गुरुम् अनुनयति, कृष्णम् अभिनयति, जलम् आनयति, शत्रून् अपनयति, शिष्यम् उपनयति, कन्यां च परिणेष्यति, पुस्तकं प्रणेष्यति, विवादस्य कारणं निर्णेष्यति।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ चार शिष्य, चार कन्याएँ, चार फल और चार पुस्तकें यहाँ है। २ चार बालकों को और चार बालिकाओं को ये चार फल दो। ३. चार शिष्य चतुर्वर्ग के लिए चतुर्भुज की चार बार वन्दना करते है। ४. चार छात्रों को ये फल चार बार चार प्रकार से दो। (ख) ५ राजा शत्रुपर प्रहार करता है। ६. वह धन संग्रह करता है। ७ वह धन चुराता है। ८. मैं शत्रुओं का संहार करूँगा। ९ मैं जलमें विहार करूँगा। १० मैं दु:खों का परिहार करूँगा। ११ दुर्जन कन्या का अपहरण करता है। १२ वह कन्या को फूल उपहार देता है। १३. वह धर्म का उद्धार करे। १४ वह कथा कहे (उदाहृ)। १५ वह सत्य व्यवहार करे। १६ वह असत्य न बोले (व्याहृ)। १७ वह पिता को मनाता है। १८ वह राम का अभिनय करता है। १९ तू दु:खों को दूर करता है (अपनी)। २० तू फल ला। २१. गुरु शिष्य का उपनयन करे (उपनी)। २२. राम सीता से विवाह करे। २३ कवि पुस्तक रचे (प्रणी)। २४ राजा विवाद का निर्णय करेगा।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) चत्वार: कन्या: चत्वार फलानि०।	चतस्र: कन्या:, चत्वारि फलानि०	३३
(२) दुर्जन: कन्याया: अपहरति।	दुर्जन: कन्याम् अपहरति।	१३

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ। (ख) चतुर् शब्द के तीनों लिंगों के पूरे रूप लिखो। (ग) नी और हृ धातु के दोनों पदों में दसों लकारों में पूरे रूप लिखो। (घ) उपसर्गों के पूरे नाम बताओ। (ङ) भ्वादिगण की मुख्य विशेषतायें बताओ। (च) उपसर्ग लगने से अर्थ-परिवर्तन के १० उदाहरण बताओ।

५ वाक्य बनाओ —चत्वार:, चतस्र:, चत्वारि, प्रहरति, आहरेत्, उपाहरत्, परिणेष्यति, प्रणयेत्।

६ संधि करो —क: + तत्र। बाल: + चलति। बाला: + तरन्ति। गुरु: + तिष्ठति। राम: + तत्र। हरि: + तथा। राम: + त्रायते। नि: + सार:।

७ संधि-विच्छेद करो —कस्तिष्ठति। शिवस्त्रायते। हरिश्चलति। रामस्तिष्ठति। रामस्तथा।

शब्दकोष—५२५+२५=५५०] अभ्यास २२ (व्याकरण)

(क) शरीरम् (शरीर), मुखम् (मुँह), विमानम् (विमान), धूम्रयानम् (रेल-गाड़ी)। (४)। (ख) [कृ (करना)], अनुकृ (अनुकरण करना), अधिकृ (अधिकार करना), अपकृ (बुराई करना), अलंकृ (सजाना), आविष्कृ (आविष्कार करना), उपकृ (उपकार करना), तिरस्कृ (अपमान करना), नमस्कृ (नमस्कार करना), संस्कृ (शुद्ध करना), स्वीकृ (स्वीकार करना), प्रतिकृ (प्रतिकार करना)। (११)। (घ) (पञ्चन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन्) प्रथम (पहला), द्वितीय (दूसरा), तृतीय (तीसरा), चतुर्थ (चौथा), पञ्चम (पाँचवाँ), षष्ठ (छठा), सप्तम (सातवाँ), अष्टम (आठवाँ), नवम (नवाँ), दशम (दसवाँ)। (१०)

व्याकरण (पंचन् से दशन्, कृ, अदादिगण, उत्वसन्धि)

१ पञ्चन् से दशन् शब्द तक के पूरे रूप (बहुवचन में) स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ४३ से ४८)। सूचना—पञ्चन् से अष्टादशन् (५ से १८) तक संख्याओं के रूप केवल बहु० में चलते हैं। तीनों लिंगों में वही रूप होंगे। अभ्यास ४ में दिए हुए 'पञ्च' आदि के मूल शब्द पञ्चन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् हैं। एक से दश तक की संख्याओं के संख्येय (व्यक्ति या वस्तु-बोधक क्रमवाचक विशेषण) शब्द क्रमशः प्रथम आदि ऊपर दिए गए हैं। जैसे एक का प्रथम, द्वि का द्वितीय आदि। ३ प्रथम आदि के रूप पुं० में रामवत्, स्त्री० में रमा या नदीवत्, नपुं० में गृहवत् चलेंगे। द्वितीय आदि से स्त्रीलिंग प्रत्यय (आ या ई) लगने पर इनका तिथि अर्थ भी हो जाता है। ४ कृ धातु के दोनों पदों में रूप स्मरण करो। (देखो धातु सं० ५९)।

*नियम ९६–लङ् लकार में 'अ' शुद्ध धातु से ही पहले लगता है, उपसर्ग से पहले कभी नहीं। अतः उपसर्गयुक्त धातुओं में लङ् में धातु से पहले 'अ' लगाकर उपसर्ग मिलावें। (सन्धिकार्य प्राप्त हो तो उसे भी करें)। जैसे—हृ>अहरत्। संहृ>समहरत्। व्यहरत्, प्राहरत्। उपानयत्। अन्वकरोत्।

नियम ९७–(अदादिगण) अदादिगण की धातुओं में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में कोई विकरण धातु और प्रत्यय के बीच में नहीं लगता है। केवल ति, तः आदि लगते हैं। धातु में लट् आदि में एक० में गुण होता है, अन्यत्र नहीं।

*नियम ९८–(ससजुषो रुः) पद के अन्तिम स् और सजुष् को रु (र् या :) होता है।

*नियम ९९–(अतो रोरप्लुतादप्लुते) ह्रस्व अ के बाद रु को उ हो जाता है, बाद में ह्रस्व अ हो तो। [इस उ को पहले अ के साथ गुण करके ओ हो जाता है और बाद के अ को पूर्वरूपसंधि। अर्थात् अस् (अः)+अ=ओऽ]। जैसे राम + अस्ति = रामोऽस्ति। कः + अत्र=कोऽत्र। सः + अयम्=सोऽयम्। (स्मरण रखें कि रामः कः आदि में स् का ही विसर्ग है। जहाँ अन्य नियम नहीं लगेगा, वहाँ नियम ९८ से र् रह जाएगा। हरि + अवदत्=हरिरवदत्।

अभ्यास २२

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ पञ्च बालका., षड् बालिका, सप्त पुस्तकानि, अष्ट जना', नव वस्त्राणि, दश फलानि चात्र सन्ति । २. प्रथम छात्र, द्वितीया बाला, तृतीय पुस्तक, चतुर्थ पुस्तक, पञ्चम. पुत्र., षष्ठ कवि, सप्तम दिनम्, अष्टम वर्ष, नवमी तिथि., दशम क्रोश' । ३ शिष्य गुरु गुरो वा अनुकरोति । ४ नृप. राज्यम् अधिकरोति । ५. दुर्जन. सज्जनस्य अपकरोति । ६. नृप. चोर तिरस्करोति । ७ शिष्य मुनित्रय नमस्करोति । ८. नर दुःख प्रतिकुर्यात् । ९. नृप सज्जनस्य उपकरिष्यति । १०. विद्या ज्ञान सस्करोति । ११ कन्या शरीरम् अलकरोति । १२ प्राज्ञ. विमान धूम्रयान चाविष्करोति । १३. यतिरेतद् धन स्वीकरोति । १४. स गुरुम् अन्वकरोत् । १५. गुरुः शिष्यस्य उपाकरोत्, उपकार वाऽकरोत् ।

२ **सस्कृत बनाओ** —(क) १ पॉच पुस्तकें, छ. छात्र, सात लडकियॉ, आठ आसन, नौ गुरु, दस राजा यहॉ है । २ पॉचवी पुस्तक, छठा छात्र, सातवी लडकी, आठवॉ आसन, नवे गुरु, दसवे राजा भी यहॉ पर ही है । (ख) ३ वह पिता का अनुकरण करता है । ४ शत्रु नगर पर अधिकार करता है । ५ चोर मेरा अपकार करता है । ६ विद्वान् मूर्ख का तिरस्कार करता है । ७ मै गुरु को नमस्कार करता हूँ (नमस्कृ) । ८. तूने शत्रुओ का प्रतिकार किया (प्रतिकृ) । ९ मैने छात्रो का उपकार किया (उपकृ) । १० बालिका ने अपने शरीर और मुख को अलकृत किया । ११ गुरु आसन को अलकृत करता है । १२ विद्वान् विमान और रेलगाडी का आविष्कार करते है । १३ शिष्य इस पुस्तक को स्वीकार करता है । १४ मै शरीर को शुद्ध करता हूँ । १५ सस्कृत भाषा ज्ञान को सस्कृत करती है (सस्कृ) ।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	नगरेऽधिकरोति ।	नगरमधिकरोति ।	१३
(२)	अप्रतिकरोः । ओपकरवम् ।	प्रत्यकरो. । उपाकरवम् ।	९६
	आलकरोत् ।	अलमकरोत् ।	

४ **अभ्यास** —(क) २ (ख) को लोट्, विधिलिङ् और लट् मे बदलो । (ख) पञ्चन् से दशन् तक के पूरे रूप लिखो । (ग) कृ धातु के दोनो पदो मे दसो लकारो मे रूप लिखो । (घ) उपसर्गयुक्त धातुओ के लङ् मे 'अ' प्रारम्भ मे किस प्रकार लगता है, नी, हृ, कृ के १० उदाहरण देकर बताओ । (ङ) अदादिगण की धातुओ की विशेषता बताओ ।

५ **वाक्य बनाओ** —प्रथम, षष्ठ., अनुकरोति, सस्करोति, उपकरिष्यति ।

६ **सन्धि करो** —स + अगच्छत् । एषः + अत्र । कः + अयम् । राम. + अवदत् । देव. + अधुना । नृप + अकरोत् । छात्र. + अपठत् । स' + अयम् । हरिः + असौ । भानु + अस्ति । कविः + अत्र ।

७ **सन्धि-विच्छेद करो** —कोऽत्रास्ति । रामोऽहसत् । देवोऽयम् । सोऽपि । कोऽपि ।

शब्दकोष—५५० + २५ = ५७५] **अभ्यास २३** (व्याकरण)

(क) राहु (राहु), केतु (१ केतु ग्रह, २ ध्वजा), कक्षा (श्रेणी)। (३)। (ख) अद् (खाना)। ग्रस् (निगलना), राज् (शोभित होना), बाध् (दुःख देना), लंघ् (लाँघना)। (५)। (घ) एकादशन् (ग्यारह), द्वादशन् (बारह), त्रयोदशन् (तेरह), चतुर्दशन् (चौदह), पञ्चदशन् (पन्द्रह), षोडशन् (सोलह), सप्तदशन् (सतरह), अष्टादशन् (अठारह), एकोनविंशति (उन्नीस), विंशति (बीस), त्रिंशत् (तीस), चत्वारिंशत् (चालीस), पञ्चाशत् (पचास), षष्टि (साठ), सप्तति (सत्तर), अशीति (अस्सी), नवति (नब्बे), [शतम् (सौ)]। (१७)।

सूचना—(क) राहु—केतु, भानुवत्। कक्षा, रमावत्। (ख) ग्रस्—लघ्, सेवतेवत्।

व्याकरण (संख्या ११ से १००, अद्, जुहोत्यादि०, उत्वसंधि)

१ अद् धातु के दसों लकारों के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० सं० २६)।

* **नियम १००**–(क) विंशति (२०) से बाद के सभी संख्यावाची शब्द केवल एकवचन में आते हैं—विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः। (ख) एकादशन् से अष्टादशन् (११ से १८) तक के रूप दशन् के तुल्य बहु० में ही चलेंगे। (ग) एकोनविंशति (१९) से नवनवति (९९) तक सारे शब्दों के रूप स्त्रीलिंग एक० में ही चलते हैं। जिनके अन्त में 'इ' है (जैसे, विंशति, षष्टि आदि), उनके रूप एक० में ही मति (देखो शब्द० सं० १४) के तुल्य चलेंगे। जिनके अन्त में 'त्' है (जैसे, त्रिंशत् आदि), उनके रूप स्त्रीलिंग एक० में सरित् (देखो शब्द० सं० १९) के तुल्य चलेंगे। (घ) संख्येय (क्रमवाचकविशेषण) बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें—(१) एक से दश तक के संख्येय प्रथम, द्वितीय आदि हैं। (देखो अभ्यास २२)। (२) ११ से १८ तक के संख्येय शब्दों में अन्त में 'अ' लग जाता है। जैसे, एकादश (११ वाँ)। (३) १९ से आगे संख्येय शब्दों में अन्त में 'तम' लगता है। जैसे, विंशतितम (२० वाँ)। (४) संख्येय शब्दों के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं—पुंलिंग में रामवत्, नपुंसक० में गृहवत्। स्त्रीलिंग में अन्त में 'ई' लगाकर 'नदीवत्'। स्त्रीलिंग में केवल प्रथमा, द्वितीया, तृतीया रमावत् होते हैं।

नियम १०१—(जुहोत्यादिगण) जुहोत्यादिगण की विशेषता यह है कि इसमें धातु और प्रत्यय के बीच में विकरण नहीं लगता है, जैसे अदादि० में। परन्तु धातु को द्वित्व (दो बार पढ़ना) होता है। एक० में धातु को गुण होता है। (देखो अभ्यास ३८–४०)। हु>जुहोति, दा>ददाति, धा>दधाति।

***नियम १०२**—(हशि च) ह्रस्व अ के बाद रु (स् या) (नियम ९८) को 'उ' हो जाता है, बाद में हश् (३, ४, ५, ह, य, व, र, ल) हो तो। (नियम ९९ बाद में अ हो तब लगता है, यह बाद में हश् हो तो) उ करने पर अ + उ को ओ गुण हो जाता है। अर्थात् अः (अस्) + हश् = ओ + हश्। जैसे, रामः + वदति= रामो वदति। ऐसे ही रामो वन्द्यः, मेघो वर्षति, नरो हसति, बालो लिखति।

अभ्यास २३

१ उदाहरण-वाक्य —१. एकादश छात्राः, द्वादश बालिकाः, त्रयोदश पुस्तकानि, चतुर्दश फलानि, एकोनविंशतिः पुष्पाणि चात्र सन्ति। २. प्रथमायां कक्षायां विंशतिः, द्वितीयायां त्रिंशत्, तृतीयायां चत्वारिंशत्, चतुर्थ्यां पञ्चाशच्च छात्राः सन्ति। ३ बालो भोजनम् अत्ति, अत्तु, अत्स्यति, अद्यात्, आदत् वा। ४ राहुः सूर्यं ग्रसते। ५. दुःखं मा बाधते। ६. सूर्यः मरीचिभिः राजते। ७ शिष्यः गिरिं लङ्घते। ८ तृतीयायाः कक्षायाः एकादश, चतुर्थ्याः द्वादशश्च छात्रः। ९ नवम्यां कक्षायां विंशतितमो दशम्याश्च त्रिंशत्तमोऽत्र छात्रोऽस्ति। १० काऽद्य तिथिरस्ति? पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी वा।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १. प्रथम कक्षा में १९, द्वितीय में २०, तृतीय में ३०, चतुर्थ में ४०, पञ्चम में ५०, षष्ठ में ६०, सप्तम में ७०, अष्टम में ८०, नवम में ९० और दशम में १०० छात्र हैं। २. प्रथम कक्षा के ११ वें, द्वितीय के १५ वें, तृतीय के १६ वें, चतुर्थ के २० वें, पञ्चम के ४० वें, षष्ठ के ५० वें, सप्तम के ६० वें, अष्टम के ७० वें नवम के ८० वें और दशम के ९० वें छात्र को गुरु जी (गुरवः) बुला रहे हैं। (ख) ३ पुत्र खाना खाता है (अद्)। ४ बालक फल खावे। ५. बालिका भात खाएगी। ६ शिष्य ने खाना खाया। ७ राम को फल खाना चाहिए। (ग) ८ राहु सूर्य को निगलता है (ग्रस्)। ९. केतु चन्द्रमा को ग्रसता है। १० राजा शोभित होता है (राज्)। ११. पाप मुझको दुःख देता है (बाध्)। १२. सेनापति पर्वत को लाँघता है।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) दशमे कक्षायां शतानि छात्राः।	दशम्यां कक्षायां शतं छात्राः।	३३,१०० (क)
(२) सप्तमस्य कक्षायाः षष्टिः ०।	सप्तम्याः कक्षायाः षष्टितमः०।	३३,१०० (घ)
(३) बालकः फलम् अदतु, अदेत् वा।	बालकः फलम् अत्तु, अद्यात् वा।	९७, धातुरूप

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ। (ख) २ (ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो। (ग) इनके संख्या और संख्येय वाचक शब्द बताओ :— ११ से २० तक, ३०, ४०, ५०, ६०, ७०, ८०, ९०, १००। (घ) अद् धातु के दसों लकारों के रूप लिखो। (ङ) जुहोत्यादिगण की विशेषताएँ लिखो।

५ वाक्य बनाओ :—एकादश, एकादशः, विंशतिः, विंशतितमः, शतम्, अत्ति, आदत्, अत्स्यति।

६ संधि करो —रामः + गच्छति। बालकः + वदति। नरः + हसति। देवः + याति। कृष्णः + जयति। छात्रः + वा। शिष्यः + भोजनम्। पुत्रः + दुग्धम्। कः + वा। कः + न।

७ संधि-विच्छेद करो —बालो वदति। नृपो वा। पुत्रो याति। शिष्यो भाषते।

शब्दकोष—५७५ + २५ = ६००] अभ्यास २४ (व्याकरण)

(क) संख्या (गिनती), कीर्ति (यश)। (२)। (ख) [अस् (होना)], प्रथ् (फैलना, यश आदि का) त्वर् (शीघ्रता करना), क्षुभ् (क्षुब्ध होना), स्पन्द् (फड़कना, हिलना), भ्रंश् (गिरना), भ्राज् (चमकना)। (६)। (ग) अद्यत्वे (आजकल), अतः (इसलिए), शनैः (धीरे), प्रायः (अकसर), मुहुः (बारबार)। (५)। (घ) सहस्रम् (हजार), अयुतम् (१० हजार), लक्षम् (लाख), प्रयुतम् (१० लाख), नियुतम् (१० लाख), कोटि (करोड़), अर्बुदम् (अरब), खर्वम् (१ खरब), नीलम् (१ नील), पद्मम् (१ पद्म), शङ्खम् (१ शङ्ख), महाशङ्खम् (१ महाशङ्ख)। (१२)।

सूचना—(क) संख्या, रमावत्। कीर्ति, मतिवत्। (ख) प्रथ—भ्राज्, सेवतेवत्।

व्याकरण (संख्याएँ, अस्, दिवादि०, यत्वसंधि)

१. अस् धातु के दसों लकारों के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २७)।

⁂ नियम १०३—(क) शतम्, सहस्रम्, अयुतम् आदि एक० में ही आते हैं। कोटि स्त्रीलिंग है, शेष सब नपुंसक०। जैसे, शतं सहस्रं वा छात्राः, नराः, नार्यः, गृहाणि। संख्यावाचक शब्द पहले होनेपर या विशेष्यरूप में प्रयुक्त होनेपर ये शब्द द्वि०, बहु० में भी आते हैं। (ख) शतम् आदि के रूप एक० में गृहवत् चलेंगे। कोटि के मतिवत्। (ग) २१, ३१, ४१ आदि संख्याशब्द बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें। (देखो परिशिष्ट, संख्याशब्द) (१) विंशति, त्रिंशत् आदि के पूर्व एक, द्वि, त्रि आदि शब्द लगाकर क्रमशः ये संख्याएँ बनती हैं। (२) 'एक' शब्द सब स्थानोंपर 'एक' ही रहता है। केवल एकादश में दीर्घ होता है। एकविंशति। (३) द्वि, त्रि और 'अष्टन्' शब्दों को 'विंशति' आदि से पूर्व क्रमशः द्वा, त्रयस्, अष्टा हो जाता है, केवल अशीति को छोड़कर। (बाद में संधिनियम भी लगेंगे)। द्वाविंशतिः, त्रयस्त्रिंशत्, अष्टादश। परन्तु द्व्यशीतिः, त्र्यशीतिः, अष्टाशीतिः ही होंगे। (४) चतुर्, पंच, षट् (ड्), सप्त, नव ये ऐसे ही रहते हैं। केवल संधिनियम लगेंगे। १६ के लिए षोडश है। (५) २९, ३९ में ९ के लिए 'नव' लगता है या अगली संख्या से पूर्व एकोन या ऊन लगाकर रूप बनते हैं।

नियम १०४—(दिवादिगण) (दिवादिभ्यः श्यन्) दिवादिगण की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच में 'य' लगता है। धातु को गुण नहीं होता।

⁂ नियम १०५—(भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि) भो., भगो, अघो. शब्द और अ या आ के बाद रु (नियम ९८) को य् होता है, बाद में अश् (स्वर, ३,४,५, ह य व र ल) हों तो। (यदि बाद में व्यंजन हो तो य का लोप हो जाता है, स्वर बाद में हो तो लोप ऐच्छिक है। य् का लोप होनेपर संधिकार्य नहीं होता। अः या आः + अश् = अ या आ + अश्, अर्थात् स् या विसर्ग नहीं रहता। देवाः + गच्छन्ति = देवा गच्छन्ति। ऐसे ही बाला हसन्ति, नरा आगच्छन्ति। राम इच्छति। क एषः।

अभ्यास २४

१ उदाहरण-वाक्य—१ एता. सख्या. सन्ति, शत सहस्र लक्ष प्रयुत कोटिः पद्म शख महाशख च । २. अद्यत्वे यस्य समीपे धनमस्ति, तस्य कीर्ति. प्रथते । ३ सेना-पति. त्वरते । ४. दुर्जन. प्राय क्षोभते । ५ मम नेत्र मुहु स्पन्दते । ६ सूर्यो भ्राजते ७. एकविंशति , द्वाविंशतिः, त्रयस्त्रिंशत् , चतुश्चत्वारिंशत् , पञ्चपञ्चाशत् , षट्षष्टि , सप्तसप्तति., अष्टाशीतिः, नवनवति (एकोनशतम्) वा मनुष्या. । ८ राम. अस्ति, अस्तु, आसीत् , स्यात् , भविष्यति वा ।

२ संस्कृत बनाओ—(क) १ २१ मनुष्य, ३१ कन्याएँ, ४२ पुस्तकें, ५३ फल, ६४ फूल,७५ वस्त्र, ८६ विद्यालय और ९७ पाठशालाएँ हैं। २ ?३ फल, ३४ फूल, ४५ पुस्तकें, ५६ वस्त्र, ६७ कन्याएँ, ७८ मनुष्य, ८९ दिन, ९८ वर्ष । ३ २ सौ, ३ महस्र, १ हजार, १० हजार, १ लाख, १० लाख, १ करोड, १० करोड, १ अरब, १० अरब, १ खरब, १० खरब, १ नील, १० नील, १ पद्म, १० पद्म, १ शख, १० शख, १ महाशख । **(ख)** ४ आजकल धन ही धर्म और सत्य है। ५ राम की कीर्ति फैलती है । ६ इसकी ऑख धीरे-धीरे फडक रही है । ७ वह प्राय क्षुब्ध हो जाता है । ८ कृष्ण बार-बार शीघ्रता करता है । ९ बालक घर के ऊपर है, अत वहॉ से गिरता है (भ्रश्)। १० सूर्य की किरणे चमकती है (भ्राज्) । **(ग)** ११. वह है । १२ मै हूँ । १३ तू भी है । १४ वह था । १५ तू भी था । १६ मै ही था । १७ वह वहॉ होगा । १८. तू भी वहॉ होगा । १९ मै यहॉ ही हूँगा । २० वह यहॉ होवे । २१. तू वहॉ होना । २२. मै यही होऊँ ।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहम् आसीत् , आसीः, आस्म ।	अहम् आसम् ।	धातुरूप
(२) अहम् असिष्यामि, भविष्यति ।	अह भविष्यामि ।	,,
(३) त्वम् अस, असे., अस्तु वा ।	त्वम् एधि, स्याः वा ।	,,

४ अभ्यास—(क) २ (ख) को लोट् , लङ् , विधिलिङ् मे बदलो । (ख) २ (ग) को द्विवचन और बहुवचन मे बदलो । (ग) अस् धातु के दसो लकारो के पूरे रूप लिखो । (घ) १ से सौ तक पूरी गिनती सस्कृत मे बताओ । (ङ) दिवादिगण की विशेषता बताओ ।

५ वाक्य बनाओ—अस्ति, स्मः, अस्तु, एधि, आसीत् , आसन् , आसीः, आसम् , स्यात् , स्यु', स्याम । प्रथताम् , स्पन्देत, अभ्रशत, भ्राजिष्यते, त्वरते ।

६ संधि करो—देवा. + हसन्ति । नरा. + गच्छन्ति । छात्राः + लिखन्ति । कन्या + आगच्छन्ति । राम + ऐच्छत् । पुत्रा. + इच्छन्ति । शिष्याः + वदन्ति । बाल. + इच्छति । सः + आगच्छत् ।

७ सधि-विच्छेद करो—छात्रा हसन्ति । राम इच्छति । स एव । पुत्र आगच्छति । राम इव । कन्या इच्छन्ति । बाला एते । शिष्या अमी ।.नरा इमे । क एष । राम इति ।

शब्दकोष—६०० + २५ = ६२५] अभ्यास २५　　　　(व्याकरण)

(क) सखि (मित्र), गाडिका (गाड़ी)। (२)। [(ख) ब्रू (बोलना)।] (ग) उच्चै (१ ऊपर, २ ऊँचा, ३ ऊँचे स्वर से), नीचै (१ नीचे, २ नीचा, ३ धीरे स्वर से), तारस्वरेण (उच्च स्वर से)। (३)। (घ) सुन्दरम् (सुन्दर), समीचीनम् (सुन्दर, अच्छा), शोभनम् (सुन्दर), मधुरम् (मीठा), शीतलम् (ठंडा), उष्णम् (गर्म), कोमलम् (कोमल), तीक्ष्णम् (१ तेज, २ तीखा)। स्वकीय (अपना), परकीय (पराया), त्वदीय (तेरा), मदीय (मेरा), भवदीय (आपका), तदीय (उसका), श्वेत (१ सफेद, २ स्वच्छ), हरित (हरा), नील (नीला), पीत (पीला), रक्त (लाल), कृष्ण (काला)। (२०)।

व्याकरण (सखि, ब्रू, स्वादि०, गुण, वृद्धि, सम्प्रसारण, सुलोपसन्धि)

१ सखि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० स० ३)।

२. ब्रू धातु के उभयपद के दसों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २८)। लट् मे ब्रू को वच् हो जाता है, अत. वक्ष्यति, वक्ष्यते आदि रूप बनेंगे।

*नियम १०६–दीर्घ, गुण, वृद्धि, संप्रसारण आदि के लिए यह विवरण-पत्र ठीक स्मरण कर लें। ऊपर मूल स्वर दिये गये है, उनके स्थान पर गुण, वृद्धि आदि कहने पर ऊपर के मूल स्वर के नीचे गुण आदि के सामने जो स्वर आदि दिये गये है, वे होंगे। आगे जहाँ भी गुण, वृद्धि, संप्रसारण आदि कहा जाय, वहाँ इस विवरण-पत्र के अनुसार कार्य करे। (रिक्त स्थानों पर वह कार्य नहीं होता)।

१ स्वर	अ, आ	इ, ई	उ, ऊ	ऋ, ॠ	ऌ	ए	ऐ	ओ	औ
२. दीर्घ	आ	ई	ऊ	ॠ	—	—	—	—	—
३ गुण	अ	ए	ओ	अर्	अल्	ए	—	ओ	—
४ वृद्धि	आ	ऐ	औ	आर्	आल्	ऐ	ऐ	औ	औ
५. यण् (सन्धि)		य्	व्	र्	ल्	—	—	—	—
६. अयादि (,,)		—	—	—	—	अय्	आय्	अव्	आव्

७ संप्रसारण य् को इ, व् को उ, र् को ऋ, ल् को ऌ। (यण् संधि का उलटा कार्य)

नियम १०७–(स्वादिगण) (स्वादिभ्य. श्नु) स्वादिगण की धातुओं की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच में 'नु' विकरण लगता है। धातु को गुण नहीं होता। 'नु' को एक० परस्मै० मे गुण होता है। (देखो अभ्यास ४७ से ४९)।

* नियम १०८–(एतत्तदो सुलोपो०) एष. और स के स् अर्थात् विसर्ग (:) का लोप हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो। (बाद मे अ हो तो 'ओऽ' होता है, नियम ९९। और कोई स्वर हो तो भी विसर्ग का लोप हो जाता है, नियम १०५)। सः + करोति = स करोति। इसी प्रकार स पठति, स लिखति। एष करोति।

अभ्यास २५

१. उदाहरण-वाक्य—१. स मदीयः त्वदीयश्च सखा अस्ति। २. स्वकीयं सखायं पश्य। ३ स्वकीयस्य सख्युः सुन्दरं मुखं पश्य। ४. सख्यौ विश्वासं कुरु। ५. स शोभनं, मधुरं च ब्रवीति, ब्रवीतु, ब्रूयात्, अब्रवीत्, वक्ष्यति वा। ६. अहम् उच्चैः तारस्वरेण च ब्रवीमि, अब्रवम्, वक्ष्यामि वा। ७ त्वं शनैः नीचैः वा ब्रवीषि, अब्रवीः, वक्ष्यसि वा। ८. स धर्मं ब्रूयात्। ९ अहं सत्यं ब्रवीमि, त्वमपि सत्यं ब्रूहि। १० स्वकीयं श्वेतं वस्त्रमानय, परकीया रक्ता शाटिका न आनय। ११ त्वदीयमेतत् कृष्णं पुस्तकम्, मदीयमेतत् पीतं वस्त्रम्, तदीयमिदं नीलं पुष्पम्, भवदीयमदो हरितं वस्त्रम्। १२. उष्णं शीतलं च जलमानय। १३. कोमलं शोभनं च ब्रूहि, न तु तीक्ष्णम्।

२ संस्कृत बनाओ—(क) १ वह उसका मित्र है। २. अपने मित्र को यहाँ साथ लाइए। ३. उसके मित्र को धन दो। ४ मेरे मित्र का यह कार्य कर दो (कृ)। ५ पराए मित्र पर विश्वास न करो। ६ उस मनुष्य का वस्त्र श्वेत है। ७ उस कन्या की साडी हरी है और इसकी लाल। ८ उसके नीले वस्त्र को लाओ। ९. मेरे पीले वस्त्र को न ले जाओ। १० अग्नि उष्ण होती है और जल शीतल। ११. फूल कोमल और सुन्दर है। १२ फल मीठा और अच्छा है। **(ख)** (ब्रू धातु) १३. वह ऊँचे स्वर से बोलता है। १४. मैं धीरे बोलता हूँ। १५ तू तीखा बोलता है। १६. वह बोले। १७. तू बोल। १८ मैं बोलूँ। १९. वह बोला। २०. तू बोला। २१. मैं बोला। २२. वह बोलेगा। २३ तू बोलेगा। २४ मैं बोलूँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) तदीय सखाय धन वितर।	तदीयाय सख्ये धन वितर।	३३, ३४
(२) तस्य कन्यायाः शाटिका हरितम्०।	तस्याः कन्यायाः शाटिका हरिता०।	३३
(३) त्व ब्रवसि, अब्रवः, ब्रव।	त्व ब्रवीषि, अब्रवीः, ब्रूहि।	धातुरूप
(४) स ब्रूष्यति, अब्रवत्, ब्रवेत्।	स वक्ष्यति, अब्रवीत्, ब्रूयात्।	,,

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ। (ख) सखि शब्द के पूरे रूप लिखो। (ग) ब्रू धातु (परस्मैपद) के दसों लकारों के पूरे रूप लिखो। (घ) स्वादिगण की विशेषताएँ बताओ। (ङ) किन स्वरों को दीर्घ, गुण, वृद्धि करने पर क्या होता है, बताओ। (च) सम्प्रसारण कहने से किसके स्थान पर क्या होगा, बताओ।

५ वाक्य बनाओ—शोभनम्, कोमलम्, त्वदीयम्, भवदीयः, मदीयः, तदीया, श्वेतम्, रक्ता, ब्रवीति, ब्रवीमि, ब्रवीतु, ब्रूहि, वक्ष्यति, अब्रवीत्, अब्रवम्, ब्रूयात्, तार-स्वरेण।

६. सन्धि करो—सः + गच्छति। सः + पठति। सः + ब्रवीति। एषः + हसति। एषः + वदति।

७ सन्धि-विच्छेद करो—स हरिः। स शिवः। स रुद्रः। स करोति। एष गच्छति।

शब्दकोष—६२५ + २५ = ६५०] अभ्यास २६ (व्याकरण)

(क) कर्तृ (करनेवाला), हर्तृ (१ चुरानेवाला, २ नाशक) धर्तृ (धारक), श्रोतृ (सुननेवाला), वक्तृ (बोलनेवाला), नप्तृ (नाती), सवितृ (१ सूर्य, २ प्रेरक), अध्येतृ (पढनेवाला), गन्तृ (जानेवाला), द्रष्टृ (दर्शक), त्वष्टृ (बढई), धातृ (१ ब्रह्मा, २ धारक), विधातृ (१ ईश्वर, २ कर्ता), नेतृ (१ नेता, २ ले जानेवाला), निर्मातृ (बनानेवाला), दातृ (देनेवाला), द्वेष्टृ (द्वेषकर्ता), स्तोतृ (स्तुतिकर्ता), ज्ञातृ (जाननेवाला), भोक्तृ (१ खानेवाला, २ उपभोगकर्ता)। पाठ (पाठ), लेख (लेख), ग्रन्थ. (ग्रन्थ), भार. (बोझ)। (२४)। (ख) रुद् (रोना)। (१)

सूचना—(क) कर्तृ—भोक्तृ, कर्तृवत्। पाठ—भार, रामवत्।

व्याकरण (कर्तृ, रुद्, कर्मवाच्य, भाववाच्य, तुदादि०)

१ कर्तृ शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द स० ५)।

२ रुद् धातु के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० स० ३०)।

नियम १०९—(तुदादिभ्य श) तुदादिगण की धातुओ की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच मे 'अ' (भ्वादि० के तुल्य) लगता है। भ्वादि० मे धातु को गुण होता है, परन्तु तुदादि० में धातु को गुण सर्वथा नही होता। (देखो, अभ्यास ५, ५०, ५१)। जैसे, लिखति, तुदति, मिलति, क्षिपति, दिशति।

कर्मवाच्य और भाववाच्य

*नियम ११०—(क) संस्कृत मे ३ वाच्य होते है —१ कर्तृवाच्य, २ कर्मवाच्य ३ भाववाच्य। सकर्मक (कर्मयुक्त) धातुओ के दो वाच्यो मे रूप होते है, १ कर्तृवाच्य, २ कर्मवाच्य। अकर्मक (कर्म-रहित) धातुओ के रूप कर्तृवाच्य और भाववाच्य मे ही होते है, कर्मवाच्य मे नही। अकर्मक की साधारणतया पहचान यह है कि जिसमे किम् (किसको, क्या) का प्रश्न नही उठता। १ कर्तृवाच्य मे कर्ता मुख्य होता है, क्रिया कर्ता के ही अनुसार चलती है। कर्ता मे प्रथमा और कर्म मे द्वितीया। २ कर्मवाच्य मे कर्म मुख्य होता है। कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरुष, वचन और लिग होगा। कर्ता के अनुसार कुछ नही। कर्मवाच्य की पहचान है, कर्ता मे तृतीया, कर्म मे प्रथमा, क्रिया कर्म के अनुसार। ३ भाववाच्य मे कर्ता मे तृतीया, कर्म होगा ही नहीं, क्रिया मे प्रथमपुरुष का एकवचन होगा। (ख) (सार्वधातुके यक्) कर्मवाच्य और भाववाच्य मे सार्वधातुक लकारो (अर्थात् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) मे धातु और प्रत्यय के बीच मे 'य' लग जाता है। धातु का रूप सदा आत्मनेपद मे ही चलता है, धातु चाहे किसी पद की हो। लृट् मे य नहीं लगेगा। धातु के साथ य लगाकर धातु के रूप 'सेव्' धातु के तुल्य होगे, या युध् के तुल्य (धातु० सं० ४४)। लृट् मे इष्यते या स्यते आदि। गम्>गम्यते, गम्यताम्, अगम्यत, गम्येत, गमिष्यते।

अभ्यास २६

१ उदाहरण-वाक्य :—१ मेरे द्वारा पुस्तक पढी जाती है—मया पुस्तकं पठ्यते। २ मया, त्वया, युष्माभिः, अस्माभिः, तेन, तैः, वा गृहं गम्यते। ३ मया फलं खाद्यते, मया फले खाद्येते, मया फलानि खाद्यन्ते। ४. जनकेन बालः दृश्यते, बालौ दृश्येते, बालाः दृश्यन्ते। ५ तेन अत्र भूयते। ६ पुस्तकस्य कर्त्रा लेखो लिख्यते, श्रोता हस्यते, गन्त्रा ग्रामो गम्यते, अध्येतृभिः पाठाः पठ्यन्ते, नप्त्रा भोजनं पच्येत, सवित्रा भास्येत, द्रष्टृभिः छात्राः दृश्यन्ते, त्वष्ट्रा धात्रा विधात्रा च नम्यते, नेत्रा जनाः नीयन्ताम्, स्तोतृभिः ज्ञातृभिश्च दाता सेव्यते, द्वेष्टा त्यज्यते, भोक्तृभिः भोजनं पच्यते खाद्यते च। ७ बालकः उच्चैः रोदिति, अरोदीत्, रोदितु, रुद्यात्, रोदिष्यति वा। ८. बालकेन उच्चैः रुद्यते, अरुद्यत, रुद्यताम्, रुद्येत, रोदिष्यते वा।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ तेरे द्वारा, मेरे द्वारा और उनके द्वारा हँसा जाता है। २ पुस्तक के कर्ता द्वारा ग्रन्थ लिखा जाता है। ३. धन के हर्ता द्वारा धन ले जाया जाता है। ४ भार के धारणकर्ता द्वारा भार यहाँ लाया जाता है। ५. श्रोताओं के द्वारा हँसा जाता है। ६ वक्ता के द्वारा भाषण दिया जाता है (भाष्)। **(ख)** ७. नाती के द्वारा गुरु की सेवा की जावे। ८ सूर्य के द्वारा तपा जाए (तप्)। ९ अध्येता के द्वारा तीन ग्रन्थ पढे जाएँ। १० गाँवों को जानेवाले के द्वारा गाँवों को जाया जावे। ११ दर्शक के द्वारा दो छात्र देखे जावे। **(ग)** १२. नगर में बढई, नेता, दानी, दर्शक, श्रोता, द्वेषकर्ता, निर्माता, स्तुतिकर्ता, उपभोगकर्ता, ज्ञाता और पढनेवाले सभी लोग रहते हैं। **(घ)** १३ बालक रोता है। १४ तू रोता है। १५ मैं रोता हूँ। १६ वह रोवे। १७. तू रो। १८. मैं भी रोऊँ। १९. वह रोया। २०. तू रोया। २१. मैं रोया। २२. वह रोएगा। २३. तू भी रोएगा। २४ मैं नहीं रोऊँगा।

३ **अशुद्ध वाक्य**	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) त्वया मया तैः हस्यन्ते।	त्वया मया तैः हस्यते।	११० (क)
(२) पुस्तकस्य कर्ता ग्रन्थ लिख्यन्ते।	पुस्तकस्य कर्त्रा ग्रन्थः लिख्यते।	११० (क)
(३) ग्रामान् गन्त्रा ग्राम गच्छेयुः।	ग्रामान् गन्तृभिः ग्रामाः गम्येरन्।	११० (क, ख)
(४) रोदति, रोदामि, रोदेत्, रोद।	रोदिति, रोदिमि, रुद्यात्, रुदिहि।	धातुरूप।

४ अभ्यास —(क) २ (क) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लट् में बदलो। (ख) २ (ख) को लोट्, लङ्, लट् में बदलो। (ग) २ (घ) को बहुवचन बनाओ। (घ) रुद् धातु के दसों लकारों में रूप बताओ। (ङ) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो :—कर्तृ, हर्तृ, धर्तृ, श्रोतृ, वक्तृ, अध्येतृ, गन्तृ, नेतृ, दातृ, ज्ञातृ, भोक्तृ। (च) तुदादिगण की विशेषता बताओ। (छ) कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्तृवाच्य से क्या अन्तर होता है, १० उदाहरण देकर समझाओ। (ज) इन धातुओं के कर्मवाच्य में दसों लकारों में रूप बनाओ :—पठ्, सेव्, नम्, गम्, नी, भाष्।

५ वाक्य बनाओ :—पठ्यते, सेव्यते, गम्यते, नम्यते, नीयते, नेष्यते, भाष्यते।

शब्दकोष–६५० + २५ = ६७५] अभ्यास २७ (व्याकरण)

(क) पितृ (पिता), भ्रातृ (भाई), जामातृ (जवाँई), श्वशुर (श्वशुर), गानम् (गाना), वचनम् (वचन)। (६)। (ख) [दुह् (दुहना)], धा (१ धारण करना, २ रखना), मा (१ नापना, २ तोलना), हा (छोड़ना), अव + सा (१ नष्ट होना, २ नष्ट करना), नि + गॄ (निगलना), उद्+गॄ (१ उगलना, २ बोलना), जॄ (वृद्ध होना), शॄ (१ नष्ट होना, २ नष्ट करना), पॄ (१ पालन करना, २ पूर्ण करना), वृ (चुनना, छाँटना), स्तु (स्तुति करना), हु (हवन करना), मन्थ् (मथना) बन्ध् (बाँधना), भज् (१ भजन करना, २ सेवा करना), यज् (यज्ञ करना), वप् (१. बीज बोना, २ काटना), शप् (शाप देना), ग्रह् (लेना)। (१९)।

व्याकरण (पितृ, दुह्, कर्मवाच्य, भाववाच्य, रुधादि)

१. पितृ शब्द के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ६)। पितृवत् भ्रातृ, जामातृ।

२. दुह् धातु (उभय पद) के दसो लकारो के रूप स्मरण करो (देखो धातु० स० २९)

* नियम १११—(रुधादिगण) (रुधादिभ्य श्नम्) रुधादि० की विशेषता यह है कि धातु के प्रथम अक्षर के बाद न या न् विकरण जुड़ता है। धातु को गुण नही होता।

* नियम ११२—धातु से कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर ले। सार्वधातुक लकारो (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) मे ही ये नियम लगते हैं। (क) धातु के साथ य लगता है। आत्मनेपद ही होता है। साधारणतया धातु मे अन्तर नही होता। जैसे—भूयते, पठ्यते, लिख्यते, रक्ष्यते। (ख) धातु को गुण नही होता। धातु मूलरूप मे रहती है। गच्छ्, पिब्, जिघ्र् आदि नही होता। (ग) (घुमास्थागापा०) आकारान्त धातुओ मे से इनके ही आ को ई हो जाता है—दा, धा, मा, स्था, गा, पा (पीना), हा (छोड़ना), सा। अन्यों को कुछ नही। जैसे, दीयते, धीयते, मीयते, स्थीयते, गीयते, पीयते, हीयते, सीयते। अन्यत्र ज्ञायते, स्नायते आदि। (घ) (रिङ्शयग्०) ह्रस्व ऋ अन्तवाली धातुओ को ऋ के स्थान पर 'रि' हो जाता है। जैसे कृ, हृ, धृ, भृ, के क्रियते, ह्रियते, ध्रियते, भ्रियते। परन्तु स्मृ>स्मर्यते। (ङ) दीर्घ ॠ अन्तवाली धातुओ को इर् होता है। पवर्ग प्रारम्भ मे हो तो ऊर्। गॄ>गीर्यते। जॄ>जीर्यते। शॄ>शीर्यते। तॄ>तीर्यते। परन्तु पॄ का पूर्यते। (च) (वचिस्वपि० ग्रहिज्या०) वच् आदि धातुओ को संप्रसारण होता है। (ऋ) वच्>उच्यते। यज्>इज्यते। वप्>उप्यते। स्वप्>सुप्यते। वह्>उह्यते। वद्>उद्यते। ग्रह्>गृह्यते। प्रच्छ्>पृच्छ्यते। वस्>उष्यते। (छ) ह्रस्व इ, उ को ई, ऊ हो जाता है। हु>हूयते, जि>जीयते, चि>चीयते। (ज) (अनिदितां हल०) धातु के बीच के न् का प्राय लोप होता है। मन्थ्>मथ्यते, बन्ध्>बध्यते, भ्रंश्>भ्रश्यते, स्रंस्>स्रस्यते। इनमे न् रहेगा, वन्द्यते, चिन्त्यते, निन्द्यते। (झ) चुरादि० और णिच् वाली धातुओ के इ (अय) का लोप होता है। चोर्यते, कथ्यते, भक्ष्यते।

अभ्यास २७

१ उदाहरण-वाक्य—१ पित्रा पुत्र उच्यते। २ भ्रात्रा भ्राता वन्द्यते। ३. जामात्रा श्वशुर: स्तूयते। ४ मया दुग्ध दुह्यते, दुह्यताम्, दुह्येत, अदुह्यत वा। ५ मया त्वया तेन तै: वा ग्रन्थ पठ्यते, लेखः लिख्यते, नगर रक्ष्यते, कन्या दृश्यते, धन लभ्यते, अजा नीयते, धन याच्यते। ६. अस्माभि युष्माभिश्च दान दीयते, वस्त्राणि वीयन्ते, तण्डुला: माषा यवाश्च नीयन्ते, गृहे स्थीयते, गान गीयते, जल पीयते, कार्य हीयते, शत्रुः अवसीयते। ७ तै कार्याणि क्रियन्ताम्, धनानि ह्रियन्ताम्, वस्त्राणि ध्रियन्ताम्, बालाश्च भ्रियन्ताम्, पाठाश्च स्मर्यन्ताम्। ८ तेन भोजन गीर्यते, शब्द. उद्गीर्यते, जल तीर्यते, कार्य पूर्यते, सखा म्रियते। ९ तेन वचनम् उच्यते, प्रात. इज्यते, बीजानि उप्यन्ते, भार. उह्यते, पुष्प गृह्यते, छात्र पृच्छ्यते। १०. मया रिपु जीयते, अग्नौ हूयते, फलानि चीयन्ते, दुग्ध मथ्यते, दुर्जन वध्यते, गुरु कथ्यते, भोजन भक्ष्यते।

२ संस्कृत बनाओ—**(क)** १. मेरे द्वारा पाठ पढा जाता है। २. तेरे द्वारा लेख लिखे जाते है। ३ राम के द्वारा दूध दुहा जाता है। ४ राजा के द्वारा नगर की रक्षा की जाती है। ५ शिष्य के द्वारा भार ले जाया जाता है। ६ मेरे, तेरे और राम के द्वारा दान दिया जाता है, जल पिया जाता है, पुस्तके रक्खी जाती है, वस्त्र नापा जाता है, गाने गाए जाते है, आश्रम मे रहा जाता है (स्था), घर छोडा जाता है, पाप नष्ट किये जाते है। **(ख)** ७ मेरे द्वारा खाना निगला जाए, वचन कहा जाए (उद्गॄ), अध्ययन पूर्ण किया जाए, तैरा जाए, कन्या छाँटी जाए। ८ उसके द्वारा कार्य किया जाय, वस्त्र हरण किये जाएँ, वचन कहा जाय। **(ग)** ९ तेरे द्वारा वस्त्र धारण किया गया, पाठ पूछा गया, शत्रु जीता गया, गुरु स्तुति किया गया, समुद्र मथा गया, प्रात.-काल हवन किया गया, फूल चुने गये, भोजन खाया गया, ईश्वर का चिंतन किया गया (चिन्त्), गुरु की वन्दना की गई। १० पिता के द्वारा वृद्ध हुआ जाता है, हरि का भजन किया जाता है (भज्), दुर्जन को शाप दिया जाता है, बीज बोया जाता है, बालक लिया जाता है (ग्रह्)। ११ भाई और जवाँई के द्वारा भोजन किया जाता है। **(घ)** १२ वह दूध दुहता है। १३ तू भी दूध दुहता है। १४ मे दूध नही दुहता हूँ। १५ वह दूध दुहे। १६. तू दूध दुह। १७ आज मै ही दूध दुहूँ। १८. उसने दूध दुहा। १९ मैने दूध दुहा। २० वह दूध दुहेगा, तू भी दुहेगा।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
(१) दायते, पायते, कृयते, त्रियते, वच्यते।	दीयते, पीयते, क्रियते, तीर्यते, उच्यते।	११२
(२) दोहति, अदोहत्, दोहिष्यति, दोहेत्।	दोग्धि, अधोक्, धोक्ष्यति, दुह्यात्।	धातुरूप

४ अभ्यास—(क) २ (क) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् मे बदलो। (ख) २ (ख) को लट् और लङ् मे तथा २ (ग) को लोट् मे बदलो। (ग) २ (घ) को बहुवचन बनाओ। (घ) पितृ, भ्रातृ के पूरे रूप लिखो। (ङ) दुह् धातु के दसो लकारो मे रूप लिखो। (च) रुधादिगण की विशेषता बताओ।

शब्दकोष–६७५ + २५ = ७००] **अभ्यास २८** (व्याकरण)

(क) गौ (१ गाय, २ बैल), भृत्य (नौकर), जन (मनुष्य), खल (दुष्ट), दुष्ट (दुष्ट), वेद (वेद), ऋग्वेद (ऋग्वेद), यजुर्वेद (यजुर्वेद), सामवेद (सामवेद), अथर्ववेद (अथर्ववेद), देव (देवता)। मित्रम् (मित्र), आभूषणम् (आभूषण)। शिला (पत्थर), गीता (भगवद्गीता), वार्ता (१ बात, २ समाचार)। (१६)। (ख) स्वप् (सोना), आस् (१ बैठना, २ होना)। अव + गम् (जानना), श्रु (सुनना), प्र + विश् (प्रविष्ट होना), आ+रुह् (१ चढना, २ उगना), उत् + तॄ (१ पार होना, २ उत्तीर्ण होना), प्र + आप् (१ प्राप्त करना, २ प्राप्त होना), भुज् (१ खाना, २ रक्षा करना)। (९)।

व्याकरण (गो, स्वप्, प्रेरणार्थक धातुएँ, णिच् प्रत्यय, चुरादि०)

१ गो शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द स० ७)।

२ स्वप् धातु के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो० धातु स० ३१)

नियम ११३—(०चुरादिभ्यो णिच्) चुरादिगणी धातु की विशेषता यह है कि धातु के अन्त मे णिच् (अय) लग जाता है। धातु मे नियम ११४ के तुल्य वृद्धि या गुण होता है। धातु मे अय लगाकर परस्मै० मे रूप भवतिवत्, आत्मने० मे सेवतेवत्।

नियम ११४—(हेतुमति च) प्रेरणार्थक धातु उसे कहते है, जहाँ कर्ता स्वय काम न करके दूसरे से काम कराता है। जैसे—पढना>पढवाना, लिखना>लिखवाना, जाना>भेजना। प्रेरणार्थक धातु मे शुद्ध धातु के अन्त मे णिच् (अर्थात् अय) लग जाता है। धातु के अन्त मे अय लगाकर परस्मै० मे रूप भवतिवत् और आत्मने० मे सेवतेवत् चलेगे। धातु के अन्तिम इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ, को वृद्धि (अर्थात् क्रमश ऐ, औ, आर्) हो जाता है, बाद मे अयादिसधि भी। उपधा (अर्थात् अन्तिम अक्षर से पूर्व अक्षर) मे अ को आ तथा इ, उ, ऋ को क्रमश ए, ओ, अर् गुण हो जाता है। जैसे, कृ>कारयति, पठ्>पाठयति, लिख्>लेखयति। गम् का गमयति।

*नियम ११५—प्रेरणार्थक धातुओ के साथ मूल धातु के कर्ता मे तृतीया होती है, और कर्म मे पूर्ववत् द्वितीया हो रहती है, क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। जैसे, शिष्य लेखं लिखति>गुरु शिष्येण लेखं लेखयति। नृप भृत्येन कार्यं कारयति।

नियम ११६—(गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ०) इन अर्थोवाली धातुओ के प्रेरणार्थक रूप के साथ मूलधातु के कर्ता में तृतीया न होकर द्वितीया होती है—जाना, जानना, समझना, खाना (अद्, खाद्, भक्ष् को छोडकर), पढ़ना, अकर्मक धातुएँ, बोलना, देखना (दृश्), सुनना (श्रु), प्रवेश (प्रविश्), चढना (आरुह्), तरण (उत्तॄ), ग्रहण (ग्रह्), प्राप्ति (प्राप्), पीना, ले जाना (हृ), (नी वह् को छोडकर)। जैसे—बाल गृहं गच्छति>बालं गृह गमयति। शिष्यान् वेदम् अवगमयति। माता पुत्रमन्न भोजयति। गुरु छात्रं शास्त्रं पाठयति।

अभ्यास २८

१ उदाहरण वाक्य —१ गुरुः बालकेन लेख लेखयति। २. खल. दुष्टो वा भृत्येन धन चोरयति। ३ बालिका बाल स्वापयति। ४. हरि देवान् अमृत भोजयति। ५ आभूषण शिलायाम् आसयत्, अस्थापयत् वा। ६ पुत्र सत्य भाषयति। ७. पिता पुत्र चन्द्र दर्शयति। ८ मित्र वार्ता श्रावयति। ९ गुरु गृह प्रवेशयति। १० भृत्य वृक्षम् आरोहयेत्। ११. राम गङ्गाम् उत्तारयतु। १२ सज्जनम् अन्न ग्राहयिष्यति। १३ मित्र नगर प्रापयति। १४ भृत्येन भार ग्राममहारयत्। १५ चत्वारो वेदा', ऋग्वेद', यजुर्वेद', सामवेद., अथर्ववेदश्च। १६ गौ. स्वपिति, स्वपितु, स्वप्यात्, अस्वपत्, स्वप्स्यति वा। १७. गामानय। १८ गो दुग्धमेतत्। १९. गवि शिला न पातय।

२ सस्कृत बनाओ —**(क)** १ राम नौकर से काम कराता है। २ पिता पुत्र से लेख लिखवाता है। ३. गुरु शिष्य को गॉव मे भेजता है (गमय)। ४ दुष्ट धन चोरी करवाता है। ५ पुत्र को गीता समझाता है (अवगमय)। ६ मित्र को भोजन खिलाता है (भोजय)। ७ गुरु शिष्य को चारो वेद पढाता है। ८ पुत्र को शिला पर बैठाता है (आसय)। ९ भाई बालक को सुलाता है (स्वापय)। **(ख)** १० मित्र से धर्म कहवावे (भाषय)। ११ पिता पुत्र को सूर्य दिखावे (दर्शय)। १२ पिता को समाचार सुनावे (श्रावय)। १३ मित्र को घर मे प्रविष्ट करावे (प्रवेशय)। १४ दुष्ट को पेड पर चढावे (आरोहय)। १५. कृष्ण को यमुना पार करावे (उत्तारय)। १६ बालक को पुस्तक पकडावे (ग्राहय)। १७ नौकर पुत्र को गॉव पहुँचावे। (प्रापय)। १८ नौकर से बोझ लिवा जावे (हारय)। **(ग)** १९ गाय सोती है। २० गाय को देखो। २१ गाय का दूध दुहता है। २२. गाय के लिए जल लाओ। २३ यह गाय का बच्चा (वत्स.) है। २४. गाय पर बोझ न रखो (स्थापय)। **(घ)** २५ वह सोता है। २६ तू सोता है। २७ मै सोता हूँ। २८ वह सोवे। २९ तू सो। ३०. मै सोऊँ। ३१. वह सोया। ३२ तू सोया। ३३ मै सोया। ३४ वह सोएगा।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	(१) रामः भृत्य कार्य करोति।	राम भृत्येन कार्य कारयति।	११४, ११५
	(२) शिष्येन ग्रामे गमयति।	शिष्य ग्राम गमयति।	११६, १५
	(३) स्वपति, स्वपामि, स्वपेत्।	स्वपिति, स्वपिमि, स्वप्यात्।	धातुरूप

४ अभ्यास —(क) २ (क) को लोट्, विधिलिङ्, लङ् मे बदलो। (ख) २ (ख) को लट्, लट्, लङ् मे बदलो। (ग) २ (घ) को बहुवचन बनाओ। (घ) गो शब्द के पूरे रूप लिखो। (ङ) स्वप् धातु के दसो लकारो के पूरे रूप लिखो। (च) प्रेरणार्थक धातुओ मे से किन धातुओ के साथ मूलधातु के कर्ता मे तृतीया नही होती, सोदाहरण लिखो। (छ) चुरादिगण की विशेषता लिखो।

५ इन धातुओ के प्रेरणार्थक रूप बनाओ —पठ्, लिख्, गम्, दृश्, दुह्, स्वप्, प्र+आप्, चुर्, कथ्, भुज्, आस्, श्रु, भाष्, आरुह्, प्रविश्, उत्+तृ, ग्रह्, हृ, कृ, धृ, पत्।

शब्दकोप—७०० + २५=७२५] अभ्यास २९ (व्याकरण)

(क) भगवत् (भगवान्), भवत् (आप) (सर्वनाम)। श्रीमत् (श्रीमान्), धीमत् (बुद्धिमान्), बुद्धिमत् (विद्वान्), बलवत् (बलवान्), धनवत् (धनवान्), हिमवत् (हिमालय)। काल (१ समय, २ मृत्यु), समय (समय)। (१०)। (ख) हन् (१ मारना, २ हत्या करना)। विद् (जानना), या (जाना), वा (हवा चलना), भा (चमकना), स्ना (नहाना), पा (रक्षा करना)। यापि (समय बिताना), बुध् (जानना), शम् (शान्त होना), जन् (पैदा होना), दम् (दमन करना), घट् (काम मे लगना), क्रम् (चलना), गतवत् (गया)। (१५)।

सूचना—(क) भगवत्—हिमवत् तथा गतवत्, भगवत् के तुल्य।

व्याकरण (भगवत्, हन्, णिच् प्रत्यय, तनादि०)

१ भगवत् शब्द क पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० स० ९)। सूचना—जिन शब्दो के अन्त मे मतुप् (मत् या वत्) प्रत्यय लगता है और जिन धातुओ के अन्त मे क्तवतु (तवत्) प्रत्यय लगता है, उनके रूप पुलिग मे भगवत् के तुल्य ही चलगे।

२. हन् धातु के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० स० ३२)।

३. विद् और या के रूप परिशिष्ट मे देखो। या के तुल्य ही वा आदि।

नियम ११७—(तनादिकृञ्भ्य उ) तनादिगण की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच मे 'उ' विकरण लगता है। धातु को गुण होता है। उ को परस्मै० एक० मे गुण होता है। (देखो अभ्यास २२, ५४)। जैसे, तनोति, तनुते।

***नियम ११८**—मूलधातु से प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर ले। (क) धातु से णिच् (अय) प्रत्यय लगता है। नियम ११४ के अनुसार वृद्धि या गुण। (ख) (मिता ह्रस्व) इन धातुओ के उपधा (अर्थात् उपान्त्य स्वर) के अ को आ नही होता। गम्, रम्, क्रम्, नम्, शम्, दम्, जन्, त्वर्, घट्, व्यथ्। गमयति, रमयति, क्रमयति, नमयति, शमयति, दमयति, जनयति, त्वरयति, घटयति, व्यथयति। अन्यत्र अ को आ होता है। पाठयति, कामयते। (ग) (०आतां पुङ् णौ) आकारान्त धातुओं के अन्त मे णिच् से पहले 'प्' और लग जाता है। जैसे, दा>दापयति, धा>धापयति, स्था>स्थापयति, या>यापयति, स्ना>स्नापयति। किन्तु पा (पीना) का पाययति होता है। पा और पाल् (रक्षा करना) का पालयति होता है। (घ) इन धातुओ के णिच् मे ये रूप होते है—ब्रू>वाचयति, अधि+इ>अध्यापयति (पढाना), हन्>घातयति (वध कराना), दुष्>दूषयति (दोष देना), रुह्>रोहयति, रोपयति (उगाना)। (ङ) चुरादिगण की धातुओं के रूप णिच् मे वैसे ही रहते हैं। (च) कर्मवाच्य और भाववाच्य मे णिजन्त धातु के अन्तिम इ (अय) का लोप हो जाता है। जैसे, पाठ्यते, कार्यते। ऐसे ही हार्यते, बोध्यते, भक्ष्यते, चोर्यते।

अभ्यास २९

१ उदाहरण-वाक्य :— १ गुरुः शिष्य नगर गमयति, बालक कथाभिः रमयति, शत्रून् शमयति दमयते च, कस्यापि दुख न जनयति, अध्ययनार्थ त्वरयति, कार्ये घटयति, कमपि न व्यथयति च । २ सज्जन. नृपेण दान दापयति, धन धापयति । ३. धीमान् पुस्तक स्थापयति । ४. बुद्धिमान् पठने काल समय वा यापयति । ५. धनवान् भृत्येन पुत्र स्नापयति । ६ भवन्त. शिष्यान् जल पाययन्ति । ७ भगवान् ससार पालयेत् । ८. गुरु. छात्र वेद वाचयति, अध्यापयति । ९ खल पशून् घातयिष्यति, सज्जनान् दूषयिष्यति च । १०. धीमद्भि. श्रीमद्भिश्च बाल पाठ्यते, भारः हार्यते, जनो बोध्यते, न च कदापि कस्यापि धन चोर्यते, कार्य क्रियते कार्यते च । ११ सिंह पशून् हन्ति, हन्तु, हन्यात्, अहन्, हनिष्यति वा । १२ स हिमवन्त गतवान् ।

२ मस्कृत बनाओ —(क) १ पिता पुत्र को गॉव भेजता है (गमय) । २. कवि गान से सबको प्रसन्न करता है (रमय) । ३ यति पापो का दमन करता है (दमय) । ४ राजा नौकर को काम मे लगाता है (घटय) और शीघ्रता कराता है (त्वरय) । ५. बुद्धिमान् विवाद शान्त कराता है (शमय), सबको सुख देता है (जनय) । ६. बलवान् धनवान् से धीमान् को धन दिलाता है । ७ गुरु शिष्य से पुस्तक यहॉ रखवाता है (धापय), शिष्य उन्हे रखता है (स्थापय) । (ख) ८ धीमान् अध्ययन मे समय बितावे । ९ पुत्र को जल पिलाओ । १० राज्य का पालन कराओ । ११ बालक को स्नान कराओ । १२ शिष्य को पढाओ । १३ पाठ बॅचवाओ (वाचय) । १४ शत्रु का वध कराओ । १५ वृक्षो को लगाओ (रोपय) । (ग) १६ वह शत्रु को मारता है (हन्), तू भी मारता है, मै भी मारता हूॅ । १७ उसने शत्रु को मारा, तूने मारा, मैने मारा । १८. वह चोर को मारेगा, तू मारेगा, मै मारूॅगा । १९ वह दुष्ट का वध करे । (घ) २० वह मुझको जानता है (विद्), मै उसे जानता हूॅ । २१. वह हिमालय को जाता है (या) । २२ वायु चलती है (वा) । २३ सूर्य चमकता है (भा) । २४ आप नहाते है । २५ राजा रक्षा करता है (पा) ।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. गाययति, रामयति, दामयति, जानयति ।	गमयति, रमयति, दमयते, जनयति	११८(ख)
२ ब्रावयति, पापयति, हानयति ।	वाचयति, पाययति, घातयति ।	११८ (ग,घ)
३ हनति, हनामि, अहनत्, हस्यति ।	हन्ति, हन्मि, अहन्, हनिष्यति ।	धातुरूप

४ अभ्यास —(क) २ (क) को लोट्, लङ्, लट् मे बदलो । (ख) २ (ख) को लट्, लङ्, लट मे बदलो । (ग) २ (ग) को बहुवचन बनाओ । (घ) २ (घ) को लोट्, लट् मे बदलो । (ङ) इन शब्दो के पूरे रूप लिखो—भगवत्, भवत्, श्रीमत्, धीमत्, धनवत्, गतवत् । (च) हन् धातु के दसो लकारो के पूरे रूप लिखो । (छ) तनादिगण की विशेषता बताओ । (ज) मूलधातु से प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए मुख्य नियम कौन से है, सोदाहरण बताओ ।

शब्दकोष ७२५+२५=७५०] **अभ्यास ३०** (व्याकरण)

(क) भूभृत् (१ राजा, २ पर्वत), महीक्षित् (राजा), विपश्चित् (विद्वान्), मरुत् (वायु)। शुश्रूषा (१. सुनने की इच्छा, २ सेवा), चिकित्सा (इलाज), मीमांसा (१ गम्भीर विचार, २ मीमांसा दर्शन)। (७)। (ख) इ (जाना), उत्+इ (उदय होना), आ+इ (आना), अप+इ (दूर होना)। (४)। (ग) चित्, चन (दोनो किम् शब्द के साथ मिलकर अनिश्चय बोधक अव्यय), ह्य (विगत दिन), परह्य (विगत परसों), श्व (आगामी दिन), परश्व (आगामी परसों)। (६)। (घ) शुश्रूषु (सुनने का इच्छुक), चिकीर्षु (करने का इच्छुक), जिज्ञासु (जानने का इच्छुक), विवक्षु (बोलने का इच्छुक), जिघांसु (मारने का इच्छुक), दिदृक्षु (देखने का इच्छुक), पिपासु (प्यासा), तितीर्षु (तैरने का इच्छुक), (८)।

सूचना—(क) भूभृत्—मरुत्, भूभृत्वत्। शुश्रूषा—मीमांसा, रमावत्।

व्याकरण (भूभृत्, इ, सन् प्रत्यय, क्र्यादि०)

१ भूभृत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० स० ८)।

२ इ धातु के दसो लकारो मे पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० स० ३३)

३ ह्य, श्व के अन्तर के लिए यह स्मरण ले, 'ह्यो गतेऽनागतेऽह्नि श्वः'।

*नियम ११९-(क्र्यादिभ्य श्ना) क्र्यादिगण की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच मे 'ना' विकरण लगता है। उसको 'नी' भी हो जाता है। धातु को गुण नही होता। (देखो अभ्यास ५५ से ५७)। जैसे क्रीणाति, क्रीणीते।

* नियम १२०-(धातो कर्मण ०) इच्छा करना या चाहना अर्थ मे धातु से सन् (स) प्रत्यय लगता है, यदि इच्छा करनेवाला वही व्यक्ति हो तो। सन् लगनेपर धातु को द्वित्व हो जाता है। धातु के स्वरूप मे कुछ अन्तर भी हो जाता है। सन् प्रत्यय लगने पर परस्मैपदी धातु के रूप भवतिवत् और आत्मनेपदी के सेवतेवत्। जैसे, गम्>जिगमिषति, जिगमिषतु, जिगमिषेत्, अजिगमिषत्, जिगमिषिष्यति। सन्नन्त प्रयोगवाली प्रचलित धातुएँ ये है—भू>बुभूषति। ब्रू>विवक्षति। श्रु>शुश्रूषते। कृ>चिकीर्षति। हृ>जिहीर्षति। तॄ>तितीर्षति। मृ>मुमूर्षति। ज्ञा>जिज्ञासते। पा>पिपासति। दा>दित्सति। धा>धित्सति। लभ्>लिप्सते। हन्>जिघांसति। दृश्>दिदृक्षते। पठ्>पिपठिषति। स्वप्>सुषुप्सति। ग्रह्>जिघृक्षति। जि>जिगीषति। कित्>चिकित्सति। भुज्>बुभुक्षते। मान्> मीमांसते। मुच्>मुमुक्षति। बध्>बीभत्सते।

* नियम १२१-(सनाशंसभिक्ष उ, अ प्रत्ययात्) सभी सन् प्रत्ययवाली धातुओं के अन्त मे उ या आ लगा देने से विशेषण और संज्ञा शब्द बन जाते हैं। उकारान्त के रूप गुरुवत् और आकारान्त के रूप रमावत् चलेगे। उ लगाने से 'वाला' अर्थ हो जाता है। 'आ' लगने से भाववाचक संज्ञा। उदाहरण ऊपर हैं।

अभ्यास ३०

१ **उदाहरण-वाक्य** :—१ भूभृत् कस्यचित् महीक्षितो राज्य जिगीषति । २. विवक्षुः विपश्चित् किंचिद् विवक्षति । ३ मरुद् वाति, इतः एति च । ४ विपश्चित् एति, सूर्य उदेति, शत्रुः अपैति । ५. जिज्ञासु भूभृत् परह्योऽत्र ऐत्, ह्योऽगच्छच्च । ६. शुश्रूषुः विपश्चित् श्वः एष्यति, परश्वो गमिष्यति च । ७ शुश्रूषुः गुरो शुश्रूषा कुर्यात् । ८. चिकित्सको जिघासुमपि चिकित्सति । ९. विपश्चिद् धर्म मीमासिष्यते । १० चिकीर्षुः कार्य चिकीर्षतु । ११ जिज्ञासुः धर्म जिज्ञासेत । १२ दिदृक्षुः महीक्षित दिदृक्षते । १३. पिपासुः जल पिपासति । १४ तितीर्षु गङ्गा तितीर्षति । १५ विपश्चित् तत्र एति, एतु, इयात् , ऐत् , एष्यति वा । १६ कस्मैचित् शुश्रूषा रोचते ।

२ **सस्कृत बनाओ** :—(क) १. बालक पढना चाहता है, बोलना चाहता है, सेवा करना चाहता है, कार्य करना चाहता है । २. शिष्य तैरना चाहता है, धर्म को जानना चाहता है, जल पीना चाहता है, दान देना चाहता है, वस्त्र धारण करना चाहता है, धन पाना चाहता है (लभ्) । ३ राजा (भूभृत्) शत्रु को मारना चाहता है (हन्), मरणासन्न (मुमूर्षु) को देखना चाहता है, धन लेना चाहता है (ग्रह्), राज्य जीतना चाहता है । ४. चिकित्सक मरणासन्न की चिकित्सा करना चाहता है (चिकित्स), भोजन खाना चाहता है (भुज्), सत्य पर विचार करना चाहता है (मीमास), पापो को छोडना चाहता है (मुच्) । **(ख)** ५. किसी को शुश्रूषा, किसी को चिकित्सा, किसी को धर्म की मीमासा, किसी को सत्य की जिज्ञासा अच्छी लगती है (रुच्) । ६ वह परसो आया था, कल गया । ७ मै कल जाऊँगा, परसो पुनः आऊँगा । ८ सुनने का इच्छुक सुनने की इच्छा करे, प्यासा जल पीना चाहे, जिज्ञासु जानना चाहे, तैरने का इच्छुक तैरना चाहे । **(ग)** (इ धातु) ९. सूर्य उदय होता है । १० वह आता है । ११. वह दूर हटता है । १२. वह जाता है । १३ मै जाता हूँ । १४. वह जावे । १५. तू जा । १६ मे जाऊँ । १७. वह गया । १८ मै गया । १९. तू गया ।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
(१) जिज्ञासति, शुश्रूषति, दिदृक्षति ।	जिज्ञासते, शुश्रूषते, दिदृक्षते ।	१२०
(२) बुब्रूषति, दिदासति, लिलप्सति ।	विवक्षति, दित्सति, लिप्सते ।	१२०

४ **अभ्यास** —(क) २ (क) को लोट् , लङ् , विधिलिङ् , लट् मे बदलो । (ख) २ (ग) को बहुवचन बनाओ । (ग) इनके पूरे रूप लिखो—भूभृत् , महीक्षित् , विपश्चित् , मरुत् । (घ) इ धातु के दसो लकारो मे पूरे रूप लिखो । (ङ) क्र्यादिगण की विशेषता बताओ । (च) सन् प्रत्यय लगाकर इन धातुओ के दसो लकारो के रूप लिखो :—ब्रू , श्रु, कृ,हृ,मृ, तॄ, पा, दा, धा,ज्ञा, पठ् , लभ् , दृश् , हन् , स्वप् , ग्रह् , जि, कित् , भुज् ।

५ **वाक्य बनाओ** —४. (च) की उपर्युक्त धातुओ के सन्नन्त रूप बनाकर उनमे अन्त मे उ और आ लगाकर उनका वाक्यो मे प्रयोग करो, जैसे विवक्षुः, विवक्षा ।

शब्दकोष—७५०+२५=७७५] अभ्यास ३१ (व्याकरण)

(क) करिन् (हाथी), दण्डिन् (१ सन्यासी, २ दण्डधारी), विद्यार्थिन् (छात्र), शशिन् (चन्द्रमा), पक्षिन् (पक्षी), स्वामिन् (स्वामी), मन्त्रिन् (मंत्री), साक्षिन् (साक्षी), ज्ञानिन् (ज्ञानी), योगिन् (योगी), त्यागिन् (त्यागी), वाग्मिन् (चतुर वक्ता)। (१२)। (ख) पीड् (पीड़ा देना), प्र+क्षल् (धोना), पाल् (पालन करना), युज् (लगाना), प्र+ईर् (प्रेरणा देना) गण् (गिनना), मन्त्र् (मंत्रणा करना), रच् (बनाना), पूज् (पूजा करना), आ+श्लिष् (आलिंगन करना), [चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना)]। (१०)। (ग) पश्चात् (बाद मे, पीछे), पुनः (फिर), शीघ्रम् (शीघ्र)। (३)।

सूचना—(क) करिन्—वाग्मिन्, करिन् के तुल्य। (ख) पीड्—पूज्, चोरयतिवत्।

व्याकरण (करिन्, क्त प्रत्यय)

१. करिन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दसख्या १०)।

२ पीड् आदि धातुओ के रूप चुर् धातु (देखो धातु० सख्या ६३) के तुल्य दोनो पदों मे चलगे। जैसे, पीडयति, प्रक्षालयति, पालयति, योजयति, प्रेरयति, गणयति, रचयति, पूजयति। आत्मनेपद मे 'अय' लगाकर सेवतेवत् रूप होगे। मन्त्रयते।

*नियम १२२-(क्तक्तवतू निष्ठा, निष्ठा) भूतकाल अर्थ मे क्त (त), क्तवतु (तवत्) कृत् प्रत्यय होते है। दोनो का क्रमश त, तवत् शेष रहता है। 'त' प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य मे होता है। 'तवत्' प्रत्यय कर्तृवाच्य मे। सेट् ('इ' वाली) धातुओ मे बीच से इ लगता है, अनिट् (इ-नही वाली) धातुओ मे इ नही लगता है। धातु को गुण या वृद्धि नही होती। संप्रसारण होता है।

*नियम १२३ (क) क्त (त) प्रत्यय जब सकर्मक धातु से कर्मवाच्य मे होगा तो कर्म में प्रथमा, कर्ता मे तृतीया ओर क्रिया का लिग, वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होगी, कर्ता के अनुसार नही। (ख) अकर्मक धातु से क्त (त) प्रत्यय होगा तो कर्ता मे तृतीया होगी। क्रिया मे नपुसकलिंग एकवचन ही रहेगा। (ग) 'त' प्रत्ययान्त क्रियाशब्द कर्म के अनुसार पुंलिंग होगा तो उसके रूप 'रामवत्' चलेगे, स्त्रीलिंग होगा तो रमावत्, नपुंसकलिंग होगा तो गृहवत्। जैसे, अहं पुस्तकम् अपठम् के स्थान पर मया पुस्तकं पठितम्। मया द्वे पुस्तके पठिते, पुस्तकानि पठितानि। मया ग्रन्थ. पठित., ग्रन्थौ पठितौ, ग्रन्थाः पठिता·। मया बाला दृष्टा, बालाः दृष्टा.। तेन हसितम्, तेन रुदितम्।

*नियम १२४-(गत्यर्थाकर्मक०) जाना, चलना अर्थ की धातुओ, अकर्मक धातुओं तथा श्लिष्, शी, स्था, आस्, वस्, जन्, रुह्, जृ (वृद्ध होना) धातु से क्त प्रत्यय कर्तृवाच्य में भी होता है। अत. कर्ता मे प्रथमा और कर्म मे द्वितीया। जैसे, स गृहं गत.। स ग्रामं प्राप्तः। स भूत.। हरि. रमामाश्लिष्ट।

अभ्यास ३१

१ उदाहरण-वाक्य :—१ त्वया मया तेन युष्माभि अस्माभि वा पुस्तक पठितम्, पुस्तके पठिते, पुस्तकानि पठितानि। २. मया लेखो लिखित', विद्या पठिता, कथा श्रुता, पत्र पठितम्, भोजन खादितम्। ३ मया अस्माभि. वा लेखा लिखिताः, विद्या. पठिता., कथा श्रुता, पत्राणि पठितानि, भोजनानि खादितानि। ४. स ग्राम गत., स आगत., सोऽत्र स्थित., स सुप्त, स मृतः, राजा मित्रमाश्लिष्ट., स आसन्नम् अधिशयित, स आसित., सोऽत्र उषित, स जात., स वृक्षमारूढ., स जीर्ण.। ५. सिंहः करिण पीडयति। ६ स्वामी पादौ प्रक्षालयति, ज्ञानिन पालयति, कार्ये योजयति प्रेरयति च, पुस्तक रचयति च। ७. कथयताम्, चिन्तयताम्, भोजन भक्षयता च भवान्।

२ संस्कृत बनाओ .—(क) १. मैने एक पुस्तक पढी, दो पुस्तक पढी, तीन पुस्तके पढी। २. उसने खाना खाया। ३ मैने लेख लिखा। ४. मै हँसा। ५. वह रोया। ६. उसने पुस्तके चुराई। ७ मैने विद्या पढी। ८ उसने कन्या देखी। ९. वह विद्यालय को गया। १० वह बाद मे गाँव मे आया। ११. वह शीघ्र सोया। १२. पुत्र हुआ। १३. मै बैठा (आस्)। १४ राजा ने अपनी पत्नी का आलिंगन किया (श्लिष्)। १५. मै वहाँ रहा (वस्)। १६. वह आसन पर सोया (शी)। १७. बालक पैदा हुआ (जन्)। १८. मै पर्वत पर चढा (रुह्)। १९. वह वृद्ध हुआ (जॄ)। २०. वह आया और मै गया। (ख) २१ विद्यार्थी योगी और त्यागी की पूजा करता है। २२. मन्त्री मन्त्रणा करता है। २३. हाथी दण्डधारियो को दु ख दे रहा है। २४. वह वस्त्रो को धोता है। २५. पिता पुत्रो का पालन करता है। २६. ज्ञानी वाग्मी को प्रेरणा देता है। २७. वह पक्षियो को फिर गिनता है। २८. विधि ने शशी को बनाया। २९. योगी सोचता है। ३० वाग्मी कथा कह रहा है।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) मया त्रीणि पुस्तकानि पठितम्।	मया त्रीणि पुस्तकानि पठितानि।	१२३
(२) तेन सुप्तम्, तेन गतम्, तेन आगतम्।	स सुप्त, स गत., स आगतः।	१२४

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् और लट् मे बदलो। (ख) इन धातुओ के दसो लकारो मे रूप लिखोः—पीड्, प्रक्षाल्, पाल्, युज्, प्रेर्, गण्, मन्त्र्, रच्, पूज्। (ग) इन शब्दो के पूरे रूप लिखोः—करिन्, दण्डिन्, विद्यार्थिन्, स्वामिन्, मन्त्रिन्, ज्ञानिन्, योगिन्। (घ) क्त प्रत्यय लगाने पर कर्ता, कर्म और क्रिया मे कौन-सी विभक्ति और वचन होते है, १० उदाहरण देकर बताओ। (ङ) किन धातुओ के साथ क्त प्रत्यय होने पर कर्ता मे प्रथमा रहती है, सोदाहरण बताओ।

शब्दकोष ७७५+२५ = ८००] **अभ्यास ३२** (व्याकरण)

(क) आत्मन् (आत्मा), जीवात्मन् (जीवात्मा), परमात्मन् (परमात्मा), ब्रह्मन् (ब्रह्मा), द्विजन्मन् (१ ब्राह्मण, २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य), अश्मन् (पत्थर), अध्वन् (मार्ग), यज्वन् (यज्ञकर्ता), अर्वन् (घोडा), पाप्मन् (पाप, पापी)। कथनम् (कहना), काष्ठम् (लकडी)। (१२)। (ख) सान्त्व् (सान्त्वना देना), खण्ड् (खण्डन करना), मण्ड् (मण्डन करना), तुल् (तोलना), घुष् (घोषणा करना), पुष् (पोषण करना), आ+लोक् (देखना), आ+लोच् (आलोचना करना), तृप् (तृप्त करना), तड् (मारना)। (१०)। (ग) ध्रुवम् (अवश्य), वरम् (अच्छा, श्रेष्ठ), तर्हि (तो)। (३)। सूचना—(क) आत्मन्—पाप्मन्, आत्मन् के तुल्य।

व्याकरण (आत्मन्, क्तप्रत्यय)

१. आत्मन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० ११)।

२ सान्त्व् आदि के रूप चोरयति के तुल्य। जैसे—सान्त्वयति, खण्डयति, मण्डयति, तोलयति, घोषयति, पोषयति, आलोकयति, आलोचयति, तर्पयति, ताडयति।

***नियम १२५**–धातु से त और तवत् (तथा क्तिन्) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर ले। (देखो परिशिष्ट मे क्त प्रत्यय से बने रूप)। (१) धातु को गुण या वृद्धि नही होती। सेट् मे इ लगता है, अनिट् मे नही। सन्धिकार्य होगा। जैसे–कृ>कृत। हृत, धृत, भृत। पठितम्, लिखितम्। (२) (रदाभ्यां निष्ठातो न ०) र् या द् के बाद के त को न होता है, धातु के द् को भी न्। अर्थात् र्+त=र्ण। द्+त=न्न। दीर्घ ॠ को ईर् या ऊर् होगा। शॄ>शीर्ण, तॄ>तीर्ण, गॄ>गीर्ण, कॄ>कीर्ण, संकीर्ण, प्रकीर्ण, पॄ>पूर्ण, भिद्>भिन्न, छिद्>छिन्न, सद्>सन्न, प्रसन्न। (३) (द्यतिस्यति०) दो (दा), सा, मा, स्था इनके आ को इ होगा। दित, अवसित, परिमित, स्थित। गा, पा, हा के आ को ई होगा। गीत, पीत, हीन। (४) (अनुदात्तोपदेश०) यम्, रम्, नम्, गम्, हन्, मन्, वन् और तनादिगणी धातुओ के म् और न् का लोप होता है। धातुओ के उपधा के न् का भी प्राय लोप होता है। गम्>गत, यम्>यत, संयत, रम्>रत, नम्>नत, प्रणत, हन्>हत, मन्>मत, संमत, तन्>तत, वितत। जन्, सन्, खन् के न् को आ होगा। जात, सात, खात। बन्ध्>बद्ध, ध्वस्>ध्वस्त, स्रंस्>स्रस्त, दंश्>दष्ट। (५) (वचिस्वपि० ग्रहिज्या०) वच् आदि को संप्रसारण होता है। ब्रू या वच्>उक्त, स्वप्>सुप्त, यज्>इष्ट, वप्>उप्त, ग्रह्>गृहीत, व्यध्>विद्ध, प्रच्छ्>पृष्ट, आह्वे>आहूत, वह्>ऊढ, वद्>उदित, वस्>उषित। (६) इन धातुओ के ये रूप होते हैं—धा>हित, विहित, निहित। दा>दत्त, अस्>भूत, शुष्>शुष्क, पच्>पक्व। सह्>सोढ, अद्>जग्ध, क्षै>क्षाम।

अभ्यास ३२

१ उदाहरण-वाक्य —१ मया कार्यं कृतम्, मया गुरु सेवित, मया वस्त्र याचितम्, मया धन लब्धम्, मया कार्यम् आरब्धम्, मया मार्ग रुद्ध, मया भोजन भुक्तम्। २. मया काष्ठ भिन्न छिन्न च, नदी तीर्णा, परीक्षा उत्तीर्णा, अन्न कीर्णम्, कार्य पूर्णम्। ३ मया गान गीतम्, जल पीतम्। ४. मया दुष्ट हत, गुरु नत, नगर ध्वस्तम्। ५ स ग्राम गत, पुत्र शयितः, नर उत्थित, शिष्य आसित., मुनि उषितः, पुत्रो जातः, नृपः अश्वमारूट, वृक्ष जीर्णः। ६ मया सुप्तम्, बीजम् उप्तम्, पुस्तक गृहीतम्, प्रश्न. पृष्ट, छात्र आहूत, भार ऊढ, कार्य विहितम्, भोजन पक्वम्, दु ख सोढम्। ७ द्विजन्मा आत्मान पोषयति, तर्पयति, आलोचयति च। ८ स तस्य कथन खण्डयति मण्डयति च।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ राम ने पुस्तक पढी। २. ब्रह्मा ने ससार का पालन किया और उसको धारण किया। ३ यज्ञकर्ता के वृक्ष काटा (खण्ड)। ४. कृष्ण ने फूल बिखेरे (कृ), कार्य पूर्ण किया। ५ बालक उठा, शिष्य वहाँ रहा, पुत्र उत्पन्न हुआ, राम सोया (शी), गुरु वृद्ध हुआ, लडकी पर्वत पर चढी। ६ ब्राह्मण ने पत्थर फोडा। ७ घोडे ने अन्न खाया। ८ पाप नष्ट हुए। ९ मैंने पुस्तक पढी, लेख लिखा, भोजन खाया, धन पाया, गगा पार की, परीक्षा उत्तीर्ण की। १० तूने गाना गाया, जल पिया, शत्रु को मारा, गुरु को प्रणाम किया, दुष्टको बाँधा। ११ उसने भूमि खोदी, यज्ञ किया, बीज बोया, पुस्तक ली, प्रश्न पूछा, भार ढोया और मुझे बुलाया। १२ मैंने दान दिया, भोजन खाया। १३. पुत्र पैदा हुआ, फल पका, वृक्ष सूखा, वह उठा। (ख) १४ वह अवश्य शिष्य को सान्त्वना देता है। १५. वह ठीक ढग से (वरम्) मेरे कथन का मडन करता है और यह खडन करता है। १६. वह अन्न तोलता है। १७. वह घोषणा करता है। १८ वह पुत्र का पालन करता है ओर उसे देखता है। १९. द्विजन्मा अपनी आत्मा की आलोचना करता है। २० अन्न ससार को तृप्त करता है।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१	बालकेन उत्थितम्, पुत्रेण जातम्।	बालक उत्थित., पुत्रो जात.।	१२४
२.	वप्तम्, यष्टम, कीर्तम्, पूर्तम्।	उप्तम्, इष्टम्, कीर्णम्, पूर्णम्।	१२५

४ अभ्यास —(क) २ (क) को बहु० मे बदलो। (ख) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् मे बदलो। (ग) इन शब्दो के पूरे रूप लिखो.—आत्मन्, ब्रह्मन्, द्विजन्मन्, अध्वन्, यज्वन्। (घ) इन धातुओ के दसो लकारो मे रूप लिखो .—खण्ड्, तुल्, घुष्, पुष्, आलोक्, तड्। (ङ) इन धातुओ के क्त प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ —कृ, लभ्, रुध्, भुज्, कॄ, तॄ, पॄ, भिद्, छिद्, सद्, गा, पा, गम्, नम्, बन्ध्, वच्, वह्, ग्रह्, प्रच्छ्, धा, अस्, सह्, पच्।

शब्दकोष—८०० + २५ = ८२५] **अभ्यास ३३** (व्याकरण)

(क) राजन् (राजा), पूषन् (सूर्य), मूर्धन् (मस्तक), ग्रावन् (पत्थर), तक्षन् (बढ़ई), उक्षन् (बैल)। नदी (नदी), नारी (स्त्री), पत्नी (स्त्री), जननी (माता), पृथ्वी (पृथ्वी), पुत्री (लड़की)। १२। (ख) कृत् (वर्णन करना), मन्त्र् (मन्त्रणा करना), तर्ज् (डराना), तर्क् (तर्क करना), आस्वद् (स्वाद लेना), गर्ह् (निन्दा करना), गवेष् (ढूँढना)। ७। (ग) सुष्ठु (अच्छा), स्वयम् (स्वयम्), मिथः (परस्पर), परस्परम् (परस्पर), जातु (कभी), कदापि (कभी)। ६।

सूचना—(क) राजन्—उक्षन्, राजन् के तुल्य। नदी–पुत्री, नदीवत्।

व्याकरण (राजन्, नदी, क्तवतु, चुरादिगणी धातुएँ)

१ राजन् और नदी शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द०, १२, १५)

२. कृत् आदि के रूप चोरयति के तुल्य। कीर्तयति, तर्जयति, तर्कयति, आस्वादयति, गर्हयति, गवेषयति। मन्त्रयते।

सूचना—लट् के रूप के साथ 'स्म' लगाने से भी भूतकाल का अर्थ होता है।

नियम १२६—क्तवतु प्रत्यय भूतकाल मे होता है। कर्तृवाच्य मे होता है, अत कर्ता के तुल्य क्रियाशब्द के लिंग, विभक्ति और वचन होगे। कर्ता मे प्रथमा होगी, कर्म मे द्वितीया, क्रिया कर्ता के तुल्य। धातु के रूप क्त प्रत्यय के तुल्य ही बनेगे। (नियम १२५ लगेगा)। क्त प्रत्यय लगाकर जो रूप बनता है, उसी मे 'वत्' और जोड दे। जैसे—कृ>कृत, तवत् मे कृतवत्। तवत् प्रत्ययान्त के रूप पुलिंग मे भगवत् के तुल्य चलेगे, स्त्रीलिंग मे ई लगाकर नदी के तुल्य और नपुसकलिंग मे जगत् (देखो शब्द० २६) के तुल्य। भूतकाल मे त या तवत् प्रत्यय लगाकर अनुवाद बनाना सरल होता है, अत इन उदाहरणो से नियमो की व्याख्या समझे। क्त प्रत्यय लगाने पर कर्म के लिंग, वचन और विभक्ति पर ध्यान दिया जायगा। कर्ता के लिंग आदि पर नही। क्तवतु प्रत्यय लगाने पर कर्ता के लिंगादि पर ध्यान देना होगा, कर्म पर नहीं।

भूतकाल गणरूप	क्त प्रत्यय	क्तवतु प्रत्यय
१. स पुस्तकम् अपठत्।	तेन पुस्तक पठितम्।	स पुस्तक पठितवान्।
२. त्व ,, अपठ.।	त्वया ,, ,, ।	त्वम् ,, ,, ।
३. अह ,, अपठम्।	मया ,, ,, ।	अह ,, ,, ।
४. तौ पुस्तके अपठताम्।	ताभ्या पुस्तके पठिते।	तौ पुस्तके पठितवन्तौ।
५. युवाम् ,, अपठतम्।	युवाभ्या ,, ,, ।	युवाम् ,, ,, ।
६. आवाम् ,, अपठाव।	आवाभ्या ,, ,, ।	आवाम् ,, ,, ।
७. ते पुस्तकानि अपठन्।	तै. पुस्तकानि पठितानि।	ते पुस्तकानि पठितवन्त.।
८. यूय ,, अपठत।	युष्माभि. ,, ,, ।	यूय ,, ,, ।
९. वय ,, अपठाम।	अस्माभिः ,, ,, ।	वय ,, ,, ।

अभ्यास ३३

१ **उदाहरण-वाक्य**.—१. राजा गृह गतवान्, राजानौ गृह गतवन्तौ, राजानः गृह गतवन्तः। २. बालिका भोजन भुक्तवती, बालिके भुक्तवत्यौ, बालिकाः भुक्तवत्यः। ३. पत्र पृथ्व्या पतितवत्, पत्रे पतितवती, पत्राणि पतितवन्ति। ४ राजा मन्त्रयते, पूषा पोषयति, पुत्री तर्कयति। ५ नार्यौ मिथः मन्त्रयेते। ६. पुत्री जननी गवेषयति। ७. भुक्तवन्त त पश्य। ८. भुक्तवता तेन कार्य कृतम्। ९ भुक्तवते तस्मै वस्त्र देहि। १० भुक्तवति तस्मिन् स आगतवान्। ११ स पठति स्म, गच्छति स्म।

२ **संस्कृत बनाओ**.—(क्तवतु प्रत्यय) **(क)** १. वह घर गया, वे दोनो घर गये, वे सब घर गये। २ वह लडकी यहाँ आई, वे दोनो आई, वे सब आईं। ३. एक पत्ता पृथ्वी पर गिरा, दो फूल गिरे, तीन फल गिरे। ४. वह आया, वह हँसा, वह पढा, उसने लिखा, वह सोया, उसने देखा, उसने किया। ५. तू उठा, तू ठीक दौडा, तूने स्वय सेवा की, तूने खाया। ६. सोये हुए बालक को देखो, पढे हुए पाठ को फिर स्वय पढो। ७ खाना खाए हुए उस ब्राह्मण को एक फल दो। ८. जब वह खाना खा चुका तब (भुक्तवति तस्मिन्) मै उसके पास गया। ९. उसके चले जाने पर (गतवति तस्मिन्) मै यहाँ आया। १०. सूर्य (पूषन्) चमका। ११. शिर झुका। १२. पत्थर गिरा। १३. बढई आया। १४. बैल उठा। १५ नारी ने नदी देखी। १६. पुत्री जननी से बोली। **(ख)** १७. कवि राजा के गुणो का वर्णन करता है। १८ राजा मत्रियो से मन्त्रणा करता है। १९. राजा शत्रु को डराता है। २०. पुत्री तर्क करती है। २१. वह भोजन का स्वाद लेता है। २२. दुर्जन सज्जन की निन्दा करता है। २३. सज्जन सत्य को ढूँढता है।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१. भोजन खादन् ब्राह्मण फल देहि।	भुक्तवते ब्राह्मणाय फल देहि।	१२६, ३३, ३५
२. स भोजनस्य आस्वादयति।	स भोजनम् आस्वादयति।	४

४. **अभ्यास**.—(क) २ (क) को क्त प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाओ। (ख) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् और लृट् मे बदलो। (ग) इन शब्दो के रूप लिखो—राजन्, पूषन्, मूर्धन्, ग्रावन्, तक्षन्। नदी, नारी, पत्नी, जननी, पुत्री, पृथ्वी। (घ) इन धातुओ के दसो लकारो मे रूप लिखोः—कृत्, मन्त्र्, तर्ज्, आस्वद्, गर्ह्।

शब्दकोष-८२५ + २५ = ८५०] **अभ्यास ३४** (व्याकरण)

(क) मति (बुद्धि), श्रुति (वेद), स्मृति (स्मृति), भूमि (भूमि), पङ्क्ति (पङ्क्ति), ओषधि (दवा), श्रेणि (कक्षा), अंगुलि, (अंगुली), प्रीति (प्रेम), अनुरक्ति (अनुराग), कान्ति (चमक), शान्ति (शान्ति), प्रकृति (स्वभाव, प्रकृति), भक्ति (भक्ति), शक्ति (शक्ति), मूर्ति (मूर्ति), पद्धति (मार्ग, विधि), समृद्धि (वृद्धि), समिति (सभा), सूक्ति (सुभाषित), नियति (भाग्य), व्यक्ति (मनुष्य), रात्रि (रात्रि), तिथि (तिथि) ।२४। (ख) पठत् (पढता हुआ) ।१।

सूचना—(क) मति—तिथि, मतिवत् ।

व्याकरण (मति, पठत्, शतृ प्रत्यय, द्वितीया)

१ मति शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० १४) ।

२ पठत् शब्द के रूप स्मरण करो । शतृ प्रत्ययान्त शब्दो के रूप पु० मे पठत् के तुल्य चलेगे । प्रथमा एक० मे अन्त मे अन् रहेगा, जैसे पठन्, गच्छन्, आदि । शेष रूप भगवत् के तुल्य । (देखो परिशिष्ट मे शतृ प्रत्यय के रूप) ।

३. अभ्यास ५ मे दिये गए द्वितीया के नियमो का पुन अभ्यास करो ।

नियम १२७—(क) (लट. शतृशानचौ०) लट् के स्थान पर परस्मैपद मे शतृ और आत्मनेपद मे शानच् होता है । शतृ का अत् और शानच् का आन शेष रहता है । शतृ प्रत्ययान्त के लिंग, वचन, कारक कर्ता के तुल्य होते है । शतृप्रत्ययान्त शब्द के रूप पुं० मे पठत् के तुल्य होगे । जुहोत्यादि की धातुओ मे न् नही लगेगा । जैसे—ददत्, ददतौ, ददत । स्त्रीलिंग मे ई लगाकर नदी के तुल्य । नपु० मे जगत् के तुल्य रूप चलेगे । शतृ और शानच् क्रिया की वर्तमानता का बोध कराते है । जैसे—वह जा रहा है, वह जा रहा था, वह खा रहा था, स गच्छन् अस्ति आदि । (ख) शतृ प्रत्यय मे भी विकरण आदि होते है, अत शतृ प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का अति सरल प्रकार यह है कि उस धातुके लट् के प्रथमपुरुष बहु० के रूप मे से अन्तिम इ और बीच के न् को हटा दे । इस प्रकार प्राय शतृ प्रत्ययवाला रूप बच जाता है। जैसे—भू—भवन्ति, शतृ—भवत् । अस्—सन्ति, सत् । गम्—गच्छन्ति, गच्छत् । पा—पिबन्ति, पिबत् । (ग) शतृ प्रत्ययान्त के बाद मे अर्थ के अनुसार अस् धातु का प्रयोग करो । जैसे—वर्तमान मे लट्, भूत मे लङ्, भविष्यत् मे लृट् । यथा—स गच्छन् अस्ति (वह जा रहा है) । तौ गच्छन्तौ स्त । अहं गच्छन् अस्मि । स गच्छन् आसीत्, भविष्यति वा । (घ) शतृ प्रत्ययान्त का स्त्रीलिंग बनाना —(१) (शप्श्यनोर्नित्यम्) भ्वादि०, दिवादि०, चुरादि०, तुदादि० की धातु के लट् प्र० पु० बहु० के रूप मे अन्त मे ई जोड़ दो । जैसे—गच्छन्ति से गच्छन्ती (जाती हुई), पठन्ती, पिबन्ती, दीव्यन्ती, तुदन्ती । (२) अदादि०, स्वादि०, क्र्यादि०, तनादि०, जुहोत्यादि० की धातु मे लट् प्र० पु० बहु० के रूप मे ई लगेगा, न् नही रहेगा । जैसे—रुदती, शृण्वती, क्रीणती, कुर्वती, ददती ।

अभ्यास २४

१ उदाहरण-वाक्य —१ स गृह गच्छन् अस्ति, आसीत्, भविष्यति वा। २ तौ गृह गच्छन्तौ स्तः, आस्ताम् वा। ३ ते गृह गच्छन्तः सन्ति, आसन् वा। ४ त्व गच्छन् असि, आसी· वा। ५ अह गच्छन् अस्मि, आसम् वा। ६. बालिका गच्छन्ती अस्ति। ७ बालिके गच्छन्त्यौ स्त। ८ बालिका· गच्छन्त्य· सन्ति। ९ फल पतद् अस्ति। १०. फलानि पतन्ति सन्ति। ११ पठन्त बालक, लिखन्ती बालिका च पश्य। १२. पठता मया सर्प· दृष्ट। १३. खादते ब्राह्मणाय फल देहि। १४ धावत· अश्वात् नरः पतित। १५ पठत रामस्य मुख पश्य। १६ मयि पठति सति (जब मै पढ रहा था तब) गुरु आगत।

२ संस्कृत बनाओ —**(क)** १ राम आ रहा है। २ वे दोनो पढ रहे है। ३ वे सब लिख रहे है। ४ तू हँस रहा है। ५. तुम सब बैठ रहे हो। ६ मै देख रहा हूँ। ७. हम सब खेल रहे है। ८ रमा आ रही है। ९. प्रभा गा रही है। १० पत्ता गिर रहा है। **(ख)** ११ राम सोच रहा था। १२ कृष्ण पूछ रहा था। १३ वे सब जल पी रहे थे। १४. तू फूल सूँघ रहा था। १५ मै काम कर रहा था। १६ हम हँस रहे थे। **(ग)** १७ लिखते हुए बालक को देखो। १८. काम करते हुए मैने एक सुन्दर फल पाया। १९ पढती हुई बालिका को फूल दो। २०. दौडते हुए घोडे से शिष्य गिरा। २१. गीत गाती हुई कमला का भाव देखो। २२. जब मै लिख रहा था तब एक व्यक्ति मेरे पास आया। **(घ)** २३ श्रुति के पीछे स्मृति चलती है। २४ शक्ति, भक्ति, अनुरक्ति और प्रीति को शान्ति और समृद्धि के लिए चाहो। २५ सूक्ति को पढो, मूर्ति को देखो, समिति मे जाओ, ओषधि लाओ। २६ कक्षा के पास दो पक्ति मे दस व्यक्ति है। २७. सुन्दर पद्धति को अपनाओ (सेव्)।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. गमन्, पान्, घ्रान्, दृशन्।	गच्छन्, पिबन्, जिघ्रन्, पश्यन्।	१२७ ख
२ आगच्छती, गायती।	आगच्छन्ती, गायन्ती।	१२७ घ

४ अभ्यास —(क) २ (क) को भूतकाल मे बदलो। (ख) २ (ख) को वर्तमान मे बदलो। (ग) इन धातुओ के शतृ प्रत्यय के रूप तीनो लिंगो मे बनाओ :—पठ्, लिख्, गम्, आगम्, दृश्, हस्, पा, घ्रा, स्था, कृ, जि, दा, अस्, वद्, पच्, इष्, प्रच्छ्, कथ्। (घ) इन शब्दो के पूरे रूप लिखो·—मति, श्रुति, भूमि, प्रकृति, शक्ति, रात्रि, पठत्, गच्छत्, लिखत्, पश्यत्।

शब्दकोष–८५० + २५ = ८७५] अभ्यास ३५ (व्याकरण)

(क) कुमारी (कुमारी), गौरी (पार्वती), मही (पृथ्वी), रजनी (रात्रि), कौमुदी (चाँदनी), प्राची (पूर्व), प्रतीची (पश्चिम), उदीची (उत्तर), महिषी (१ रानी २ भैंस), सखी (सखी), पुत्री (पुत्री), दासी (दासी), वापी (तालाब), कमलिनी (कमलिनी), पुरी (नगर), नगरी (नगर), वाणी (वाणी), सरस्वती (सरस्वती)। १८। [पार्वती, भागीरथी, जानकी, अष्टाध्यायी।] (ग) यदि (यदि), चेत् (१ यदि, २ तो), नो चेत् (नही तो), अन्यथा (नही तो), यतो हि (क्योंकि), सकृत्, (एकबार), असकृत्, (अनेक बार)।७।

सूचना—(क) कुमारी—सरस्वती, नदीवत्।

व्याकरण (नदी, शतृ, शानच्, द्वितीया)

१. नदी शब्द के तुल्य कुमारी आदि के रूप चलाओ। (देखो शब्द० १५)।

२ अभ्यास ६-७ मे दिये द्वितीया के नियमो का पुनः अभ्यास करो।

नियम १२८—(क) (लट शतृशानचौ०) आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शानच् (आन) हो जाता है। शानच् प्रत्यय होने पर शब्द के रूप पुंलिग में रामवत् चलेगे। स्त्रीलिंग में अन्त मे आ लगाकर रमावत्, और नपुं० मे गृहवत् रूप चलेंगे। शानच् का आन शेष रहता है। शानच् प्रत्यान्त शब्दो का लिग, वचन और कारक कर्ता के तुल्य ही रहेगा। (देखो परिशिष्ट मे शानच् प्रत्यय)। (ख) शानच् प्रत्ययान्त के बाद अर्थ के अनुसार अस् धातु का प्रयोग करो, अर्थात् वर्तमान में लट् लकार, भूत मे लङ् और भविष्यत् मे लृट्। (ग) (आने मुक्) जिन धातुओं के अन्त मे अ विकरण लगता है, वहाँ पर अ और आन के बीच मे म् लग जाएगा। अर्थात् अ + आन=मान। जैसे—यजते>यजमान। वर्तते>वर्तमान। वर्धते>वर्धमान। (घ) (ईदास) आस् धातु का शानच् होने पर आसीन रूप होता है।

सूचना—हिन्दी मे रहा वाले प्रयोगो (जा रहा है, जा रहा था, पढ़ रही थी) का अनुवाद शतृ या शानच् प्रत्यय लगाकर होता है, बाद मे अस् धातु का रूप। जैसे—पठन् अस्ति, सा याचमाना अस्ति, स पचमान आसीत्, भविष्यति वा।

नियम १२९—(लृट सद् वा) लृट् लकार को भी परस्मै० मे शतृ और आत्मने० मे शानच् होता है। लृट् का रूप बनाकर अन्त मे शतृ या शानच् लगावे। जैसे, स गमिष्यन् भविष्यति, पठिष्यन् भविष्यति। (वह जाता हुआ होगा, पढ़ता हुआ होगा)।

नियम १३०—शतृ और शानच् प्रत्ययान्त का सप्तमी मे समय-सूचक अर्थ हो जाता है। जिस समय मै पढ़ रहा था—मयि पठति सति। जब मै रो रहा था—मयि रुदति सति।

अभ्यास ३५

१ उदाहरण-वाक्य—१. छात्र वर्तमानोऽस्ति, आसीद् वा। २ कुमारी कार्य कुर्वाणा अस्ति, आसीद् वा। ३. गौरी भोजन पचमाना अस्ति। ४ शिष्यः अधीयानः (पढ रहा) अस्ति। ५ पुत्री आसीना (बैठी हुई) अस्ति। ६. दासी भुजाना (भोजन खाती हुई) अस्ति। ७ अह श्व. प्रात· पठिष्यन्, कार्य करिष्यन् भविष्यामि। ८ रुदन्त पुत्र त्यक्त्वा पिता गतः। ९. मयि गच्छति सति (जब मै जा रहा था तब) पिता आगतः। १० कुमार्य· महिष्यश्च सखीभि· दासीभिश्च सह वापी निकषा महीम् अधि-तिष्ठन्ति। ११. सखी शयाना (सोती हुई) अस्ति।

२. संस्कृत बनाओ—**(क)** १. उस छात्र ने एक बार पाठ पढा। २. राजा की पुत्री नदी के पास जा रही है। ३ कमलिनी वापी मे अत्यन्त शोभित हो रही है (शुभ्)। ४ रानी सखियोके साथ गौरी और सरस्वती की वन्दना कर रही है (वन्दमाना)। ५ नगरी के चारो ओर रजनी मे प्राची, प्रतीची, उदीची और दक्षिण दिशा मे कौमुदी फैल रही है (प्रसृ)। ६ गौरी की वाणी शिव को अच्छी लग रही है (रुच्)। ७ पार्वती और जानकी पृथ्वी पर बैठी हुई (आसीन) अष्टाध्यायी पढ रही है (अधि+इ)। (ख) ८ मै बैठा हुआ था। ९ तू पढ रहा था (अधि+इ)। १०. वह माँग रहा था। ११ कुमारी सो रही थी (शी)। १२ गौरी खाना खा-रही थी (भुज्)। १३. प्रभा हँस रही थी। १४ रानी हँसती हुई सखी को देख रही थी (ईक्षमाणा)। **(ग)** १५ मै जब लिख रहा था तब गौरी आई। १६ बालक जब रो रहा था, तब वह दासी आई। १७. कुमारी गाय का दूध दुहती है (दोग्धि)। १८ दासी रानी से धन माँग रही है। १९ सरस्वती पार्वती से प्रश्न पूछ रही है। २० दासी बकरी को गाँव मे ले जा रही है। २१. वह कल प्रात लिख रहा होगा। २२. तू कल घर जा रहा होगा। २३ पाप मत कर, नहीं तो रोएगा, क्योकि पाप से दु.ख होता है।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१	अधीयती, शयन्ती, भुजती, आसन्।	अधीयाना, शयाना, भुजाना, आसीना।	१२८
२	महिष्या· धन याचते।	महिषी धन याचमाना अस्ति।	२१
३.	दासी अजा ग्रामे नयन् अस्ति।	दासी अजा ग्राम नयन्ती अस्ति।	२१, १२७

४ अभ्यास—(क) २ (क) को भूतकाल मे बदलो। (ख) २ (ख) को वर्तमान मे बदलो। (ग) इन धातुओ के शानच् प्रत्यय के रूप तीनो लिगो मे बनाओ·—वृत्, पच्, भुज्, कृ, शी, ईक्ष्, वन्द्, रुच्, शुभ्, अधि+इ, आस्। (घ) इन शब्दो के पूरे रूप लिखोः—नदी, कुमारी, पृथ्वी, गौरी, सखी, पुरी, पुत्री, वाणी।

शब्दकोष--८७५+२५=९००] अभ्यास ३६ (व्याकरण)

(क) धेनु (गाय), रेणु (धूल), चञ्चु (चोंच), रज्जु (रस्सी), हनु (ठोडी)। सुलेख (सुलेख), परिणाम (परिणाम), क्रीडक (खिलाडी), अंक (अंक), अवकाश (छुट्टी), परीक्षा (परीक्षा), क्रीडा (खेल), सचिका (कापी), मसी (स्याही), लेखनी (कलम), श्रेणी (कक्षा), मसीपात्रम् (दावात), वादनम् (बजे), पृष्ठम् (पृष्ठ), उत्तरम् (उत्तर), क्रीडाक्षेत्रम् (क्रीडाक्षेत्र), अनुशासनम् (अनुशासन)। २२। (ख) आस् (बैठना), उत्तीर्ण (उत्तीर्ण), उपस्थित (उपस्थित)।३।

सूचना—(क) धेनु—हनु, धेनुवत्।

व्याकरण (धेनु शब्द, तुमुन् प्रत्यय, द्वितीया)

१ धेनु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० १६)।

२ आस् धातु के दसो लकारो मे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० सं० ३४)।

३ अभ्यास ८ मे दिए हुए तृतीया के नियमो का पुनः अभ्यास करो।

नियम १३१—(१) (तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्) को, के लिए अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। यह अव्यय होता है, अतः इसका रूप नही चलेगा। जैसे—पठितुम् (पढनेको), लेखितुम् (लिखने को), स्नातुम् (नहाने को)। (२) इच्छार्थक धातुओं, शक् आदि धातुओं तथा पर्याप्त अर्थ के शब्दो और समय वाचक शब्दो के साथ भी तुमुन् होता है।

नियम १३२—तुमुन् (तुम्) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर ले। ये नियम तृच् (तृ), तव्यत् (तव्य), मे भी लगेंगे। (१) धातु को गुण होता है, अर्थात् अन्तिम इ या ई को ए, उ या ऊ को ओ, ऋ या ॠ को अर् तथा उपधा (उपान्त्य) के इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर् होता है। जैसे—जि-जेतुम्, भू-भवितुम्, कृ-कर्तुम्। इसी प्रकार हर्तुम्, धर्तुम्, लेखितुम्, रोदितुम्, शोचितुम्। (२) सेट् धातुओ के बीच मे इ आता है, अनिट् मे नही। उदाहरण, उपर्युक्त हैं। (३) धातु के अन्तिम च् और ज् को क् होता है, द् को त्, भ् को ब्, ध् को द्। जैसे--पच्-पक्तुम्, भुज्-भोक्तुम् छिद्-छेत्तुम्, रुध्-रोद्धुम्, लभ्-लब्धुम्। (४) धातु के अन्तिम च्छ् और श् तथा भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज्, के ज् के स्थान पर ष् होकर ष्टुम् हो जाता है। जैसे-प्रच्छ्-प्रष्टुम्। प्रविश्-प्रवेष्टुम्। स्रष्टुम्, यष्टुम्। (५) ए और ऐ अन्तवाली धातुओ को आ हो जाता है। गै-गातुम्, त्रै-त्रातुम्, आह्वे-आह्वातुम्। (६) धातु के अन्तिम म् को न् हो जाता है। गम्-गन्तुम्, रम्-रन्तुम्। (७) इन धातुओ के ये रूप होते हैं:—सह्-सोढुम्, वह्-वोढुम्, सृज्-स्रष्टुम्, दृश्-द्रष्टुम्, आरुह्-आरोढुम्, दह्-दग्धुम्।

नियम १३३—(तुं काममनसोरपि) तुम् के म् का लोप हो जाता है, बाद में काम या मनस् (इच्छार्थक) शब्द हो तो। जैसे-वक्तुकामः, वक्तुमनाः (बोलने का इच्छुक)।

अभ्यास २६

१ उदाहरण-वाक्य —१. अहं कार्यं कर्तुमिच्छामि। २ स लेखं लेखितुम्, पुस्तकं पठितुम्, गृहं गन्तुं, शत्रुं हन्तुं, गुरुं वन्दितुं, भोजनं खादितुम् इच्छति। ३ अहं कार्यं कर्तुं शक्नोमि, पठितुं च जानामि। ४. एष समयः कालो वा पठितुम्। ५. स वक्तुकामः वक्तुमनाः वा अस्ति। ६. रामः अत्र आस्ते, आस्ताम्, आसीत, आस्त, आसिष्यते वा।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ खाने के लिए घर जाओ। २. पढने के लिए विद्यालय जाओ। ३ बालक कौवे की चोंच को छूना चाहता है। ४. यह भोजन का समय है। ५ रमा लिख और पढ सकती है। ६ कृष्ण खाना खाने के लिए, पाठ पढने के लिए, लेख लिखने के लिए, काम करने के लिए, गाय दुहने के लिए, भार ढोने के लिए, गाय (धेनु) लाने के लिए और रस्सी जलाने के लिए वहाँ जाता है। ७ वृक्ष पर चढने के लिए, दु ख सहन करने के लिए, गाय देखने के लिए, प्रश्न पूछने के लिए, यज्ञ करने के लिए, पुत्र की रक्षा करने के लिए, गाना गाने के लिए और शत्रु को जीतने के लिए तुम यहाँ आना। ८ वह पढने का इच्छुक है, खाने का इच्छुक है और गाने का भी इच्छुक है (काम या मना)। **(ख)** ९. इस कक्षा मे २० छात्र और ८ छात्राएँ उपस्थित है और ४ छात्र अनुपस्थित है। १०. विद्यालय मे गुरु छात्रो और छात्राओ से प्रश्न पूछते है, वे उत्तर देते है। ११. दस बजे विद्यालय की पढाई आरम्भ होती है। १२ छात्र अपने मित्रो के साथ कक्षा मे बैठते है, लेख लिखते है और पुस्तक पढते है। १३ कुछ छात्र परीक्षा मे उत्तीर्ण होते है और कुछ अनुत्तीर्ण। १४ कुछ खिलाडी क्रीडाक्षेत्र मे गेंद खेल रहे है। १५ दावात मे स्याही है। १६. अपनी लेखनी से चार पृष्ठ लिखो। १७ अनुशासन का पालन करो। **(ग)** १८ वह धूलि पर बैठता है। १९. तू बैठता है। २० मै बैठता हूँ। २१ वह बैठा। २२ तू बैठा। २३. मै बैठा। २४ वह बैठेगा। २५ वह बैठे।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. लिखितुम्, दुग्धुम्, सहितुम्, प्रच्छितुम्।	लेखितुम्, दोग्धुम्, सोढुम्, प्रष्टुम्।	१३१
२. पठितुमनाः, पठितुकाम।	पठितुमनाः, पठितुकामः।	१३३

४ अभ्यास :—(क) २ (ग) को बहुवचन मे बदलो। (ख) आस् धातु के दसो लकारो मे रूप लिखो। (ग) इन शब्दो के पूरे रूप लिखो—धेनु, रेणु, रज्जु। (घ) तुमुन् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के नियमो को सोदाहरण बताओ। (ङ) इन धातुओ के तुमुन् प्रत्यय के रूप बनाओ :—कृ, हृ, धृ, पठ्, लिख्, गम्, भुज्, सह्, वह्, सृज्, दृश्, रुह्, दह्, लभ्, हन्, गै, आह्वे।

शब्दकोष—१०० + २५=१२५] अभ्यास ३७ (व्याकरण)

(क) वधू (बहू), चमू (सेना), तनू (शरीर), जम्बू (जामुन), श्वश्रू (सास)। व्याघ्र (बाघ), ऋक्ष (रीछ), शूकर (सूअर), वृक (भेडिया), शृगाल (गीदड), शश (खरगोश), वानर (बन्दर), मृग (हिरन), नकुल, (न्योला), अश्व (घोडा), वृषभ (बैल), उष्ट्र (ऊँट), गर्दभ (गधा), महिष (भैंसा), कुक्कुर: (कुत्ता), मार्जार (बिलाव), अज (बकरा), मूषक (चूहा), एडका (भेड)। २४। (ख) शी (सोना)। १। सूचना—(क) वधू—श्वश्रू, वधूवत्।

व्याकरण (वधू, शी, क्त्वा प्रत्यय, तृतीया)

१. वधू शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द स० १७)।

२ शी धातु के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ३५)।

३. अभ्यास ९ मे दिए तृतीया के नियमो का पुनः अभ्यास करो।

नियम १३४—(१) (समानकर्तृकयो: पूर्वकाले) 'पढकर' 'लिखकर' आदि 'कर' या 'करके' के अर्थ मे 'क्त्वा' प्रत्यय होता है। क्त्वा का 'त्वा' शेष रहता है। क्रिया का कर्ता एक ही होना चाहिए। त्वा अव्यय होता है, अत इसका रूप नही चलता। जैसे, भोजनं खादित्वा विद्यालयं गच्छति। (२) (अलखल्वो०) निषेधार्थक अलम् या खलु बाद मे हो तो धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। जैसे—अलं कृत्वा, कृत्वा खलु (मत करो)। अलं हसित्वा (मत हँसो)। देखो अभ्यास ३८ भी।

नियम १३५—क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर ले। (१) धातु को गुण या वृद्धि नही होती। सेट् धातुओं मे इ लगेगा, अनिट् मे नही। जैसे, पठित्वा, हसित्वा, कृत्वा, हृत्वा, धृत्वा, लिखित्वा, रुदित्वा, जित्वा, चित्वा, भूत्वा। (२) नियम १२५ के (१) (३) (४) (५) यहाँ पर भी लगेंगे। जैसे (१) हत्वा, लब्ध्वा, रुद्ध्वा। (३) दित्वा, सित्वा, मित्वा, स्थित्वा। (४) गत्वा, रत्वा, यत्वा, नत्वा, मत्वा, हत्वा, बद्ध्वा। जन् आदि मे 'इ' भी लगता है—जनित्वा, सात्वा—सनित्वा, खात्वा—खनित्वा। (५) उक्त्वा, सुप्त्वा, इष्ट्वा, उप्त्वा, गृहीत्वा, विद्ध्वा, पृष्ट्वा, हूत्वा, ऊढ्वा, उदित्वा, उषित्वा। (३) नियम १३२ के (३), (४) यहाँ भी लगते है। (३) पक्त्वा, भुक्त्वा। (४) पृष्ट्वा, दृष्ट्वा, इष्ट्वा, सृष्ट्वा। (४) गा, पा के आ को ई हो जाता है—गीत्वा, पीत्वा,। अन्यत्र आ रहता है। ज्ञात्वा, त्रात्वा। (५) दीर्घ ऋ को ईर् होता है, तॄ>तीर्त्वा, कॄ>कीर्त्वा, पॄ मे ऊर् होता है>पूर्त्वा। (६) कम्, क्रम्, चम्, दम्, भ्रम्, श्रम्, के दो-दो रूप होते है। एक इ बीच मे लगाकर, दूसरा अम् को 'आन्' बनाकर। जैसे—कमित्वा—कान्त्वा, क्रमित्वा—क्रान्त्वा, शमित्वा—शान्त्वा आदि। (७) इन धातुओ के ये रूप होते है। दा>दत्त्वा, धा>हित्वा, हा (छोडकर)>हित्वा, अद्> जग्ध्वा, दह्>दग्ध्वा।

अभ्यास ३७

१ उदाहरण-वाक्य—१. राम' स्नात्वा, पाठ पठित्वा, लेख लिखित्वा, भोजन भुक्त्वा, विद्यालय गच्छति। २ कृष्ण आसने स्थित्वा, मित्र दृष्ट्वा, तं प्रश्न पृष्ट्वा, स्वय च किञ्चिद् उक्त्वा लिखति। ३. शिष्यः आसने शेते, शेताम्, शयीत, अशेत, शयिष्यते वा।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १ कृष्ण स्नान करके, पुस्तक पढकर, लेख लिखकर, पाठ स्मरण कर और भोजन करके प्रतिदिन पाठशाला जाता है। २. राजा की सेना शत्रुओ को जीतकर और उन्हे बॉधकर राजा के पास लाती है। ३ बहू काम करके, भोजन पकाकर और सास को खिलाकर स्वय खाती है। ४ गुरु सत्य बोलकर, धर्म करके, यज्ञ करके, दूध पीकर और छात्रो को पढाकर जीवन बिताता है। ५. सास दान देकर, मन्त्र जपकर, गाना गाकर, अधर्म को छोडकर और सत्य को जानकर सुखपूर्वक रहती है। ६ बालक रोकर, भूमि खोदकर और डडा लेकर दौडता है। ७. भृत्य नदी को पार करके, भार सिर पर ढोकर ले जाता है। **(ख)** ८ राम ने वन मे एक व्याघ्र, दो रीछ, तीन सूअर, चार भेडिए, पॉच गीदड और छः मृग देखे। ९ नगर मे बहुत से घोडे, बैल, ऊँट, भैसे, कुत्ते, बिल्ली तथा गधे है। १० मत हँसो, मत रोओ, विवाद मत करो। ११ कुत्ता ऑख से काना है। १२. घोडा पैर से लॅगडा है। १३. खरगोश स्वभाव से सरल होता है। १४ ऐसे कुत्ते से क्या लाभ जो रक्षा न करे। **(ग)** (शी धातु) १५. वह सोता है। १६ मै सोता हूँ। १७ वह सोवे। १८ तू सो। १९ मै सोऊँ। २० वह सोया। २१ तू सोया। २२. मै सोया। २३. वह सोएगा। २४. तू सोएगा। २५ मै सोऊँगा।

३	अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१	बन्ध्वा, यजित्वा, वक्त्वा, दुहित्वा।	बद्ध्वा, इष्ट्वा, उक्त्वा, दुग्ध्वा।	१३५
२	दात्वा, ग्रहीत्वा, तरित्वा, वहित्वा।	दत्त्वा, गृहीत्वा, तीर्त्वा, ऊढ्वा।	१३५

४ अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन बनाओ। (ख) इन शब्दो के पूरे रूप लिखो—वधू, चमू, तनू। (ग) शी धातुके दसो लकारो के रूप लिखो। (घ) क्त्वा प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के नियमो को सोदाहरण लिखो। (ङ) इन धातुओ के क्त्वा प्रत्यय के रूप लिखो—कृ, गम्, पठ्, लिख्, खन्, वच्, स्वप्, ग्रह्, वह्, दृश्, प्रच्छ्, गा, तृ, कृ, दा, धा, क्रम्, भ्रम्।

शब्दकोष ९२५+२५=९५०] अभ्यास ३८ (व्याकरण)

(क) वाच् (वाणी), शुच् (शोक), त्वच् (त्वचा), ऋच् (वेद की ऋचा)। कोकिल (कोयल), मयूर (मोर), हंस (हस), शुक (तोता), चातक (चातक), चक्रवाक (चकवा), खंजन (खजन), कपोत (कबूतर), टिट्टिभ (टिटिहरी), चिल्ल (चील), काक (कौआ), वायस (कौआ), कुक्कुट (मुर्गा), गृध्र (गीध), बक (बगुला), उलूक (उल्लू), श्येन. (बाज)। सारिका (मैना), वर्तिका (१ बत्तख, २ बत्ती), चटका (चिड़िया)। २४। (घ) स्वच्छ (स्वच्छ)।१।

व्याकरण (वाच्, हु, ल्यप्, चतुर्थी)

१ वाच् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो० शब्द स० १८)।

२ हु धातु के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३६)।

३ अभ्यास १० मे दिए चतुर्थी के नियमो का पुन. अध्ययन करो।

नियम १३६—(समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्) धातु से पूर्व कोई अव्यय, उपसर्ग या च्विप्रत्यय हो तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् (य) हो जाता है। धातु से पहले नञ् (अ) हो तो नही। ल्यप् का 'य' शेष रहता है। ल्यप् अव्यय होता है, अत इसके रूप नही चलते। जैसे, प्रलिख्य, प्रगम्य, स्वीकृत्य। परन्तु अकृत्वा, अगत्वा। ल्यप् प्रत्यय का वही अर्थ है जो क्त्वा का है अर्थात् करके।

नियम १३७—ल्यप् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर ले :— (१) साधारणतया धातु अपने मूल रूप मे रहती है। गुण या वृद्धि नही होती है। इ भी बीच मे नही लगता। जैसे—आलिख्य, सपठ्य, आनीय। (२) धातु के अन्त मे आ, ई, ऊ हो तो वह उसी रूप मे रहता है। जैसे—प्रदाय, उत्थाय, निधाय, निलीय, विक्रीय, आनीय, अनुभूय, स्थिरीभूय। (३) (ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्) ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ के बाद ल्यप् से पहले 'त्' और लग जाता है, अर्थात् 'त्य' होता है। जैसे—आगत्य, अधीत्य, विजित्य, संश्रुत्य, प्रस्तुत्य, प्रकृत्य, प्रहृत्य। (४) दीर्घ ॠ को ईर् हो जाता है और पॄ मे ऊर्। जैसे–उत्तीर्य, अवतीर्य, विकीर्य, प्रपूर्य। (५) (वचिस्वपि०) वच् आदि को सप्रसारण होता है। वच्>प्रोच्य, वद्>अनूद्य, वस्>अध्युष्य, स्वप्>प्रसुप्य, ह्वे>आहूय, ग्रह्>सगृह्य, प्रच्छ्> आपृच्छ्य। (६) णिजन्त धातुओं के 'इ' का लोप हो जाता है, विचारि>विचार्य। प्रहार्य, उत्तार्य, उत्थाप्य, प्रदर्श्य, संचिन्त्य। (७) (ल्यपि लघुपूर्वात्) उपधा मे ह्रस्व हो तो इ को अय् होता है, विगणय्य, प्रणमय्य, विरचय्य। (८) (वा ल्यपि) गम् आदि के म् का लोप विकल्प से होता है और हन् आदि के न् का लोप नित्य होता है। (लोप होने पर बीच मे त्)। आगम्य—आगत्य, प्रणम्य—प्रणत्य। हन्>आहत्य, तन्>वितत्य, मन्>अनुमत्य।

अभ्यास ३८

१ उदाहरण-वाक्य—१. पाठं सपठ्य, लेखम् उल्लिख्य, सुखम् अनुभूय, परीक्षाम् उत्तीर्य रामोऽत्रागतः। २ रामम् आहूय, सम्यग् विचार्य गुरु पृष्टवान्। ३ वाचम् उच्चार्य, शुच सत्यज्य, वेदम् अधीत्य, ऋच प्रोच्य, गुरु प्रात·। ४ छात्र· अग्नौ जुहोति, जुहुयात्, अजुहोत्, होष्यति वा।

२ सस्कृत बनाओ—(क) (ल्यप्) १ गुरुजी को जल लाकर दो। २ श्रम से पढकर, परीक्षा उत्तीर्ण कर अग्रिम श्रेणी मे पढो। ३. राजा शत्रु का सहार करके, दुष्ट पर प्रहार कर, गुणियो का उपकार कर, पापियो का अपकार कर, सुख का अनुभव कर ब्राह्मणो को दान देता है। ४ वणिक् अन्न और पुस्तक बेचकर, धन सग्रह कर, दान देकर, अपनी अभिलाषाओ को पूर्ण कर सुख से सोता है। ५ बालक उठकर, गुरु को प्रणाम कर, सुन्दर वचन उच्चारण कर, विद्यालय मे आकर ऋचा पढता है। ६. शिष्य रात्रि मे सोकर, प्रात उठकर, अन्य छात्रो को उठाकर, स्नान कर, हवन कर, भोजन कर, पुस्तक लेकर पढने के लिए जाता है। ७ वह सायकाल खेलकर ओर घूमकर, पूजाकर, भोजन कर, ऋचा पढकर सोता है। ८ शोक को छोडकर वाणी कहो। (ख) ९ कोयल और कौए की त्वचा काली होती है। १० मोर नाचकर, हस चलकर, तोता बोलकर, चातक मेघ की ओर देखकर, खजन उडकर (उड्डीय), कबूतर, चील, बगुला और बाज अपनी क्रीडा से मन को हरते है। ११ मैना बोलती है, बत्तक इधर आती है, चिडिया उडती है (उड्डयते), उल्लू चिल्लाता है (क्रन्द्), गीध देखता है, मुर्गा भागता है, चकवा रात्रि मे रोता है, टिटिहरी उडती है। (ग) १२ वह अग्नि मे हवन करता है। १३. तू हवन करता है। १४. मै हवन करता हूँ। १५ वह हवन करे। १६ तू हवन कर। १७. उसने हवन किया। १८ मैने हवन किया। १९ वह हवन करेगा। २० मै हवन करूँगा।

३. अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१ आदत्य, अधीय, उत्तीर्त्वा।	आदाय, अधीत्य, उत्तीर्य।	१३७
२. आह्वाय, सहृय, उपकृय।	आहूय, सहृत्य उपकृत्य।	१३७

४ अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन बनाओ। (ख) हु धातु के दसो लकारो के रूप लिखो। (ग) वाच्, शुच्, त्वच्, ऋच् के पूरे रूप लिखो (घ) इन धातुओ के ल्यप् प्रत्यय के रूप बनाओ—अनुभू, उपकृ, सस्कृ, सहृ, आहृ, प्रहृ, अधि + इ, आनी, उत्तृ, अवतृ, सगम्, आदा, उत्था, अनुवद्, अविवस्, आह्वे, आहन्, विचारि, उत्थापि।

शब्दकोष—९५०+२५ = ९७५] अभ्यास ३९ (व्याकरण)

(क) सरित् (नदी), योषित् (स्त्री), तडित् (बिजली), विद्युत् (बिजली)। दन्त (दाँत), ओष्ठ (ओष्ठ), अधर. (नीचे का ओष्ठ), स्कन्ध (कन्धा), कण्ठ (गला), स्तन. (स्तन), कर. (हाथ), नख (नाखून)। नासिका (नाक), ग्रीवा (गर्दन), जिह्वा (जीभ), नाभि (नाभि), बुद्धि (बुद्धि), मुष्टि (मुट्ठी)।। बाहु (भुजा, हाथ)। शीर्षम् (शिर), ललाटम् (माथा), उरःस्थलम् (छाती), हृदयम् (हृदय), उदरम् (पेट), अङ्गम् (अग)। २५।

व्याकरण (सरित्, भी, तव्यत्, अनीयर्, चतुर्थी)

१. सरित् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द० १९)।

२. भी धातु के दसो लकारो मे पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ३७)।

३ अभ्यास ११ मे दिए चतुर्थी के नियमो का पुनः अभ्यास करो।

नियम १३८—(तव्यत्तव्यानीयरः) 'चाहिए' अर्थ में तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते है। इनका क्रमश तव्य और अनीय शेष रहता है। तव्य और अनीय भाववाच्य और कर्मवाच्य में होते है। (१) जब ये कर्मवाच्य मे होगे तो कर्म के अनुसार इनका लिंग, वचन और कारक होगा, कर्ता मे तृतीया होगी और कर्म मे प्रथमा। जैसे—तेन त्वया मया अस्माभि वा पुस्तकानि पठितव्यानि, पठनीयानि वा। (२) जब भाववाच्य मे तव्य और अनीय होगे तो इनमे नपुसक० एकवचन ही रहेगा, कर्ता मे तृतीया होगी। जैसे—तेन हसितव्यम्। तव्य और अनीय प्रत्ययान्त शब्द के रूप पु० मे रामवत्, स्त्रीलिंग मे रमावत् और नपु० मे गृहवत् होगे।

नियम १३९—'तव्य' प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए देखो नियम १३२। जैसे—पठितव्य, लेखितव्य, कर्तव्य, हर्तव्य। रूप बनाने का सरल उपाय यह भी है कि तुम् के स्थान पर तव्य लगा दो।

नियम १४०—'अनीय' प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर ले। ल्युट् (अन), अच् (अ), अप् (अ), मे भी ये नियम लगेंगे। (१) साधारणतया धातुओ मे कोई अन्तर नहीं होता। धातु मूलरूप में रहती है। बीच मे इ नहीं लगता। गम्>गमनीय, हसनीय, यजनीय, वचनीय। पा>पानीय, दानीय, स्थानीय आदि। (२) धातु के अन्तिम और उपधा के इ, उ, ऋ को क्रमश ए, ओ, अर् हो जाता है और अन्तिम ई, ऊ, ॠ को भी क्रमशः ए, ओ, अर् होते हैं। जैसे—जि>जयनीय, चयनीय, हवनीय, स्तवनीय, करणीय, हरणीय, स्मरणीय, लेखनीय, शोचनीय, कर्षणीय। (३) धातु के अन्तिम ए और ऐ को आ होता है। गै>गानीय, आह्वे>आह्वानीय।

अभ्यास ३९

१. उदाहरण-वाक्य —१. मया पाठ पठनीयः पठितव्यो वा । २ मया अस्माभिः वा पाठौ पठनीयौ, पाठा पठनीया. । ३ मया त्वया अस्माभि वा कार्य कर्तव्य करणीय वा, कार्याणि करणीयानि । ४ त्वया हसनीयम् । ५ मया सरित् योषिद् वा दर्शनीया, द्रष्टव्या वा । ६ शिष्य. गुरो बिभेति, बिभेतु, अबिभेत्, बिभीयात्, भेष्यति वा ।

२ संस्कृत बनाओ —(क) (तव्यत्, अनीयर्) १. मुझे लेख लिखना चाहिए । २. मुझे हॅसना चाहिए । ३ तुम्हे काम करना चाहिए । ४ मुझे पाठ स्मरण करना चाहिए । ५ तुम्हे गाना गाना चाहिए । ६. स्त्री को पढना चाहिए, गाना गाना चाहिए, दान देना चाहिए और हवन करना चाहिए । ७ नदी मे स्नान करना चाहिए ८. विद्युत् से डरना चाहिए । (ख) ९ उस स्त्री की नाक, ओष्ठ, दॉत और अधर मुझे अच्छे लगते है (रुच्) । १० हृदय की शुद्धि से बुद्धि शुद्ध होती है । ११ हाथ दान से, जीभ सत्यभाषण से, बुद्धि सुविचार से, बाहु बल से, हृदय दया से, कण्ठ सुन्दर स्वर से शोभित होता है । १२. उन्नत कधा, उन्नत वक्ष.स्थल, उन्नत ल्लाट और उन्नत स्तन शोभित होते है। १३. इस पुरुष की नाभि, नाखून, उदर और शिर सुन्दर है । (ग) १४. पिता को नमस्कार । १५ बालक को स्वस्ति कहता हूॅ । १६. मै इस कार्य के लिए समर्थ और पर्याप्त हूॅ । १७. स्त्री को आभूषण अच्छा लगता है । १८. राम दुष्ट पर क्रोध, द्रोह, ईर्ष्या और असूया करता है । १९. सुख और शान्ति के लिए स्त्री को प्रसन्न रखो (प्रसादय) । (घ) २०. वह पिता से डरता है, डरे, डरा या डरेगा । २१. मै सिह से डरता हूॅ, डरा या डरूॅगा । २२ तू चोर से डरता है, डरा या डरेगा ।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	१. अह लेख लेखनीयम् ।	मया लेखः लेखनीय. ।	१३८
	२. विद्युता भेतव्यः ।	विद्युतः भेतव्यम् ।	१३८, ४७

४. अभ्यास—(क) २ (क) को बहुवचन बनाओ । (ख) २ (घ) को बहु० बनाओ । (ग) भी धातु के दसो लकारो के रूप लिखो । (घ) सरित्, योषित्, विद्युत्, तडित् के पूरे रूप लिखो । (ङ) इन धातुओ के तव्यत् और अनीयर् लगाकर रूप बनाओ—कृ, पठ्, लिख्, गम्, हृ, पा, दा, गै, जि, चि । (च) चतुर्थी किन स्थानो पर होती है, सोदाहरण लिखो ।

शब्दकोष ९७५ + २५ = १०००] अभ्यास ४० (व्याकरण)

(क) वारि (जल)। हस्त (हाथ), अगुष्ठ (अगूठा), केश (बाल), मलम् (शौच), मूत्रम् (लघुशका), रक्तम् (खून), मासम् (मास), आननम् (मुँह), पृष्ठम् (पीठ)। शिखा (चोटी), जघा (जघा), अगुलि (अँगुली), कटि (कमर),। १४। (ख) आदा (लेना), प्रदा (देना)। अभिधा (कहना), अपिधा (ढकना), विधा (करना), परिधा (पहनना), निधा (रखना), श्रद्धा (श्रद्धा करना)। ८। (ग) सुरभि (सुगन्धित), शुचि (स्वच्छ, पवित्र), मनोहारिन् (मनोहर)। ३।

सूचना—वारि, सुरभि, शुचि, मनोहारिन्, वारि के तुल्य। स० मे मनोहारिन् होगा।

व्याकरण (वारि, दा, धा, यत्, अच्, अप्, पचमी)

१ वारि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २१)।
२ दा, धा धातु के दसो लकारो के रूप स्मरण करो (देखो धातु० ३८-३९)।
३ अभ्यास १२ मे दिये पचमी के नियमो का पुन अभ्यास करो।

नियम १४१—(अचो यत्) 'चाहिये' या 'योग्य' अर्थ मे आ, इ, ई, उ, ऊ अन्तवाली धातुओ से यत् प्रत्यय होता है। यत् का 'य' शेष रहता है। यत् प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य मे होता है। लिग, वचन आदि के लिए देखो नियम १३८। अर्थात् कर्मवाच्य मे कर्म के तुल्य लिग, वचन, विभक्ति। कर्ता मे तृतीया, कर्म मे प्रथमा। भाववाच्य मे कर्ता मे तृतीया, क्रिया मे नपु० एकवचन। मया, त्वया अस्माभि. वा जल पेयम्। पुस्तकानि देयानि। मया स्थेयम्। दान देयम्।

नियम १४२—(ईद्यति) यत् (य) प्रत्यय लगाने पर (१) आ को ए हो जाता है, दा>देयम्, गा>गेयम्, स्था>स्थेयम्, मा>मेयम्, पा>पेयम्, हा>हेयम्। (२) इ ई को ए हो जाता है, चि>चेयम्, जि>जेयम्, नी>नेयम्। (३) उ, ऊ को ओ होकर अव् हो जाता है। श्रु>श्रव्यम्, हु>हव्यम्, भू>भव्यम्, सु>सव्यम्।

नियम—१४३—(१) (पचाद्यच्) पच् आदि प्राय सभी धातुओ से अच् प्रत्यय होता है। अच् का अ शेष रहता है। अच् प्रत्यय लगाने से सज्ञा शब्द बन जाते है। धातु को गुण होता है। पुलिग रहता है। रामवत् रूप होगे। पच्>पच, दिव्>देव, कृ>कर (हाथ), नद्>नद (बडी नदी), चुर्>चोर, युध्>योध। (२) (एरच्) इ अन्तवाली धातुओ से अच् (अ) प्रत्यय होता है। गुण होकर अय् हो जायगा। चि>चय। जि>जय। नी>नय। आश्रि>आश्रय। ऐसे ही प्रश्रय, विनय, प्रणय।

नियम १४४—(ऋदोरप्) ॠ, उ या ऊ अन्तवाली धातुओ से अप् (अ) प्रत्यय होता है। गुण होता है, पुलिग होगा। कॄ>कर, गॄ>गर, यु>यव, भू>भव। स्तु>स्तव, पू>पव।

अभ्यास ४०

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ मया त्वया अस्माभिः वा सुरभि वारि पेयम्, दान देयम्, गान गेयम्, शत्रु जेय, यश श्रव्यम्, कीर्ति श्रव्या। २ मया त्वया वा पुस्तकानि देयानि, पापानि दुःखानि च हेयानि। ३ तेन मया वा विद्या अध्येया, शिक्षा देया, कीर्तिः गेया। ४ स धन ददाति प्रददाति वा, विद्याम् आददाति च। ५. स शिष्येभ्य धन ददाति, ददातु, दद्यात्, अददात्, दास्यति वा। ६ स पुस्तक दधाति, वाचम् अभिदधाति, कर्णौ अपिदधाति पिदधाति वा, कार्य विदधाति, शुचि वस्त्र परिदधाति, पुस्तकम् आसने निदधाति, धर्मे श्रद्दधाति च।

२ **संस्कृत बनाओ** —(क) (यत् प्रत्यय) १ मुझे स्वच्छ जल पीना चाहिए। २ तुम्हे दान देना चाहिए। ३ उसे यहाँ रहना चाहिए (स्था)। ४ हम सबको गाना गाना चाहिए, शत्रु जीतना चाहिए, गुरु से विद्या पढनी चाहिए, पाप छोडने चाहिएँ। **(ख)** ५. अपने शरीर के सभी अगो को स्वच्छ रक्खो (स्थापि)। ६ अपने हाथ, पाँव, मुँह, बाल, नाक, कान, आँख, जीभ, त्वचा, अगुलि, अगूठा, नाखून, नाभि, पेट, कमर, जीभ और जघा को स्वच्छ और सुन्दर रखो। ७ शरीर मे रक्त, मास और अस्थियाँ होती है। ८ शिक्षा कल्याण और कीर्ति के लिए होती है। **(ग)** ९. वह गाँव से आता हुआ सुगन्धित फूल वृक्ष से तोडता है (आदा)। १० स्वच्छ जल देता है (प्रदा)। ११. मनोहर वचन कहता है (अभिधा)। १२ स्वच्छ वस्त्र से नाक बन्द करता है (अपिधा)। १३ गाँव से आकर यहाँ काम करता है (विधा)। १४ स्वच्छ वस्त्रो को पहनता है (परिधा)। १५ पत्ते पर फूल रखता है (निधा)। १६ गुरु पर श्रद्धा करता है। **(घ)** १७ बालक चोर से डरता है। १८ योधा शत्रु से मित्र को बचाता है। १९. राम गुरु से विद्या पढता है। २०. ज्ञान के बिना (ऋते) मुक्ति नही होती।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१. अह शुचिः जल पेयम्।	मया शुचि जल पेयम्।	१४१, ३३
२. चोरेण बिभेति। गुरुणा अधीते।	चोराद् बिभेति। गुरोः अधीते।	४७, ४८

४ **अभ्यास** —(क) २ (ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् मे बदलो। (ख) वारि, सुरभि, शुचि के नपु० के पूरे रूप लिखो। (ग) दा, धा के दसो लकारो के पूरे रूप लिखो। (घ) इनके यत् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—दा, धा, गै, हा, स्था, चि, जि, नी, श्रु, हु, भू। (ङ) अच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—जि, नी, श्रि, चि। (च) अप् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—कृ, गृ, यु, भू, स्तु, पू, रु, द्रु।

शब्दकोष १०००+२५=१०२५] अभ्यास ४१ (व्याकरण)

(क) दधि (दही), अस्थि (हड्डी), अक्षि (आँख)। अक्षाः (पासा, जुए की गिट्टी), तरङ्ग (तरंग), पङ्क (कीचड), नाविकः (मल्लाह), धीवर (धीवर, मछुआ), मत्स्य (मछली), मकर (मगर), कच्छपः (कछुआ), दर्दुरः (मेंढक), तडाग (तालाब), कूप (कुँआ)। बिन्दु (बूँद)। नौका (नाव)। तटम् (तट, किनारा), सैकतम् (नदी का रेतीला किनारा), जालम् (जाल), कमलम् (कमल)। २०। (ख) दिव् (१ जुआ खेलना, २ चमकना), सिव् (सीना), अस् (फेंकना), अभ्यस् (अभ्यास करना), निरस् (छोडना, निकालना)।५।

सूचना—(क) दधि—अक्षि, दधिवत्। (ख) दिव्—निरस्, दिव् के तुल्य।

व्याकरण (दधि, दिव्, घञ्, पंचमी)

१. दधि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २२)।

२ दिव् धातु के दसों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४०)।

३. अभ्यास १३ में दिये पंचमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

नियम १४५—(भावे, अकर्तरि च कारके०) धातु के अर्थ में या कर्ता को छोडकर अन्य कारक का अर्थ बताने के लिए घञ् प्रत्यय होता है। घञ् का 'अ' शेष रहता है। घञन्त शब्द पुंलिंग होता है। जैसे—हस्>हासः (हँसी), पाकः (पकना)। घञन्त के साथ कर्म में षष्ठी होती है, जैसे—भोजनस्य पाकः, रामस्य हासः।

नियम १४६—घञ् (अ) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर ले—(१) धातु के अन्तिम इ, उ, ऋ को क्रमशः ऐ, औ, आर् वृद्धि हो जाती है और धातु की उपधा के अ, इ, उ, ऋ को क्रमशः आ, ए, ओ, अर् होते हैं। धातु के अन्तिम ई, ऊ, ॠ को भी क्रमशः ऐ, औ, आर् होते हैं। जैसे—पठ्>पाठः, लिख्>लेखः, रुध्>रोधः, श्रि>श्रायः, भू>भावः। हस्>हासः। कृ>कारः, प्रकार, विकार, उपकार, अपकार। हृ>हार, प्रहार, आहार, संहार, विहारः, उपहार आदि। अध्यायः, उपाध्याय, संस्कार। (२) (चजोः कु घिण्ण्यतोः) च् को क् और ज् को ग् हो जाता है। पच्>पाक, शुच्>शोकः, भज्>भाग, यज्>याग, भुज्>भोगः, रुज्>रोग। त्यज्>त्याग। (३) इन धातुओं के ये रूप होते हैं—रञ्ज्>राग, अनुराग, विराग, उपराग। मृज्>मार्ग, अपामार्गः। चि>काय, निकायः। नि+इ>न्याय। हन्>घात, आघात, उपघात। घञ् के कुछ अन्य रूप—१. युज्>योग, वियोग संयोग, प्रयोग, उपयोग। २ चर्>चार, आचार, विचार, प्रचार, संचार। ३. वद्>वाद, विवाद, आशीर्वाद, संवाद, प्रवाद, अपवाद, अनुवाद। ४ नम् >प्रणाम, परिणाम। ५ भुज्>भोग, उपभोग, संभोग, आभोग। ६ दिश् >देश, विदेश, उपदेश, सन्देश, निर्देश, आदेश, उद्देश, प्रदेश। (देखो परिशिष्ट)

अभ्यास ४१

१ उदाहरण-वाक्य—१. शुचि दधि भक्षयति। २ दध्नः घृत भवति। ३. अक्ष्णा पश्यति। ४. अस्थिषु त्वग् भवति। ५. अक्षैः दीव्यति, दीव्यतु, अदीव्यत्, दीव्येत्, देविष्यति। ६. वस्त्राणि सीव्यति। ७. शत्रौ इषुम् अस्यति, शास्त्रम् अभ्यस्यति, पापिन निरस्यति।

२ संस्कृत बनाओ :—(क) १. दही अच्छी है। २. दही लाओ, दही से घी होता है। ३ आँख से देखो। ४ आँख मे जल है। ५. वह आँख से काना है। ६ हड्डी पर मास और त्वचा है। ७ हड्डियो मे शक्ति है। (ख) ८ नदी मे मछलियाँ, कछुए और मगर है। ९ नदी के तट पर रेत और कीचड है। १० तालाब मे धीवर जाल डालकर (प्रक्षिप्) मछलियाँ पकडता है (आदा)। ११ गगा की तरगे सुन्दर है। १२ कुएँ मे मेढक है। १३. जल की बूँदे गिर रही है। १४ नाविक नौका से नदी को पार कर रहा है (तृ)। १५ नदीके रेतीले भाग मे छात्र खेल रहे है। १६. जल मे कमल शोभित हो रहे है। (ग) १७. वह पासो से जुआ खेल रहा है। १८ तू जुआ खेलता है। १९ उसने जुआ खेला। २०. मैने जुआ नही खेला। २१. तू जुआ न खेल। २२. वह जुआ नही खेलेगा। २३ वह वस्त्र सीता है। २४ मै बाण फेकता हूँ। २५ वह धनुर्विद्या का अभ्यास करता है (अभ्यस्)। २६. वह शत्रु को नगर से निकालता है (निरस्)। (घ) २७ पाप से दुःख होता है। २८ अधर्म से बचो (विरम्)। २९. वह पुत्र को पास से हटाता है। ३०. राम के अतिरिक्त कोई आ रहा है। ३१. बल से बुद्धि श्रेष्ठ है (गरीयसी)। ३२. गुरु के पास से शिष्य आता है। ३३. वह धन से धान्य को बदलता है। ३४. चोर राजा से छिप रहा है।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१. दधिनः, अक्षिणा, अक्षिणि।	दध्नः, अक्ष्णा, अक्ष्णि।	शब्दरूप
२. मतिः बलेन गरीयसी।	मतिरेव बलाद् गरीयसी।	५४

४. अभ्यास —(क) २ (ग) को बहुवचन बनाओ। (ख) दधि, अस्थि, अक्षि, के पूरे रूप लिखो। (ग) दिव्, सिव्, अस् के दसो लकारो मे रूप लिखो (घ) पचमी किन स्थानो पर होती है, सोदाहरण लिखो। (ङ) इन धातुओ के घञ् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ :—पठ्, लिख्, विकृ, आहृ, आधृ, भृ, पच्, शुच्, भज्, भुज्, युज्, रुज्, त्यज्, उपदिश्, वस्, हस्, हन्, वद्, अधि+इ, प्रणम्।

५ वाक्य बनाओ —पाठः, प्रहारः, भागः, भोगः, सयोगः, त्यागः, आघातः, ऋते, त्रायते, निवारयति, जायते, प्रतियच्छति, अधीते, विरमति।

शब्दकोष १०२५+२५ = १०५०] अभ्यास ४२ (व्याकरण)

(क) मधु (१ शहद, २ मीठा), दारु (लकड़ी), जानु (घुटना), अम्बु (जल), वस्तु (वस्तु), वसु (धन), अश्रु (आँसू), जतु (लाख), श्मश्रु (दाढ़ी), त्रपु (रांगा), सानु (पर्वत की चोटी), तालु (तालु)। १२। (ख) नृत् (नाचना), व्यध् (बींधना, मारना), पुष् (पुष्ट करना), शुष् (सूखना), तुष् (सतुष्ट होना), श्लिष् (१ चिपकना, २ आलिगन करना), तृप् (तृप्त होना), रञ्ज् (१ प्रसन्न होना, २ लगाना), शुध् (शुद्ध होना)। ९। (ग) स्वादु (स्वादिष्ट), बहु (बहुत), होतृ (हवन करनेवाला), रक्षितृ (रक्षाकर्ता)। ४।

सूचना—(क) मधु—तालु, मधुवत्। (ख) नृत्—शुध्, दिव् के तुल्य।

व्याकरण (मधु, नृत्, तृच्, षष्ठी)

१. मधु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २३)।

२. नृत् धातु के दसो लकारो मे पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४१)।

३ अभ्यास १४ मे दिए षष्ठी के नियमो का पुन अभ्यास करो।

४ कर्तृ शब्द नपु० के प्रथमा द्वितीया मे ये रूप होगे:—शेष पुलिंग कर्तृवत्।

कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि	प्र०	सक्षिप्तरूप	ऋ	ऋणी	ऋणि	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०		,,	,,	,,	द्वि०

नियम १४७—(ण्वुल्तृचौ) धातु से 'वाला' (कर्ता) अर्थ मे तृच् प्रत्यय होता है। तृच् का 'तृ' शेष रहता है। जैसे—कर्तृ (करनेवाला), हर्तृ (हरनेवाला), इसी प्रकार सहर्ता, धर्ता, उपकर्ता आदि। कर्ता के अनुसार इसके लिग, विभक्ति और वचन होते है। पुलिंग मे इसके रूप कर्तृ शब्द (शब्दरूप स० ५) के तुल्य चलेंगे। स्त्रीलिंग मे अन्त मे 'ई' लगाकर नदी के तुल्य। नपु० मे उपर्युक्त रूप से रूप चलेंगे। प्राय. सभी धातुओ से तृच् प्रत्यय लगता है। तृच् प्रत्ययान्त के साथ कर्म मे षष्ठी होती है। जैसे—पुस्तकस्य कर्ता, हर्ता, धर्ता वा। धातु को गुण होता है।

नियम १४८—तृच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर ले —
(१) नियम १३२ (१) से (७) पूरा लगेगा। रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् के साथ पर }तृ लगाने से तृच् प्रत्ययान्त रूप बन जाता है। (१) (२) धातु को गुण होता है। जैसे—कृ>कर्तुम्>कर्तृ, हृ>हर्तुम्>हर्तृ। इसी प्रकार भर्तृ, धर्तृ, लेखितृ पठितृ, रोदितृ आदि। (३) भोक्तृ, पक्तृ, छेत्तृ। (४) यष्टृ, प्रष्टृ, स्रष्टृ प्रवेष्टृ। (५) गातृ, दातृ, धातृ, विधातृ, ज्ञातृ, आह्वातृ। (६) गन्तृ, रन्तृ, यन्तृ, उपयन्तृ। (७) सोढृ, वोढृ, स्रष्टृ, द्रष्टृ।

अभ्यास ४२

१ **उदाहरण-वाक्य** ·—१. स्वादु मधु भक्षय । २. इद दारु इहानय । ३. पर्वतस्य सानुनि सानौ वा वृक्षोऽस्ति । ४ ईश्वरः जगत. कर्ता, धर्ता, सहर्ता चास्ति । ५ ईश्वरस्य प्रकृतिः जगत कर्त्री, धर्त्री, सहर्त्री चास्ति । ६. ब्रह्म जगतः कर्तृ, धर्तृ, सहर्तृ चास्ति । ७. कन्या नृत्यति, नृत्यतु, अनृत्यत्, नृत्येत्, नर्तिष्यति वा । ८. नृप. शत्रु शरैः विध्यति, पिता पुत्र पुष्यति, रोगिण शरीर शुष्यति, मम मन. तुष्यति तृप्यति च, पत्नी पति श्लिष्यति, मम मन कार्ये रज्यति, मन. सत्येन शुध्यति ।

२ **सस्कृत बनाओ** ·—(क) १ स्वादिष्ट मधु खाओ । २. इस लकडी को लाओ । ३. घुटना पृथ्वी पर रखो । ४. बहुत जल न पिओ । ५ उस वस्तु को उठाओ । ६ बहुत धन चाहो । ७. तुम्हारे आँसू गिर रहे है । ८ लाख यहाँ लाओ । ९ दाढी स्वच्छ करो । १० राँगा चिपकता है (श्लिष्) । ११ पर्वत की चोटी पर चढो । १२. तालु मे बाण लगा (विद्ध) । **(ख)** १३ ईश्वर ससार का कर्ता धर्ता हर्ता है । १४ ब्रह्म सृष्टि का कर्ता धर्ता हर्ता है । १५. ग्रन्थ का रचयिता ग्रन्थ बनाता है (रच्) । १६. जेता शत्रुओ को जीतता है । १७ रक्षक रक्षा करता है । १८ धन का लेनेवाला धन लेता है । १९. हर्ता धन चुराता है । २०. भर्ता पत्नी का पालन करता है । **(ग)** २१ नटी नाचती है । २२. कन्या नाची । २३. मोर नाचेगा । २४ भूपति मृग को बाणो से बीधता है । २५ माता पुत्र को पालती है । २६. वृक्ष सूख रहा है । २७ ब्राह्मण सुस्वादु भोजन से सतुष्ट होता है । २८ राम भरत का आलिगन करते है । २९. मनुष्य धन से तृप्त नही होता है । ३०. मेरा मन पढने मे लगता है (रञ्ज्) । **(घ)** ३१. लकडी के लिए वृक्ष पर जाता है । ३२. बालक माता का स्मरण करता है । ३३. कमल के ऊपर, नीचे, आगे, पीछे भौरे है (भ्रमर) । ३४ कालिदास कवियो मे सर्वश्रेष्ठ है ।

३ **अशुद्ध**	**शुद्ध**	**नियम**
१, दारुम्, अम्बुम्, वस्तुम्, अश्रुम् ।	दारु, अम्बु, वस्तु, अश्रूणि ।	शब्दरूप
२. बालक' मातर स्मरति ।	बालकः मातु. स्मरति ।	६२

४ **अभ्यास** ·—(क) २ (ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लट् मे बदलो । (ख) इन शब्दो के पूरे रूप लिखो—मधु, दारु, वस्तु, वसु, स्वादु (नपु०), बहु (नपु०) । (ग) इन धातुओके दसो लकारो मे पूरे रूप लिखो—नृत्, पुष्, शुष्, तुष्, तृप् । (घ) इन धातुओ के तृच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—कृ, हृ, धृ, गम्, पठ्, जि, चि, हन्, मन्, पच्, भुज्, युज्, छिद्, भिद्, प्रच्छ्, सृज्, गा, दा, सह, वह, दृश ।

शब्दकोष—१०५० + २५ = १०७५] **अभ्यास ४३** (व्याकरण)

(क) पयस् (१ जल, २ दूध), यशस् (यश), वचस् (वचन), तपस् (तपस्या), शिरस् (शिर), वासस् (वस्त्र), सरस् (तालाब), नभस् (आकाश), अम्भस् (जल), सदस् (सभा), वक्षस् (छाती), स्रोतस् (स्रोत)। यानम् (सवारी), स्थानम् (स्थान), उपकरणम् (साधन), आवरणम् (आवरण, ढक्कन), संस्करणम् (१ शुद्धि, २ पुस्तकादि का संस्करण), प्रकरणम् (प्रकरण)। १८। (ख) नश् (नष्ट होना), मुह् (मोहित होना), करणम् (करना), हरणम् (हरना), मरणम् (मरना), भजनम् (भजन करना), पानम् (पीना)। ७।

सूचना—(क) पयस्—स्रोतस्, पयस् के तुल्य। (ख) नश्—मुह्, दिव् के तुल्य।

व्याकरण (पयस्, नश्, ल्युट्, ण्वुल्, षष्ठी)

१ पयस् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द० २४)।

२. नश् धातु के दसों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ४२)।

३ अभ्यास १५ में दिए षष्ठी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

नियम १४९—(१) (ल्युट् च) भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से ल्युट् (अन) प्रत्यय होता है। ल्युट् के यु को 'अन' हो जाता है। अनप्रत्ययान्त शब्द नपुंसक लिंग होते हैं। धातु को गुण होता है। ल्युट् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए नियम १४० देखें। गम्>गमनम् (जाना)। इसी प्रकार पठनम् (पढना), यजनम्। भजनम्। कृ>करणम्, हरणम्, भरणम्, मरणम्, रोदनम्, शोचनम्। (२) (करणाधिकरणयोश्च) करण और अधिकरण अर्थ में भी ल्युट् (अन) होता है। यानम् (जिससे जाते हैं, सवारी), स्थानम् (जिसपर या जहाँ बैठते हैं), उपकरणम् (जिससे काम करते हैं, साधन), आवरणम् (जिससे ढकते हैं)।

नियम १५०—(ण्वुल्तृचौ) 'करने वाला' या 'वाला' अर्थ में ण्वुल् प्रत्यय होता है। ण्वुल् के वु को 'अक' हो जाता है। नियम १४६ (१) के तुल्य धातु को वृद्धि होगी। कर्ता के अनुसार इसके लिंग होंगे। पुंलिंग में रामवत्, स्त्रीलिंग में 'इका' अन्त में होगा, रमावत् रूप होंगे। नपुं० में ज्ञानवत्। जैसे—कृ>कारकः (करनेवाला), कारिका, कारकम्। पाठक, लेखक, हारक, संहारक, धारक, मारक, उपकारकः, अपकारक, सेवक। (१) आकारान्त धातु में बीच में 'य' लग जाएगा। दा>दायक, सुखदायक.। धा>धायक, विधायकः। पा>पायक.। इनके ये रूप होंगे—हन्>घातक', जन्>जनक', शम्>शमकः, गम्>गमक, यम्>यमक, वध्>वधक'।

अभ्यास ४३

१ उदाहरण-वाक्य —१ बाल॰ पय॰ पिबति। २ जगत् नश्यति। ३ मूर्खस्य मन॰ मुह्यति। ४. पिता पुत्रे स्निह्यति। ५ पयस॰ पान, वचस॰ कथन, तपस॰ आचारण, शिरसः प्रक्षालनम्, वाससः धारणम्, नभस॰ दर्शनम्, सदसि भाषण, स्रोतसि स्नान कुरु। ६ ईश्वर जगतः कारक धारक॰ हारकश्चास्ति। ७ ईश्वरस्य प्रकृति॰ जगत कारिका, धारिका, हारिका चास्ति। ८ ब्रह्म जगतः कारक, धारक, हारक चास्ति।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ जल पियो। २. यश की इच्छा करो। ३ मधुर वचन बोलो। ४ तप करो। ५ अपना सिर उठाओ। ६ कपडे पहनो। ७ तालाब मे स्नान करो। ८. आकाश की ओर देखो। ९ सभा मे शान्त बैठो। १०. दूध का पीना, वचन का कहना, तप का करना, शिर का धोना, वस्त्रो का पहनना, नभ का देखना, जल का लाना, वक्ष स्थल का उठना (उत्थान), सोते का बहना। ११ लेख का लिखना, पुस्तक का पढना, भोजन का खाना, ईश्वर का स्मरण, कार्य का करना, धन का हरण, मनुष्य का मरना, बालक का उठना, कन्या का सोना, चोर का रात्रि मे जागना ये विविध कार्य है। १२ यश मे रुचि, तालाब मे नहाना, सभा मे बैठना अच्छा है। १३ यान पर चढो। १४ अपने स्थान पर बैठो। १५ भोजन के उपकरण लाओ। १६ शय्या पर आवरण डालो (स्थापय)। **(ख)** १७ ईश्वर ससार का कारक, धारक, हारक है। १८ नियति जगत् की कर्त्री, धर्त्री, हर्त्री है। १९ रसोइया भोजन बनाता है। २० रक्षक रक्षा करता है। २१ गायिका गाती है। २२ राम के समीप, गॉव से दूर, मनुष्य है। २३. राम के तुल्य श्याम है। २४ बालक का कुशल हो। **(ग)** २५ प्रलय मे ससार नष्ट होता है। २६ वृक्ष नष्ट हुआ। २७ दुष्ट नष्ट हो। २८. मूर्ख मोहित होता है। २९ गुरु शिष्य से स्नेह रखता है।

३ **अशुद्ध**	**शुद्ध**	**नियम**
१ पिबनम्, पश्यनम्, उत्तिष्ठनम्।	पानम्, दर्शनम्, उत्थानम्।	१४९
२ यशसम्, तपसम्। यशे, सरे।	यश, तप॰। यशसि, सरसि।	शब्दरूप

४ अभ्यास —(क) २ (ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् मे बदलो। (ख) इन शब्दो के पूरे रूप लिखो—पयस्, यशस्, वचस्, तपस्, शिरस्, वासस्, सरस्, नभस्, सदस्। (ग) नश् और मुह् के दसो लकारो के रूप लिखो। (घ) इन धातुओ के ल्युट् और ण्वुल् प्रत्यय के रूप बनाओ —कृ, हृ, धृ, भृ, पठ्, लिख्, गम्, दृश्, पा, स्था, दा, या, स्ना, ज्ञा, शी, भज्, भुज्, मुच्, रुद्, रुह्, वद्, खन्। (ङ) षष्ठी किन स्थानो पर होती है, सोदाहरण लिखो।

शब्दकोष—१०७५+२५=११००] अभ्यास ४४ (व्याकरण)

(क) शर्मन् (सुख), वर्मन् (कवच), ब्रह्मन् (१ ब्रह्म, २ वेद), वेश्मन् (घर), सद्मन् (घर), पर्वन् (१ पर्व, त्यौहार, २ गाँठ), भस्मन् (भस्म, राख), जन्मन् (जन्म), लक्ष्मन् (चिह्न), वर्त्मन् (मार्ग), चर्मन् (चमडा)। बुध (विद्वान्), आतपत्रम् (छाता)। १३। (ख) भ्रम् (घूमना), शम् (शान्त होना), दम् (१ दमन करना, २ सयम करना), क्लम् (थकना), हृष् (प्रसन्न होना), लुभ् (लोभ करना)। ६। (घ) प्रिय (प्रिय), कृश (दुबला, पतला), सुकर (सरल), दुष्कर (कठिन), सुलभ (सुलभ), दुर्लभ (दुर्लभ)। ६।

सूचना—शर्मन्—चर्मन्, शर्मन् के तुल्य। (ख) भ्रम्—लुभ्, दिव् के तुल्य।

व्याकरण (शर्मन्, भ्रम्, क, खल्, सप्तमी)

१. शर्मन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द० २५)।

२. भ्रम् धातु के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ४३)।

३ अभ्यास १६ मे दिए सप्तमी के नियमो का पुन अभ्यास करो।

नियम १५१—(१) (इगुपधज्ञाप्रीकिर क) जिन धातुओ की उपधा मे इ, उ, या ऋ हो उनसे तथा ज्ञा, प्री और कॄ धातु से क प्रत्यय होता है। क प्रत्यय का 'अ' शेष रहता है। धातु को गुण नही होगा। धातु के अन्तिम 'आ' का लोप होता है। 'वाला' अर्थ मे क प्रत्यय होता है। जैसे, बुध्>बुध (जाननेवाला, विद्वान्), लिख्>लिख (लेखक), कृश्>कृश (निर्बल), ज्ञा>ज्ञ (ज्ञाता), प्री>प्रिय (प्रिय), कॄ>किर (बखेरनेवाला)। (२) (आतश्चोपसर्गे) उपसर्ग पहले हो तो आकारान्त धातु से क प्रत्यय होता है। आ का लोप हो जाएगा। जैसे—प्र+ज्ञा>प्रज्ञ, प्राज्ञः, विज्ञ, सुज्ञ, अभिज्ञ, आ+ह्वा>आह्व, प्रह्व। (३) (आतोऽनुपसर्गे क, सुपि स्थ) उपसर्ग-भिन्न कोई शब्द पहले हो तो भी आकारान्त से क प्रत्यय होता है। आ का लोप हो जाएगा। जैसे—सुख+दा> सुखद, दु खदः, त्रा>आतपत्रम्, गोत्रम्, पुत्रः। पा>द्विप, गोपः, महीपः, पादपः। स्था>समस्थ, द्विष्ठ, आसनस्थ, वृक्षस्थ।

नियम १५२—(ईषद्दु सुषु०) ईषत्, दु या सु पहले हो तो धातु से खल् (अ) प्रत्यय ही होता है, कठिन या सरल अर्थ मे। जैसे—ईषत्करः, दुष्करः, सुकरः, दुर्लभः, सुलभ, दुर्गमः, सुगम, दुर्जय, सुजयः, दु सह।

अभ्यास ४४

१ **उदाहरण-वाक्य** —१. प्रियाय प्राज्ञाय शर्म। २ वर्म धारय। ३ स्वकीये वेश्मनि सद्मनि वा निवसामि। ४ सता वर्त्मना गच्छामि। ५ भस्मनि बाल' पतितः। ६. मम पुत्रस्य जन्म रविवारेऽभवत्। ७. बुध. भ्राम्यति, पुत्र. शाम्यति, प्राज्ञ. इन्द्रियाणि दाम्यति, पथिक क्लाम्यति, सज्जनः हृष्यति, बाल मोदकाय लुभ्यति। ८. दुःख सुलभम्, सुखम् दुर्लभम्।

२ **संस्कृत बनाओ** —(क) १ अपना कल्याण चाहो। २ सुलभ कवच पहनो। ३ ब्रह्म ससार को बनाता है। ४ घर मे सुख से रहो। ५ रास्ते मे मत खेलो। ६ सज्जनो के मार्ग से चलो। ७ आज अमावस्या का पर्व है। ८. यति भस्म मे रमता है। ९ तुम्हारा जन्म कब हुआ था। १० शत्रु के दु'सह बाणो का चिन्ह मेरे शरीर पर है। ११ यति मृग के चर्म पर बैठता है। १२ मेरी धर्म मे श्रद्धा है। १३. वसन्त मे बहुत फूल और फल होते है। १४ सायकाल घूमने के लिए जाऊँगा। १५ कृश मनुष्य पर दया करो। १६ वर्षा मे छाता वर्षा से बचाता है। १७ प्राज्ञ सुकर और दुष्कर सभी कर्मो को करता है। (ख) १८ बुद्धिमान् लोग प्रियजनो के साथ घूमते है। १९. वह भ्रमण करता है। २० तूने भ्रमण किया। २१ मै भ्रमण करूँ। २२ वह शान्त होता है। २३ बुद्धिमान् इन्द्रियो का दमन करता है। २४ तू थकता है। २५ मै प्रसन्न होता हूँ। २६ मूर्ख लोभ करते है।

३	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
	१ शर्माणम्, वर्माणम्, सद्मनि।	शर्म, वर्म, सद्मनि।	शब्दरूप
	२ वर्षाया आतपत्र वर्षया त्रायते।	वर्षासु आतपत्र वर्षाभ्य त्रायते।	४७,८९
	३ इन्द्रियाणा दाम्यति।	इन्द्रियाणि दाम्यति।	४

४ **अभ्यास** — (क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् मे बदलो। (ख) इनके पूरे रूप लिखो—शर्मन्, वर्मन्, ब्रह्मन्, वर्त्मन्, जन्मन्, चर्मन्। (ग) इन धातुओ के दसो लकारो मे रूप लिखो—भ्रम्, शम्, दम्, हृष्, लुभ्। (घ) इन धातुओ के क प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—लिख्, बुध्, कृश्, ज्ञा, प्री, कृ। (ङ) इनके खल् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—सुगम्, सुकृ, दुष्कृ, सुजि, दुर्जि, सुलभ्, दुर्लभ्।

४ **वाक्य बनाओ** —शर्मणे, पर्वणि, जन्मना, भ्राम्यति, हृष्यति, सुकर', दुर्लभः।

शब्दकोष–११०० + २५ = ११२५] अभ्यास ४५ (व्याकरण)

(क) जगत् (संसार), वियत् (आकाश)। गति (गति), बुद्धि (बुद्धि), धृति (धैर्य), कृति (कार्य), नति (१ नमस्कार, २ झुकना), भूति (ऐश्वर्य), उक्तिः (कथन), इष्टि (१ यज्ञ, २ इच्छित), वृत्ति (१ व्यवहार, २ आजीविका), प्रवृत्ति (१ झुकाव, २ लगना), मुक्ति (मोक्ष), युक्ति (युक्ति), संसृति (संसार)। पण्डितंमन्य (अपने को पंडित माननेवाला), शाकाहारिन् (शाकाहारी), निरामिष-भोजिन् (शाकाहारी), मांसाहारिन् (मांसाहारी)। १९। (ख) युध् (लडना), उद् + डी (उडना), दीप् (१ जलना, २. दीप्त होना), क्लिश् (दु खित होना)। ४। (ग) पचत् (पकाता हुआ), पतत् (गिरता हुआ)। २।

सूचना—(क) जगत्—वियत्, जगत् के तुल्य। (ख) युध्—क्लिश् युध् के तुल्य।

व्याकरण (जगत्, युध, क्तिन्, अण्, णिनि, सप्तमी)

१ जगत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २६)।

२ युध् धातु के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४४)।

३. अभ्यास १७ मे दिए सप्तमी के नियमो का पुन अभ्यास करो।

नियम १५३—(स्त्रियां क्तिन्) धातुओ से क्तिन् प्रत्यय होता है। क्तिन् का 'ति' शेष रहता है। 'ति' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग ही होते है। इनसे भाववाचक सज्ञा बनती है। जैसे—कृ>कृति (करना), धृति, स्तुति भूति। गुण या वृद्धि नही होगी। संप्रसारण होगा। 'ति' प्रत्यय लगाकर धातुओ से रूप बनाने के लिए नियम १३५ (१) से (६) देखे। (१) कृति, हृति, धृति, चिति, भूति। (२) स्थिति, भित्ति, गति, मति, यति, रति, नति, उक्ति, सुप्ति, इष्टि। (३) पक्ति, भुक्ति, मुक्ति। (४) गीति, पीति। (५) कीर्ति, पूर्ति। (६) कान्ति, क्रान्ति, भ्रान्ति, शान्ति, श्रान्ति।

नियम १५४—(कर्मण्यण्) कोई कर्मवाचक पद पहले हो तो धातु से अण् (अ) प्रत्यय होता है। धातु को वृद्धि होती है। जैसे—कुम्भ करोतीति—कुम्भकारः। भाष्यकार, सूत्रधार, तन्तुवायः।

नियम १५५—(१) (नन्दिग्रहि०) 'वाला' अर्थ मे धातु से णिनि (इन्) प्रत्यय होता है। धातु को वृद्धि होगी। करिन् के तुल्य रूप चलेंगे। जैसे—निवसतीति> निवासी, प्रवासी, स्था>स्थायी, कृ>उपकारी, अपकारी, अधिकारी। इसी प्रकार, द्वेषी, अभिलाषी, सचारी। (२) (सुप्यजातौ०) कोई शब्द पहले तो धातु से णिनि (इन्) प्रत्यय होता है, स्वभाव अर्थ मे। भुज्>उष्णभोजी (गर्म खाने के स्वभाववाला), आमिषभोजी, निरामिषभोजी, मिथ्यावादी, मनोहारी, अग्रयायी, अनुगामी, मित्रद्रोही, शाकाहारी, मासाहारी। (३) (आत्ममाने खश्च) अपने आपको समझने अर्थ मे, णिनि और खश् (अ) दोनो प्रत्यय होते हैं। म् भी शब्द के बाद लगता है। जैसे—पण्डितंमानी, पण्डितमन्य।

अभ्यास ४५

१ उदाहरण-वाक्य ।—१ ब्रह्मणः जगत् उद्भवति जगत कर्ता ब्रह्म वा । २ वियति पक्षिणः उड्डीयन्ते । ३ पुष्पाणि पतन्ति सन्ति (गिर रहे हे) । ४ ओदन पचत् अस्ति (भात पक रहा है) । ५ योधः युध्यते, पक्षी उड्डीयते, उदडीयत वा, अग्नि. दीप्यते, दुष्टः क्लिश्यते । ६ मम धर्मे बुद्धि., कर्मणि प्रवृत्ति अस्ति । ७ स पडित-मन्य' पडितमानी वा अस्ति । ८ अह शाकाहारी, निरामिषभोजी वा अस्मि ।

२ सस्कृत बनाओ —(क) १ जगत् सुन्दर है । २ जगत् मे बहुत से मनुष्य मूर्ख और पापी है । ३ आकाश मे बहुत से पक्षी है । ४ आकाश स्वच्छ है । ५. फल पक रहा है । ६ पत्ता गिर रहा है । ७ गुरु की गति, मनुष्य की मति, धीर की धृति, कवि की कृति, भद्र की भूति, उदार की उक्ति, इष्ट की इष्टि, वीर की वृत्ति, पुरुष की प्रवृत्ति, योग की युक्ति, मुमुक्षु की मुक्ति । ८ ससृति मे धर्म मे प्रवृत्ति, विद्या मे गति, मुक्ति के विषय मे मति, विपत्ति मे धृति सब मे नही होती । ९ पति पत्नी मे स्नेह करता है । १० छात्र छात्र से स्नेह करता है । ११ गुरु के जाने पर शिष्य आया । १२ धर्मो मे आर्यधर्म श्रेष्ठ है । १३ पर्वतो मे हिमालय श्रेष्ठ है । १४. अर्जुन धनुर्विद्या मे कुशल, पटु, निपुण, और दक्ष है । १५ राजा शत्रुओ पर बाण फेकता है । **(ख)** १६ वीर युद्ध करता है । १७. मै युद्ध करता हूँ । १८ तूने युद्ध किया । १९ हस आकाश मे उडता है । २०. अग्नि दीप्त होती है । २१ मूर्ख दु खित होता है । **(ग)** २२ वह अपने आपको पडित समझता है । २३ मै शाकाहारी हूँ । २४ वह मासाहारी है ।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१ गुरो' गते सति ।	गुरौ गते सति ।	७७, ३३
२. हस वियते उड्डयति ।	हस वियति उड्डीयते, उड्डयते वा ।	शब्दरूप, धातुरूप

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लट् मे बदलो । **(ख)** इन शब्दो के रूप लिखो—जगत्, वियत्, पचत् (नपु०), पतत् (नपु०) । मति, बुद्धि, धृति, कृति, उक्ति, वृत्ति । (ग) इन धातुओ के दसो लकारो मे रूप लिखो—युध्, डी, दीप्, क्लिश् । (घ) इन धातुओ से क्तिन् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—कृ, हृ, धृ, गम्, रम्, नम्, स्था, गा, पा, स्वप्, यज्, कम्, शम् । (ङ) सप्तमी किन स्थानो पर होती है, सोदाहरण लिखो ।

५ वाक्य बनाओ—जगति, जगताम्, वियति, युक्ति । युध्यते, योत्स्यते, उड्डीयते, उदडीयत, उड्डयिष्यते, अदीप्यत, दीपिष्यते, क्लिश्यते, क्लेशिष्यते ।

शब्दकोष—११२५ + २५ = ११५०] अभ्यास ४६ (व्याकरण)

(क) नामन् (नाम), प्रेमन् (प्रेम), धामन् (धाम, घर), व्योमन् (आकाश), सामन् (सामवेद), हेमन् (सोना), दामन् (रस्सी), लोमन् (बाल)। ८। (ख) जन् (पैदा होना), सपद् (होना, पूर्ण होना), उत्पद् (उत्पन्न होना), विद् (होना), मन् (मानना)। ५। (ग) निर्विघ्नम् (निर्विघ्न), निष्कारणम् (बिना कारण के), यथाशक्ति (शक्तिभर), आबालवृद्धम् (बालक से वृद्ध तक)। ४। (घ) यावत् (१ जितना, २ जबतक), तावत् (१ उतना, २ तबतक), कियत् (कितना), इयत् (इतना), अनुकूल (अनुकूल), प्रतिकूल (विपरीत), निर्द्वन्द्व (निर्विघ्न), निर्जन (जनरहित)।८।

सूचना—(क) नामन्—लोमन्, नामन के तुल्य। (ख) जन्—मन्, युध् के तुल्य।

व्याकरण (नामन्, जन्, अव्ययीभाव समास)

१ नामन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २७)।

२. जन् धातु के दसो लकारो के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४५)।

नियम १५६—(समास) (१) दो या अधिक शब्दो को मिलाने या जोडने को समास कहते हैं। समास का अर्थ है संक्षेप। समास करने पर समास हुए शब्दो के बीच की विभक्ति (कारक) नही रहती। समस्त (समासयुक्त) शब्द एक शब्द हो जाता है, अन्त में विभक्ति लगती है। समास के तोडने को 'विग्रह' कहते हैं। जैसे—राज्ञ पुरुष (राजा का पुरुष) विग्रह है, राजपुरुष (राजपुरुष) समस्तपद है, बीच के कारक षष्ठी का लोप हुआ है। (२) समास के छ भेद है —१. अव्ययीभाव, २ तत्पुरुष, ३ कर्मधारय, ४ द्विगु, ५ बहुव्रीहि, ६ द्वन्द्व।

नियम १५७—(अव्ययीभाव) (अव्यय विभक्तिसमीप०) अव्ययीभाव समास की पहचान यह है कि इसमे पहला शब्द अव्यय (उपसर्ग या निपात) होगा। बाद का शब्द कोई संज्ञा शब्द होगा। अव्ययीभाव समासवाले शब्द नपु० एक० मे ही रहते है, उनके रूप नही चलते। अव्ययीभाव समास के समस्तपद और विग्रह पद मे अन्तर होता है, क्योकि किसी विशेष अर्थ मे अव्यय शब्द आता है। १ सप्तमी के अर्थ मे 'अधि'—हरौ>अधिहरि। २ समीप अर्थ मे 'उप' कृष्णस्य समीपे>उपकृष्णम्। ऐसे ही उपकूलम्, उपगगम्, उपयमुनम्। ३ अभाव अर्थ मे 'निर्' जनानामभावो>निर्जनम्। निर्विघ्नम्, निर्द्वन्द्वम्। निर्मक्षिकम्। ४ पीछे अर्थ में अनु, रथस्य पश्चात्>अनुरथम्। अनुहरि। ५ प्रत्येक अर्थ मे प्रति 'गृहं गृहं प्रति>प्रतिगृहम्। ६ अनुसार अर्थ मे 'यथा' शक्तिमनतिक्रम्य>यथाशक्ति। यथेच्छम्, यथाकामम्। ७ साथ ओर सदृश अर्थ मे सह का 'स' सचक्रम्। ८ तक अर्थ मे 'आ' आसमुद्रम्। आबालवृद्धम्। ९ बाहर अर्थ मे 'बहि.' बहिर्वनम्, बहिर्ग्रामम्। १० समीप या ओर अर्थ मे 'अनु' अनुकूलम्। ११. विपरीत अर्थ में 'प्रति' प्रतिकूलम्। अपने रूढ अर्थ मे अनुकूल प्रतिकूल विशेषण होते हैं।

अभ्यास ४६

१ **उदाहरण-वाक्य**—१. मम नाम देवदत्तोऽस्ति। २ गुरुः शिष्ये प्रेम करोति। ३. व्योम्नि पक्षिणः विद्यन्ते। ४ हेम्नः आभूषणं सपद्यते। ५ मातुः पुत्रः जायते, जायेत, अजायत, जनिष्यते, उत्पत्स्यते वा। ६ स आत्मानं प्राज्ञं मन्यते, अमन्यत, मंस्यते वा। ७. स यथाशक्ति साम अगायत्। ८ निष्कारणं प्रतिकूलं न आचर। ९. निर्जने निर्द्वन्द्वं निर्विघ्नं तावत् पठ, यावत् इयत् कार्यं न सपद्यते। १० यावन्तो जना ग्रामे सन्ति, तावन्तः सर्वेऽपि आबालवृद्धम् इयत्कालं यावत् सुखिनः सन्ति।

२ **संस्कृत बनाओ**—(क) १ तुम्हारा नाम क्या है? २ मेरा नाम कृष्ण है। ३. सज्जन सब पर प्रेम करता है। ४ प्रेम से प्रेम उत्पन्न होता है। ५ मेरे घरमे आबाल-वृद्ध सब यथाशक्ति कार्य करते है। ६ हमारे विद्यालय मे जितने छात्र है, उतनी ही छात्राएँ है। ७. वहाँ कितने छात्र, कितनी छात्राएँ, कितने फल और कितनी पुस्तके है। ८. जितने फल, जितने फूल वहाँ है, उतने ही फल और फूल यहाँ भी है। ९ तब तक काम करो, जब तक गुरु जी आवे। १०. उतने समय तक वहाँ मत रहो। ११. निष्कारण विवाद न करो। १२ निर्जन मे भी अनुकूल और प्रतिकूल प्राणी मिल जाते है। १३. राम मेरे अनुकूल है। १४ रावण मेरे प्रतिकूल है। १५ आकाश मे पक्षी है। १६ श्याम साम गाता है। १७ यह सोने का आभूषण है। १८ रस्सी लाओ। १९. बाल धोओ। (ख) २०. बच्चा पैदा होता है। २१ पुत्र पैदा हुआ। २२ विद्या से ज्ञान होता है (सपद्)। २३ वह वहाँ है। २४. वह अपने आपको मूर्ख समझता है।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
१. प्रेमात् प्रेम. जायते।	प्रेम्णः प्रेम जायते।	शब्दरूप
२ यावान् छात्रा, तावन्त बालिकाः।	यावन्त छात्रा तावत्यः बालिकाः।	,,
३ अनुकूल प्रतिकूल प्राणिनः।	अनुकूलाः प्रतिकूलाः प्राणिनः।	३२

४ **अभ्यास**—(क) २ (ख) के लोट्, लङ्, विधिलिङ् मे बदलो। (ख) इन शब्दो के रूप लिखो—नामन्, प्रेमन्, व्योमन्, हेमन्। (ग) इन धातुओ के दसो लकारो मे रूप लिखो—जन्, सपद्, विद्, मन्। (घ) समास किसे कहते है? कितने समास है। नाम लिखो। (ङ) अव्ययीभाव समास की पहचान सोदाहरण लिखो।

५ **समास करो**.—कृष्णस्य समीपे। जनानाम् अभावः। रथस्य पश्चात्। द्वारं द्वारं प्रति। शक्तिम् अनतिक्रम्य। चक्रेण सहितम्। गगायाः समीपम्।

शब्दकोष—११५० + २५=११७५] अभ्यास ४७ (व्याकरण)

(क) मनस् (मन), चेतस् (चित्त), तमस् (अन्धकार), उरस्, (छाती), तेजस् (तेज), रजस् (१ धूल २ रजोगुण), वयस् (आयु), रक्षस् (राक्षस), ओजस् (तेज), छन्दस् (वेद के छन्द), रहस् (एकान्त), एनस् (पाप), अहस् (पाप)। हविष् (हवि), सर्पिष् (घी), ज्योतिष् (१ ज्योति, २ तारे), रोचिष् (तेज), धनुष् (धनुष), चक्षुष् (आँख), राजपुरुष (राजकर्मचारी) सोम (१ चन्द्रमा, २ सोमरस), मूर्तिपूजा (मूर्तिपूजा)। २२। (ख) सु (१ नहाना, २ नहवाना, ३ रस निकालना)। १। (घ) ईश्वरभक्त (ईश्वर का भक्त), विद्याहीन (मूर्ख)। २।

सूचना—(क) मनस्—अहम्, मनस् के तुल्य। हविष्—रोचिष्, हविष् के तुल्य।

व्याकरण (मनस्, हविष्, सु, तत्पुरुष)

१. मनस् और हविष् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २८ क, ख)।

२. सु धातु के दसों लकारोंमे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४६)।

नियम १५८—(तत्पुरुष) तत्पुरुष समास उसे कहते है जहाँ पर दो या अधिक शब्दो के बीच से द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का लोप होता है। समास होने पर बीच की विभक्ति का लोप हो जायगा। जिस विभक्ति का लोप होगा, उसी विभक्ति के नाम से वह तत्पुरुष समास कहा जायगा, जैसे—द्वितीया तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष समास आदि। (उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुष) इसमे बाद वाले पद का अर्थ मुख्य होता है। जैसे—(१) द्वितीया—कृष्णम् आश्रित·—कृष्णाश्रित.। दुःखमतीत—दुःखातीत। भयं प्राप्त·—भयप्राप्त। (२) तृतीया—बाणेन आहत—बाणाहत.। खड्गेन हतः—खड्गहतः। नखै भिन्न—नखभिन्न। हरिणा त्रात—हरित्रात। विद्यया हीन·—विद्याहीन.। ज्ञानेन शून्य·—ज्ञानशून्य। मात्रा सदृश—मातृसदृश। पित्रा तुल्य—पितृतुल्यः। एकेन ऊनम्—एकोनम्, आदि। (३) चतुर्थी—यूपाय दारु—यूपदारु। गवे हितम्—गोहितम्। भूताय बलि—भूतबलि। द्विजाय इदम्—द्विजार्थम्। स्नानाय इदम्—स्नानार्थम्। भोजनार्थम्। (४) पंचमी—चोराद् भयम्—चोरभयम्। पापाद् मुक्त—पापमुक्तः। प्रासादात् पतित—प्रासादपतित.। वृक्षपतित, अश्वपतित, रोगमुक्तः, शत्रुभयम्, राजभयम्। (५) षष्ठी—राज्ञ पुरुष·—राजपुरुष। ईश्वरस्य भक्त—ईश्वरभक्त। शिवभक्त·, विष्णुभक्त., देवपूजक। मूर्त्याः पूजा—मूर्तिपूजा। देवपूजा। सुवर्णकुण्डलम्, विद्यालय, देवालय·, देवमन्दिरम्। (६) सप्तमी—शास्त्रे निपुण—शास्त्र-निपुण। विद्यानिपुण, युद्धनिपुण.। जले लीन·—जललीन.। जलमग्न.। कार्ये चतुरः—कार्यचतुर.। कार्यदक्षः।

शब्दकोष—११७५+२५=१२००] अभ्यास ४८ (व्याकरण)

(क) स्वर्णकार (सुनार), लौहकार (लोहार), चर्मकार (चमार), घट (घड़ा), कुम्भकार (कुम्हार), मालाकार (माली), कर्णधार (मल्लाह), चित्रकार (चित्रकार), तैलिक (तेली), महत्तर (मेहतर), रजक (धोबी), तन्तुवाय (जुलाहा), भारवाह (मजदूर), शिल्पिन् (कारीगर), स्वर्णम् (सोना), लौहम् (लोहा), चक्रम् (१ चक्र, २ चाक), चित्रम् (चित्र), तैलम् (तेल), पादत्राणम् (१ जूता, २ चप्पल), समार्जनी (झाड़ू)। २१। (ख) आप् (पाना), प्राप् (पाना), समाप् (१ पाना, २ समाप्त करना), व्याप् (व्याप्त होना)। ४।

व्याकरण (आप्, कर्मधारय, द्विगु समास)

१ आप् धातु के दसों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४७)।

नियम १५९—(तत्पुरुष. समानाधिकरण कर्मधारय) विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। विशेषण शब्द पहले रहेगा, विशेष्य बाद में। कर्मधारय में दोनों पदों में एक ही विभक्ति रहती है। जैसे—नील कमलम्—नीलकमलम्। नीलम् उत्पलम्—नीलोत्पलम्। कृष्ण सर्प.—कृष्णसर्प। महान् चासौ देव—महादेव। महान् चासौ आत्मा—महात्मा। (१) एव (ही) के अर्थ में—मुखमेव कमलम्—मुखकमलम्। चरण एव कमलम्—चरणकमलम्। इसी प्रकार मुखचन्द्र, करकमलम्, पादपद्मम्, नयन-कमलम्। (२) सुन्दर के अर्थ में 'सु' और कुत्सित के अर्थ में 'कु' लगता है। सुन्दर पुरुष—सुपुरुष। कुत्सित पुरुष—कुपुरुष। कुपुत्र, कुनारी, कुदेश। (३) इव (तरह) के अर्थ में—घन इव श्याम—घनश्याम.। पुरुष व्याघ्र इव—पुरुषव्याघ्र.। नरसिंह, नृसिंह। चन्द्रसदृश मुखम्—चन्द्रमुखम्। चन्द्रमुखी।

नियम १६०—(सख्यापूर्वो द्विगु) कर्मधारय का ही उपभेद द्विगु समास है। जब कर्मधारय समास में प्रथम शब्द सख्या वाचक हो तो वह द्विगु समास होता है। अधिकतर यह समाहार (एकत्र या समूह) अर्थ में होता है। जैसे—त्रयाणां लोकाना समाहार—त्रिलोकम् (तीनों लोकों का समूह)। इसी प्रकार त्रिभुवनम्। चतुर्णां युगानां समाहार—चतुर्युगम्। पञ्चाना पात्राणां समाहार—पञ्च-पात्रम्। समाहार अर्थ में समास में एकवचन ही रहता है, अन्य वचन नहीं। समास होने पर नपुंसक लिंग या स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं—जैसे—त्रिलोकम्, त्रिलोकी, चतुर्युगम्, चतुर्युगी, शताना अब्दानां समाहार—शताब्दी, दशवर्षम्, दशाब्दी।

अभ्यास ४८

१ उदाहरण-वाक्य —१ स्वर्णकार: स्वर्णेन आभूषणानि रचयति । २. लौहकार लौहेन पात्राणि रचयति । ३. चर्मकार: चर्मणा पादत्राण (जूता), कुम्भकार: घट, मालाकार: माला, चित्रकार चित्र, महत्तर समार्जन्या स्वच्छता, तन्तुवाय वस्त्र, शिल्पी खट्वाम् (खाट), रजकः वस्त्राणा स्वच्छता करोति । ४ नर धर्मेण यश आप्नोति, आप्नोतु, आप्नोत्, आप्नुयात्, आप्स्यति वा । ५ प्राज्ञ सत्येन सुख प्राप्नोति । ६. छात्र कार्य समाप्नोति, फल च समाप्नोति । ७ ईश्वर त्रिलोक व्याप्नोति ।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ सुनार सोने से सुन्दर और बहुमूल्य आभूषण बनाता है । २ लोहार लोहे को पीटता है (ताडयति) । ३ चमार चमडे से एक जूता बनाता है । ४ कुम्हार चाक पर मिट्टी से (मृत्तिका) घडा बनाता है । ५ माली फूलो से माला बनाता है । ६ कर्णधार नौका को नदी के पार ले जाता है । ७ चित्रकार एक नारी का सुन्दर चित्र बनाता है । ८ तेली तिलो से तेल निकाल रहा है (निष्कासयति) । ९ धोबी वस्त्रो को धोता है (प्रक्षालयति) । १० जुलाहा वस्त्रो को बनाता है । ११ भारवाहक भार को ढोता है (नी, वह्) । १२ महादेव काले साँप को धारण करते है । १३ तालाब मे नीलकमल खिल रहा है । १४ ससार मे सुपुरुष न्यून और कुपुरुष अधिक है । १५ नारी के मुखकमल को देखो । **(ख)** १६ वह धन पाता है । १७. मै यश पाता हूँ । १८ तू पुस्तक पाता है । १९ वह विद्या पावे । २० मै धन पाऊँ । २१. तू सुख पा । २२ वह शान्ति पावेगा । २३ मै ज्ञान पाऊँगा । २४ तूने यश पाया । २५ मैने सुख पाया । २६ मै कार्य को समाप्त करता हूँ । २७ ईश्वर त्रिलोक, त्रिभुवन और चतुर्युगो मे व्याप्त है ।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१ अप्राप्नो:, अप्राप्नुवम् ।	प्राप्नोः, प्राप्नवम् ।	९६
२ त्रिलोकेषु, त्रिभुवनेषु, चतुर्युगेषु ।	त्रिलोके, त्रिभुवने, चतुर्युगे ।	१६०

४ अभ्यास .—(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् मे बदलो । (ख) आप्, प्राप्, समाप् के परस्मैपद के दसो लकारो के पूरे रूप लिखो । (ग) कर्मधारय और द्विगु समास किसे कहते है, सोदाहरण लिखो ।

५ समास करो .—नील कमलम् । महान् चासौ देवः । धीर: पुरुष । घन इव श्याम: । पाद: एव पद्मम् । कुत्सित पुरुष: । त्रयाणा लोकाना समाहार: । शतानाम् अब्दाना समाहार: ।

६ विग्रह बताओ —कृष्णसर्प, करकमलम्, नीलोत्पलम्, सुपुरुषः, पुरुषव्याघ्रः, चन्द्रमुखम् । त्रिभुवनम्, पचपात्रम्, चतुर्युगी, पचयोजनम ।

शब्दकोष—१२०० + २५ = १२२५] अभ्यास ४९ (व्याकरण)

(क) नापित (नाई), तक्षक (बढ़ई), क्षुर (उस्तरा), सौचिक (दर्जी), रजक (रंगरेज), व्याध (शिकारी) प्रतिहार (द्वारपाल), कहार (कहार), वधक (कसाई), वामन (बौना), वंचक (ठग), तुन्दिल (पेटू), ऐन्द्रजालिक (मदारी), सुधाजीविन् (पुताई करनेवाला), द्वारम् (द्वार), सौधम् (महल), सुधा (१ अमृत, २ सफेदी), सूचिका (सूई), खट्वा (खाट), आसन्दिका (कुर्सी)। पीताम्बर (कृष्ण)। २०। (ख) शक् (सकना), श्रु (सुनना), वप् (१ बोना, २ काटना)। ३। (ग) सविनयम् (सविनय), सादरम् (सादर)।२।

व्याकरण (शक्, बहुव्रीहि समास)

१. शक् (प०) धातु के दसों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ४८)।

*नियम १६१—(अनेकमन्यपदार्थे) (अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि) जिस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है, उसे बहुव्रीहि समास कहते है। बहुव्रीहि समास होने पर समासयुक्त पद स्वतन्त्ररूप से अपना अर्थ नही बताते, अपितु वे विशेषण के रूप में काम करते हैं और किसी अन्य वस्तु का बोध विशेष्यरूप में कराते हैं। बहुव्रीहि की पहचान है कि अर्थ करने पर जहाँ जिसको, जिसने, जिसका, जिसमे आदि अर्थ निकले। बहुव्रीहि के साधारणतया तीन भेद होते है—(१) समानाधिकरण (२) सहार्थक (३) व्यधिकरण। (१) समानाधिकरण—दोनो पदो मे प्रथमा विभक्ति ही रहती है। अन्य पदार्थ कर्ता को छोडकर कर्म करण आदि कोई भी हो सकता है। जैसे—(क) कर्म—प्राप्तम् उदकं य स =प्राप्तोदकः। (ख) करण—हता शत्रव येन स.=हतशत्रु (राजा)। इसी प्रकार उत्तीर्णपरीक्षः (छात्र), कृतकृत्य. (मनुष्य)। (ग) संप्रदान—दत्तं भोजनं यस्मै स. = दत्तभोजन. (भिक्षुक)। (घ) अपादान—पतितं पर्णं यस्मात् स = पतितपर्ण. (वृक्ष)। (ङ) संबन्ध—पीतम् अम्बरं यस्य स. = पीताम्बर· (कृष्ण)। इसी प्रकार दशानन (रावण), चतुरानन. (ब्रह्मा), चतुर्मुख, पद्मयोनि.। (च) अधिकरण—वीरा पुरुषा यस्मिन् स. = वीरपुरुषः (ग्राम)। (२) (तेन सहेति तुल्ययोगे) साथ अर्थ में बहुव्रीहि। जैसे—पुत्रेण सहितः—सपुत्र. (पुत्र के साथ)। इसी प्रकार सानुज, साग्रज, सबान्धवः, सविनयम्, सादरम्, सानुरोधम्। सह या सहित के अर्थ में स पहले लगेगा। (३) व्यधिकरण—दोनो पदों में भिन्न विभक्ति होने पर भी बहुव्रीहि। जैसे—धनुः पाणौ यस्य स.—धनुष्पाणि.।

अभ्यास ४९

१ उदाहरण-वाक्य :—१. नापितः क्षुरेण केशान् वपति। २. तक्षकः खट्वाम् आसन्दिका च रचयति। ३ सौचिकः सूचिकया वस्त्राणि सीव्यति। ४. रजकः वस्त्राणि रजयति (रगता है)। ५ धनुष्पाणिः व्याधः मृगान् हन्ति। ६ प्रतिहारः सौधस्य द्वार रक्षति। ७ वधकः पशून् हन्ति। ८. सुधाजीवी सुधाभिः सौध लिम्पति (पोतता है)। ९ रामः कार्य कर्तु शक्नोति, शक्नोतु, शक्नुयात्, अशक्नोत्, शक्ष्यति वा। १० कृष्णः पितुः कथन श्रृणोति, श्रृणोतु, श्रृणुयात्, अश्रृणोत्, श्रोष्यति वा।

२ संस्कृत बनाओ —(क) १ नाई उस्तरे से मनुष्य के बाल काटता है। २. बटई एक खाट और तीन कुर्सियाँ बनाता है। ३ दर्जी सुई से चार वस्त्रो को सीता है। ४ रगरेज इन सब वस्त्रो को रगता है। ५. शिकारी बाण से व्याघ्र को मारता है। ६. द्वारपाल राजा के महल के द्वार की रक्षा करता है। ७. कहार घडे से पानी भरता है (हृ)। ८ कसाई पशुओं को मारता है। ९. बौना व्यक्ति हँस रहा है। १० ठग सज्जन को ठगता है (वञ्चयति)। ११ पेटू अधिक भोजन खाता है। १२ मदारी अपना जादू (इन्द्रजालम्) दिखाता है। १३ पुताई करनेवाला सफेदी से मेरे मकान को पोतता है। १४ मै पीताम्बर कृष्ण और चतुरानन को सादर सविनय प्रणाम करता हूँ। १५. मै अपने बडे भाई, छोटे भाई और पुत्रो के साथ इस नगर मे रहता हूँ। १६. सत्यनिष्ठ और धर्मनिष्ठ राम धनुष्पाणि वन मे घूमते है। **(ख)** १७. वह कार्य कर सकता है। १८ मै पढ सकता हूँ। १९. वह उठ सकेगा। २० तू लिख सका। २१. वह सुनता है। २२ मै सुनूँ। २३. तू सुन। २४. वह सुनेगा। २५. मैने कुछ नही सुना।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. अह पाठ शक्नोमि।	अह पठितु शक्नोमि।	१३१
२. स उत्थान शक्नोति। लेख शक्नोषि।	उत्थातु शक्ष्यति। लेखितुम् अशक्नोः।	१३१

४ अभ्यास :—(क) २ (ख) का लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् मे बदलो। (ख) शक् और श्रु धातु के दसो लकारो के पूरे रूप लिखो। (ग) बहुव्रीहि समास किसे कहते है, सोदाहरण लिखो।

५. समास करो :—पीतम् अम्बर यस्य सः। दश आननानि यस्य सः। बान्धवैः सहितः। सत्ये निष्ठा यस्य सः। पतित पुष्प यस्मात् सः। विनयेन सहितम्।

६ विग्रह बताओ —चतुराननः, पद्मयोनिः, चतुर्मुखः, दत्तभोजनः। सविनयम्, सादरम्, सानुजः, साग्रजः, धर्मनिष्ठः, ज्ञाननिष्ठः, सत्यव्रतः।

शब्दकोष–१२२५+२५=१२५०] अभ्यास ५० (व्याकरण)

(क) अग्रज (बडा भाई), अनुज (छोटा भाई), पितामह (दादा), मातामह (नाना), प्रपितामह (परदादा), पितृव्य (चाचा), मातुल (मामा), पौत्र (पोता), प्रपौत्र (परपोता), श्वशुर (ससुर), श्याल (साला), देवर (देवर)। भगिनी (बहन), स्वसृ (बहन)। १४। (ख) मृ (मरना), नुद् (प्रेरणा देना), उपदिश् (उपदेश देना), आदिश् (आज्ञा देना), सदिश् (संदेश देना), क्षिप् (फेकना), कॄ (फैलाना), उद्गॄ (१ उगलना, २ बोलना), निगॄ (निगलना), सृज् (बनाना), विसृज् (छोडना)। ११। सूचना '—नुद्—सृज्, तुद् के तुल्य।

व्याकरण (मृ, द्वन्द्व समास)

१ मृ (आ०) धातु के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५४)

२. अग्रज आदि के स्त्रीलिंग-बोधक शब्द ये होते है—कहीपर अन्त मे आ लगेगा, कही पर 'ई'। अग्रजा (बडी बहिन), अनुजा (छोटी बहिन), पितामही (दादी), मातामही (नानी), प्रपितामही (परदादी), पितृव्या (चाची), मातुलानी (मामी), पौत्री (पोती), प्रपौत्री (परपोती), श्वश्रू (सास), श्याली (साली)।

नियम १६२—(चार्थे द्वन्द्व) (उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्व) जहाँ पर दो या अधिक शब्दो का इस प्रकार समास हो कि उसमे च (और) अर्थ छिपा हुआ हो तो वह 'द्वन्द्व' समास होता है। द्वन्द्व समास मे दोनो पदो का अर्थ मुख्य होता है। द्वन्द्व समास की पहचान है कि जहाँ अर्थ करने पर बीच मे 'और' अर्थ निकले। द्वन्द्व समास साधारणतया तीन प्रकार का होता है—१ इतरेतर, २ समाहार, ३ एकशेष। (१) इतरेतर—जहाँ पर बीच मे 'और' का अर्थ होता है तथा शब्दो की सख्या के अनुसार अन्त मे वचन होता है, अर्थात् दो वस्तुएँ हो तो द्विवचन, बहुत हो तो बहुवचन। प्रत्येक शब्द के बाद विग्रह मे च लगता है। जैसे–रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ (राम और कृष्ण)। इसी प्रकार सीतारामौ, उमाशकरौ, रामलक्ष्मणौ, भीमार्जुनौ। पत्र च पुष्पं च फल च–पत्रपुष्पफलानि। (२) समाहार—जहाँ पर कई शब्दो के समाहार (समूह, एकत्रस्थिति) का बोध होता है। समाहार द्वन्द्व मे समस्तपद के अन्त मे प्राय नपुंसक लिंग एकवचन होता है। जैसे—हस्तौ च पादौ च–हस्तपादम् (हाथ और पैर)। दधि च घृत च तयोः समाहार –दधिघृतम् (दही, घी)। इसी प्रकार गोमहिषम्, व्रीहियवम्, शीतोष्णम्। (३) एकशेष—जहाँ समान आकार वाले पदो मे से एक बचा रहे और अर्थ के अनुसार उसमे द्विवचन या बहुवचन हो। जैसे—वृक्षश्च वृक्षश्च=वृक्षौ। पितरौ।

अभ्यास ५०

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ अद्यत्वे मम गृहेऽह, ममाग्रजोऽनुश्च, पितरौ, पितामह., पितामही, तिस्रो भगिन्यश्च सन्ति । २ अत्र रामकृष्णयो चित्रे वर्तेते । ३. पत्रपुष्पफलानि उद्याने सन्ति । ४ दधिघृत प्रतिदिन भोजनीयम । ५ शीतोष्ण सदा सोढव्यम् । ६ सर्वदा पितरौ पूजनीयौ । ७ दुष्ट. रोगेण म्रियते, म्रियताम्, अम्रियत, म्रियेत, मरिष्यति वा । ८. गुरु. शिष्य धर्ममुपदिशति, कार्य कर्तुम् आदिशति च । ९. रामो वचनम् उद्गिरति, भोजन च निगिरति । १० ईश सृष्टि सृजति, पापानि विसृजति ।

२ **सस्कृत बनाओ** —**(क)** १ राम के माता-पिता, भाई और बहने यहाँ रहती है । २ मेरा बडा भाई और छोटा भाई तथा बडी बहन और छोटी बहन विद्यालय मे पढती है । ३ मेरे दादा और दादी वृद्ध है । ४ मेरे मामा, मामी, नाना और नानी प्रयाग मे रहती है । ५. मेरी पत्नी, मेरे साले, साली, स्वसुर और सास काशी मे रहते है । ६ मेरे पुत्र, पुत्रियाँ, पौत्र, पौत्रियाँ, प्रपौत्र और प्रपौत्रियाँ तथा जमाता और नाती विद्यालय और विश्वविद्यालय मे पढते है । ७ मेरे चाचा और चाची पटना (पाटलिपुत्र) मे रहती है । ८ रमा के देवर व्यापार करते है । ९ राम-लक्ष्मण आते है । १० सीता-राम हँसते है । ११ भीम-अर्जुन युद्ध मे जाते है । १२. फल-फूल लाओ । १३ दही घी खाओ । १४ गाय-भैस पालो । १५. धान-जौ बोओ । १६. सर्दी-गर्मी सहो । **(ख)** १७ चोर मरता है । १८. पापी मरा । १९. दुर्जन मरेगा । २०. पिता पुत्र को पढने के लिए प्रेरणा देता है, आदेश देता है और सदेश देता है । २१ गुरु शिष्य को अहिसा का उपदेश देता है । २२ राम बाण फेकता है । २३ बालक धूल फैलाता है । २४ बालक भोजन उगलता है । २५ जादूगर पत्थर निगलता है । २६. कवि काव्य को बनाता है । २७ वह घर छोडता है ।

३ **अशुद्ध**	**शुद्ध**	**नियम**
१ पितरः, दधिघृतानि, गोमहिषौ ।	पितरौ, दधिघृतम्, गोमहिषम् ।	१६२
२. मरति, अमरत्, मरिष्यते ।	म्रियते, अम्रियत, मरिष्यति ।	धातुरूप

४ **अभ्यास** —(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् मे बदलो । (ख) मृ धातु के दसो लकारो के पूरे रूप लिखो । (ग) द्वन्द्व समास किसे कहते है, सोदाहरण लिखो ।

५ **समास करो** —रामश्च कृष्णश्च । हरिश्च हरश्च । भीमश्च अर्जुनश्च । पुष्पाणि च फलानि च । हस्तौ च पादौ च । दधि च घृत च । माता च पिता च ।

६ **विग्रह बनाओ** —पितरौ, गोमहिषम्, शीतोष्णम्, रामलक्ष्मणौ ।

शब्दकोष—१२५० + २५ = १२७५] अभ्यास ५१ (व्याकरण)

(क) पाचक (रसोइया), मोदक (लड्डू), अपूपः (पूआ), सूप (दाल), शाक (साग), कृशर (खिचड़ी)। रोटिका (रोटी), शर्करा (शक्कर), सिता (चीनी), सूत्रिका (सेवई)। लप्सिका (हलुआ), शष्कुली (पूरी)। भक्तम् (भात), पायसम् (खीर), मिष्टान्नम् (मिठाई), पक्वान्नम् (पकवान), नवनीतम् (मक्खन), घृतम् (घृत), लवणम् (नमक), तक्रम् (मट्ठा)। २०। (ख) मुच् (छोड़ना), लुप् (नष्ट करना), विद् (प्राप्त करना), लिप् (लीपना), सिच् (सींचना)। ५।

सूचना—मुच्—सिच्, मुच् के तुल्य।

व्याकरण (मुच्, एकशेष, अलुक्, नञ् समास)

१. मुच् धातु के दोनो पदो मे दसो लकारो मे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ५५)

नियम १६३—(एकशेष) जब उद्देश्य के रूप मे प्रथम मध्यम और उत्तम पुरुष मे से दो या तीन एकत्र हो जाते है, वहाँ पर क्रिया का रूप निम्नलिखित रूप से रक्खा जाएगा। (क) प्रथम पु० + प्रथम पु०=क्रिया प्रथम पुरुष होगी। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। जैसे—राम कृष्ण और देव पढते हैं—राम कृष्ण. देवश्च पठन्ति। राम रमा च पठत। (ख) प्रथम पु० + मध्यम पु०= क्रिया मध्यम पुरुष होगी। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। वह और तू पढते हो—स त्व च पठथ। तौ त्वं च लिखथ। स यूय च गच्छथ। अर्थात् प्रथम पु० और मध्यम पु० मे मध्यम पु० शेष रहता है। (ग) यदि उत्तम पुरुष साथ मे होगा तो उत्तम पुरुष ही शेष रहेगा। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। तू और मै पढते है—त्वम् अह च पठाव। स त्वम् अह च पठाम.। अहं युवां च पठाम.।

नियम १६४—(नञ् समास) 'नही' अर्थ वाले नञ् का जब दूसरे शब्दके साथ समास होता है तो उसे नञ् समास कहते है। यदि बाद मे व्यञ्जन रहता है तो नञ् का 'अ' रहेगा। यदि कोई स्वर बाद में होगा तो अन् रहेगा। जैसे–न ब्राह्मण — अब्राह्मण। इसी प्रकार अस्वस्थ, अन्याय, अप्रिय, असुन्दर.। न उपस्थित— अनुपस्थित। इसी प्रकार अनुचित., अनागत, अनुदार, अनीश्वरवादी।

नियम १६५—(अलुक् समास) कुछ स्थानों पर बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता है, उसे अलुक् समास कहते हैं। जैसे–परस्मैपदम्, आत्मनेपदम्, युधिष्ठिर, सरसिजम्, मनसिज (कामदेव)।

अभ्यास ५१

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ अहं प्रतिदिनं रोटिकां, भक्तं, सूपं, शाकं, घृतं, दुग्धं दधि च खादामि। २ पर्वदिवसे लप्सिकां सूत्रिकां शष्कुलीः पायसं मिष्टान्नं पक्वान्नं नवनीतं च खादामि। ३ सन्यासी गृहं मुञ्चति, मुञ्चतु, अमुञ्चत्, मुञ्चेत्, मोक्ष्यति, मुञ्चते, मुञ्चताम्, अमुञ्चत, मुञ्चेत, मोक्ष्यते वा। ४ मद्यपानं बुद्धिं लुम्पति। ५ रामो धनं विन्दति। ६ भृत्यो गृहं लिम्पति। ७ मालाकारः उद्यानं सिञ्चति। ८ ... तौ च गच्छन्ति। ९ स त्वं च पठथ। १० स त्वम् अहं च लिखामः।

२ **संस्कृत बनाओ** —(क) १ रसोइया प्रतिदिन दाल, भात, साग और रोटी बनाता है (पच्)। २ मैं प्रतिदिन दूध, घी, दही, मट्ठा, शक्कर, चीनी और मक्खन खाता हूँ। ३ आज मेरे घर लड्डू, पूए, हलुआ, सेवईं, खीर, पूरी, मिठाई और पकवान बने हैं (पक्वानि)। ४ दही, खिचडी और साग में नमक डालो (क्षिप्)। ५ अनीश्वरवादी न बनो, अनुचित कार्य न करो, अनुदार न हो, अप्रिय न हो, अन्याय न करो, अस्वस्थ न रहो। ६ विद्यालय में अनुपस्थित न रहो (भू)। ७ सरोवर में सरसिज है। ८ राम और रमा पढते हैं। ९ कृष्ण और तुम लिखते हो। १० वह, तू और मैं हँसते हैं। ११ वह और तुम दोनों जाते हो। १२ तुम दोनों और हम दोनों विद्यालय जाते हैं। (ख) १३. यति घर छोडता है। १४ मैं दुर्गुणों को छोडता हूँ। १५ तू अधर्म को छोडता है। १६ राम ने राज्य छोडा। १७ सुरापान बुद्धि को नष्ट करता है। १८ मैं धन पाता हूँ (विद्)। १९ सेवक घर लीपता है। २० माली वृक्ष सींचता है।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१ कृष्णः त्वं च लिखत।	कृष्णः त्वं च लिखथः।	१६३
२ स त्वमहं च हसथ।	स त्वमहं च हसामः।	१६३

४ **अभ्यास** —(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो। (ख) मुच् धातु के दोनों पदों के दसों लकारों के रूप लिखो। (ग) नञ् समास के १० उदाहरण बताओ। (घ) अलुक् समास के ५ उदाहरण बताओ।

५ **वाक्य बनाओ** —प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष को इकट्ठे रखते हुए १० वाक्य बनाओ।

६ **रिक्त स्थानों को भरो** —(कोष्ठगत धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप) १. स त्वं च (पठ्)। २ स अहं च (लिख्)। ३ त्वमहं च (गम्)। ४ अहं युवां च (हस्)। ५ मुनिः गृहं (मुच्)। ६ पापं बुद्धिं (लुप्)। ७ भृत्यो वृक्षं (सिच्)।

शब्दकोष-१२७५+२५=१३००] अभ्यास ५२ (व्याकरण)

(क) विद्यावत् (विद्वान्), सानुमत् (पर्वत), भास्वत् (सूर्य), ज्ञानवत् (ज्ञानी), मतिमत् (बुद्धिमान्), गुणवत् (गुणवान्), गरुत्मत् (गरुड), सूद (रसोइया), आपण (दूकान, बाजार), तण्डुल (चावल), गोधूम (गेहूँ), चणक (चना), यव. (जौ), माष (उडद), मसूर (मसूर), सर्षप (सरसो), सक्तु (सत्तू), अवलेह· (चटनी), पलाण्डु (प्याज), धान्यम् (धान), सन्धितम् (अचार), लशुनम् (लहसुन) । २२ । (ख) रुध् (रोकना), भिद् (काटना), छिद् (काटना) । ३ ।

सूचना—रुध्—छिद् , रुध् के तुल्य ।

व्याकरण (रुध् , तद्धित मतुप् प्रत्यय)

१ रुध् धातु के दोनो पदो के दसो लकारो मे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ५६)

नियम १६६—(तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्) युक्त या 'वाला' अर्थ मे मतुप् प्रत्यय होता है । मतुप् का 'मत्' शेष रहता है । यदि शब्द के अन्त मे या उपधा मे अ, आ, या म् होता है तो मत् को वत् हो जाता है । (कुछ स्थानो पर नही ।) मत् प्रत्ययान्त के रूप पुलिंग मे भगवत् (शब्द २९) के तुल्य चलेगे । स्त्रीलिंग मे ई लगाकर नदी के तुल्य और नपु० मे जगत् के तुल्य । जैसे—धन से युक्त या धन-वाला—धनवान् । इसी प्रकार गुणवान्, ज्ञानवान्, विद्यावान्, धीमान्, श्रीमान्, मतिमान्, बुद्धिमान् आदि । स्त्रीलिंग मे—धनवती, गुणवती, ज्ञानवती, विद्या-वती, धीमती, श्रीमती, बुद्धिमती आदि ।

अनुवादार्थ कतिपय निर्देश

नियम १६७—(क) हिन्दी के 'जी'के लिए सस्कृत मे महोदय , महाभाग या महाशय· शब्द लगाओ । जैसे—गाधीजी—गाधीमहोदय , जवाहरलालनेहरूमहाभाग·, श्री पन्तमहोदय । (ख) व्यक्तिवाचक, नगर आदि के वाचक शब्द उसी रूप मे रहेगे । व्यक्तिवाचक के अन्त मे महोदय , नामक., आख्य आदि लगाकर रूप बनाओ । नगरवाची के अन्त मे नगर शब्द लगेगा, देशवाची के अन्त मे देश शब्द । जैसे—कानपुरनगरे, लखनऊनगरे, इगलैण्डदेशे, अमेरिकादेशे, लन्दननगरे । आक्सफोर्डविश्वविद्यालये आदि । राममूर्तिनामक मल्ल । जटोपेकनामक द्रुत-तमधावक । (ग) उपनामसूचक शब्दो के साथ 'उपाह्व' शब्द, स्थानवाचक के साथ 'स्थानम्' शब्द, देशवासी के लिए 'देशीय', गाडी के लिए 'यानम्' आदि लगाकर वाक्य बनाओ । मालवीयोपाह्व , पन्तोपाह्व , नालन्दास्थाने, पंचनददेशीय. (पंजाबी), बगदेशीय. (बगाली), धूम्रयानम् (रेलगाडी), मोटरयानम् , मोटर-साइकिलयानम् ।

अभ्यास ५२

१ उदाहरण-वाक्य —१ भास्वान् सानुमत· शिखरे द्योतते। २. विद्यावन्तो मतिमन्तो ज्ञानवन्तश्च सर्वत्रादर लभन्ते। ३ सूद· आपणात् तडुल गोधूम चणकान् यवान् माषान् मसूरान् सर्षपान् च आनयति। ४. दुजन सज्जनस्य मार्ग रुणद्धि, रुणद्धु, अरुणत्, रुन्ध्यात्, रोत्स्यति वा। ५. गान्धिमहोदया·, नेहरुमहाभागा, पन्त-महाशयाश्च देशस्य पूज्या जना सन्ति। ६ लखनऊनगरे उत्तरप्रदेशस्य विधानसभा अस्ति। ७ पञ्चनददेशीया छात्रा अपि अत्र पठन्ति। ८ नृपः शत्रोः शिर भिनत्ति छिनत्ति च।

२ सस्कृत बनाओ —(क) १ विद्वान्, मतिमान् और ज्ञानवान् अपने ज्ञान से देश का उपकार करते है। २ सूर्य पर्वत पर चमक रहा है। ३ गरुड आकाश मे उडता है। ४ बाजार से चावल, गेहूँ, चना, जौ, उडद, मसूर, सरसो और धान लाओ। ५ प्याज और लहसुन मत खाओ, यदि खाओ तो कम खाओ। ६ मुझे भोजन के साथ अनार और चटनी अच्छी लगती है। ७ धनवती स्त्रियाँ सुख से रहती है। ८ गुणवती और ज्ञानवती स्त्रियाँ अपने बालको को स्वय पढाती है। ९. गाधीजी महापुरुष थे। १० पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी भारतवर्ष के प्रधान मत्री है। ११ श्री कन्हैयालाल-माणिकलाल मुशी जी उत्तरप्रदेश के राज्यपाल थे। १२ कानपुर, लखनऊ, प्रयाग और वाराणसी मे जनसख्या अधिक है। १३ रेलगाडी और मोटर बहुत तेज चलती है। (ख) १४ वह मार्ग रोकता है। १५ तू मुझे रोकता है। १६ मै दुष्ट को रोकता हूँ। १७ राम ने रावण को रोका। १८. पिता पुत्र को असत्य भाषण से रोके। १९. योधा शस्त्र से शत्रुओ को काटता है। २० वह वृक्ष काटता है।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१ रोधति, अरोधत्, रोधेत्।	रुणद्धि, अरुणत्, रुन्ध्यात्।	धातुरूप
२ छेदति, भेदति।	छिनत्ति, भिनत्ति।	धातुरूप

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लट् मे बदलो। (ख) रुध् धातु के दोनो पदो के दसो लकारो के रूप लिखो। (ग) मतुप् प्रत्यय लगाकर १० नए शब्द बनाओ और उनका प्रयोग करो।

५ वाक्य बनाओ —(इनको अन्त मे लगाकर पाँच पाँच वाक्य बनाओ)— महोदय, महाभाग, महाशय, नामक, आख्य·, नगरे, देशे, उपाह्व·, देशीय, यानम्।

शब्दकोष—१३००+२५ = १३२५] अभ्यास '१२ (व्याकरण)

(क) गुणिन् (गुणी), धनिन् (धनी), ज्ञानिन् (ज्ञानी), सुकृतिन् (१ विद्वान्, २ पवित्रात्मा), दन्तिन् (हाथी), ब्रह्मचारिन् (ब्रह्मचारी), गृहिन् (गृहस्थी), संन्यासिन् (संन्यासी), कुशलिन् (सकुशल), दूरदर्शिन् (दूरदर्शी), अत्याचारिन् (अत्याचारी), शिखरिन् (पर्वत)। दुराचार (दुराचारी), गृहस्थ (गृहस्थी), वानप्रस्थ (वानप्रस्थी), धनिक (धनिक), मायिक (जादूगर)। १७। (ख) भुज् (१ पालन करना, २ खाना)। १। (ग) पुनः (फिर), भूयः (फिर), अन्यत्र (और जगह), सर्वत्र (सब जगह)। ४। (घ) तृषितः (प्यासा), क्षुधित (भूखा), दुःखित (दुखित)। ३।

सूचना—गुणिन्—शिखरिन्, करिन् के तुल्य।

व्याकरण (भुज्, तद्धित इनि, ठन्, इतच् प्रत्यय)

१ भुज् धातु के दोनो पदो के दसो लकारो के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५७)

*नियम १६८—(भुजोऽनवने)—भुज् धातु के दो अर्थ होते है—रक्षा करना और भोजन करना। रक्षा करने अर्थ मे केवल परस्मैपदी है। भोजन, उपभोग आदि अर्थों मे केवल आत्मनेपद मे रूप चलेगे। राजा पृथ्वी भुनक्ति। राम भोजनं भुङ्क्ते।

नियम १६९—(अत इनिठनौ) अकारान्त शब्दो से युक्त या 'वाला' अर्थ मे शब्द के अन्त मे इनि और ठन् (तद्धित) प्रत्यय होते है। इनि का इन् शेष रहता है। जैसे—गुण>गुणिन् (गुणयुक्त, गुणवाला), धन>धनिन्। इसी प्रकार ज्ञानिन्, दन्तिन् आदि। इन् प्रत्ययान्त के रूप पुलिंग मे करिन् के तुल्य (शब्द० १०) चलेगे। स्त्रीलिंग मे ई लगाकर नदी के तुल्य। ठन् प्रत्यय का 'इक' शेष रहता है। जैसे—धन>धनिक, दण्ड>दण्डिक, माया>मायिक।

नियम १७०—(तदस्य संजातं०) युक्त अर्थ मे कुछ शब्दो मे इतच् प्रत्यय होता है। इतच् का 'इत' शेष रहता है। जैसे—तारका>तारकित (तारो से युक्त), क्षुधित (भूखा), पिपासित (प्यासा), कुसुमित, पुष्पित (फूलो से युक्त), दुःखित (दुःख-युक्त), अंकुरित (अंकुरयुक्त)।

सूचना—(निर्देश चिह्न) लेखादि मे शुद्ध बोध के लिए कतिपय संकेतो का प्रयोग किया जाता है। उनके नाम तथा निर्देश-चिह्न ये है :—

१. अल्पविराम ,	२ अर्धविराम ;	३. पूर्णविराम ।
४ प्रसंगसमाप्ति चिह्न ॥	५ प्रश्नबोधक चिह्न ?	६ विस्मयादिबोधक चिह्न !
७. समास (योजक) चिह्न -	८ व्यवच्छेदक चिह्न —	९. उद्धरण चिह्न " "
१०. निर्देशचिह्न :—	११. कोष्ठचिह्न ( ) [ ]	१२. धनचिह्न +
१३. पर्यायचिह्न =	१४ त्रुटिनिर्देशचिह्न ∧	१५ इतिभवतिचिह्न >

अभ्यास ५३

१ **उदाहरण- वाक्य** .—१ गुणिन' धनिन. ज्ञानिन' कुशलिनः दूरदर्शिनश्च सर्वेऽपि अस्मिन् नगरे वसन्ति । २ ब्रह्मचारिण वानप्रस्थाः सन्यासिनश्च अस्मिन् आश्रमे सन्ति । ३. गृहिणो गृहे वर्तन्ते । ४ अत्याचारिणा दुराचारिणा च सगति कदापि न कुरु । ५ एष जनो दु.खित' क्षुधितश्चास्ति । ६ राजा पृथ्वी भुनक्ति भुनक्तु अभुनक् भुञ्ज्यात् भोक्ष्यति वा । ७ बालको भोजन भुङ्क्ते भुङ्क्ताम् अभुङ्क्त भुञ्जीत भोक्ष्यते वा । ८. अह भोजन भुञ्जे भुञ्जीय वा ।

२ **संस्कृत बनाओ** —(क) १ गुणी धनी ओर ज्ञानी ससार मे सुखी रहते हे । २ ब्रह्मचारी वानप्रस्थ और सन्यासी सुकृती होते हे । ३ इस गृहस्थ के घर एक दन्ती है । ४. दूरदर्शी जन शान्ति पाते है । ५ अत्याचारी और दुराचारी सब जगह दु खित होते हैं । ६ धनिक प्रायः सकुशल रहते हैं । ७ जादूगर जादू (माया) दिखा रहा है । ८ यह पथिक बहुत प्यासा है । ९ यह अतिथि बहुत भूखा है । १० बार-बार सत्य बोलो और धर्म करो । ११ यहाँ से हटो (अपसृ) और दूसरी जगह जाकर बैठो । १२. यह वन कुसुमित और सुरभित है । १३ यह वृक्ष अकुरित हो रहा है । १४ आकाश तारो से युक्त है । (ख) (भुज् धातु) १५ राजा राज्य की रक्षा करता है । १६ सेनापति ने राष्ट्र की रक्षा की । १७ हम अपने राष्ट्र भारतवर्ष की रक्षा करे । १८ वह भोजन खाता है । १९ तू फल खाता है । २० मै मिठाई खाता हूँ । २१ उसने हलुआ खाया । २२ वह पकवान खावे ।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१ राजा राज्यस्य भुनक्ति ।	राजा राज्य भुनक्ति ।	४
२ भोजति, अभोजत् ।	भुनक्ति, अभुनक् ।	धातुरूप
३ भोजते, भोजसे, अभोजत् ।	भुङ्क्ते, भुङ्क्षे अभुङ्क्त ।	धातुरूप

४ **अभ्यास** —(क) २ (ख) को लोट् , लङ् , विधिलिङ् , लट् मे बदलो । (ख) भुज् धातु के दोनो पदो के दसो लकारो के रूप लिखो । (ग) तद्धित इनि, ठन् और इतच् प्रत्यय लगाकर पॉच-पॉच शब्द बनाओ । (घ) निर्देश चिह्नो को उदाहरण देकर समझाओ ।

५ **वाक्य बनाओ** —भुनक्ति, अभुनक्, भुञ्ज्यात् , भुङ्क्ते, भुङ्क्ष्व, भुञ्जीरन् । ब्रह्मचारिण., गृहिणाम्, वानप्रस्था., सन्यासिनाम् । पुन', भूय', अन्यत्र, सर्वत्र ।

६ **रिक्त स्थान भरो** —(लट् , लोट् , लङ् , लट् लकार)—१. अह भोजन (भुज्) २ त्व भक्त (भुज्)। ३ ते मोदकान् (भुज्)। ४ भूपति' भूमि (भुज्)। ५ वय भारतवर्ष (भुज्)।

शब्दकोष—१३२५ + २५ = १३५०] अभ्यास ५४ (व्याकरण)

(क) आम्र (आम), रसाल (आम), दाडिम (अनार), पनस (कटहल), जम्बीर (नीबू), उदुम्बर (गूलर), अश्वत्थ (पीपल), निम्ब (नीम), पूग (सुपारी), बिल्व (बेल), वाताद (बादाम)। द्राक्षा (अंगूर), बदरी (बेर), कदली (केला), कदलीफलम् (केला), नारिकेलफलम् (नारियल), सेवफलम् (सेव), नारंगफलम् (नारंगी, संतरा), आम्रलम् (अमरूद)। १९। (ख) तन् (फैलाना)। १। (ग) तूष्णीम् (चुप), अकस्मात् (अचानक), नित्यम् (नित्य), शीघ्रम् (शीघ्र), पश्चात् (बाद में)। ५।

सूचना—आम्र—वाताद, वृक्ष अर्थ मे रामवत्, फल अर्थ मे गृहवत्।

व्याकरण (तन्, अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय अण्)

१ तन् धातु के दोनो पदो मे दमो लकारो के रूप स्मरण करो (देखो धातु० ५८)।

सूचना—आम्र आदि शब्द वृक्षवाचक होने पर पु० होते है। फलवाचक होने पर नपु०। अन्त मे फलम् लगाकर भी फलवाचक बनाते हे। जैसे—आम्र (आम का पेड), आम्रम् या आम्रफलम् (आम) आदि।

नियम १७१—(तस्यापत्यम्) अपत्य पुत्र या पुत्री दोनो को कहते है। अपत्य अर्थ मे शब्द के बाद प्राय अण् (अ) प्रत्यय लगता है। अण् का अ शेष रहता है। शब्द के सर्वप्रथम स्वर को वृद्धि होती है, अर्थात् अ को आ, इ ई को ऐ, उ ऊ को औ, ऋ को आर्, अन्तिम उ को ओ होगा। जैसे—वसुदेव का पुत्र—वासुदेव (कृष्ण)। पाण्डु के पुत्र पाण्डव, कुरु के पुत्र कौरव, पृथा (कुन्ती) के पुत्र पार्थ। रघु का पुत्र राघव, पुत्र का पुत्र-पौत्र, शिव का शैव, विष्णु का वैष्णव, इनके रूप राम की तरह चलेंगे। स्त्रीलिंग मे ई लगाकर नदी के तुल्य।

नियम १७२—(अत इञ्) अकारान्त शब्दो से (कुछ शब्दो को छोडकर) अपत्य अर्थ मे अन्त मे इञ् प्रत्यय होता है। इञ् का इ शेष रहता है। शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि। हरि के तुल्य रूप चलेंगे। जैसे—दशरथ का पुत्र—दाशरथि (राम)। दक्ष का दाक्षि, सुमित्रा का सौमित्रि (लक्ष्मण), द्रोण का द्रौणि (अश्वत्थामा)।

नियम १७३—(दित्यदित्या०) कुछ शब्दो से अपत्य अर्थ मे अन्त मे 'य' प्रत्यय लगता है। शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि। रामवत् रूप चलेंगे। जैसे-दिति के पुत्र दैत्य, अदिति के पुत्र आदित्य, प्रजापति>प्राजापत्य, गर्ग>गार्ग्य। वत्स>वात्स्य।

नियम १७४—(स्त्रीभ्यो ढक्) स्त्रीलिंग शब्दो से अपत्य अर्थ मे अन्त मे 'एय' लगता है (कुछ शब्दो को छोडकर)। शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे-कुन्ति के पुत्र-कौन्तेय (युधिष्ठिर आदि), माद्री के पुत्र—माद्रेय (नकुल, सहदेव), राधा का-राधेय (कर्ण), द्रौपदी के द्रौपदेय, गंगा का गांगेय, विनता का वैनतेय (गरुड)।

अभ्यास ५४

१ उदाहरण-वाक्य —१ आम्राः दाडिमाः पनसा उदुम्बरा अश्वत्था निम्बाः बिल्वाश्च उद्याने सन्ति । २ अहम् आम्राणि, दाडिमानि, सेवफलानि, नारगफलानि, पनसानि, पूगानि, वातादानि, द्राक्षाफलानि, कदलीफलानि च प्रायः भोजनस्य पश्चात् भक्षयामि । ३. तूष्णी तिष्ठ । ४. सोऽकस्माद् आगत. । ५ दाशरथेः, वासुदेवस्य, पाण्डवाना, कौरवाणा, सौमित्रे , राधेयस्य च एतानि चित्राणि सन्ति । ६ स वस्त्राणि तनोति, तनोतु, अतनोत् , तनुयात् , तनिष्यति च ।

२ सस्कृत बनाओ .—(क) १ मेरे गॉव मे आम, अनार, कटहल, नीबू , गूलर, पीपल, नीम, सुपारी, बेल, केला, बेर और नारियल के पेड है । २ भोजन के बाद फल खाओ । ३ वह प्रायः आम, सेव, अनार, सतरा, कटहल, नीबू , बेल, बादाम, अगूर, केला, नारियल और सुपारी खाता है । ४ ये आम, सेव, अगूर और केले बहुत मधुर है । ५. बेर, गूलर और अमरूद कम खाओ । ६ सेव, बादाम, केला, सतरा स्वास्थ्य-लाभ के लिए बहुत उत्तम है । ७. यहॉ चुप बैठो । ८ गुरु जी अकस्मात् आ गए । ९ व्यायाम, सध्या और अध्ययन नित्य करो । १० मेरी पुस्तक शीघ्र लाओ। ११ भोजन के बाद विद्यालय जाना । १२ महाभारत के युद्ध मे वासुदेव, तीनो कुन्ती के पुत्र, दोनो माद्री के पुत्र, राधा के पुत्र कर्ण, द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा तथा द्रौपदी के पुत्र थे । १३ सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण दाशरथि राम के साथ वन मे गए । (ख) १४ वह वस्त्र फैलाता है । १५. तू ज्ञान को फैलाता है । १६ मै धर्म को फैलाता हूँ । १७ वह विद्या को फैलावे । १८ तूने सत्य को फैलाया । १९ वह अपनी विद्या को फैलावेगी । २० मै गुणो को फैलाऊँगा ।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१ कौन्तय., माद्री, राधि., द्रौणः ।	कौन्तेया', माद्रेयौ, राधेय., द्रौणि. ।	१७२,१७४
२ तनति, तनतु, तनेत् ।	तनोति, तनोतु, तनुयात् ।	धातुरूप

४ अभ्यास —(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) तन् धातु के दोनो पदो के दसो लकारो के पूरे रूप लिखो । (ग) इन शब्दो के पुत्रवाचक शब्द बनाओ—वसुदेव, दशरथ, पाण्डु, कुरु, पुत्र, द्रोण, सुमित्रा, दिति, अदिति, प्रजापति, गर्ग, कुन्ति, पृथा, रघु, राधा, द्रौपदी, गगा, विनता ।

५ वाक्य बनाओ —आम्र., आम्रम् , दाडिम', दाडिमम् , नारिकेलः, नारिकेल-फलम् । तूष्णीम् , अकस्मात् , नित्यम् , शीघ्रम् , पश्चात् । तनोति, तनोतु, अतनोत् , तनुयात् ।

शब्दकोष-१२५० + २५ = १२७५] अभ्यास ५५ (व्याकरण)

(क) कंचुक: (कुर्ता), उत्तरीय (१ चादर, २ दुपट्टा), कम्बल (कम्बल), नीशार (रजाई), पादयाम (पायजामा), तूल (रूई)। शाटिका (साडी), शय्या (बिस्तर, खाट), रशना (कमरबद), उपानत (जूता), उष्णीषम् (पगडी), अंगप्रोक्षणम् (अंगोछा), शिरस्कम् (टोपी), अधोवस्त्रम् (धोती), मुखप्रोक्षणम् (रूमाल), कटिसूत्रम् (करधनी, मेखला), उपधानम् (तकिया), अवगुंठनम् (घूँघट)। १८। (ख) क्री (खरीदना), विक्री (बेचना), बन्ध् (बाँधना), मन्थ् (मथना), अश् (खाना), मुष् (चुराना), क्लिश् (दु ख देना)।७।

सूचना—(क) कचुक—तूल, रामवत्। (ख) क्री—क्लिश्, क्री के तुल्य।

व्याकरण (क्री (उ०), अन्य तद्धितप्रत्यय, जात, भव आदि)

॰ क्री धातु के दोनो पदो के दसो लकारो के पूरे रूप स्मरण करो (दे० धातु ६०)

नियम १७५—(तत्र जात, तत्र भव) उत्पन्न होना या होना अर्थ मे अण् आदि प्रत्यय होते है। (१) कुछ शब्दो के अन्त मे अ प्रत्यय लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे—स्रुघ्ने जात: स्रौघ्न (स्रुघ्ननिवासी)। मथुरा मे उत्पन्न—माथुर। कान्यकुब्ज मे उत्पन्न—कान्यकुब्ज:। सिन्धु (१ समुद्र, २ सिन्ध प्रान्त) मे होनेवाला—सैन्धव: (१ नमक, २ अश्व)। (२) कुछ शब्दो के अन्त मे इक लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। मासे भव—मासिक:, षाण्मासिक। वर्ष> वार्षिक, काल> कालिक, तात्कालिक। प्रात कालीन, सायकालीन आदि 'कालीन' वाले प्रयोग भी प्रचलित है, अत प्रयोग किया जा सकता है, पर व्याकरणानुसार शुद्ध नहीं हैं। (३) (सायंचिर०) कुछ शब्दो के अन्त मे 'तन' जुडता है। जैसे—अद्यतन: (आज का), पुरातन (पुराना), सायतन: (सायकालीन), चिरन्तन (पुराना), इदानीतन: (अब का)।

नियम १७६—(तदधीते तद्वेद) पढने वाला या पढानेवाला या जाननेवाला अर्थ मे अ या इक अन्त मे लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे—वेद पढनेवाला या वेदज्ञ—वैदिक:। पुराण> पौराणिक:, तर्क> तार्किक:, न्याय> नैयायिक:। व्याकरण> वैयाकरणः।

नियम १७७—(तेन प्रोक्तम्) पुस्तक-निर्माण अर्थ मे रचयिता के नाम के बाद अ या ईय लगता है। प्रथमस्वर को वृद्धि। जैसे—ऋषि-रचित> आर्ष। मनुरचित> मानव, पाणिनि-रचित> पाणिनीय (अष्टाध्यायी), वाल्मीकि-रचित> वाल्मीकीय (रामायण)।

नियम १७८—(तस्येदम्) 'उसका यह' अर्थात् सम्बन्ध अर्थ बताने मे अ या इक अन्त मे लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे—दिन सम्बन्धी> दैनिक, अहन्> आह्निक (दिन का), देव-सम्बन्धी> दैव। शरद्-सम्बन्धी> शारद। लोक-सबन्धी> लौकिक, भूत-संबन्धी> भौतिक।

अभ्यास ५५

१ उदाहरण-वाक्य :—१. मम समीपे कञ्चुकः, अधोवस्त्रम्, अङ्गप्रोक्षणम्, उत्तरीयं, उपानत् च सन्ति, परन्तु उष्णीषं शिरस्कं च न स्तः। २ सैन्धवम् आनय (१. घोडा लाओ। २. नमक लाओ)। ३. इदानीन्तनाः छात्रा पुरातनछात्रवत् न गुरुभक्ताः सन्ति। ४. पाणिनीयाम् अष्टाध्यायीम् अवश्यं पठ। ५. स वस्त्राणि क्रीणाति, क्रीणातु, अक्रीणात्, क्रीणीयात्, क्रेष्यति वा। ६ स पुस्तकविक्रेता पुस्तकानि विक्रीणीते। ७ स चौरं बध्नाति दधि मथ्नाति, भोजनम् अश्नाति दुर्जनं क्लिश्नाति, कस्यापि धनं च न मुष्णाति।

२ संस्कृत बनाओ :—(क) १ तुम अपने वस्त्र कुर्ता धोती, पायजामा, कम्बल, रजाई, पगडी टोपी, अंगोछा, रुमाल और तकिया स्वच्छ रखो। २ कुर्ता और धोती पहनो (धारय)। ३ स्त्री अपनी साडी और मेखला पहनती है और घूँघट नीचे करती है। ४ अपना जूता या चप्पल पैर मे पहनो। ५. सैन्धव लाओ। ६ छात्रो की प्रतिवर्ष त्रैमासिक पाण्मासिक और वार्षिक परीक्षा होती है। ७ आजकल के मनुष्यो मे सत्य, प्रेम, अहिंसा और धर्म पुराने लोगो के तुल्य नही है। ८. वैदिक धर्म सनातन, पुरातन और चिरन्तन है। ९ इस सभा मे वैदिक, स्मार्त, पौराणिक, धार्मिक, वैयाकरण, साहित्यिक, नैयायिक, मीमांसक तथा अन्य विद्वान् बैठे है। १० चारो वेद, धर्मशास्त्र, उपनिषद्, वाल्मीकीय रामायण, व्यासरचित महाभारत, गीता, पाणिनीय अष्टाध्यायी अवश्य पढो। ११. दैनिक कार्य प्रतिदिन करो। १२ नैतिक, लौकिक और पारलौकिक सुख चाहो। (ख) १३. वह फल खरीदता है। १४ त वस्त्र खरीदता है। १५. मै पुस्तक खरीदता हूँ। १६ वह वस्त्र बेचता है। १७. पुस्तक-विक्रेता पुस्तक बेचता है। १८ राजा पापी को बाँधता है। १९. चोर धन चुराता है और दु.ख देता है। २०. हरि समुद्र मे अमृत को मथता है।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. क्रयति, विक्रयति, बन्धति।	क्रीणाति, विक्रीणीते, बध्नाति।	धातुरूप
२ समुद्रात् सुधां मन्थति।	सुधां समुद्रं मथ्नाति।	२१, ,,

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् मे बदलो। (ख) क्री धातु के दोनो पदो मे दसो लकारो के रूप लिखो। (ग) उत्पन्न या होना अर्थ मे इनके तद्धित शब्द बनाओ—मथुरा, सुघ्न, मास, वर्ष, प्रात.काल, सायकाल, पुरा, सायम्, इदानीम्।

५ वाक्य बनाओ :—वैयाकरणः, तार्किकः, साहित्यिकः, आर्षः, शारदः, दैवः, लौकिकः, नैतिकः, दैनिकम्, क्रीणाति, विक्रीणीते, अश्नाति।

शब्दकोष-१३७५ + २५ = १४००] अभ्यास ५६ (व्याकरण)

(क) फेनिल (साबुन), दर्पण (शीशा), अलङ्कार (आभूषण), हार (मोती की माला), कर्णपूर (कनफूल), नूपुर (पाजेब)। मेखला (करधनी), प्रसाधनी (कंघी), वेणिका (वेणी), सौभाग्यवती (सधवा, पतियुक्त), विधवा (विधवा)। सिन्दूरम् (सिन्दूर), अञ्जनम् (काजल), गन्धतैलम् (इत्र), तिलकम् (तिलक), अङ्गुलीयकम् (अंगूठी), केयूरम् (बाजूबन्द), ग्रैवेयकम् (हँसुली), कुण्डलम् (कान की बाली), कङ्कणम् (कङ्कण), कण्ठाभरणम् (कण्ठा), नासाभरणम् (बुलाक)। २२। (ख) ग्रह् (लेना), सङ्ग्रह् (सङ्ग्रह करना), अनुग्रह् (अनुग्रह करना)। ३।

सूचना—(क) फेनिल—नूपुर, रामवत्। (ख) ग्रह्—अनुग्रह्, ग्रह् के तुल्य।

व्याकरण (ग्रह्, त्व, ता, ष्यञ्, इमनिच् प्रत्यय)

१ ग्रह् धातु के दोनों पदों में दसों लकारों के रूप स्मरण करो (देखो धातु ६१)

नियम १७९—(तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः, तत्र तस्येव) तुल्य या सदृश अर्थ को बताने के लिए शब्द के बाद 'वत्' प्रत्यय लगता है। जैसे-ब्राह्मण के तुल्य—ब्राह्मणवत्। इसी प्रकार क्षत्रियवत्, वैश्यवत्, शूद्रवत्। रामशब्द के तुल्य>रामवत्, भवति के तुल्य>भवतिवत्।

नियम १८०—(तस्य भावस्त्वतलौ) भाव (हिन्दी 'पन') अर्थ में शब्द के अन्त में त्व और ता लगते हैं। त्व प्रत्ययान्त के रूप नपुंसक लिंग में ही चलेंगे, गृहवत्। ता प्रत्ययान्त के रूप रमा के तुल्य। जैसे-लघु>लघुत्व, लघुता (हलका या छोटापन), गुरु से गुरुत्व, गुरुता, (भारीपन)। इसी प्रकार ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, शूद्रत्व, विद्वस्>विद्वत्त्वम्, विद्वत्ता। दीनता, हीनता, मूर्खता, खिन्नता, दुष्टता।

नियम १८१—(गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः०) गुणवाचक और ब्राह्मण आदि शब्दों से भाव अर्थ में ष्यञ् अर्थात् य प्रत्यय अन्त में लगता है। शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि होती है, अन्तिम अ का लोप। जैसे-शूर>शौर्य (शूरता), सुन्दर>सौन्दर्य, धीर>धैर्य, सुख>सौख्य, कवि>काव्य, ब्राह्मण> ब्राह्मण्य, विदग्ध> वैदग्ध्य, विद्वस्> वैदुष्य।

नियम १८२—कुछ शब्दों के अन्त में ष्यञ् अर्थात् य या अ प्रत्यय स्वार्थ (अर्थात् उसी अर्थ) में होते हैं। जैसे-बन्धु> बान्धव (दोनों का अर्थ भाई है)। प्रज्ञ> प्राज्ञ, रक्षस्> राक्षस। करुणा> कारुण्य, चतुर्वर्ण> चातुर्वर्ण्य, सेना> सैन्य, समीप> सामीप्य, त्रिलोक> त्रैलोक्य।

नियम १८३—(पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा) कुछ शब्दों से भाव अर्थ में शब्द के अन्त में 'इमन्' लगता है। अन्तिम अक्षर या टि का लोप हो जाता है। ऋ को र् होता है। जैसे-लघु> लघिमा (लघुता), गुरु> गरिमा, महत्> महिमा, मृदु> म्रदिमा, अणु> अणिमा।

अभ्यास ५६

१ **उदाहरण-वाक्य**—१ सौभाग्यवती स्त्री हार नूपुर कंकण सिन्दूर तिलक कण्ठाभरण च धारयति। २ फेनिलेन वस्त्राणि प्रक्षालय। ३ मनुष्येषु एकतः (एक ओर) विद्वत्ता, शौर्य, धैर्य, सौख्य, सौन्दर्य, गुरुत्व च दृश्यते, अपरतः (दूसरी ओर) दीनता, हीनता, खिन्नता, मूर्खता, भीरुत्व, कुरूपत्व च दृश्यते। ४ गुणाना गरिमा, अणोः अणिमा, लघूना लघिमा, मृदूना म्रदिमा, महता महिमा च सर्वत्र दृश्यते। ५ ब्राह्मणः धन गृह्णाति, गृह्णातु, अगृह्णात्, गृह्णीयात्, ग्रहीष्यति वा। ६ धनिक धन सगृह्णाति, पुत्र च अनुगृह्णाति।

२ **संस्कृत बनाओ**—(क) १ वह सुन्दर स्त्री ग्रीवा मे मोती की माला, कान मे कनफूल, नाक मे बुलाक, हाथ मे कंकण और बाजूबन्द, भाल पर तिलक, आँख मे काजल और पैर मे पाजेब धारण किए हुए है। २ सौभाग्यवती नारियाँ सभी अलकारो को धारण करती है, विधवा स्त्रियाँ नही। ३ वह नारी साबुन से अगो को धोकर दर्पण मे मुँह देखती है और कघी से वेणी को गूँथती है (बन्ध्)। ४ सिन्दूर सौभाग्य का चिह्न है। ५. स्त्रियाँ मेखला, हँसुली, कुडल भी पहनती है और इत्र लगाती है (निक्षिप्)। ६ ब्राह्मणवत् विद्वान् बनो, क्षत्रियवत् नीरोग बनो, वैश्यवत् धनी-बनो और शूद्रवत् परिश्रमी बनो। ७ ससार मे एक ओर दीनता, हीनता, मूर्खता, दुष्टता, रोग, शोक है, दूसरी ओर विद्वत्ता, सौख्य, शान्ति, सौन्दर्य और साधुता है। ८ चातुर्वर्ण्य प्राचीन परम्परा है। ९ त्रैलोक्य मे गुणो की गरिमा, प्रेम की प्रियता, अहिंसा की महिमा सदा रही है। (ख) १०. वह धन लेता है। ११ तू पुस्तक लेता है। १२ मै फल लेता हूँ। १३. मनुष्य धन सग्रह करता है। १४. गुरु शिष्य पर अनुग्रह करता है।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१ विद्वानता, महानता, बुद्धिमानता।	विद्वत्ता, महत्ता, बुद्धिमत्ता।	१८०
२ शौर्यता, धैर्यता।	शौर्य (शूरता), धैर्य (धीरता)।	१८१
३ सौन्दर्यता, सामीप्यता।	सौन्दर्य (सुन्दरता), सामीप्य (समीपता)	१८१

४ **अभ्यास**—(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लट् मे बदलो। (ख) ग्रह् धातु के दोनो पदो के दसो लकारो के रूप लिखो। (ग) त्व ता प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—विद्वस्, महत्, धीमत्, दीन, हीन। (घ) ष्यञ् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—शूर, धीर, सुन्दर, ब्राह्मण, कवि, सुख, विद्वस्। (ङ) इमनिच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—लघु, गुरु, महत्, मृदु, अणु।

शब्दकोष—१४००+२५=१४२५] अभ्यास ५७ (व्याकरण)

(क) आयात (देशान्तर से आगत), निर्यात (देश से बाहर गया हुआ), विनिमय (बदलना), पत्रवाहक (डाकिया), उत्कोच (घूस), कुसीद (सूद), अभियोग (मुकदमा), वकील (वकील), न्यायाधीश (जज), न्यायालय (कोर्ट), दीनार (अशर्फी), आपण (दुकान), पण (पैसा), वादी (मुद्दई), प्रतिवादी (मुद्दालेह), आणकम् (आना), रूप्यकम् (रुपया), रजतम् (चाँदी), उपनेत्रम् (चश्मा), काष्ठपट्टम् (तख्त)। २०। (ख) ज्ञा (जानना), प्रतिज्ञा (प्रतिज्ञा करना), अवज्ञा (तिरस्कार करना), अनुज्ञा (आज्ञा देना), अभिज्ञा (पहचानना)। ६।

सूचना—(क) आयात—पण, रामवत्। (ख) ज्ञा—अभिज्ञा, ज्ञा के तुल्य।

व्याकरण (ज्ञा, तद्धित प्रत्यय त, त्र, था, दा, धा, मात्र)

१ ज्ञा धातु के दोनो पदों में दसों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ६२)। सूचना—प्रति + ज्ञा के रूप आत्मनेपद में ही चलते हैं।

नियम १८४—(पञ्चम्यास्तसिल्) पंचमी विभक्ति के स्थान पर 'त' प्रत्यय होता है। जैसे—कस्मात्>कुत (कहाँ से)। इसी प्रकार यत, तत, इत, परित, अभित, समन्तत, अत, अग्रत, सर्वत, उभयत। मत्त (मुझसे), त्वत्त (तुझसे), अस्मत्त (हमसे), युष्मत्त (तुमसे)।

नियम—१८५—(सप्तम्यास्त्रल्) सप्तमी के स्थान पर 'त्र' प्रत्यय होता है। जैसे—कस्मिन्>कुत्र। इसी प्रकार अत्र, यत्र, तत्र, सर्वत्र, अन्यत्र (दूसरी जगह), बहुत्र (बहुत स्थानों पर)।

नियम १८६—(प्रकारवचने थाल्) 'प्रकार' अर्थ में सर्वनाम शब्दों से 'था' प्रत्यय होता है। जैसे—तेन प्रकारेण—तथा (उस प्रकार से)। इसी प्रकार यथा, सर्वथा, उभयथा (दोनों प्रकार से), अन्यथा (अन्य प्रकार से, नहीं तो)। इत्थम्, कथम् में था की जगह थम् लगता है।

नियम १८७—(सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा) सर्व आदि शब्दों से समय अर्थ में 'दा' प्रत्यय होता है। जैसे—सर्वदा, सदा, एकदा (एक बार), अन्यदा (कभी), कदा, यदा, तदा। इदम् का इदानीम् (अब) रूप होता है।

नियम १८८—(संख्याया विधार्थे धा) संख्यावाची शब्दों से प्रकार अर्थ में 'धा' प्रत्यय होता है। जैसे—एकधा (एक प्रकार से), द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पंचधा, बहुधा (अनेक बार, प्राय), शतधा, सहस्रधा।

नियम १८९—(प्रमाणे द्वयसच्०) प्रमाण अर्थ में अर्थात् नाप, तोल आदि अर्थ में शब्द से 'मात्र' प्रत्यय होता है। जैसे, हाथभर—हस्तमात्रम्, मुट्ठीभर—मुष्टिमात्रम्। कमर तक—कटिमात्रम्, घुटनेतक—जानुमात्रम्।

अभ्यास ५७

१. उदाहरण-वाक्य—१ देशस्योन्नत्यै आयातो निर्यातश्च आवश्यकौ स्त । २ उत्कोचस्य आदान प्रदान च द्वयमपि पापम् अस्ति । ३ इतस्ततो न भ्रम । ४. बहुधा विचार्य कार्य कर्तव्यम् । ५ अस्मिन् सरसि जानुमात्र जलमस्ति । ६ स धर्म जानाति, जानातु, अजानात्, जानीयात्, ज्ञास्यति, जानीते, जानीताम्, अजानीत, जानीत, ज्ञास्यते वा । ७ स प्रतिजानीते यत्सदा सत्य वक्ष्यति । ८ राजा चोरम् अवजानाति । ९. पिता पुत्रम् अनुजानाति । १० अह त्वामभिजानामि ।

२ संस्कृत बनाओ—(क) १ आयात और निर्यात से देश के व्यापार की उन्नति होती है और वस्तुओ का विनिमय होता है । २ डाकिया पत्र लाया । ३ घूस लेना और देना दोनो ही महापाप है । ४ कोर्ट मे जज के सम्मुख वकील तर्क कर रहा है । ५ वादी ने प्रतिवादी पर अभियोग लगाया (कृ) । ६ धनिक निर्धन से धन और सूद दोनो लेता है । ७ एक रुपये मे १०० नए पैसे, १६ आने, ४ चवन्नियॉ, २ अठन्नियॉ होती है । ८ चॉदी, सोना, अशर्फी, रत्न बहुमूल्य वस्तुएँ है । ९ वह प्राध्यापक चश्मा पहनते है । १० तख्त यहॉ रखो । ११. इधर उधर (इतस्तत) न दौडो । १२ कहॉ से आते हो ? १३ छात्र मुझसे और तुमसे विद्या पढता है । १४ विद्यालय के दोनो ओर, गॉव के चारो ओर, जल है । १५ सत्य बोलो, नही तो पापी होगे । १६ पाठ को दो बार, तीन बार, चार बार, पॉच बार, दस बार पढो । १७ मुट्ठीभर अन्न है । १८ कमर तक जल है । १९ एक हाथ भर कपडा है । (ख) २० वह राम को जानता है । २१. तू धर्म को जानता है । २२. मै सत्य को जानता हूँ । २३. वह प्रतिज्ञा करता है कि मै कभी झूठ न बोलूँगा । २४ मूर्ख दीनो का तिरस्कार करता है । २५ गुरु शिष्य को आज्ञा देता है । २६ दुष्यन्त शकुन्तला को पहचानता है ।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१ विद्यालस्य उभयत., ग्रामस्य परित. ।	विद्यालयमुभयत, ग्राम परितः ।	१४, १७,
२ जानति, जानतु, अजानत् ।	जानाति, जानातु, अजानात् ।	धातुरूप
३. स प्रतिजानाति ।	स प्रतिजानीते ।	धातुरूप

४ अभ्यास—(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लट् मे बदलो । (ख) ज्ञा धातु के दोनो पदो मे दसो लकारो मे रूप लिखो । (ग) इन प्रत्ययो को लगाकर पॉच-पॉच रूप बनाओ और वाक्यो मे प्रयोग करो—त., त्र, था, दा, धा, मात्र ।

५ वाक्य बनाओ—जानीहि, प्रतिजानीष्व, अवजानाति, अनुजानीहि । मत्तः, त्वत्तः, अस्मत्तः, युष्मत्त., उभयत., सर्वतः, अन्यत्र, सर्वत्र, एकदा, सदा, त्रिधा, बहुधा, शतधा, मुष्टिमात्रम्, कटिमात्रम्, जानुमात्रम् ।

शब्दकोष—१४२५ + २५ = १४५०] अभ्यास ५८ (व्याकरण)

(क) ऋतु (ऋतु), वसन्त (वसन्त), ग्रीष्म (गर्मी), वर्षा (वर्षा), शरद् (शरद्), हेमन्त (हेमन्त), शिशिर (शिशिर) ।७। (घ) कृश (निर्बल), प्रिय (प्रिय), कटु (कडवा), लघु (छोटा, हलका), बहु (अधिक), भीरु (डरपोक), मृदु (कोमल), दीर्घ (बडा), ह्रस्व (छोटा), महत् (बडा), अल्प (छोटा, थोडा), प्रशस्य (अच्छा), उदार (दानी), कृपण (कृपण), प्राचीन (पुराना), नूतन (नया), कोमल (कोमल), विशाल (बडा) । १८ ।

व्याकरण (तरप् , तमप् प्रत्यय)

नियम १९०—(द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ) तुलनात्मक विशेषण —जब दो की तुलना की जाती है और उनमे से एक की विशेपता या न्यूनता बताई जाती है तो विशेषण के आगे तरप् या ईयसुन् प्रत्यय होता है। तरप् का तर और ईयसुन् का ईयस् शेप रहता है । तर प्रत्यय लगाने पर पुलिग मे राम, स्त्रीलिंग मे रमा, और नपु० मे गृह के तुल्य रूप चलेंगे । ईयस् लगाने पर पुलिग मे अन्त मे ईयान्, ईयांसौ, ईयास , प्रथमा । ईयासम्, ईयांसौ, ईयस , द्वितीया मे लगेगा । स्त्रीलिग में अन्त मे ई लगाकर नदी के तुल्य और नपु० मे मनस् के तुल्य रूप चलेंगे । जिससे विशेषता दिखाई जाती है, उसमे पचमी होती है (देखो नियम ५४) । जैसे–राम श्याम से पटु है—राम श्यामात् पटुतर , पटीयान् वा । इसी प्रकार लघु > लघुतर , लघीयान् । महत् > महत्तर , महीयान् । विद्वस् > विद्वत्तर ।

नियम १९१—(अतिशायने तमबिष्ठनौ) बहुतो मे से एक की विशेषता बताने पर तमप् या इष्ठन् होता है । तमप् का तम और इष्ठन् का इष्ठ शेष रहता है । दोनो के रूप पुं० मे रामवत्, स्त्री० मे रमावत्, नपु० मे ज्ञानवत् चलेंगे। जिनसे विशेषता बताई जाती है, उनमे षष्ठी या सप्तमी होगी । (देखो नियम ६४) । जैसे–कवियो मे कालिदास श्रेष्ठ है—कवीनां कविषु वा कालिदास श्रेष्ठ । छात्राणा छात्रेषु वा राम पटुतम पटिष्ठ वा । विद्वस् > विद्वत्तम ।

इस पाठ मे दो की तुलना मे 'तर' और बहुतो की तुलना मे 'तम' प्रत्यय का प्रयोग करे ।

अभ्यास ५८

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ षड् ऋतवः सन्ति, वसन्त, ग्रीष्मादयः। २ देवदत्तः यज्ञदत्तात् पटुतरः, कृशतरः, लघुतर, भीरुतरः, मृदुतर चास्ति। ३ कालिदासः कवीना कविषु वा बुद्धिमत्तमः, पटुतम, योग्यतमश्चासीत्। ४ कृष्णः छात्राणा छात्रेषु वा पटुतमः। ५ रमा कमलायाः पटुतरा। ६ श्यामा छात्रासु पटुतमा अस्ति।

२ **संस्कृत बनाओ** —१ एक वर्ष मे ६ ऋतुएँ होती है, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर। २ वसन्त ऋतु को ऋतुराज कहते है। ३ वसन्त मे सभी वृक्ष और लताएँ फलफूल से युक्त होती है। ४ ग्रीष्मऋतु मे धूप (आतपः) बहुत उग्र होती है। ५ वर्षा ऋतु मे वृष्टि अधिक होती है। ६ शरद् ऋतु से ठण्ड (शीत) शुरू होती है। ७ हेमन्त ऋतु मे ठण्ड बढती है। ८ शिशिर मे हिम (हिमम्) गिरता है, ठण्ड अत्यधिक होती है। ९. राम शिवदत्त से अधिक चतुर, पटु, कृश और लघु है। १०. मुझे धनिक से विद्वान् प्रियतर है। ११. धन से विद्या प्रशस्यतर है। १२. विद्या से भी बुद्धि प्रशस्यतर है। १३ हरिश्चन्द्र रामचन्द्र से छोटा है और देवदत्त रामचन्द्र से बडा है। १४ वैदिक धर्म सारे धर्मो से प्राचीन है। १५ साम्यवाद सबसे नया वाद (वादः) है। १६ हरिश्चन्द्र सबसे बडा दानी था। १७. राजाओ मे दुर्योधन सबसे अधिक कृपण था। १८ परमाणु सबसे छोटा होता है। १९ नवग्रहो मे सूर्य सबसे बडा ग्रह (ग्रहः) है। २० स्त्री का स्वर मृदुतम होता है। २१ खरगोश सबसे अधिक डरपोक होता है। २२ सरस्वती सबसे अधिक विदुषी (विद्वत्तमा) है। २३ ग्रीष्म ऋतु मे दिन सबसे बडा होता है और शिशिर मे रात्रि सबमे बडी होती है। २४ गुड सबसे अधिक मधुर होता है और विष सबसे अधिक कटु होता है।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१. रामः शिवदत्तेन अधिक चतुरतरः।	रामः शिवदत्तात् चतुरतरः।	५४
२. वैदिकधर्मः सर्वधर्मात् प्राचीनः।	वैदिकधर्मः सर्वधर्मेषु प्राचीनतमः।	६४

४ **अभ्यास** :—(क) इन शब्दो से तरप् और तमप् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—पटु, गुरु, लघु, मृदु, कटु, मधुर, प्रिय, ह्रस्व, दीर्घ, महत्, अल्प, कृपण, उदार, प्राचीन, नवीन, दुष्ट, हीन, नीच।

५. **वाक्य बनाओ** —पटुतरः, लघुतरः, प्रियतरः, दुष्टतर, महत्तरः, पटुतमः, गुरुतमः, मधुरतमः, कटुतमः, प्राचीनतमः, नवीनतमः।

शब्दकोष—१४५० + २५=१४७५] अभ्यास ५९ (व्याकरण)

(क) वासर (दिन), रविवार (रविवार), सोमवार (सोमवार), मंगलवार (मंगलवार), बुधवार (बुधवार), बृहस्पतिवार (बृहस्पतिवार), शुक्रवार (शुक्रवार), शनिवार (शनिवार)। मास (महीना), चैत्र (चैत्र), वैशाख (वैशाख), ज्येष्ठ (ज्येष्ठ), आषाढ (आषाढ), श्रावण (श्रावण), भाद्रपद (भाद्रपद) आश्विन (आश्विन), कार्तिक (कार्तिक), मार्गशीर्ष (मार्गशीर्ष), पौष (पूष), माघ (माघ), फाल्गुन (फाल्गुन)। २१। (ख) बाढ (अच्छा), युवन् (छोटा), उरु (बडा), स्थूल (मोटा)। ४।

व्याकरण (तद्धित ईयस् . इष्ठ प्रत्यय)

नियम १९२—(अजादी गुणवचनादेव, टे) ईयस् और इष्ठ के विषय में दो बातें स्मरण रक्खें। (१) ईयस् और इष्ठ गुणवाचक शब्दों के ही साथ लगते है, सब प्रकार के शब्दों के साथ नही। तर, तम सब स्थानो पर लगते हैं। (२) ईयस् और इष्ठ लगाने पर शब्द के अन्तिम स्वर का लोप हो जाएगा, यदि अन्त मे व्यञ्जन है तो उस व्यञ्जन और उससे पहले के स्वर, दोनो का लोप होगा। जैसे—पटु, लघु आदि मे उ हटेगा, महत् मे अत् हटेगा। पटु > पटीयान्, पटिष्ठ। लघु > लघीयान्, लघिष्ठ। महत् > महीयान्, महिष्ठ।

नियम १९३—(स्थूलदूर०, प्रियस्थिर०) निम्नलिखित शब्दो से ईयस् और इष्ठ प्रत्यय करने पर ये रूप होते हैं। ठीक स्मरण कर लें। कोष्ठगतशब्द शेष रहता है। सभी शब्दों के तर और तम वाले भी रूप बनेंगे।

प्रशस्य	(श्र)	श्रेयान्	श्रेष्ठ	गुरु	(गर्)	गरीयान्	गरिष्ठ
वृद्ध, प्रशस्य	(ज्य)	ज्यायान्	ज्येष्ठ	दीर्घ	(द्राघ्)	द्राघीयान्	द्राघिष्ठ
अन्तिक	(नेद्)	नेदीयान्	नेदिष्ठ	बहु	(भू)	भूयान्	भूयिष्ठ
बाढ	(साध)	साधीयान्	साधिष्ठ	युवन्	(कन्)	कनीयान्	कनिष्ठ
स्थूल	(स्थू)	स्थवीयान्	स्थविष्ठ	पटु	(पट्)	पटीयान्	पटिष्ठ
दूर	(दू)	दवीयान्	दविष्ठ	लघु	(लघ्)	लघीयान्	लघिष्ठ
प्रिय	(प्र)	प्रेयान्	प्रेष्ठ	महत्	(मह्)	महीयान्	महिष्ठ
स्थिर	(स्थ)	स्थेयान्	स्थेष्ठ	मृदु	(म्रद्)	म्रदीयान्	म्रदिष्ठ
उरु	(वर्)	वरीयान्	वरिष्ठ	बलिन्	(बल्)	बलीयान्	बलिष्ठः

इस पाठ मे दो की तुलना मे 'ईयस्' और बहुतो की तुलना मे 'इष्ठ' का प्रयोग करें।

अभ्यास ५९

१ उदाहरण-वाक्य —१ सप्ताहे सप्त दिनानि भवन्ति (रविवारः सोमवारादयः)। २. एकस्मिन् वर्षे द्वादश मासाः भवन्ति चैत्रः वैशाखादयः। ३ जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। ४. श्रेयान् स्वधर्मो विगुण परधर्मात् स्वनुष्ठितात्। ५. रामो लक्ष्मणात् ज्यायान् आसीत्, शत्रुघ्नश्च भरतात् कनीयान् आसीत्। ६ पाण्डवाना युधिष्ठिरो ज्येष्ठः सहदेवश्च कनिष्ठो भ्राता बभूव।

२ संस्कृत बनाओ —१ एक सप्ताह में सात दिन होते हैं, रविवार, सोमवार मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार और शनिवार। २ एक वर्ष में बारह मास होते है, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष पौष, माघ और फाल्गुन। ३ विद्या धन से बड़ी है (गुरु)। ४. मेरा घर तुम्हारे घर से दूर है (दूर)। ५ भीम अर्जुन से स्थूल है। ६. अर्जुन भीम से धनुर्विद्या में चतुर है (पटु)। ७ हिंसा से अहिंसा प्रशस्यतर है। ८ यह मार्ग उस मार्ग से लम्बा है (दीर्घ)। ९ कृष्ण मेरा बड़ा भाई है और राम छोटा। १० रमा विष्णु की प्रेयसी है। ११. सीता का शरीर फूल से भी कोमल था (मृदु)। १२ वेद सारे धर्मग्रन्थों में श्रेष्ठ है। १३ कालिदास कवियों में श्रेष्ठ है। १४ कौरवों में दुर्योधन सबसे बड़ा भाई था। १५ पाण्डवों में सहदेव सबसे छोटा भाई था। १६ सारी पुस्तकों में मुझे गीता प्रिय है (प्रिय)। १७. ईश्वर सबसे अधिक समीप (अन्तिक), सबसे अधिक दूर, सबसे उत्तम (बाढ), सबसे स्थूल, सबसे लघु, सबसे महान्, सबसे बड़ा (गुरु), सबसे विशाल (उरु) सबसे स्थिर, सबसे बड़ा (वृद्ध), सबसे प्रिय, सबसे बलवान (बलिन्) और सबसे अधिक (बहु) कोमल है (मृदु)।

३ अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. ज्येयान्, दूरीयान्, प्रियेयान्।	ज्यायान्, दवीयान्, प्रेयान्।	१९३
२ बहीयान्, बहिष्ठ, गुरिष्ठ।	भूयान्, भूयिष्ठ, गरिष्ठः।	१९३
३. जेष्ठः, कनेष्ठः, वरेष्ठः।	ज्येष्ठः, कनिष्ठः, वरिष्ठः।	१९३

४ अभ्यास —(क) इन शब्दों से ईयस् और इष्ठ लगाकर रूप बनाओ :— प्रिय, स्थिर, उरु, गुरु, वृद्ध, दीर्घ, युवन्, अन्तिक, बाढ, स्थूल, प्रशस्य, पटु, लघु, मृदु, महत्, बहु।

५ वाक्य बनाओ —श्रेयान्, श्रेष्ठः, प्रेयान्, प्रेयसी, प्रेष्ठः, ज्यायान्, ज्येष्ठः, कनीयान्, कनिष्ठः, भूयान्, भूयिष्ठम्, गरिष्ठः, वरिष्ठः।

शब्दकोष—१४७५ + २५=१५००] अभ्यास ६० (व्याकरण)

(ऊ) अजा (बकरी), कोकिला (कोयल), मूषिका (चुहिया), प्रिया (प्रिय स्त्री, स्त्री)। प्रेयसी (स्त्री), बुद्धिमती (बुद्धिमती), तपस्विनी (तपस्विनी), मानिनी (मानवाली), तरुणी (युवती), किशोरी (कम आयु की कन्या), ब्राह्मणी (ब्राह्मणी), क्षत्रिया (क्षत्रिय स्त्री), वैश्या (वैश्य स्त्री), शूद्रा (शूद्र स्त्री), युवति (युवती), मृगी (हिरनी), सिंही (शेरनी), सर्पिणी (साँपिन), मार्जारी (बिल्ली), इन्द्राणी (इन्द्र की स्त्री), भवानी (दुर्गा), आचार्या (प्रिंसिपल स्त्री), आचार्यानी (आचार्य की स्त्री), राज्ञी (रानी), श्रीमती (ऐश्वर्ययुक्त स्त्री)। २५।

व्याकरण (स्त्रीप्रत्यय)

नियम १९४—(अजाद्यतष्टाप्) शब्दो को स्त्रीलिंग बनाने मे साधारणतया अन्त मे 'आ' या 'ई' लगता है। कुछ मुख्य नियम यहाँ दिए जाते है—शब्द के अन्तमे अ हो तो साधारणतया अन्त मे टाप् अर्थात् 'आ' जुड जाता है। जैसे–बाल-बाला, प्रथम—प्रथमा, द्वितीय–द्वितीया, कृपण—कृपणा, दीन—दीना, अज—अजा, कोकिल—कोकिला, क्षत्रिय—क्षत्रिया, वैश्य—वैश्या, शूद्र—शूद्रा।

नियम १९५—(प्रत्ययस्थात्कात्०) अन्त मे अक हो तो उसे 'इका' हो जाता है। जैसे–बालक—बालिका, पाचिका, गायिका, साधिका, अध्यापिका, मूषिका।

नियम १९६—(उगितश्च) जिन प्रत्ययो मे से उ या ऋ का लोप होता है, उनमे अन्त के ङीप् अर्थात् ई लगेगा। जैसे–मतुप्, शतृ, क्तवत्, ईयसुन् प्रत्यय वाले शब्द। यथा–श्रीमत् > श्रीमती। इसी प्रकार बुद्धिमती, विद्यावती। गच्छत् > गच्छन्ती। इसी प्रकार पठन्ती, लिखन्ती, हसन्ती। गतवत् > गतवती। इसी प्रकार पठितवती, उक्तवती। श्रेयस् > श्रेयसी। इसी प्रकार गरीयसी, प्रेयसी, ज्यायसी, भूयसी।

नियम १९७—(ऋन्नेभ्यो ङीप्) शब्द के अन्त मे ऋ या न् होगा तो ङीप् अर्थात् ई लगेगा। जैसे–कर्तृ > कर्त्री। इसी प्रकार हर्त्री, धर्त्री, भर्त्री, कवयित्री, विधात्री। दण्डिन् > दण्डिनी। इसी प्रकार तपस्विनी, मानिनी, मनोहारिणी, कामिनी।

नियम १९८—(षिद्गौरादिभ्यश्च) गौर आदि शब्दो के अन्त मे ई लगता है। गौर—गौरी। नर्तक—नर्तकी। मातामह—मातामही। पितामह—पितामही। इसी प्रकार कुमारी, किशोरी, तरुणी, सुन्दरी।

नियम १९९—(जातेरस्त्री०, पुंयोगा०) जातिवाचक शब्दो से तथा स्त्री (पत्नी) अर्थ कहने मे ई लगता है। जैसे–ब्राह्मण की स्त्री—ब्राह्मणी। इसी प्रकार शूद्री, गोपी आदि। मृग—मृगी। इसी प्रकार हरिणी, सिंही, व्याघ्री, हंसी, मार्जारी।

नियम २००—इन शब्दो के स्त्रीलिंग मे ये रूप होते है—इन्द्र—इन्द्राणी, भव—भवानी, रुद्र—रुद्राणी, मातुल—मातुलानी, उपाध्याय—उपाध्यायानी, आचार्य—आचार्यानी, आचार्या। पति—पत्नी, युवन्—युवति, श्वशुर—श्वश्रू, राजन्—राज्ञी, विद्वस्—विदुषी।

अभ्यास ६०

१ **उदाहरण-वाक्य** —१ अस्या नगर्यां ब्राह्मण्य क्षत्रिया वैश्या शूद्राश्च नार्यो वसन्ति। २ अस्मिन् उद्याने मनोहारिण्य कुमार्य तरुण्य सुन्दर्यो राज्ञ्य युवतय. समुख भ्रमन्ति। ३ गुरुकुलस्य आचार्या बालिकाः पाठयति, आचार्यानी आचार्यं सेवते।

२ **संस्कृत बनाओ** —१ महात्मा गाधी बकरी का दूध पीते थे। २ सरोजिनी नायडू भारत की कोकिला थी। ३ कोयल मधुर स्वर से गाती है। ४ बिल्ली चूहो और चुहियो को खाती है। ५ इस कक्षा मे मनोरमा सर्वप्रथम है, सुशीला द्वितीय और शान्ति तृतीय है। ६ ब्राह्मण ब्राह्मणी से, क्षत्रिय क्षत्रिया से, वैश्य वैश्य स्त्री से, शूद्र शूद्र स्त्री से विवाह करते है। ७ बालिका हँसती है, गायिका गाती है, अध्यापिका पढाती है। ८ वे बालिकाएँ पढ रही है, हँस रही है, लिख रही है और जल पी रही है। ९. छोटी बहन, प्रेयसी स्त्री, श्रेयसी सिद्धि, गुरुतर क्रिया। १० वह बालिका पढ चुकी है, लिख चुकी है, खा चुकी है। ११ यह मानिनी मनोहारिणी कामिनी अब दण्डिनी तपस्विनी हो गई है। १२ प्रकृति जगत् की कर्त्री धर्त्री और हर्त्री है। १३. कवयित्री कविता करती है (रच्)। १४ मेरी माता, पत्नी, बहिन, मामी, दादी, नानी आजकल यहाँपर ही है। १५ सुन्दर कुमारी किशोरी तरुणी स्त्रियो का सौन्दर्य किसके मन को नही हरता। १६ वन मे मृग मृगी के साथ, सिह सिही के साथ, व्याघ्र व्याघ्री के साथ घूमते है। १७ इन्द्राणी, भवानी, आचार्यानी और आचार्या सदा पूज्य है। १८. विदुषी स्त्री रानी और गुरुपत्नी (उपाध्यायानी) के साथ आ रही है। १९ गोपियाँ कृष्ण के साथ खेल रही है। २०. हँसती हुई कुमारी ने सामने आती हुई नववधू को देखा।

३ अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१ अजी, बालका, मूषका, श्रीमता।	अजा, बालिका, मूषिका, श्रीमती।	१९४-१९६
२ मृगा, इन्द्रा, रुद्रा, भवा।	मृगी, इन्द्राणी, रुद्राणी, भवानी।	१९९-२००
३. पतिनी, श्वशुरी, विद्वानी।	पत्नी, श्वश्रू, विदुषी।	२००

४ **अभ्यास** —इन शब्दो के स्त्रीलिंग शब्द बनाओ —ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अज, मृग, हस, कोकिल, मूषक, तपस्विन्, मानिन्, मनोहारिन्, कुमार, किशोर, सुन्दर, इन्द्र, आचार्य, भव, रुद्र, पति, युवन्, श्वशुर, राजन्, विद्वस्।

५ **वाक्य बनाओ** —ब्राह्मणी, पत्नी, तरुणी, सुन्दरी, आचार्या, आचार्यानी, विदुषी, श्वश्रू, युवति., बुद्धिमती, गायिका, कनीयसी।

व्याकरण

आवश्यक—निर्देश

१ जिन शब्दो और धातुओ के तुल्य अन्य शब्दो और धातुओ के रूप चलते है, उनके रूपो के सामने उनका सक्षिप्तरूप दिया गया है। सक्षिप्तरूप का भाव यह है कि उस प्रकार के सभी शब्दो या धातुओ के अन्त मे वह अश रहेगा। अतः उस प्रकार से चलनेवाले सभी शब्दो और धातुओ के अन्त मे सक्षिप्तरूप लगाकर रूप बनावे। सक्षिप्त रूपो को शुद्ध स्मरण कर ले।

२ शब्दो और धातुओ के रूप के साथ अभ्यासो की सख्याएँ दी गई है। उसका भाव यह है कि उस शब्द या धातु का प्रयोग उस अभ्यास मे हुआ है और उस प्रकार से चलनेवाले शब्द या धातु भी उसी अभ्यास मे दिए हुए है। सक्षिप्तरूप लगाकर उन शब्दो या धातुओ के रूप चलाइए।

३ सक्षेप के लिए निम्नलिखित सकेतो का उपयोग किया गया है :—

(क) शब्दरूपो मे प्रथमा आदि के लिए उनके प्रथम अक्षर रक्खे गए है, जैसे— प्र० = प्रथमा, द्वि० = द्वितीया, तृ० = तृतीया, च०=चतुर्थी, प० = पचमी, ष० = षष्ठी, स० = सप्तमी, स० = सबोधन।

(ख) पु० = पुलिग, स्त्री०=स्त्रीलिग, नपु० = नपुसक लिग। एक० = एकवचन, द्वि० = द्विवचन, बहु० = बहुवचन। प्रत्येक शब्द या धातु के रूप मे ऊपर से नीचे की ओर प्रथम पक्ति एकवचन की है, दूसरी द्विवचन की और तीसरी बहुवचन की। जो शब्द किसी विशेष वचन मे ही चलते है, उनमे उसी वचन के रूप है।

(ग) धातुरूपो मे प्र०पु० या प्र० = प्रथम पुरुष (अन्यपुरुष), म०पु० या म० = मध्यमपुरुष, उ०पु० या उ० = उत्तमपुरुष। प० = परस्मैपद, आ० = आत्मनेपद, उ० = उभयपद।

४ सर्वनाम शब्दो का सबोधन नही होता, अतः उनके रूप सबोधन मे नही होते।

५ सक्षिप्तरूपो मे न को ण हो जाता है, यदि वह र् या ष् के बाद होता है। यदि र् या ष् के बाद और न के पहले अट् (स्वर, ह य व र), कवर्ग, पवर्ग, आ, न्, बीच मे हो तो भी न को ण हो जाएगा। सक्षिप्तरूपो मे न ही रक्खा गया है, वही सर्वसाधारण है। जैसे, रामका तृतीया एक० मे एन, ष० बहु० मे आनाम्। (देखो नियम १६)।

(१) शब्दरूप-संग्रह (क)

(१) राम (राम) अकारान्त पुलिंग शब्द (१) राम (संक्षिप्तरूप) (देखो अभ्यास १,८)

रामः	रामौ	रामाः	प्र०	अ	औ	आः
रामम्	,,	रामान्	द्वि०	अम्	,,	आन्
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः
रामाय	,,	रामेभ्यः	च०	आय	,,	एभ्यः
रामात्	,,	,,	प०	आत्	,,	,,
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्	ष०	अस्य	अयोः	आनाम्
रामे	,,	रामेषु	स०	ए	,,	एषु
हे राम !	हे रामौ	हे रामाः	स०	अ	औ	आः

(२) हरि (विष्णु) इकारान्त पु० (२) हरि (संक्षिप्तरूप) (देखो अभ्यास ८)

हरिः	हरी	हरयः	प्र०	इः	ई	अयः
हरिम्	,,	हरीन्	द्वि०	इम्	,,	ईन्
हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
हरये	,,	हरिभ्यः	च०	अये	,,	इभ्यः
हरेः	,,	,,	प०	एः	,,	,,
हरेः	हर्योः	हरीणाम्	ष०	,,	योः	ईनाम्
हरौ	,,	हरिषु	स०	औ	,,	इषु
हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !	स०	ए	ई	अयः

(३) सखि (मित्र) इकरान्त पु०

सखा	सखायौ	सखायः	प्र०
सखायम्	,,	सखीन्	द्वि०
सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	तृ०
सख्ये	,,	सखिभ्यः	च०
सख्युः	,,	,,	प०
,,	सख्योः	सखीनाम्	ष०
सख्यौ	,,	सखिषु	स०
हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः	स०

सूचना—
सखि शब्द के तुल्य और कोई शब्द नहीं चलता है। (देखो अभ्यास २५)

(४) गुरु (गुरु) उकारान्त पु०				(४) गुरु (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ९)		
गुरुः	गुरू	गुरवः	प्र०	उ	ऊ	अवः
गुरुम्	,,	गुरून्	द्वि०	उम्	,,	ऊन्
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः	तृ०	उना	उभ्याम्	उभिः
गुरवे	,,	गुरुभ्यः	च०	अवे	,,	उभ्यः
गुरोः	,,	,,	प०	ओः	,,	,,
,,	गुर्वोः	गुरूणाम्	ष०	,,	वोः	ऊनाम्
गुरौ	,,	गुरुषु	स०	औ	,,	उषु
हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः	सं०	ओ	ऊ	अवः

(५) कर्तृ (करनेवाला) ऋकारान्त पु०				(५) कर्तृ (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० २६)		
कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र०	आ	आरौ	आरः
कर्तारम्	,,	कर्तॄन्	द्वि०	आरम्	,,	ॠन्
कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०	रा	ऋभ्याम्	ऋभिः
कर्त्रे	,,	कर्तृभ्यः	च०	रे	,,	ऋभ्यः
कर्तुः	,,	,,	प०	उः	,,	,,
,,	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्	ष०	,,	रोः	ॠणाम्
कर्तरि	,,	कर्तृषु	स०	अरि	,,	ऋषु
हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः	सं०	अः	आरौ	आरः

(६) पितृ (पिता) ऋकारान्त पु०			
पिता	पितरौ	पितरः	प्र०
पितरम्	,,	पितॄन्	द्वि०
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	तृ०
पित्रे	,,	पितृभ्यः	च०
पितुः	,,	,,	प०
,,	पित्रोः	पितॄणाम्	ष०
पितरि	,,	पितृषु	स०
हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	सं०

(६) पितृ (संक्षिप्त रूप) (देखो अ० २७)			
आ	अरौ	अरः	प्र०
अरम्	,,	ॠन्	द्वि०

शेष कर्तृवत् (देखो शब्द० ५)।

(७) गो (गाय या बैल) ओकारान्त पु०, स्त्री०

गौः	गावौ	गावः	प्र०
गाम्	,,	गाः	द्वि०
गवा	गोभ्याम्	गोभिः	तृ०
गवे	,,	गोभ्यः	च०
गोः	,,	,,	पं०
,,	गवोः	गवाम्	ष०
गवि	,,	गोषु	स०
हे गौः	हे गावौ	हे गावः	सं०

सूचना—
साधारणतया (द्यो शब्दको छोडकर) अन्य कोई शब्द गो शब्द के तुल्य नहीं चलता। (देखो अभ्यास २८).

(८) भूभृत् (राजा, पर्वत) तकारान्त पु०

भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः	प्र०
भूभृतम्	,,	,,	द्वि०
भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः	तृ०
भूभृते	,,	भूभृद्भ्यः	च०
भूभृतः	,,	,,	पं०
,,	भूभृतोः	भूभृताम्	ष०
भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु	स०
हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृतः	सं०

(८) भूभृत् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ३०)

त्	तौ	तः
तम्	,,	,,
ता	द्भ्याम्	द्भिः
ते	,,	द्भ्यः
तः	,,	,,
,,	तोः	ताम्
ति	,,	त्सु
त्	तौ	तः

(९) भगवत् (भगवान्) तकारान्त पु०

भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः	प्र०
भगवन्तम्	,,	भगवतः	द्वि०
भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः	तृ०
भगवते	,,	भगवद्भ्यः	च०
भगवतः	,,	,,	पं०
,,	भगवतोः	भगवताम्	ष०
भगवति	,,	भगवत्सु	स०
हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः	सं०

(९) भगवत् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० २९)

आन्	अन्तौ	अन्तः
अन्तम्	,,	अतः
ता	द्भ्याम्	द्भिः
ते	,,	द्भ्यः
तः	,,	,,
,,	तोः	ताम्
ति	,,	त्सु
अन्	अन्तौ	अन्तः

सूचना—शतृप्रत्ययान्त पठत् आदि के प्र० एक० मे आन् के स्थान पर अन् लगेगा, शेष पूर्ववत्।

(१०) करिन् (हाथी) इन्नन्त पु० (१०) करिन् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३१)

करी	करिणौ	करिणः	प्र०	ई	इनौ	इनः
करिणम्	,,	,,	द्वि०	इनम्	,,	,,
करिणा	करिभ्याम्	करिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
करिणे	,,	करिभ्यः	च०	इने	,,	इभ्यः
करिणः	,,	,,	पं०	इनः	,,	,,
,,	करिणोः	करिणाम्	ष०	,,	इनोः	इनाम्
करिणि	,,	करिषु	स०	इनि	,,	इषु
हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः	सं०	इन्	इनौ	इनः

(११) आत्मन् (आत्मा) अन्नन्त पु० (११) आत्मन् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३२)

आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः	प्र०	आ	आनौ	आनः
आत्मानम्	,,	आत्मनः	द्वि०	आनम्	,,	अनः
आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	तृ०	अना	अभ्याम्	अभिः
आत्मने	,,	आत्मभ्यः	च०	अने	,,	अभ्यः
आत्मनः	,,	,,	पं०	अनः	,,	,,
,,	आत्मनोः	आत्मनाम्	ष०	,,	अनोः	अनाम्
आत्मनि	,,	आत्मसु	स०	अनि	,,	असु
हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः	सं०	अन्	आनौ	आनः

(१२) राजन् (राजा) अन्नन्त पु० (१२) राजन् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३३) (सूचना—अन् भाग के स्थान पर) (देखो नियम १६, ७५)

राजा	राजानौ	राजानः	प्र०	आ	आनौ	आनः
राजानम्	,,	राज्ञः	द्वि०	आनम्	,,	नः
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	तृ०	ना	अभ्याम्	अभिः
राज्ञे	,,	राजभ्यः	च०	ने	,,	अभ्यः
राज्ञः	,,	,,	पं०	नः	,,	,,
,,	राज्ञोः	राज्ञाम्	ष०	,,	नोः	नाम्
राज्ञि, राजनि	,,	राजसु	स०	नि, अनि	,,	असु
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	सं०	अन्	आनौ	आनः

(१३) रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्री०				(१३) रमा (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३, ७)		
रमा	रमे	रमाः	प्र०	आ	ए	आः
रमाम्	,,	,,	द्वि०	आम्	,,	,,
रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः	तृ०	अया	आभ्याम्	आभिः
रमायै	,,	रमाभ्यः	च०	आयै	,,	आभ्यः
रमायाः	,,	,,	पं०	आयाः	,,	,,
,,	रमयोः	रमाणाम्	ष०	,,	अयोः	आनाम्
रमायाम्	,,	रमासु	स०	आयाम्	,,	आसु
हे रमे	हे रमे	हे रमाः	सं०	ए	ए	आः

(१४) मति (बुद्धि) इकारान्त स्त्री०				(१४) मति (संक्षिप्तरूप) (देखो अ ३८)		
मतिः	मती	मतयः	प्र०	इः	ई	अयः
मतिम्	,,	मतीः	द्वि०	इम्	,,	ईः
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	तृ०	या	इभ्याम्	इभिः
मत्यै, मतये	,,	मतिभ्यः	च०	यै, अये	,,	इभ्यः
मत्याः, मतेः	,,	,,	पं०	याः, एः	,,	,,
,, ,,	मत्योः	मतीनाम्	ष०	,, ,,	योः	ईनाम्
मत्याम्, मतौ	,,	मतिषु	स०	याम्, औ	,,	इषु
हे मते	हे मती	हे मतयः	सं०	ए	ई	अयः

(१५) नदी (नदी) ईकारान्त स्त्री०				(१५) नदी (संक्षिप्तरूप) (देखो अ ३८)		
नदी	नद्यौ	नद्यः	प्र०	ई	यौ	यः
नदीम्	,,	नदीः	द्वि०	ईम्	,,	ईः
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	तृ०	या	ईभ्याम्	ईभिः
नद्यै	,,	नदीभ्यः	च०	यै	,,	ईभ्यः
नद्याः	,,	,,	पं०	याः	,,	,,
,,	नद्योः	नदीनाम्	ष०	,,	योः	ईनाम्
नद्याम्	,,	नदीषु	स०	याम्	,,	ईषु
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः	सं०	इ	यौ	यः

(१६) धेनु (गाय)	उकारान्त स्त्री०			(१६) धेनु (संक्षिप्तरूप)	(देखो अ. ३६)	
धेनुः	धेनू	धेनवः	प्र०	उ	ऊ	अवः
धेनुम्	,,	धेनूः	द्वि०	उम्	,,	ऊः
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृ०	वा	उभ्याम्	उभिः
धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः	च०	वै, अवे	,,	उभ्यः
धेन्वाः, धेनोः	,,	,,	पं०	वाः, ओः	,,	,,
,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्	ष०	,, ,,	वोः	ऊनाम्
धेन्वाम्, धेनौ	,,	धेनुषु	स०	वाम्, औ	,,	उषु
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः	सं०	ओ	ऊ	अवः

(१७) वधू (बहू)	ऊकारान्त स्त्री०			(१७) वधू (संक्षिप्तरूप)	(देखो अ. ३७)	
वधूः	वध्वौ	वध्वः	प्र०	ऊ	वौ	वः
वधूम्	,,	वधूः	द्वि०	ऊम्	,,	ऊः
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	तृ०	वा	ऊभ्याम्	ऊभिः
वध्वै	,,	वधूभ्यः	च०	वै	,,	ऊभ्यः
वध्वाः	,,	,,	पं०	वाः	,,	,,
,,	वध्वोः	वधूनाम्	ष०	,,	वोः	ऊनाम्
वध्वाम्	,,	वधूषु	स०	वाम्	,,	ऊषु
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	सं०	उ	वौ	वः

(१८) वाच् (वाणी)	चकारान्त स्त्री०			(१८) वाच् (संक्षिप्तरूप)	(देखो अ. ३८)	
वाक्-ग्	वाचौ	वाचः	प्र०	क्, ग्	चौ	चः
वाचम्	,,	,,	द्वि०	चम्	,,	,,
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	तृ०	चा	ग्भ्याम्	ग्भिः
वाचे	,,	वाग्भ्यः	च०	चे	,,	ग्भ्यः
वाचः	,,	,,	पं०	चः	,,	,,
,,	वाचोः	वाचाम्	ष०	,,	चोः	चाम्
वाचि	,,	वाक्षु	स०	चि	,,	क्षु
हे वाक्-ग्	हे वाचौ	हे वाचः	सं०	क्, ग्	चौ	चः

(१९) सरित् (नदी) तकारान्त स्त्री० — (१९) सरित् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ ३९)

सरित्	सरितौ	सरितः	प्र०	त्	तौ	तः
सरितम्	,,	,,	द्वि०	तम्	,,	,,
सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः	तृ०	ता	द्भ्याम्	द्भिः
सरिते	,,	सरिद्भ्यः	च०	ते	,,	द्भ्यः
सरितः	,,	,,	प०	तः	,,	,,
,,	सरितोः	सरिताम्	ष०	,,	तोः	ताम्
सरिति	,,	सरित्सु	स०	ति	,,	त्सु
हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः	सं०	त्	तौ	तः

---

(२०) गृह (घर) अकारान्त नपुं० — (२०) गृह (संक्षिप्तरूप) (देखो अ २, ६)

गृहम्	गृहे	गृहाणि	प्र०	अम्	ए	आनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः
गृहाय	,,	गृहेभ्यः	च०	आय	,,	एभ्यः
गृहात्	,,	,,	प०	आत्	,,	,,
गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्	ष०	अस्य	अयोः	आनाम्
गृहे	,,	गृहेषु	स०	ए	,,	एषु
हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि	सं०	अ	ए	आनि

---

(२१) वारि (जल) इकारान्त नपुं० — (२१) वारि (संक्षिप्तरूप) (दे० अ. ४०)

वारि	वारिणी	वारीणि	प्र०	इ	इनी	ईनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
वारिणे	,,	वारिभ्यः	च०	इने	,,	इभ्यः
वारिणः	,,	,,	प०	इनः	,,	,,
,,	वारिणोः	वारीणाम्	ष०	,,	इनोः	ईनाम्
वारिणि	,,	वारिषु	स०	इनि	,,	इषु
हे वारि, वारे	हे वारिणी	हे वारीणि	सं०	इ, ए	इनी	ईनि

---

(२२) दधि (दही) इकारान्त नपु० 　　(२२) दधि (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ४१)

दधि	दधिनी	दधीनि	प्र०	इ	इनी	ईनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः	तृ०	ना	इभ्याम्	इभिः
दध्ने	,,	दधिभ्यः	च०	ने	,,	इभ्यः
दध्नः	,,	,,	प०	नः	,,	,,
,,	दध्नोः	दध्नाम्	ष०	,,	नोः	नाम्
दध्नि, दधनि	,,	दधिषु	स०	नि, अनि	,,	इषु
हे दधि, -धे	दधिनी	दधीनि	सं०	इ, ए	इनी	ईनि

(२३) मधु (शहद) उकारान्त नपु० 　　(२३) मधु (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ४२)

मधु	मधुनी	मधूनि	प्र०	उ	उनी	ऊनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	तृ०	उना	उभ्याम्	उभिः
मधुने	,,	मधुभ्यः	च०	उने	,,	उभ्यः
मधुनः	,,	,,	प०	उनः	,,	,,
,,	मधुनोः	मधूनाम्	ष०	,,	उनोः	ऊनाम्
मधुनि	,,	मधुषु	स०	उनि	,,	उषु
हे मधु, -धो	हे मधुनी	हे मधूनि	सं०	उ, ओ	उनी	ऊनि

(२४) पयस् (दूध, जल) असन्त नपु० 　　(२४) पयस् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ४३)

पयः	पयसी	पयांसि	प्र०	अः	असी	आंसि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः	तृ०	असा	ओभ्याम्	ओभिः
पयसे	,,	पयोभ्यः	च०	असे	,,	ओभ्यः
पयसः	,,	,,	प०	असः	,,	,,
,,	पयसोः	पयसाम्	ष०	,,	असोः	असाम्
पयसि	,,	पयस्सु, पयःसु	स०	असि	,,	अःसु
हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि	सं०	अः	असी	आंसि

(२५) शर्मन् (सुख) अन्नन्त नपु०				(२५) शर्मन् (सक्षिप्तरूप) देखो अ. ४४)		
शर्म	शर्मणी	शर्माणि	प्र०	अ	अनी	आनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः	तृ०	अना	अभ्याम्	अभिः
शर्मणे	,,	शर्मभ्यः	च०	अने	,,	अभ्यः
शर्मणः	,,	,,	प०	अनः	,,	,,
,,	शर्मणोः	शर्मणाम्	ष०	,,	अनोः	अनाम्
शर्मणि	,,	शर्मसु	स०	अनि	,,	असु
हे शर्म,शर्मन्	हे शर्मणी	हे शर्माणि	स०	अ,अन्	अनी	आनि

(२६) जगत् (संसार) तकारान्त नपु०				(२६) जगत् (सक्षिप्तरूप) (देखो अ ४५)		
जगत्	जगती	जगन्ति	प्र०	अत्	अती	अन्ति
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः	तृ०	अता	अद्भ्याम्	अद्भिः
जगते	,,	जगद्भ्यः	च०	अते	,,	अद्भ्यः
जगतः	,,	,,	प०	अतः	,,	,,
,,	जगतोः	जगताम्	ष०	,,	अतोः	अताम्
जगति	,,	जगत्सु	स०	अति	,,	अत्सु
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	स०	अत्	अती	अन्ति

(२७) नामन् (नाम) अन्नन्त नपु०				(२७) नामन् (सक्षिप्तरूप (देखो अ. ४६)		
नाम	नाम्नी,नामनी	नामानि	प्र०	अ	नी,अनी	आनि
,,	,, ,,	,,	द्वि०	,,	,, ,,	,,
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः	तृ०	ना	अभ्याम्	अभिः
नाम्ने	,,	नामभ्यः	च०	ने	,,	अभ्यः
नाम्नः	,,	,,	प०	नः	,,	,,
,,	नाम्नोः	नाम्नाम्	ष०	,,	नोः	नाम्
नाम्नि,नामनि	,,	नामसु	स०	नि,अनि	,,	असु
हे नाम,नामन्	हे नाम्नी,नामनी	हे नामानि	स०	अ, अन्	नी,अनी	आनि

(२८) (क) **मनस् (मन)** असन्त नपु० (२८) (क) मनस् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ४७)

मनः	मनसी	मनांसि	प्र०	अः	असी	आंसि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः	तृ०	असा	ओभ्याम्	ओभिः
मनसे	,,	मनोभ्यः	च०	असे	,,	ओभ्यः
मनसः	,,	,,	पं०	असः	,,	,,
,,	मनसोः	मनसाम्	ष०	,,	असोः	असाम्
मनसि	,,	मनःसु	स०	असि	,,	अःसु
हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि	सं०	अः	असी	आंसि

(२८) (ख) **हविष् (हवि)** इषन्त नपु० (२८) (ख) हविष् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ४७)

हविः	हविषी	हवींषि	प्र०	इः	इषी	ईंषि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः	तृ०	इषा	इर्भ्याम्	इर्भिः
हविषे	,,	हविर्भ्यः	च०	इषे	,,	इर्भ्यः
हविषः	,,	,,	पं०	इषः	,,	,,
,,	हविषोः	हविषाम्	ष०	,,	इषोः	इषाम्
हविषि	,,	हविःषु	स०	इषि	,,	इःषु
हे हविः	हे हविषी	हे हवींषि	सं०	इः	इषी	ईंषि

(२९) (क) **सर्व (सब)** सर्वनाम पु० (२९) (क) सर्व (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० १०)

सर्वः	सर्वौ	सर्वे	प्र०	अः	औ	ए
सर्वम्	,,	सर्वान्	द्वि०	अम्	,,	आन्
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः
सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः	च०	अस्मै	,,	एभ्यः
सर्वस्मात्	,,	,,	पं०	अस्मात्	,,	,,
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	ष०	अस्य	अयोः	एषाम्
सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु	स०	अस्मिन्	,,	एषु

(२९) (ख) सर्व (नपु०)

सवम्	सर्वे	सर्वाणि	
,,	,,	,,	
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	

शेष पुलिग के तुल्य (देखो २९, क)

(२९) (ख) सर्व (सक्षिप्तरूप) (देखो अ. ११)

प्र०	अम्	ए	आनि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	एन	अभ्याम्	ऐ

शेष पुलिंग के तुल्य (देखो २९, क)।

---

(२९) (ग) सर्व (सब) स्त्रीलिग

सर्वा	सर्वे	सर्वा.
सर्वाम्	,,	,,
सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभि
सर्वस्यै	,,	सर्वाभ्य
सर्वस्या	,,	,,
,,	सर्वयो	सर्वासाम्
सर्वस्याम्	,,	सर्वासु

(२९) (ग) सर्व (सक्षिप्तरूप) (देखो अ० १२)

प्र०	आ	ए	आ.
द्वि०	आम्	,,	,,
तृ०	अया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	,,	आभ्य.
प०	अस्या.	,,	,,
ष०	,,	अयो.	आसाम्
स०	अस्याम्	,,	आसु

---

(३०) पूर्व (प्रथम, पूर्व) देखो (अ १०-१२)

सूचना—पूर्व के तीनो लिगोमे रूप सर्व के तुल्य चलेगे। देखो उपर्युक्त २९, क, ख, ग। (सक्षिप्तरूप लगाओ)

---

(३२) एतत् (यह) (देखो अ १०-१२)

(क) पुलिग—एष एतौ एते प्र०

शेष सर्व या तत् (पुलिग) के तुल्य।

(ख) नपु०—एतत् एते एतानि प्र०

,, ,, ,, द्वि०

शेष सर्व या तत् (नपु०) के तुल्य।

(ग) स्त्री०—एषा एते एता. प्र०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य।

(३१) तत् (वह) (देखो अ १०-१२)

(क) पुलिंग—स. तौ ते प्र०

शेष सर्व (पुलिग) के तुल्य।

(ख) नपु०—तत् ते तानि प्र०

,, ,, ,, द्वि०

शेष सर्व (नपु०) के तुल्य।

(ग) स्त्री०—सा ते ताः प्र०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य।

सूचना—तीनो लिगो मे नपु० एक० को छोडकर सर्वत्र तत् का 'त' ही शेष रहता है, उसीके रूप चलेंगे।

---

(३३) यत् (जो) (देखो अ. १०–१२)

(क) पुलिंग—

यः	यौ	ये	प्र०

शेष सर्व (पु०) के तुल्य ।

(ख) नपु०—

यत्	ये	यानि	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०

शेष सर्व (नपु०) के तुल्य ।

(ग) स्त्री०—

या	ये	याः	प्र०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य ।

सूचना—शेष स्थानो पर 'य' के रूप होगे ।

(३४) किम् (कौन) (देखो अ० १०–१२)

(क) पु०—

कः	कौ	के	प्र०

शेष सर्व (पु०) के तुल्य

(ख) नपु०—

किम्	के	कानि	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०

शेष सर्व (नपु०) के तुल्य ।

(ग) स्त्री०—

का	के	काः	प्र०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य ।

सूचना—शेष स्थानो पर 'क' के रूप चलेगे ।

---

(३५) युष्मद् (तू) (देखो अ० १६)

त्वम्	युवाम्	यूयम्	प्र०
त्वाम्	,,	युष्मान्	द्वि०
त्वा	वाम्	वः	
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	तृ०
तुभ्यम्	,,	युष्मभ्यम्	च०
ते	वाम्	व.	
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	प०
तव	युवयोः	युष्माकम्	ष०
ते	वाम्	वः	
त्वयि	युवयो.	युष्मासु	स०

(३६) अस्मद् (मैं) (देखो अ० १७)

अहम्	आवाम्	वयम्
माम्	,,	अस्मान्
मा	नौ	न.
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
मह्यम्	,,	अस्मभ्यम्
मे	नौ	नः
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
मम	आवयो.	अस्माकम्
मे	नौ	नः
मयि	आवयोः	अस्मासु

---

(३७) (क) इदम् (यह) (पु०) (देखो अ० १३)

अयम्	इमौ	इमे	प्र०
इमम्	,,	इमान्	द्वि०
अनेन	आभ्याम्	एभि	तृ०
अस्मै	,,	एभ्यः	च०
अस्मात्	,,	,,	प०
अस्य	अनयोः	एषाम्	ष०
अस्मिन्	,,	एषु	स०

(३७) (ख) इदम् (यह) नपु० (देखो अ० १४)।

इदम्	इमे	इमानि	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०

शेष पुलिंग के तुल्य (देखो ३७ क)।

(३७) (ग) इदम् (स्त्री०) (देखो अ १५)

इयम्	इमे	इमाः	प्र०
इमाम्	,,	,,	द्वि०
अनया	आभ्याम्	आभिः	तृ०
अस्यै	,,	आभ्यः	च०
अस्याः	,,	,,	प०
,,	अनयोः	आसाम्	ष०
अस्याम्	,,	आसु	स०

(३८) (क) अदस् (वह) पु० (देखो अ. १३)

असौ	अमू	अमी
अमुम्	,,	अमून्
अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
अमुष्मै	,,	अमीभ्यः
अमुष्मात्	,,	,,
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
अमुष्मिन्	,,	अमीषु

(३८) (ख) अदस् नपु० (देखो अ. १४)

अदः	अमू	अमूनि	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०
अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	तृ०
अमुष्मै	,,	अमीभ्यः	च०
अमुष्मात्	,,	,,	प०
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	ष०
अमुष्मिन्	,,	अमीषु	स०

(३८) (ग) अदस् स्त्री० (देखो अ. १५)

असौ	अमू	अमूः
अमूम्	,,	,,
अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
अमुष्यै	,,	अमूभ्यः
अमुष्याः	,,	,,
,,	अमुयोः	अमूषाम्
अमुष्याम्	,,	अमूषु

(३९) एक (एक) (देखो अ० १८)

पुंलिंग	नपुंसक०	स्त्रीलिंग	
एकः	एकम्	एका	प्र०
एकम्	,,	एकाम्	द्वि०
एकेन	एकेन	एकया	तृ०
एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै	च०
एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः	प०
एकस्य	एकस्य	,,	ष०
एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्	स०

केवल एकवचन में रूप चलते हैं।

(४०) द्वि (दो) (देखो अ० १९)

पुंलिंग	नपुं०, स्त्री०
द्वौ	द्वे
,,	,,
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
,,	,,
,,	,,
द्वयोः	द्वयोः
,,	,,

सूचना—केवल द्विवचन में रूप चलेंगे।

(४१) त्रि (तीन) (देखो अ० २०) (४२) चतुर् (चार) (देखो अ० २१)

पु०	नपु०	स्त्री०		पु०	नपु०	स्त्री०
त्रयः	त्रीणि	तिस्रः	प्र०	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
त्रीन्	,,	,,	द्वि०	चतुरः	,,	,,
त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः	तृ०	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	च०	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
,,	,,	,,	पं०	,,	,,	,,
त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	ष०	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु	स०	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

सूचना—३ से १८ तक की संख्याओं के रूप केवल बहुवचन में ही चलते हैं।

---

(४३) पञ्चन् (पाँच) (४४) षष् (छः) (४५) सप्तन् (सात) (४६) अष्टन् (आठ)

	पञ्चन्	षष्	सप्तन्	अष्टन्	
प्र०	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट	अष्टौ
द्वि०	,,	,,	,,	,,	,,
तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टभिः	अष्टाभिः
च०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टाभ्यः
पं०	,,	,,	,,	,,	,,
ष०	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्	अष्टानाम्
स०	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु	अष्टसु	अष्टासु

---

(४७) नवन् (नौ) (४८) दशन् (दश) (४९) कति (कितने) (५०) उभ (दोनों)

	नवन्	दशन्	कति	उभ पु०	उभ नपु०, स्त्री०
प्र०	नव	दश	कति	उभौ	उभे
द्वि०	,,	,,	,,	,,	,,
तृ०	नवभिः	दशभिः	कतिभिः	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
च०	नवभ्यः	दशभ्यः	कतिभ्यः	,,	,,
पं०	,,	,,	,,	,,	,,
ष०	नवानाम्	दशानाम्	कतीनाम्	उभयोः	उभयोः
स०	नवसु	दशसु	कतिषु	,,	,,

सूचना—पञ्चन् से दशन् तक के लिए देखो अभ्यास २२।

शब्दरूप-संग्रह (ख)

(५१) पति (पति) इकारान्त पु०				(५३) विद्वस् (विद्वान्) सकारान्त पु०		
पतिः	पती	पतयः	प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
पतिम्	,,	पतीन्	द्वि०	विद्वांसम्	,,	विदुषः
पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः	तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
पत्ये	,,	पतिभ्यः	च०	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पत्युः	,,	,,	प०	विदुषः	,,	,,
,,	पत्योः	पतीनाम्	ष०	,,	विदुषोः	विदुषाम्
पत्यौ	,,	पतिषु	स०	विदुषि	,,	विद्वत्सु
हे पते	हे पती	हे पतयः	सं०	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

(५२) भूपति (राजा) शब्द के पूरे रूप हरि (देखो शब्द सं० २) के तुल्य चलेंगे।

(५४) चन्द्रमस् (चन्द्रमा) सकारान्त पु०				(५५) श्वन् (कुत्ता) नकारान्त पु०		
चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः	प्र०	श्वा	श्वानौ	श्वानः
चन्द्रमसम्	,,	,,	द्वि०	श्वानम्	,,	शुनः
चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः	तृ०	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः	च०	शुने	,,	श्वभ्यः
चन्द्रमसः	,,	,,	प०	शुनः	,,	,,
,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्	ष०	,,	शुनोः	शुनाम्
चन्द्रमसि	,,	चन्द्रमस्सु	स०	शुनि	,,	श्वसु
हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः	सं०	हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः

(५६) युवन् (युवक) पु० (श्वन् के तुल्य रूप)				(५७) लक्ष्मी (लक्ष्मी) ईकारान्त स्त्रीलिंग		
युवा	युवानौ	युवानः	प्र०	लक्ष्मीः	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्यः
युवानम्	,,	यूनः	द्वि०	लक्ष्मीम्	,,	लक्ष्मीः
यूना	युवभ्याम्	युवभिः	तृ०	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभिः
यूने	,,	युवभ्यः	च०	लक्ष्म्यै	,,	लक्ष्मीभ्यः
यूनः	,,	,,	प०	लक्ष्म्याः	,,	,,
,,	यूनोः	यूनाम्	ष०	,,	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीणाम्
यूनि	,,	युवसु	स०	लक्ष्म्याम्	,,	लक्ष्मीषु
हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः	सं०	हे लक्ष्मि	हे लक्ष्म्यौ	हे लक्ष्म्यः

(५८) स्त्री (स्त्री) ईकारान्त स्त्री० | **(५९) श्री (लक्ष्मी) ईकारान्त स्त्री०**

स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः	प्र०	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
स्त्रियम्, स्त्रीम्	,,	,, स्त्रीः	द्वि०	श्रियम्	,,	,,
स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः	तृ०	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्यः	च०	श्रियै, श्रिये	,,	श्रीभ्यः
स्त्रियाः	,,	,,	प०	श्रियाः, श्रियः	,,	,,
,,	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्	ष०	,, ,,	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
स्त्रियाम्	,,	स्त्रीषु	स०	श्रियाम्, श्रियि	,,	श्रीषु
हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः	सं०	हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः

(६०) धनुष् (धनुष) षकारान्त नपु० | **(६३) भवत् (आप) सर्वनाम पु०**

धनुः	धनुषी	धनूषि	प्र०	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
,,	,,	,,	द्वि०	भवन्तम्	,,	भवतः
धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः	तृ०	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
धनुषे	,,	धनुर्भ्यः	च०	भवते	,,	भवद्भ्यः
धनुषः	,,	,,	प०	भवतः	,,	,,
,,	धनुषोः	धनुषाम्	ष०	,,	भवतोः	भवताम्
धनुषि	,,	धनुष्षु	स०	भवति	,,	भवत्सु
हे धनुः	हे धनुषी	हे धनूषि	सं०	हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्तः

(६१) ब्रह्मन् (ब्रह्म, वेद) नपु०

सूचना—ब्रह्मन् के रूप शर्मन् शब्द (देखो शब्द सं० २५) के तुल्य चलेंगे।

(६२) अप् (जल) स्त्रीलिंग

सूचना—अप् शब्द के रूप केवल बहुवचन में ही चलते हैं। प्रथमा आदि के रूप क्रमशः ये हैं—आपः, अपः, अद्भिः, अद्भ्यः, अद्भ्यः, अपाम्, अप्सु, हे आपः।

सूचना—भवत् शब्द के रूप पुंलिंग में भगवत् (शब्द सं० ९) के तुल्य चलते हैं। स्त्रीलिंग में ई अन्त में लगाकर 'भवती' शब्द के रूप नदी (शब्द सं० १५) के तुल्य चलेंगे। नपुंसक० में रूप प्रायः नहीं चलता।

(६४) यावत् (जितना) सर्वनाम

सूचना—यावत् शब्द के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं। संबोधन नहीं होगा। पुंलिंग में भवत् (शब्द सं० ६३) के तुल्य, स्त्रीलिंग में ई लगाकर यावती के रूप नदी (शब्द सं० १५) के तुल्य और नपुंसक लिंग में जगत् (शब्द सं० २६) के तुल्य रूप चलेंगे।

(२) संख्याएँ

१ एक, एकम्, एका
२ द्वौ, द्वे, द्वे
३ त्रय, त्रीणि, तिस्र
४ चत्वारः, चत्वारि,
चतस्र.
५ पञ्च
६ षट्
७ सप्त
८ अष्ट, अष्टौ
९ नव
१० दश
११ एकादश
१२ द्वादश
१३ त्रयोदश
१४ चतुर्दश
१५ पञ्चदश
१६ षोडश
१७ सप्तदश
१८ अष्टादश
१९ नवदश
एकोनविंशति:
२० विंशतिः
२१ एकविंशति.
२२ द्वाविंशति.
२३ त्रयोविंशति:
२४ चतुर्विंशति.
२५ पञ्चविंशतिः
२६ षड्विंशतिः
२७ सप्तविंशतिः
२८ अष्टाविंशतिः
२९ नवविंशति.
एकोनत्रिंशत्

३० त्रिंशत्
३१ एकत्रिंशत्
३२ द्वात्रिंशत्
३३ त्रयस्त्रिंशत्
३४ चतुस्त्रिंशत्
३५ पञ्चत्रिंशत्
३६ षट्त्रिंशत्
३७ सप्तत्रिंशत्
३८ अष्टात्रिंशत्
३९ नवत्रिंशत्
एकोनचत्वारिंशत्
४० चत्वारिंशत्
४१ एकचत्वारिंशत्
४२ द्विचत्वारिंशत्
द्वाचत्वारिंशत्
४३ त्रिचत्वारिंशत्
त्रयश्चत्वारिंशत्
४४ चतुश्चत्वारिंशत्
४५ पञ्चचत्वारिंशत्
४६ षट्चत्वारिंशत्
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टचत्वारिंशत्
अष्टाचत्वारिंशत्
४९ नवचत्वारिंशत्
एकोनपञ्चाशत्
५० पञ्चाशत्
५१ एकपञ्चाशत्
५२ द्विपञ्चाशत्
द्वापञ्चाशत्
५३ त्रिपञ्चाशत्
त्रयःपञ्चाशत्
५४ चतुःपञ्चाशत्

५५ पञ्चपञ्चाशत्
५६ षट्पञ्चाशत्
५७ सप्तपञ्चाशत्
५८ अष्टापञ्चाशत्
अष्टपञ्चाशत्
५९ नवपञ्चाशत्
एकोनषष्टिः
६० षष्टि.
६१ एकषष्टि.
६२ द्विषष्टि:, द्वाषष्टि.
६३ त्रिषष्टि.
त्रयःषष्टि.
६४ चतुःषष्टि.
६५ पञ्चषष्टि:
६६ षट्षष्टि
६७ सप्तषष्टि.
६८ अष्टषष्टिः
अष्टाषष्टिः
६९ नवषष्टि.
एकोनसप्तति:
७० सप्तति.
७१ एकसप्ततिः
७२ द्विसप्तति.
द्वासप्तति.
७३ त्रिसप्तति.
त्रयःसप्तति:
७४ चतुःसप्ततिः
७५ पञ्चसप्ततिः
७६ षट्सप्तति:
७७ सप्तसप्ततिः
७८ अष्टसप्तति.
अष्टासप्ततिः

७९ नवसप्तति, एकोनाशीति
८० अशीतिः
८१ एकाशीतिः
८२ द्व्यशीति
८३ त्र्यशीति
८४ चतुरशीति
८५ पञ्चाशीतिः
८६ षडशीति
८७ सप्ताशीतिः
८८ अष्टाशीतिः
८९ नवाशीति, एकोननवति
९० नवति
९१ एकनवति
९२ द्विनवति, द्वानवति
९३ त्रिनवति, त्रयोनवति
९४ चतुर्नवति
९५ पञ्चनवति
९६ षण्णवति
९७ सप्तनवतिः
९८ अष्टनवति, अष्टानवति
९९ नवनवतिः, एकोनशतम्
१०० शतम् ।

१ हजार—सहस्रम् । १० हजार—अयुतम् । १ लाख—लक्षम् । १० लाख—नियुतम्, प्रयुतम् । १ करोड—कोटि । १० करोड—दशकोटिः । १ अरब—अर्बुदम् । १० अरब—दशार्बुदम् । १ खरब—खर्वम् । १० खरब—दशखर्वम् । १ नील—नीलम् । १० नील—दशनीलम् । १ पद्म—पद्मम् । १० पद्म—दशपद्मम् । १ शंख—शंखम् । १० शंख—दशशंखम् । १ महाशंख—महाशंखम् ।

सूचना—१ (क) १०१ आदि संख्याओं के लिए अधिक शब्द लगाकर संख्या शब्द बनावें । जैसे, १०१ एकाधिक शतम् । १०२ द्व्यधिक शतम् आदि । (ख) २०० आदि के लिए दो आदि संख्यावाचक शब्द पहले रखकर बाद में 'शती' रखें, या शत पहले रखकर द्वयम्, त्रयम् आदि रखें । जैसे–२०० द्विशती, शतद्वयम् । ३०० त्रिशती, शतत्रयम्, ४०० चतुःशती, ५०० पञ्चशती, ६०० षट्शती, ७०० सप्तशती (हिन्दी, सतसई) आदि ।

२ त्रि (३) से लेकर १८ (अष्टादशन्) तक सारे शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं । दशन् से अष्टादशन् तक दशन् के तुल्य ।

३ एकोनविंशति से नवविंशति तक सारे शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिंग हैं । इनके रूप एकवचन में ही चलते हैं । इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति तथा जिसके अन्त में ये हों उनके रूप मति के तुल्य चलेंगे । तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् के रूप सरित् के तुल्य (शब्द सं० १९) चलेंगे ।

४ शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम् आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसक हैं । गृहवत् एक० में रूप चलेंगे । कोटि के मतिवत् ।

५ संख्येय शब्द (प्रथम, द्वितीय आदि) बनाने के लिए अभ्यास २३ का व्याकरण देखो ।

(३) धातुरूप-संग्रह

आवश्यक-निर्देश

(१) संस्कृत की सारी धातुओं को १० विभागों में बाँटा गया है। उन्हें 'गण' कहते हैं, अतः १० गण हैं। धातु और तिङ् (ति, त: अन्ति आदि) प्रत्यय के बीच में होनेवाले अ, उ, नु आदि को 'विकरण' कहते हैं। इनके आधार पर ही ये गण बनाए गए हैं। ये विकरण लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में ही होते हैं, लट् आदि अन्य लकारों में नहीं। अतः गण के कारण अन्तर भी लट् आदि चार लकारों में ही होते हैं।

(२) १० गणों की मुख्य विशेषताएँ और लट् आदि लकारों के संक्षिप्त रूप आगे पृष्ठ १४२-१४४ पर दिए गए हैं। उनको सावधानी से स्मरण कर लें। लट् आदि में सभी धातुओं में वे संक्षिप्त रूप लगेंगे। उन्हें लगाकर लट् आदि के रूप चलावें।

(३) प्रत्येक गण में तीन प्रकार की धातुएँ होती हैं। इनके नाम और पहचान ये हैं :—(क) परस्मैपदी (ति, त: आदि), (ख) आत्मनेपदी (ते, एते आदि), (ग) उभयपदी (दोनों प्रकार के रूप)।

(४) पुस्तक में प्रयुक्त सभी धातुओं के पाँच लकारों के रूप अकारादि क्रम से 'संक्षिप्त धातुकोष' में दिए गए हैं। (पृष्ठ १९०-२००)। संक्षिप्त रूप अन्त में लगाकर उनके रूप चलावें।

संक्षिप्त रूप (भ्वादिगण)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
अति	अतः	अन्ति	प्र०पु०	अते	एते	अन्ते
असि	अथः	अथ	म०पु०	असे	एथे	अध्वे
आमि	आवः	आमः	उ०पु०	ए	आवहे	आमहे
लोट्				लोट्		
अतु	अताम्	अन्तु	प्र०पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
अ	अतम्	अत	म०पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
आनि	आव	आम	उ०पु०	ऐ	आवहै	आमहै
लङ् (धातु से पहले अ या आ लगेगा)				लङ् (धातु से पहले अ या आ लगेगा)		
अत्	अताम्	अन्	प्र०पु०	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	म०पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	उ०पु०	ए	आवहि	आमहि
विधिलिङ्				विधिलिङ्		
एत्	एताम्	एयुः	प्र०पु०	एत	एयाताम्	एरन्
एः	एतम्	एत	म०पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
एयम्	एव	एम	उ०पु०	एय	एवहि	एमहि

१० गणों की मुख्य विशेषताएँ

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इन चार लकारों में ही विकरण लगते हैं।

सं०	गण-नाम	विकरण	मुख्य विशेषताएँ
१	भ्वादिगण	शप् (अ)	(१) लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'अ' लगेगा। (२) धातु के अन्तिम स्वर को गुण होगा, अर्थात् इ ई को ए, उ ऊ को ओ, ऋ ॠ को अर् होगा। धातु के अन्तिम अक्षर से पूर्व इ को ए, उ को ओ, ऋ को अर् होगा। (३) गुण होने के बाद धातु के अन्तिम ए को अय्, ओ को अव् हो जाता है।
२	अदादिगण	शप् का लोप	(१) धातु और प्रत्यय के बीच में कोई विकरण नहीं लगेगा। धातु से केवल ति, त, आदि लगेंगे। (२) लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में धातु को एक० में गुण होता है, अन्यत्र नहीं।
३	जुहोत्यादिगण	(विकरण कुछ नहीं)	(१) धातु और प्रत्यय के बीच में लट् आदि में कोई विकरण नहीं लगता। (२) लट् आदि में धातु को द्वित्व होगा। (३) लट् आदि में धातु को एक० में गुण होता है, अन्यत्र नहीं।
४	दिवादिगण	श्यन् (य)	(१) धातु और प्रत्यय के बीच में लट् आदि में 'य' लगता है। (२) धातु को लट् आदि में गुण नहीं होता। (३) लट् आदि में गुण होता है।
५	स्वादिगण	श्नु (नु)	(१) लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'नु' लगता है। (२) धातु को गुण नहीं होता। (३) नु को पर० एक० में प्रायः 'नो' होता है।
६	तुदादिगण	श (अ)	(१) लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'अ' लगता है। (२) लट् आदि में धातु को गुण नहीं होता। (३) लट् आदि में धातु को गुण होगा।
७	रुधादिगण	श्नम् (न)	(१) लट् आदि में धातु के प्रथम स्वर के बाद 'न' लगता है। (२) इस न को कभी न् हो जाता है। (३) लट् आदि में धातु को गुण नहीं होता।
८	तनादिगण	उ	(१) लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'उ' लगता है। (२) इस उ को एक० आदि में ओ हो जाता है।
९	क्र्यादिगण	श्ना (ना)	(१) लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'ना' विकरण लगता है। (२) इसको कभी नी और कभी न् हो जाता है। (३) धातु को गुण नहीं होता। (४) परस्मैपद लोट् म० पु० एक० में व्यंजनान्त धातुओं में 'हि' के स्थान पर 'आन' लगता है।
१०	चुरादिगण	णिच् (अय)	(१) सभी लकारों में धातु के बाद णिच् (अय) लगता है। (२) धातु के अन्तिम इ ई को ऐ, उ ऊ को औ, ऋ ॠ को आर् वृद्धि होती है। उपधा के अ को आ, इ को ए, उ को ओ और ऋ को अर् होता है। (३) कथ्, गण्, रच् आदि कुछ धातुओं में उपधा के अ को आ नहीं होता।

लृट् आदि लकारों के संक्षिप्त रूप

(१) १० लकारों के नाम और अर्थ पृष्ठ १ पर आवश्यक-निर्देश में दिये गये हैं। वहाँ देखें।

(२) धातु रूपों में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लिट् और लुट् इन ६ लकारों के पूरे रूप दिये हैं। लट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लङ् इन चारों लकारों के केवल प्रारम्भिक रूप दिए गये हैं। इन चार लकारों में सभी गणों में एक ढंग से ही रूप चलते हैं। अतः इनके संक्षिप्त रूप स्मरण करने से सभी धातुओं के इन लकारों में रूप स्वयं सरलता से चलाये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ भू और सेव् धातु के दसों लकारों के रूप दिये गये हैं।

(३) सूचना—सेट् धातुओं में कोष्ठ में निर्दिष्ट इ लगेगा। अनिट् में नहीं। सेट् और अनिट् का विवरण पृष्ठ २०० पर दिया गया है। इ के बाद स् को ष् हो जाएगा।

संक्षिप्त रूप

परस्मैपद				आत्मनेपद		
लृट् (सेट् में इ लगेगा)				लृट् (सेट् में इ लगेगा)		
(इ) स्यति	(इ) स्यतः	(इ) स्यन्ति	प्र०	(इ) स्यते	(इ) स्येते	(इ) स्यन्ते
(इ) स्यसि	(इ) स्यथः	(इ) स्यथ	म०	(इ) स्यसे	(इ) स्येथे	(इ) स्यध्वे
(इ) स्यामि	(इ) स्यावः	(इ) स्यामः	उ०	(इ) स्ये	(इ) स्यावहे	(इ) स्यामहे
लुट् (सेट् में इ लगेगा)				लुट् (सेट् में इ लगेगा)		
(इ) ता	(इ) तारौ	(इ) तारः	प्र०	(इ) ता	(इ) तारौ	(इ) तारः
(इ) तासि	(इ) तास्थः	(इ) तास्थ	म०	(इ) तासे	(इ) तासाथे	(इ) ताध्वे
(इ) तास्मि	(इ) तास्वः	(इ) तास्मः	उ०	(इ) ताहे	(इ) तास्वहे	(इ) तास्महे
आशीर्लिङ्				आशीर्लिङ् (सेट् में इ लगेगा)		
यात्	यास्ताम्	यासुः	प्र०	(इ) सीष्ट	(इ) सीयास्ताम्	(इ) सीरन्
याः	यास्तम्	यास्त	म०	(इ) सीष्ठाः	(इ) सीयास्थाम्	(इ) सीध्वम्
यासम्	यास्व	यास्म	उ०	(इ) सीय	(इ) सीवहि	(इ) सीमहि
लृङ् (धातु से पहले अ। सेट् में इ)				लृङ् (धातु से पहले अ। सेट् में इ)		
(इ) स्यत्	(इ) स्यताम्	(इ) स्यन्	प्र०	(इ) स्यत	(इ) स्येताम्	(इ) स्यन्त
(इ) स्यः	(इ) स्यतम्	(इ) स्यत	म०	(इ) स्यथाः	(इ) स्येथाम्	(इ) स्यध्वम्
(इ) स्यम्	(इ) स्याव	(इ) स्याम	उ०	(इ) स्ये	(इ) स्यावहि	(इ) स्यामहि
लिट् (सेट् में इ लगेगा)				लिट् (सेट् में इ लगेगा)		
अ	अतुः	उः	प्र०	ए	आते	इरे
(इ) थ	अथुः	अ	म०	(इ) से	आथे	(इ) ध्वे
अ	(इ) व	(इ) म	उ०	ए	(इ) वहे	(इ) महे

लुङ् के संक्षिप्त रूप

सूचना—लुङ् लकार सात प्रकार का होता है, अतः उसके ७ भेद हैं। प्रत्येक भेद के संक्षिप्त रूप नीचे दिये हैं। आगे धातुरूपों में लुङ् के आगे संख्या से इसका निर्देश किया गया है कि वह लुङ् का कौन-सा भेद है।

लुङ् (१ स्-लोप वाला भेद) परस्मैपद | **लुङ् (१ स्-लोप वाला भेद) आ० पद**

त्	ताम्	उः (अन्)	प्र० पु०
ः	तम्	त	म० पु०
अम्	व	म	उ० पु०

सूचना—यह भेद आत्मनेपद में नहीं होता।

(२ अ वाला भेद) परस्मैपद | **(२ अ-वाला भेद) आ० पद**

अत्	अताम्	अन्	प्र० पु०	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	म० पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	उ० पु०	ए	आवहि	आमहि

(३ द्वित्व-वाला भेद) | **(३ द्वित्व-वाला भेद)**

अत्	अताम्	अन्	प्र० पु०	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	म० पु०	अथा	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	उ० पु०	ए	आवहि	आमहि

(४ स्-वाला भेद) | **(४ स्-वाला भेद)**

सीत्	स्ताम्	सुः	प्र० पु०	स्त	साताम्	सत
सीः	स्तम्	स्त	म० पु०	स्था	साथाम्	ध्वम्
सम्	स्व	स्म	उ० पु०	सि	स्वहि	स्महि

(५ इष्-वाला भेद) | **(५ इष्-वाला भेद)**

ईत्	इष्टाम्	इषुः	प्र० पु०	इष्ट	इषाताम्	इषत
ईः	इष्टम्	इष्ट	म० पु०	इष्ठाः	इषाथाम्	इध्वम्-ढ्वम्
इषम्	इष्व	इष्म	उ० पु०	इषि	इष्वहि	इष्महि

(६ सिष्-वाला भेद) | **(६ सिष्-वाला भेद)**

सीत्	सिष्टाम्	सिषुः	प्र० पु०
सीः	सिष्टम्	सिष्ट	म० पु०
सिषम्	सिष्व	सिष्म	उ० पु०

सूचना—आत्मनेपद में यह भेद नहीं होता।

(७ स-वाला भेद) | **(७ स-वाला भेद)**

सत्	सताम्	सन्	प्र० पु०	सत	साताम्	सन्त
सः	सतम्	सत	म० पु०	सथा	साथाम्	सध्वम्
सम्	साव	साम	उ० पु०	सि	सावहि	सामहि

(१) भ्वादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(१) भू (होना) (देखो अभ्यास १, ५-९ में संक्षिप्तरूप)

लट् (वर्तमान)				लुट् (भविष्यत्, अनद्यतन)		
भवति	भवतः	भवन्ति	प्र०पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः
भवसि	भवथः	भवथ	म०पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
भवामि	भवावः	भवामः	उ०पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः
लोट् (आज्ञा अर्थ)				**आशीर्लिङ् (आशीर्वाद)**		
भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्र०पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
भव	भवतम्	भवत	म०पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
भवानि	भवाव	भवाम	उ०पु०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म
लङ् (भूतकाल, अनद्यतन)				**लृङ् (हेतुहेतुमद् भविष्यत्)**		
अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र०पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
अभवः	अभवतम्	अभवत	म०पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ०पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम
विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)				**लिट् (परोक्ष भूत)**		
भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र०पु०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
भवेः	भवेतम्	भवेत	म०पु०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ०पु०	बभूव	बभूविव	बभूविम
लृट् (भविष्यत्)				**लुङ् (१) (सामान्य भूत)**		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र०पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म०पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ०पु०	अभूवम्	अभूव	अभूम

सूचनाएँ—(१) भ्वादिगण की परस्मैपदी धातुओं के रूप भू धातु के तुल्य चलते हैं। (२) लङ् लकार अनद्यतन भूतकाल में होता है। आज का भूतकाल होगा तो लङ् नहीं होगा, अपितु लुङ् होगा। लुङ् सभी भूतकालों में हो सकता है। लिट् लकार केवल परोक्षभूत में ही होगा। (३) लृट् सामान्य भविष्यत् है, सभी भविष्यत् में हो सकता है। लुट् अनद्यतन (आजको छोडकर) भविष्यत में ही होगा। लृङ् हेतुहेतुमद् (ऐसा होगा तो ऐसा होगा) भविष्यत् में ही होगा। (४) लोट् आज्ञा अर्थ में होता है। विधिलिङ् आज्ञा और चाहिए दोनों अर्थों में होता है। (५) लुङ् के आगे संख्याएँ दी हुई हैं। वे इस बात का निर्देश करती हैं कि वह धातु लुङ् के ७ भेदों में से कौन-सा भेद है। उस भेद के संक्षिप्तरूप पृष्ठ १४४ पर देखें। (६) सेट् धातुओं में लुट्, लृट् और लृङ् में बीच में 'इ' लगेगा। अनिट् धातुओं में बीच में इ नहीं लगेगा।

(२) हस् (हँसना) (भू के तुल्य)

लट्

हसति	हसतः	हसन्ति
हससि	हसथः	हसथ
हसामि	हसावः	हसामः

लोट्

हसतु	हसताम्	हसन्तु
हस	हसतम्	हसत
हसानि	हसाव	हसाम

लङ्

अहसत्	अहसताम्	अहसन्
अहसः	अहसतम्	अहसत
अहसम्	अहसाव	अहसाम

विधिलिङ्

हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
हसेः	हसेतम्	हसेत
हसेयम्	हसेव	हसेम

(३) पठ् (पढ़ना) (भू के तुल्य)

लट्

प्र०	पठति	पठतः	पठन्ति
म०	पठसि	पठथः	पठथ
उ०	पठामि	पठावः	पठामः

लोट्

प्र०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म०	पठ	पठतम्	पठत
उ०	पठानि	पठाव	पठाम

लङ्

प्र०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म०	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ्

प्र०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ०	पठेयम्	पठेव	पठेम

हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति	लृट्	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
हसिता	हसितारौ	हसितारः	लुट्	पठिता	पठितारौ	पठितारः
हस्यात्	हस्यास्ताम्	हस्यासुः	आ०लिङ्	पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः
अहसिष्यत्	अहसिष्यताम्	अहसिष्यन्	लृङ्	अपठिष्यत्	अपठिष्यताम्	अपठिष्यन्

लिट्

जहास	जहसतुः	जहसुः	प्र०	पपाठ	पेठतुः	पेठुः
जहसिथ	जहसथुः	जहस	म०	पेठिथ	पेठथुः	पेठ
जहास, जहस	जहसिव	जहसिम	उ०	पपाठ, पपठ	पेठिव	पेठिम

लुङ् (५) — हस्; लुङ् (५) (क) — पठ्

अहसीत्	अहसिष्टाम्	अहसिषुः	प्र०	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
अहसीः	अहसिष्टम्	अहसिष्ट	म०	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
अहसिषम्	अहसिष्व	अहसिष्म	उ०	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म

(ख)

अपठीत्	अपठिष्टाम्	अपठिषुः
अपठीः	अपठिष्टम्	अपठिष्ट
अपठिषम्	अपठिष्व	अपठिष्म

(४) रक्ष् (रक्षा करना) (भू के तुल्य)				(५) वद् (बोलना) (भू के तुल्य)		
	लट्				लट्	
रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति	प्र०	वदति	वदतः	वदन्ति
रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ	म०	वदसि	वदथः	वदथ
रक्षामि	रक्षावः	रक्षाम	उ०	वदामि	वदावः	वदामः
	लोट्				लोट्	
रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु	प्र०	वदतु	वदताम्	वदन्तु
रक्ष	रक्षतम्	रक्षत	म०	वद	वदतम्	वदत
रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम	उ०	वदानि	वदाव	वदाम
	लङ्				लङ्	
अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्	प्र०	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत	म०	अवदः	अवदतम्	अवदत
अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम	उ०	अवदम्	अवदाव	अवदाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः	प्र०	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत	म०	वदेः	वदेतम्	वदेत
रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम	उ०	वदेयम्	वदेव	वदेम
रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति	लृट्	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
रक्षिता	रक्षितारौ	रक्षितारः	लुट्	वदिता	वदितारौ	वदितारः
रक्ष्यात्	रक्ष्यास्ताम्	रक्ष्यासुः	आ० लिङ्	उद्यात्	उद्यास्ताम्	उद्यासुः
अरक्षिष्यत्	अरक्षिष्यताम्	अरक्षिष्यन्	लृङ्	अवदिष्यत्	अवदिष्यताम्	अवदिष्यन्
	लिट्				लिट्	
ररक्ष	ररक्षतुः	ररक्षुः	प्र०	उवाद	ऊदतुः	ऊदुः
ररक्षिथ	ररक्षथुः	ररक्ष	म०	उवदिथ	ऊदथुः	ऊद
ररक्ष	ररक्षिव	ररक्षिम	उ०	उवाद,उवद	ऊदिव	ऊदिम
	लुङ् (५)				लुङ् (५)	
अरक्षीत्	अरक्षिष्टाम्	अरक्षिषुः	प्र०	अवादीत्	अवादिष्टाम्	अवादिषुः
अरक्षीः	अरक्षिष्टम्	अरक्षिष्ट	म०	अवादीः	अवादिष्टम्	अवादिष्ट
अरक्षिषम्	अरक्षिष्व	अरक्षिष्म	उ०	अवादिषम्	अवादिष्व	अवादिष्म

(६) पच् (पकाना) (भू के तुल्य) | (७) नम् (झुकना, प्रणाम करना) (भू के तुल्य)

	लट्				लट्	
पचति	पचतः	पचन्ति	प्र०	नमति	नमतः	नमन्ति
पचसि	पचथः	पचथ	म०	नमसि	नमथः	नमथ
पचामि	पचाव.	पचाम.	उ०	नमामि	नमावः	नमामः
	लोट्				**लोट्**	
पचतु	पचताम्	पचन्तु	प्र०	नमतु	नमताम्	नमन्तु
पच	पचतम्	पचत	म०	नम	नमतम्	नमत
पचानि	पचाव	पचाम	उ०	नमानि	नमाव	नमाम
	लङ्				**लङ्**	
अपचत्	अपचताम्	अपचन्	प्र०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
अपचः	अपचतम्	अपचत	म०	अनम	अनमतम्	अनमत
अपचम्	अपचाव	अपचाम	उ०	अनमम्	अनमाव	अनमाम
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
पचेत्	पचेताम्	पचेयु.	प्र०	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
पचेः	पचेतम्	पचेत	म०	नमे	नमेतम्	नमेत
पचेयम्	पचेव	पचेम	उ०	नमेयम्	नमेव	नमेम

पक्ष्यति	पक्ष्यत.	पक्ष्यन्ति	लट्	नस्यति	नस्यत.	नस्यन्ति
पक्ता	पक्तारौ	पक्तारः	लुट्	नन्ता	नन्तारौ	नन्तार.
पच्यात्	पच्यास्ताम्	पच्यासु'	आ० लिङ्	नम्यात्	नम्यास्ताम्	नम्यासुः
अपक्ष्यत्	अपक्ष्यताम्	अपक्ष्यन्	लङ्	अनस्यत्	अनस्यताम्	अनस्यन्
	लिट्				**लिट्**	
पपाच	पेचतुः	पेचुः	प्र०	ननाम	नेमतुः	नेमुः
पेचिथ, पपक्थ	पेचथुः	पेच	म०	नेमिथ, ननन्थ	नेमथु'	नेम
पपाच, पपच	पेचिव	पेचिम	उ०	ननाम, ननम	नेमिव	नेमिम
	लुङ् (४)				**लुङ् (६)**	
अपाक्षीत्	अपाक्ताम्	अपाक्षुः	प्र०	अनसीत्	अनसिष्टाम्	अनसिषुः
अपाक्षीः	अपाक्तम्	अपाक्त	म०	अनसी.	अनसिष्टम्	अनसिष्ट
अपाक्षम्	अपाक्ष्व	अपाक्ष्म	उ०	अनसिषम्	अनसिष्व	अनसिष्म

सूचना—पच् धातु उभयपदी है। आत्मनेपद मे रूप सेव् (धातु १८) के तुल्य चलेंगे। लट् आदि के प्रथम रूप क्रमशः ये है। पचते, पचताम्, अपचत, पचेत, पक्ष्यते, पक्ता, पक्षीष्ट, अपक्ष्यत, पेचे, अपक्त।

(८) गम् (जाना) (भू के तुल्य)

सूचना—गम् को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में गच्छ् हो जाता है।

(९) दृश् (देखना) (भू के तुल्य)

सूचना—दृश् को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में पश्य् हो जाता है।

	लट्				लट्	
गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	प्र०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	म०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः	उ०	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः
	लोट्				**लोट्**	
गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु	प्र०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
गच्छ	गच्छतम्	गच्छत	म०	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम	उ०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम
	लङ्				**लङ्**	
अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्	प्र०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत	म०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम	उ०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः	प्र०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत	म०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम	उ०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम
गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति	लृट्	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः	लुट्	द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टारः
गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः	आ०लिङ्	दृश्यात्	दृश्यास्ताम्	दृश्यासुः
अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्	लृङ्	अद्रक्ष्यत्	अद्रक्ष्यताम्	अद्रक्ष्यन्
	लिट्				**लिट्**	
जगाम	जग्मतुः	जग्मुः	प्र०	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
जगमिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म	म०	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददृशथुः	ददृश
जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम	उ०	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम
	लुङ् (२)				**लुङ् (क) (४)**	
अगमत्	अगमताम्	अगमन्	प्र०	अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः
अगमः	अगमतम्	अगमत	म०	अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
अगमम्	अगमाव	अगमाम	उ०	अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म
			(ख) (२)	अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्
				अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत
				अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम

(१०) सद् (बैठना) (भू के तुल्य)

सूचना—सद् को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में सीद् हो जाता है।

लट्

सीदति	सीदतः	सीदन्ति	प्र०
सीदसि	सीदथः	सीदथ	म०
सीदामि	सीदावः	सीदामः	उ०

लोट्

सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु	प्र०
सीद	सीदतम्	सीदत	म०
सीदानि	सीदाव	सीदाम	उ०

लङ्

असीदत्	असीदताम्	असीदन्	प्र०
असीदः	असीदतम्	असीदत	म०
असीदम्	असीदाव	असीदाम	उ०

विधिलिङ्

सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः	प्र०
सीदेः	सीदेतम्	सीदेत	म०
सीदेयम्	सीदेव	सीदेम	उ०

(११) स्था (रुकना) (भू के तुल्य)

सूचना—स्था को लट्, लोट, लङ्, विधिलिङ् में तिष्ठ् हो जाता है।

लट्

प्र०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म०	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ०	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लोट्

प्र०	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म०	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्

प्र०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म०	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ०	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्

प्र०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म०	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उ०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

सद्				स्था		
सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति	लृट्	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
सत्ता	सत्तारौ	सत्तारः	लुट्	स्थाता	स्थातारौ	स्थातारः
सद्यात्	सद्यास्ताम्	सद्यासुः	आ०लिङ्	स्थेयात्	स्थेयास्ताम्	स्थेयासुः
असत्स्यत्	असत्स्यताम्	असत्स्यन्	लृङ्	अस्थास्यत्	अस्थास्यताम्	अस्थास्यन्

लिट् (सद्) / **लिट्** (स्था)

ससाद	सेदतुः	सेदुः	प्र०	तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः
सेदिथ, ससत्थ	सेदथुः	सेद	म०	तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थथुः	तस्थ
ससाद, ससद	सेदिव	सेदिम	उ०	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

लुङ् (२) (सद्) / **लुङ् (१)** (स्था)

असदत्	असदताम्	असदन्	प्र०	अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थुः
असदः	असदतम्	असदत	म०	अस्थाः	अस्थातम्	अस्थात
असदम्	असदाव	असदाम	उ०	अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम

(१२) पा (पीना) (भू के तुल्य) (१३) घ्रा (सूँघना) (भू के तुल्य)

सूचना—पा को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में पिब् हो जाता है। सूचना—घ्रा को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में जिघ्र् हो जाता है।

	लट्				लट्	
पिबति	पिबतः	पिबन्ति	प्र०	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
पिबसि	पिबथः	पिबथ	म०	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
पिबामि	पिबावः	पिबामः	उ०	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः
	लोट्				लोट्	
पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु	प्र०	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
पिब	पिबतम्	पिबत	म०	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत
पिबानि	पिबाव	पिबाम	उ०	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम
	लङ्				लङ्	
अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्	प्र०	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
अपिबः	अपिबतम्	अपिबत	म०	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम	उ०	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः	प्र०	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
पिबेः	पिबेतम्	पिबेत	म०	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
पिबेयम्	पिबेव	पिबेम	उ०	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम
पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति	लृट्	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
पाता	पातारौ	पातारः	लुट्	घ्राता	घ्रातारौ	घ्रातारः
पेयात्	पेयास्ताम्	पेयासुः	आ०लिङ्	(क) घ्रेयात्	(ख) घ्रायात्	(दोनों प्रकार से)
अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्	लृङ्	अघ्रास्यत्	अघ्रास्यताम्	अघ्रास्यन्
	लिट्				लिट्	
पपौ	पपतुः	पपुः	प्र०	जघ्रौ	जघ्रतुः	जघ्रुः
पपिथ, पपाथ	पपथुः	पप	म०	जघ्रिथ, जघ्राथ	जघ्रथुः	जघ्र
पपौ	पपिव	पपिम	उ०	जघ्रौ	जघ्रिव	जघ्रिम
	लुङ् (१)				लुङ् (क) (१)	
अपात्	अपाताम्	अपुः	प्र०	अघ्रात्	अघ्राताम्	अघ्रुः
अपाः	अपातम्	अपात	म०	अघ्राः	अघ्रातम्	अघ्रात
अपाम्	अपाव	अपाम	उ०	अघ्राम्	अघ्राव	अघ्राम
			(ख) (६)	अघ्रासीत्	अघ्रासिष्टाम्	अघ्रासिषुः
				अघ्रासीः	अघ्रासिष्टम्	अघ्रासिष्ट
				अघ्रासिषम्	अघ्रासिष्व	अघ्रासिष्म

(१४) स्मृ (स्मरण करना) (भू के तुल्य) (१५) जि (जीतना) (भू के तुल्य)

	लट्				लट्	
स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति	प्र०	जयति	जयतः	जयन्ति
स्मरसि	स्मरथ	स्मरथ	म०	जयसि	जयथः	जयथ
स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः	उ०	जयामि	जयाव	जयामः
	लोट्				लोट्	
स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु	प्र०	जयतु	जयताम्	जयन्तु
स्मर	स्मरतम्	स्मरत	म०	जय	जयतम्	जयत
स्मराणि	स्मराव	स्मराम	उ०	जयानि	जयाव	जयाम
	लङ्				लङ्	
अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्	प्र०	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत	म०	अजयः	अजयतम्	अजयत
अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम	उ०	अजयम्	अजयाव	अजयाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः	प्र०	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत	म०	जयेः	जयेतम्	जयेत
स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम	उ०	जयेयम्	जयेव	जयेम

स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति	लृट्	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
स्मर्ता	स्मर्तारौ	स्मर्तारः	लुट्	जेता	जेतारौ	जेतारः
स्मर्यात्	स्मर्यास्ताम्	स्मर्यासुः	आ० लिङ्	जीयात्	जीयास्ताम्	जीयासुः
अस्मरिष्यत्	अस्मरिष्यताम्	अस्मरिष्यन्	लृङ्	अजेष्यत्	अजेष्यताम्	अजेष्यन्
	लिट्				लिट्	
सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः	प्र०	जिगाय	जिग्यतुः	जिग्युः
सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर	म०	जिगयिथ, जिगेथ	जिग्यथुः	जिग्य
सस्मार, सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम	उ०	जिगाय, जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम
	लुङ् (४)				लुङ् (४)	
अस्मार्षीत्	अस्मार्ष्टाम्	अस्मार्षुः	प्र०	अजैषीत्	अजैष्टाम्	अजैषुः
अस्मार्षीः	अस्मार्ष्टम्	अस्मार्ष्ट	म०	अजैषीः	अजैष्टम्	अजैष्ट
अस्मार्षम्	अस्मार्ष्व	अस्मार्ष्म	उ०	अजैषम्	अजैष्व	अजैष्म

(१६) श्रु (सुनना) (लट् आदि मे भू के तुल्य) **(१७) वस् (रहना)** (भू के तुल्य)

सूचना—लट् आदि मे श्रु को शृ और नु विकरण ।

	लट्				लट्	
शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	प्र०	वसति	वसतः	वसन्ति
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	म०	वससि	वसथः	वसथ
शृणोमि	शृणुवः,-ण्वः	शृणुमः,-ण्मः	उ०	वसामि	वसावः	वसामः
	लोट्				लोट्	
शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु	प्र०	वसतु	वसताम्	वसन्तु
शृणु	शृणुतम्	शृणुत	म०	वस	वसतम्	वसत
शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम	उ०	वसानि	वसाव	वसाम
	लङ्				लङ्	
अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्	प्र०	अवसत्	अवसताम्	अवसन्
अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत	म०	अवसः	अवसतम्	अवसत
अशृणवम्	अशृणुव,-ण्व	अशृणुम,-ण्म	उ०	अवसम्	अवसाव	अवसाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः	प्र०	वसेत्	वसेताम्	वसेयुः
शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात	म०	वसेः	वसेतम्	वसेत
शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम	उ०	वसेयम्	वसेव	वसेम

श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	लृट्	वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति
श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः	लुट्	वस्ता	वस्तारौ	वस्तारः
श्रूयात्	श्रूयास्ताम्	श्रूयासुः	आ० लिङ्	उष्यात्	उष्यास्ताम्	उष्यासुः
अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्	लृङ्	अवत्स्यत्	अवत्स्यताम्	अवत्स्यन्
	लिट्				लिट्	
शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः	प्र०	उवास	ऊषतुः	ऊषुः
शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव	म०	उवसिथ,उवस्थ	ऊषथुः	ऊष
शुश्राव,शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम	उ०	उवास, उवस	ऊषिव	ऊषिम
	लुङ् (४)				लुङ् (४)	
अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः	प्र०	अवात्सीत्	अवात्ताम्	अवात्सुः
अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट	म०	अवात्सीः	अवात्तम्	अवात्त
अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म	उ०	अवात्सम्	अवात्स्व	अवात्स्म

आत्मनेपदी धातुएँ

(१८) सेव् (सेवा करना) (देखो अभ्यास १६-२०)

	लट्				लुट्	
सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र०	सेविता	सेवितारौ	सेवितारः
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म०	सेवितासे	सेवितासाथे	सेविताध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ०	सेविताहे	सेवितास्वहे	सेवितास्महे

	लोट्				आशीर्लिङ्	
सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र०	सेविषीष्ट	सेविषीयास्ताम्	सेविषीरन्
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म०	सेविषीष्ठाः	सेविषीयास्थाम्	सेविषीध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ०	सेविषीय	सेविषीवहि	सेविषीमहि

	लङ्				लृङ्	
असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र०	असेविष्यत	असेविष्येताम्	असेविष्यन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म०	असेविष्यथाः	असेविष्येथाम्	असेविष्यध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ०	असेविष्ये	असेविष्यावहि	असेविष्यामहि

	विधिलिङ्				लिट्	
सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र०	सिषेवे	सिषेवाते	सिषेविरे
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म०	सिषेविषे	सिषेवाथे	सिषेविध्वे
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ०	सिषेवे	सिषेविवहे	सिषेविमहे

	लृट्				लुङ् (५)	
सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र०	असेविष्ट	असेविषाताम्	असेविषत
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म०	असेविष्ठाः	असेविषाथाम्	असेविढ्वम्
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ०	असेविषि	असेविष्वहि	असेविष्महि

संक्षिप्त-रूप (आत्मनेपद)

लट्				लोट्				लङ् (अ+)		
अते	एते	अन्ते	प्र०	अताम्	एताम्	अन्ताम्	प्र०	अत	एताम्	अन्त
असे	एथे	अध्वे	म०	अस्व	एथाम्	अध्वम्	म०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
ए	आवहे	आमहे	उ०	ऐ	आवहै	आमहै	उ०	ए	आवहि	आमहि

विधिलिङ्				लृट्				लुट्		
एत	एयाताम्	एरन्	प्र०	स्यते	स्येते	स्यन्ते	प्र०	ता	तारौ	तारः
एथाः	एयाथाम्	एध्वम्	म०	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे	म०	तासे	तासाथे	ताध्वे
एय	एवहि	एमहि	उ०	स्ये	स्यावहे	स्यामहे	उ०	ताहे	तास्वहे	तास्महे

(१९) लभ् (पाना) (सेव् के तुल्य)				(२०) वृध् (बढ़ना) (सेव् के तुल्य)		
	लट्				लट्	
लभते	लभेते	लभन्ते	प्र०	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
लभसे	लभेथे	लभध्वे	म०	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
लभे	लभावहे	लभामहे	उ०	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे
	लोट्				लोट्	
लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्	प्र०	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्	म०	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
लभै	लभावहै	लभामहै	उ०	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै
	लङ्				लङ्	
अलभत	अलभेताम्	अलभन्त	प्र०	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्	म०	अवर्धथा	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
अलभे	अलभावहि	अलभामहि	उ०	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्	प्र०	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्	म०	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
लभेय	लभेवहि	लभेमहि	उ०	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि
लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते	लृट्	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
लब्धा	लब्धारौ	लब्धारः	लुट्	वर्धिता	वर्धितारौ	वर्धितारः
लप्सीष्ट	लप्सीयास्ताम्	लप्सीरन्	आ०लिङ्	वर्धिषीष्ट	वर्धिषीयास्ताम्	वर्धिषीरन्
अलप्स्यत	अलप्स्येताम्	अलप्स्यन्त	लृङ्	अवर्धिष्यत	अवर्धिष्येताम्	अवर्धिष्यन्त
	लिट्				लिट्	
लेभे	लेभाते	लेभिरे	प्र०	ववृधे	ववृधाते	ववृधिरे
लेभिषे	लेभाथे	लेभिध्वे	म०	ववृधिषे	ववृधाथे	ववृधिध्वे
लेभे	लेभिवहे	लेभिमहे	उ०	ववृधे	ववृधिवहे	ववृधिमहे
	लुङ् (४)				लुङ् (क) (५)	
अलब्ध	अलप्साताम्	अलप्सत	प्र०	अवर्धिष्ट	अवर्धिषाताम्	अवर्धिषत
अलब्धाः	अलप्साथाम्	अलब्ध्वम्	उ०	अवर्धिष्ठाः	अवर्धिषाथाम्	अवर्धिढ्वम्
अलप्सि	अलप्स्वहि	अलप्स्महि	उ०	अवर्धिषि	अवर्धिष्वहि	अवर्धिष्महि
					(ख) (२)	
				अवृधत्	अवृधताम्	अवृधन्
				अवृधः	अवृधतम्	अवृधत
				अवृधम्	अवृधाव	अवृधाम

(२१) मुद् (प्रसन्न होना) (सेव् के तुल्य) (२२) सह् (सहन करना) (सेव् के तुल्य)

	लट्				लट्	
मोदते	मोदेते	मोदन्ते	प्र०	सहते	सहेते	सहन्ते
मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे	म०	सहसे	सहेथे	सहध्वे
मोदे	मोदावहे	मोदामहे	उ०	सहे	सहावहे	सहामहे
	लोट्				लोट्	
मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्	प्र०	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्	म०	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
मोदै	मोदावहै	मोदामहै	उ०	सहै	सहावहै	सहामहै
	लङ्				लङ्	
अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त	प्र०	असहत	असहेताम्	असहन्त
अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्	म०	अराहथा	अमहेथाम्	असहध्वम्
अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि	उ०	असहे	असहावहि	असहामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्	प्र०	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्	म०	सहेथा	सहेयाथाम्	सहेध्वम्
मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि	उ०	सहेय	सहेवहि	सहेमहि
मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते	लट्	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
मोदिता	मोदितारौ	मोदितारः	लुट्	सहिता	सहितारौ	सहितारः
				सोढा	सोढारौ	सोढारः
मोदिषीष्ट	मोदिषीयास्ताम्	०	आ०लिङ्	सहिषीष्ट	सहिषीयास्ताम्	०
अमोदिष्यत	अमोदिष्येताम्	०	लङ्	अमहिष्यत	अमहिष्येताम्	०
	लिट्				लिट्	
मुमुदे	मुमुदाते	मुमुदिरे	प्र०	सेहे	सेहाते	सेहिरे
मुमुदिषे	मुमुदाथे	मुमुदिध्वे	म०	सेहिषे	सेहाथे	सेहिध्वे
मुमुदे	मुमुदिवहे	मुमुदिमहे	उ०	सेहे	सेहिवहे	सेहिमहे
	लुङ् (५)				लुङ् (५)	
अमोदिष्ट	अमोदिषाताम्	अमोदिषत	प्र०	असहिष्ट	असहिषाताम्	असहिषत
अमोदिष्ठाः	अमोदिषाथाम्	अमोदिध्वम्	म०	असहिष्ठाः	असहिषाथाम्	असहिध्वम्
अमोदिषि	अमोदिष्वहि	अमोदिष्महि	उ०	असहिषि	असहिष्वहि	असहिष्महि

(२३) याच् (मांगना) (भू और सेव् के तुल्य)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
याचति	याचतः	याचन्ति	प्र०	याचते	याचेते	याचन्ते
याचसि	याचथः	याचथ	म०	याचसे	याचेथे	याचध्वे
याचामि	याचावः	याचामः	उ०	याचे	याचावहे	याचामहे
	लोट्				लोट्	
याचतु	याचताम्	याचन्तु	प्र०	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
याच	याचतम्	याचत	म०	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
याचानि	याचाव	याचाम	उ०	याचै	याचावहै	याचामहै
	लङ्				लङ्	
अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्	प्र०	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
अयाचः	अयाचतम्	अयाचत	म०	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम	उ०	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
याचेत्	याचेताम्	याचेयुः	प्र०	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
याचेः	याचेतम्	याचेत	म०	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
याचेयम्	याचेव	याचेम	उ०	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति	लृट्	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
याचिता	याचितारौ	याचितारः	लुट्	याचिता	याचितारौ	याचितारः
याच्यात्	याच्यास्ताम्	याच्यासुः	आ० लिङ्	याचिषीष्ट	याचिषीयास्ताम्०	
अयाचिष्यत्	अयाचिष्यताम्	अयाचिष्यन्	लृङ्	अयाचिष्यत	अयाचिष्येताम्०	

	लिट्				लिट्	
ययाच	ययाचतुः	ययाचुः	प्र०	ययाचे	ययाचाते	ययाचिरे
ययाचिथ	ययाचथुः	ययाच	म०	ययाचिषे	ययाचाथे	ययाचिध्वे
ययाच	ययाचिव	ययाचिम	उ०	ययाचे	ययाचिवहे	ययाचिमहे
	लुङ् (५)				लुङ् (५)	
अयाचीत्	अयाचिष्टाम्	अयाचिषुः	प्र०	अयाचिष्ट	अयाचिषाताम्	अयाचिषत
अयाचीः	अयाचिष्टम्	अयाचिष्ट	म०	अयाचिष्ठाः	अयाचिषाथाम्	अयाचिध्वम्
अयाचिषम्	अयाचिष्व	अयाचिष्म	उ०	अयाचिषि	अयाचिष्वहि	अयाचिष्महि

(२४) नी (ले जाना) (देखो अभ्यास २१) (भू और सेव् के तुल्य)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
नयति	नयतः	नयन्ति	प्र०	नयते	नयेते	नयन्ते
नयसि	नयथः	नयथ	म०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
नयामि	नयावः	नयामः	उ०	नये	नयावहे	नयामहे
	लोट्				लोट्	
नयतु	नयताम्	नयन्तु	प्र०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
नय	नयतम्	नयत	म०	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
नयानि	नयाव	नयाम	उ०	नयै	नयावहै	नयामहै
	लङ्				लङ्	
अनयत्	अनयताम्	अनयन्	प्र०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
अनयः	अनयतम्	अनयत	म०	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
अनयम्	अनयाव	अनयाम	उ०	अनये	अनयावहि	अनयामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
नयेत्	नयेताम्	नयेयुः	प्र०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
नयेः	नयेतम्	नयेत	म०	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
नयेयम्	नयेव	नयेम	उ०	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति	लृट्	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
नेता	नेतारौ	नेतारः	लुट्	नेता	नेतारौ	नेतारः
नीयात्	नीयास्ताम्	नीयासुः	आ० लिङ्	नेषीष्ट	नेषीयास्ताम्	नेषीरन्
अनेष्यत्	अनेष्यताम्	अनेष्यन्	लृङ्	अनेष्यत	अनेष्येताम्	अनेष्यन्त
	लिट्				लिट्	
निनाय	निन्यतुः	निन्युः	प्र०	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
निनयिथ, निनेथ	निन्यथुः	निन्य	म०	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यिध्वे
निनाय, निनय	निन्यिव	निन्यिम	उ०	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे
	लुङ् (४)				लुङ् (४)	
अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषुः	प्र०	अनेष्ट	अनेषाताम्	अनेषत
अनैषीः	अनैष्टम्	अनैष्ट	म०	अनेष्ठाः	अनेषाथाम्	अनेढ्वम्
अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म	उ०	अनेषि	अनेष्वहि	अनेष्महि

(२५) हृ (चुराना, ले जाना) (देखो अभ्यास २१) (भू और सेव् के तुल्य)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
हरति	हरतः	हरन्ति	प्र०	हरते	हरेते	हरन्ते
हरसि	हरथः	हरथ	म०	हरसे	हरेथे	हरध्वे
हरामि	हरावः	हरामः	उ०	हरे	हरावहे	हरामहे
	लोट्				लोट्	
हरतु	हरताम्	हरन्तु	प्र०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
हर	हरतम्	हरत	म०	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
हराणि	हराव	हराम	उ०	हरै	हरावहै	हरामहै
	लङ्				लङ्	
अहरत्	अहरताम्	अहरन्	प्र०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
अहरः	अहरतम्	अहरत	म०	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
अहरम्	अहराव	अहराम	उ०	अहरे	अहरावहि	अहरामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
हरेत्	हरेताम्	हरेयुः	प्र०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
हरेः	हरेतम्	हरेत	म०	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
हरेयम्	हरेव	हरेम	उ०	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति	लृट्	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः	लुट्	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
ह्रियात्	ह्रियास्ताम्	ह्रियासुः	आ०लिङ्	हृषीष्ट	हृषीयास्ताम्	हृषीरन्
अहरिष्यत्	अहरिष्यताम्	अहरिष्यन्	लृङ्	अहरिष्यत	अहरिष्येताम्	अहरिष्यन्त
	लिट्				लिट्	
जहार	जह्रतुः	जह्रुः	प्र०	जह्रे	जह्राते	जह्रिरे
जहर्थ	जह्रथुः	जह्र	म०	जह्रिषे	जह्राथे	जह्रिध्वे
जहार, जहर	जह्रिव	जह्रिम	उ०	जह्रे	जह्रिवहे	जह्रिमहे
	लुङ् (४)				लुङ् (४)	
अहार्षीत्	अहार्ष्टाम्	अहार्षुः	प्र०	अहृत	अहृषाताम्	अहृषत
अहार्षीः	अहार्ष्टम्	अहार्ष्ट	म०	अहृथाः	अहृषाथाम्	अहृढ्वम्
अहार्षम्	अहार्ष्व	अहार्ष्म	उ०	अहृषि	अहृष्वहि	अहृष्महि

(२) अदादिगण

(परस्मैपदी धातुएँ)

(२६) अद् (खाना) (देखो अभ्यास २३) (२७) अस् (होना) (देखो अ० ४, २४)

लट्				लट्		
अत्ति	अत्तः	अदन्ति	प्र०	अस्ति	स्तः	सन्ति
अत्सि	अत्थः	अत्थ	म०	असि	स्थः	स्थ
अद्मि	अद्वः	अद्मः	उ०	अस्मि	स्वः	स्मः
लोट्				**लोट्**		
अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु	प्र०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
अद्धि	अत्तम्	अत्त	म०	एधि	स्तम्	स्त
अदानि	अदाव	अदाम	उ०	असानि	असाव	असाम
लङ्				**लङ्**		
आदत्	आत्ताम्	आदन्	प्र०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
आदः	आत्तम्	आत्त	म०	आसीः	आस्तम्	आस्त
आदम्	आद्व	आद्म	उ०	आसम्	आस्व	आस्म
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः	प्र०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
अद्याः	अद्यातम्	अद्यात	म०	स्याः	स्यातम्	स्यात
अद्याम्	अद्याव	अद्याम	उ०	स्याम्	स्याव	स्याम

अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति	लृट्	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
अत्ता	अत्तारौ	अत्तारः	लुट्	भविता	भवितारौ	भवितारः
अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासुः	आ०लिङ्	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
आत्स्यत्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्	लृङ्	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
लिट् (क) (अद् को घस्)				**लिट्**		
जघास	जक्षतुः	जक्षुः	प्र०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष	म०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
जघास, जघस	जक्षिव	जक्षिम	उ०	बभूव	बभूविव	बभूविम
लिट् (ख)				**लुङ् (१)**		
आद	आदतुः	आदुः	प्र०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
आदिथ	आदथुः	आद	म०	अभूः	अभूतम्	अभूत
आद	आदिव	आदिम	उ०	अभूवम्	अभूव	अभूम
लुङ् (२) (अद् को घस्)						
अघसत्	अघसताम्	अघसन्	प्र०			
अघसः	अघसतम्	अघसत	म०			
अघसम्	अघसाव	अघसाम	उ०			

सूचना—अस् धातु को लृट् आदि ६ लकारों में भू हो जाता है। अतः वहाँ भू के तुल्य रूप चलेंगे।

(२८) ब्रू (कहना) (देखो अभ्यास २५)

सूचना—दोनो पदो मे लट् आदि ६ लकारो मे ब्रू को वच् हो जाता है।

परस्मैपद				आत्मनेपद		
	लट्				लट्	
ब्रवीति, आह	ब्रूत:, आहतु:	ब्रुवन्ति, आहु:	प्र०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
ब्रवीषि, आत्थ	ब्रूथ:, आहथु	ब्रूथ	म०	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूम:	उ०	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे
	लोट्				लोट्	
ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	प्र०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत	म०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	उ०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै
	लङ्				लङ्	
अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्	प्र०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
अब्रवी:	अब्रूतम्	अब्रूत	म०	अब्रूथा	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम	उ०	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयु:	प्र०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात	म०	ब्रुवीथा:	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम	उ०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

वक्ष्यति	वक्ष्यत:	वक्ष्यन्ति	लट्	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
वक्ता	वक्तारौ	वक्तार:	लुट्	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासु:	आ०लिङ्	वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्	लङ्	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त
	लिट्				लिट्	
उवाच	ऊचतुः	ऊचु:	प्र०	ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
उवचिथ, उवक्थ	ऊचथु	ऊच	म०	ऊचिषे	ऊचाथे	ऊचिध्वे
उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम	उ०	ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे
	लुङ् (२)				लुङ् (२)	
अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्	प्र०	अवोचत	अवोचेताम्	अवोचन्त
अवोचः	अवोचतम्	अवोचत	म०	अवोचथा:	अवोचेथाम्	अवोचध्वम्
अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम	उ०	अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि

(७१) दुह् (दुहना) (देखो अभ्यास २७)

परस्मैपद				आत्मनेपद		
	लट्				लट्	
दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	प्र०	दुग्धे	दुहाते	दुहते
धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध	म०	धुक्षे	दुहाथे	धुग्ध्वे
दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः	उ०	दुहे	दुह्वहे	दुह्महे
	लोट्				लोट्	
दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु	प्र०	दुग्धाम्	दुहाताम्	दुहताम्
दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध	म०	धुक्ष्व	दुहाथाम्	धुग्ध्वम्
दोहानि	दोहाव	दोहाम	उ०	दोहै	दोहावहै	दोहामहै
	लङ्				लङ्	
अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्	प्र०	अदुग्ध	अदुहाताम्	अदुहत
अधोक्-ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध	म०	अदुग्धाः	अदुहाथाम्	अधुग्ध्वम्
अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म	उ०	अदुहि	अदुह्वहि	अदुह्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः	प्र०	दुहीत	दुहीयाताम्	दुहीरन्
दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात	म०	दुहीथाः	दुहीयाथाम्	दुहीध्वम्
दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम	उ०	दुहीय	दुहीवहि	दुहीमहि
धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति	लृट्	धोक्ष्यते	धोक्ष्येते	धोक्ष्यन्ते
दोग्धा	दोग्धारौ	दोग्धारः	लुट्	दोग्धा	दोग्धारौ	दोग्धारः
दुह्यात्	दुह्यास्ताम्	दुह्यासुः	आ०लिङ्	धुक्षीष्ट	धुक्षीयास्ताम्	धुक्षीरन्
अधोक्ष्यत्	अधोक्ष्यताम्	अधोक्ष्यन्	लृङ्	अधोक्ष्यत	अधोक्ष्येताम्	अधोक्ष्यन्त
	लिट्				लिट्	
दुदोह	दुदुहतुः	दुदुहुः	प्र०	दुदुहे	दुदुहाते	दुदुहिरे
दुदोहिथ	दुदुहथुः	दुदुह	म०	दुदुहिषे	दुदुहाथे	दुदुहिध्वे
दुदोह	दुदुहिव	दुदुहिम	उ०	दुदुहे	दुदुहिवहे	दुदुहिमहे
	लुङ् (७)				लुङ् (७)	
अधुक्षत्	अधुक्षताम्	अधुक्षन्	प्र०	अधुक्षत	अधुक्षाताम्	अधुक्षत
अधुक्षः	अधुक्षतम्	अधुक्षत	म०	अधुक्षथाः	अधुक्षाथाम्	अधुक्षध्वम्
अधुक्षम्	अधुक्षाव	अधुक्षाम	उ०	अधुक्षि	अधुक्षावहि	अधुक्षामहि

सूचना—लुङ् में प्र० एक० में अदुग्ध, म० एक० में अदुग्धाः, म० बहु० में अधुग्ध्वम् और उ० द्वि० में अदुह्वहि, ये रूप भी बनते हैं।

(३०) रुद् (रोना) (देखो अ० २६)				(३१) स्वप् (सोना) (देखो अ० २८)		
	लट्				लट्	
रोदिति	रुदितः	रुदन्ति	प्र०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ	म०	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः	उ०	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः
	लोट्				लोट्	
रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु	प्र०	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु
रुदिहि	रुदितम्	रुदित	म०	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
रोदानि	रोदाव	रोदाम	उ०	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम
	लङ्				लोट्	
अरोदीत्, अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्	प्र०	अस्वपीत्, अस्वपत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
अरोदीः, अरोदः	अरुदितम्	अरुदित	म०	अस्वपीः, अस्वपः	अस्वपितम्	अस्वपित
अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम	उ०	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः	प्र०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात	म०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम	उ०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम
रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति	लृट्	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
रोदिता	रोदितारौ	रोदितारः	लुट्	स्वप्ता	स्वप्तारौ	स्वप्तारः
रुद्यात्	रुद्यास्ताम्	रुद्यासुः	आ०लिङ्	सुप्यात्	सुप्यास्ताम्	सुप्यासुः
अरोदिष्यत्	अरोदिष्यताम्	अरोदिष्यन्	लृङ्	अस्वप्स्यत्	अस्वप्स्यताम्	अस्वप्स्यन्
	लिट्				लिट्	
रुरोद	रुरुदतुः	रुरुदुः	प्र०	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
रुरोदिथ	रुरुदथुः	रुरुद	म०	सुष्वपिथ, सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुषुप
रुरोद	रुरुदिव	रुरुदिम	उ०	सुष्वाप, सुष्वप	सुषुपिव	सुषुपिम
	लुङ् (क) (२)				लुङ् (४)	
अरुदत्	अरुदताम्	अरुदन्	प्र०	अस्वाप्सीत्	अस्वाप्ताम्	अस्वाप्सुः
अरुदः	अरुदतम्	अरुदत	म०	अस्वाप्सीः	अस्वाप्तम्	अस्वाप्त
अरुदम्	अरुदाव	अरुदाम	उ०	अस्वाप्सम्	अस्वाप्स्व	अस्वाप्स्म
	लुङ् (ख) (५)					
अरोदीत्	अरोदिष्टाम्	अरोदिषुः	प्र०			
अरोदीः	अरोदिष्टम्	अरोदिष्ट	म०			
अरोदिषम्	अरोदिष्व	अरोदिष्म	उ०			

(३२) हन् (मारना) (देखो अ० २९) **(३३) इ (जाना)** (देखो अ० ३०)

हन्				इ		
	लट्				लट्	
हन्ति	हतः	घ्नन्ति	प्र०	एति	इतः	यन्ति
हंसि	हथः	हथ	म०	एषि	इथः	इथ
हन्मि	हन्वः	हन्मः	उ०	एमि	इवः	इमः
	लोट्				लोट्	
हन्तु	हताम्	घ्नन्तु	प्र०	एतु	इताम्	यन्तु
जहि	हतम्	हत	म०	इहि	इतम्	इत
हनानि	हनाव	हनाम	उ०	अयानि	अयाव	अयाम
	लङ्				लङ्	
अहन्	अहताम्	अघ्नन्	प्र०	ऐत्	ऐताम्	आयन्
अहन्	अहतम्	अहत	म०	ऐः	ऐतम्	ऐत
अहनम्	अहन्व	अहन्म	उ०	आयम्	ऐव	ऐम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः	प्र०	इयात्	इयाताम्	इयुः
हन्याः	हन्यातम्	हन्यात	म०	इयाः	इयातम्	इयात
हन्याम्	हन्याव	हन्याम	उ०	इयाम्	इयाव	इयाम

हन्				इ		
हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति	लृट्	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः	लुट्	एता	एतारौ	एतारः
वध्यात्	वध्यास्ताम्	वध्यासुः	आ० लिङ्	ईयात्	ईयास्ताम्	ईयासुः
अहनिष्यत्	अहनिष्यताम्	अहनिष्यन्	लृङ्	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्

हन्				इ		
	लिट्				लिट्	
जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः	प्र०	इयाय	ईयतुः	ईयुः
जघनिथ, जघन्थ	जघ्नथुः	जघ्न	म०	इययिथ, इयेथ	ईयथुः	ईय
जघान, जघन	जघ्निव	जघ्निम	उ०	इयाय, इयय	ईयिव	ईयिम
	लुङ् (५) (हन् को वध्)				लुङ् (१) (इ को गा)	
अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः	प्र०	अगात्	अगाताम्	अगुः
अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट	म०	अगाः	अगातम्	अगात
अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म	उ०	अगाम्	अगाव	अगाम

सूचना—आशीर्लिङ् और लुङ् में हन् को वध हो जाता है।

सूचना—इ को लुङ् में गा होता है।

अदादिगण—आत्मनेपदी धातुएँ

(३४) आस् (बैठना) (देखो अ० ३६)				(३५) शी (सोना) (देखो अ० ३७)		
	लट्				लट्	
आस्ते	आसाते	आसते	प्र०	शेते	शयाते	शेरते
आस्से	आसाथे	आध्वे	म०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
आसे	आस्वहे	आस्महे	उ०	शये	शेवहे	शेमहे
	लोट्				लोट्	
आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्	प्र०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्	म०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
आसै	आसावहै	आसामहै	उ०	शयै	शयावहै	शयामहै
	लङ्				लङ्	
आस्त	आसाताम्	आसत	प्र०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्	म०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
आसि	आस्वहि	आस्महि	उ०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्	प्र०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्	म०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
आसीय	आसीवहि	आसीमहि	उ०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते	लृट्	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
आसिता	आसितारौ	आसितारः	लुट्	शयिता	शयितारौ	शयितारः
आसिषीष्ट	आसिषीयास्ताम्	०	आ० लिङ्	शयिषीष्ट	शयिषीयास्ताम्	०
आसिष्यत	आसिष्येताम्	आसिष्यन्त	लृङ्	अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	०
	लिट् (आसा + कृ)				लिट्	
आसाञ्चक्रे	आसाञ्चक्राते	आसाञ्चक्रिरे	प्र०	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
—चकृषे	—चक्राथे	—चकृढ्वे	म०	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिध्वे
—चक्रे	—चकृवहे	—चकृमहे	उ०	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे
	लुङ् (५)				लुङ् (५)	
आसिष्ट	आसिषाताम्	आसिषत	प्र०	अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
आसिष्ठाः	आसिषाथाम्	आसिध्वम्	म०	अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिध्वम्
आसिषि	आसिष्वहि	आसिष्महि	उ०	अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि

(३) जुहोत्यादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(३६) हु (हवन करना) (देखो अ० ३८)

	लट्		
जुहोति	जुहुतः	जुह्वति	प्र०
जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ	म०
जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः	उ०
	लोट्		
जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु	प्र०
जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत	म०
जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम	उ०
	लङ्		
अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः	प्र०
अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत	म०
अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम	उ०
	विधिलिङ्		
जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः	प्र०
जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात	म०
जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम	उ०
होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति	लृट्
होता	होतारौ	होतार·	लुट्
हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासु'	आ० लिङ्
अहोष्यत्	अहोष्यताम्	अहोष्यन्	लृङ्
	लिट् (क)		
जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः	प्र०
जुहविथ, जुहोथ	जुहुवथुः	जुहुव	म०
जुहाव, जुहव	जुहुविव	जुहुविम	उ०
	लिट् (ख) (जुहवा + कृ)		
जुहवाचकार	-चक्रतुः	-चक्रुः	प्र०
-चकर्थ	-चक्रथुः	-चक्र	म०
-चकार, चकार	-चकृव	-चकृम	उ०
	लुङ् (४)		
अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषुः	प्र०
अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट	म०
अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म	उ०

(३७) भी (डरना) (देखो अ० ३९)

	लट्		
बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति	प्र०
बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ	म०
बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः	उ०
	लोट्		
बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु	प्र०
बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत	म०
बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम	उ०
	लङ्		
अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः	प्र०
अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत	म०
अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम	उ०
	विधिलिङ्		
बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयु'	प्र०
बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात	म०
बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम	उ०
भेष्यति	भेष्यत'	भेष्यन्ति	लृट्
भेता	भेतारौ	भेतारः	लुट्
भीयात्	भीयास्ताम्	भीयासु	आ० लिङ्
अभेष्यत्	अभेष्यताम्	अभेष्यन्	लृङ्
	लिट् (क)		
बिभाय	बिभ्यतुः	बिभ्युः	प्र०
बिभयिथ, बिभेथ	बिभ्यथुः	बिभ्य	म०
बिभाय, बिभय	बिभ्यिव	बिभ्यिम	उ०
	लिट् (ख) (बिभया + कृ)		
बिभयाचकार	-चक्रतुः	-चक्रु'	प्र०
-चकर्थ	-चक्रथु·	-चक्र	म०
-चकार, चकर	-चकृव	-चकृम	उ०
	लुङ् (४)		
अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषु'	प्र०
अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट	म०
अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म	उ०

(३८) दा (देना) (देखो अभ्यास ४०)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
ददाति	दत्तः	ददति	प्र०	दत्ते	ददाते	ददते
ददामि	दत्थः	दत्थ	म०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
ददामि	दद्वः	दद्मः	उ०	ददे	दद्वहे	दद्महे
	लोट्				लोट्	
ददातु	दत्ताम्	ददतु	प्र०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
देहि	दत्तम्	दत्त	म०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
ददानि	ददाव	ददाम	उ०	ददै	ददावहै	ददामहै
	लङ्				लङ्	
अददात्	अदत्ताम्	अददुः	प्र०	अदत्त	अददाताम्	अददत
अददाः	अदत्तम्	अदत्त	म०	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
अददाम्	अदद्व	अदद्म	उ०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	प्र०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	म०	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
दद्याम्	दद्याव	दद्याम	उ०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	लृट्	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
दाता	दातारौ	दातारः	लुट्	दाता	दातारौ	दातारः
देयात्	देयास्ताम्	देयासुः	आ०लिङ्	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्	लृङ्	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त
	लिट्				लिट्	
ददौ	ददतुः	ददुः	प्र०	ददे	ददाते	ददिरे
ददिथ, ददाथ	ददथुः	दद	म०	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
ददौ	ददिव	ददिम	उ०	ददे	ददिवहे	ददिमहे
	लुङ् (१)				लुङ् (४)	
अदात्	अदाताम्	अदुः	प्र०	अदित	अदिषाताम्	अदिषत
अदाः	अदातम्	अदात	म०	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिध्वम्
अदाम्	अदाव	अदाम	उ०	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

(३९) धा (धारण करना) (देखो अभ्यास ४०)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
दधाति	धत्तः	दधति	प्र०	धत्ते	दधाते	दधते
दधासि	धत्थः	धत्थ	म०	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
दधामि	दध्वः	दध्मः	उ०	दधे	दध्वहे	दध्महे
	लोट्				लोट्	
दधातु	धत्ताम्	दधतु	प्र०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
धेहि	धत्तम्	धत्त	म०	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
दधानि	दधाव	दधाम	उ०	दधै	दधावहै	दधामहै
	लङ्				लङ्	
अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	प्र०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	म०	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
अदधाम्	अदध्व	अदध्म	उ०	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	प्र०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	म०	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
दध्याम्	दध्याव	दध्याम	उ०	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति	लृट्	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
धाता	धातारौ	धातारः	लुट्	धाता	धातारौ	धातारः
धेयात्	धेयास्ताम्	धेयासुः	आ० लिङ्	धासीष्ट	धासीयास्ताम्	धासीरन्
अधास्यत्	अधास्यताम्	अधास्यन्	लृङ्	अधास्यत	अधास्येताम्	अधास्यन्त
	लिट्				लिट्	
दधौ	दधतुः	दधुः	प्र०	दधे	दधाते	दधिरे
दधिथ, दधाथ	दधथुः	दध	म०	दधिषे	दधाथे	दधिध्वे
दधौ	दधिव	दधिम	उ०	दधे	दधिवहे	दधिमहे
	लुङ् (१)				लुङ् (४)	
अधात्	अधाताम्	अधुः	प्र०	अधित	अधिषाताम्	अधिषत
अधाः	अधातम्	अधात	म०	अधिथाः	अधिषाथाम्	अधिध्वम्
अधाम्	अधाव	अधाम	उ०	अधिषि	अधिष्वहि	अधिष्महि

(४) दिवादिगण

(परस्मैपदी धातुएँ)

(४०) दिव् (चमकना आदि) (देखो अ० ४१) **(४१) नृत् (नाचना)** (देखो अ० ४२)

	लट्				लट्	
दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति	प्र०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
दीव्यसि	दीव्यथ	दीव्यथ	म०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः	उ०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः
	लोट्				**लोट्**	
दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु	प्र०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत	म०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम	उ०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम
	लङ्				**लङ्**	
अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्	प्र०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
अदीव्य	अदीव्यतम्	अदीव्यत	म०	अनृत्य	अनृत्यतम्	अनृत्यत
अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम	उ०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः	प्र०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत	म०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम	उ०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

देविष्यति देविष्यतः देविष्यन्ति लृट् (क) नर्तिष्यति (ख) नर्त्स्यति (दोनो प्रकार से)

देविता देवितारौ देवितारः लुट् नर्तिता नर्तितारौ नर्तितारः

दीव्यात् दीव्यास्ताम् दीव्यासुः आ० लिङ् नृत्यात् नृत्यास्ताम् नृत्यासुः

अदेविष्यत् अदेविष्यताम् अदेविष्यन् लृङ् (क) अनर्तिष्यत्० (ख) अनर्त्स्यत्० आदि

	लिट्				लिट्	
दिदेव	दिदिवतुः	दिदिवुः	प्र०	ननर्त	ननृततुः	ननृतुः
दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव	म०	ननर्तिथ	ननृतथुः	ननृत
दिदेव	दिदिविव	दिदिविम	उ०	ननर्त	ननृतिव	ननृतिम
	लुङ् (५)				**लुङ् (५)**	
अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः	प्र०	अनर्तीत्	अनर्तिष्टाम्	अनर्तिषुः
अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट	म०	अनर्तीः	अनर्तिष्टम्	अनर्तिष्ट
अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म	उ०	अनर्तिषम्	अनर्तिष्व	अनर्तिष्म

(४४) युध् (लड़ना) (देखो अ० ४५)   (४५) जन् (उत्पन्न होना) (देखो अ० ४६)

	लट्				लट् (जन् को जा)	
युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते	प्र०	जायते	जायेते	जायन्ते
युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे	म०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे	उ०	जाये	जायावहे	जायामहे
	लोट्				लोट्	
युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्	प्र०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्	म०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै	उ०	जायै	जायावहै	जायामहै
	लङ्				लङ् (जन् को जा)	
अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त	प्र०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्	म०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि	उ०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ् (जन् को जा)	
युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्	प्र०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्	म०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि	उ०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि
योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते	लृट्	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
योद्धा	योद्धारौ	योद्धारः	लुट्	जनिता	जनितारौ	जनितारः
युत्सीष्ट	युत्सीयास्ताम्	०	आ० लिङ्	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	०
अयोत्स्यत	अयोत्स्येताम्	०	लृङ्	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	०
	लिट्				लिट्	
युयुधे	युयुधाते	युयुधिरे	प्र०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
युयुधिषे	युयुधाथे	युयुधिध्वे	म०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
युयुधे	युयुधिवहे	युयुधिमहे	उ०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे
	लुङ् (४)				लुङ् (५)	
अयुद्ध	अयुत्साताम्	अयुत्सत	प्र०	अजनि / अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
अयुद्धाः	अयुत्साथाम्	अयुद्ध्वम्	म०	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिढ्वम्
अयुत्सि	अयुत्स्वहि	अयुत्स्महि	उ०	अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि

सूचना—लट् आदि में जन् को जा हो जाता है।

(५) स्वादिगण (उभयपदी धातु)

(४६) सु (स्नान करना या कराना, रस निकालना) (देखो अ० ४७)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति	प्र०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ	म०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
सुनोमि	सुनुवः, सुन्वः	सुनुमः, सुन्मः	उ०	सुन्वे	सुनुवहे, सुन्वहे	सुनुमहे, सुन्महे
	लोट्				लोट्	
सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु	प्र०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
सुनु	सुनुतम्	सुनुत	म०	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम	उ०	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै
	लङ्				लङ्	
असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्	प्र०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
असुनोः	असुनुतम्	असुनुत	म०	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
असुनवम्	असुनुव	असुनुम	उ०	असुन्वि	असुनुवहि, असुन्वहि	असुनुमहि, असुन्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः	प्र०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात	म०	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम	उ०	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति	लृट्	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
सोता	सोतारौ	सोतारः	लुट्	सोता	सोतारौ	सोतारः
सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः	आ०लिङ्	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्	लृङ्	असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यन्त
	लिट्				लिट्	
सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः	प्र०	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
सुषविथ, सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव	म०	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे
सुषाव, सुषव	सुषुविव	सुषुविम	उ०	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे
	लुङ् (५)				लुङ् (४)	
असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः	प्र०	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट	म०	असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोढ्वम्
असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म	उ०	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि

परस्मैपदी धातुएँ

(४७) आप् (पाना) (देखो अ० ४८)				(४८) शक् (सकना) (देखो अ० ४९)		
	लट्				लट्	
आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	प्र०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	म०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः	उ०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः
	लोट्				लोट्	
आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	प्र०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	म०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम	उ०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम
	लङ्				लङ्	
आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	प्र०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	म०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम	उ०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	प्र०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	म०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम	उ०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति	लृट्	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
आप्ता	आप्तारौ	आप्तारः	लुट्	शक्ता	शक्तारौ	शक्तारः
आप्यात्	आप्यास्ताम्	आप्यासुः	आ० लिङ्	शक्यात्	शक्यास्ताम्	शक्यासुः
आप्स्यत्	आप्स्यताम्	आप्स्यन्	लृङ्	अशक्ष्यत्	अशक्ष्यताम्	अशक्ष्यन्
	लिट्				लिट्	
आप	आपतुः	आपुः	प्र०	शशाक	शेकतुः	शेकुः
आपिथ	आपथुः	आप	म०	शेकिथ, शशक्थ	शेकथुः	शेक
आप	आपिव	आपिम	उ०	शशाक, शशक	शेकिव	शेकिम
	लुङ् (२)				लुङ् (२)	
आपत्	आपताम्	आपन्	प्र०	अशकत्	अशकताम्	अशकन्
आपः	आपतम्	आपत	म०	अशकः	अशकतम्	अशकत
आपम्	आपाव	आपाम	उ०	अशकम्	अशकाव	अशकाम

(६) तुदादिगण

(परस्मैपदी धातुएँ)

(४९) तुद् (दुःख देना) (देखो अ० ५)

सूचना—तुद् उभयपदी है। यहाँ केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। आत्मने० मे सेव् के तुल्य।

(५०) इष् (चाहना) (देखो अ० ५)

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में इष् को इच्छ् हो जाता है।

	लट्				लट्	
तुदति	तुदतः	तुदन्ति	प्र०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
तुदसि	तुदथः	तुदथ	म०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
तुदामि	तुदावः	तुदामः	उ०	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः
	लोट्				लोट्	
तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु	प्र०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
तुद	तुदतम्	तुदत	म०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
तुदानि	तुदाव	तुदाम	उ०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम
	लङ्				लङ्	
अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्	प्र०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
अतुदः	अतुदतम्	अतुदत	म०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम	उ०	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः	प्र०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
तुदेः	तुदेतम्	तुदेत	म०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
तुदेयम्	तुदेव	तुदेम	उ०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति	लृट्	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः	लुट्	(क) एषिता (ख) एष्टा (दोनो प्रकारसे)		
तुद्यात्	तुद्यास्ताम्	तुद्यासुः	आ०लिङ्	इष्यात्	इष्यास्ताम्	इष्यासुः
अतोत्स्यत्	अतोत्स्यताम्	अतोत्स्यन्	लृङ्	ऐषिष्यत्	ऐषिष्यताम्	ऐषिष्यन्
	लिट्				लिट्	
तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः	प्र०	इयेष	ईषतुः	ईषुः
तुतोदिथ	तुतुदथुः	तुतुद	म०	इयेषिथ	ईषथुः	ईष
तुतोद	तुतुदिव	तुतुदिम	उ०	इयेष	ईषिव	ईषिम
	लुङ् (४)				लुङ् (५)	
अतौत्सीत्	अतौत्ताम्	अतौत्सुः	प्र०	ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषुः
अतौत्सीः	अतौत्तम्	अतौत्त	म०	ऐषीः	ऐषिष्टम्	ऐषिष्ट
अतौत्सम्	अतौत्स्व	अतौत्स्म	उ०	ऐषिषम्	ऐषिष्व	ऐषिष्म

(५१) स्पृश् (छूना) (देखो अ० ५) | (५२) प्रच्छ् (पूछना) (देखो अ० ५)

लट् | लट् (प्रच्छ् को पृच्छ्)

स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति	प्र०	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ	म०	पृच्छसि	पृच्छथ	पृच्छथ
स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः	उ०	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लोट् | लोट् (प्रच्छ् को पृच्छ्)

स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु	प्र०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत	म०	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम	उ०	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

लङ् | लङ् (प्रच्छ् को पृच्छ्)

अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्	प्र०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत	म०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम	उ०	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

विधिलिङ् | विधिलिङ् (प्रच्छ् को पृच्छ्)

स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः	प्र०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत	म०	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम	उ०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

(क) स्पर्क्ष्यति (ख) स्प्रक्ष्यति (दोनों प्रकारसे) लृट् प्रक्ष्यति प्रक्ष्यतः प्रक्ष्यन्ति

(क) स्पर्ष्टा (ख) स्प्रष्टा (,,) लुट् प्रष्टा प्रष्टारौ प्रष्टारः

स्पृश्यात् स्पृश्यास्ताम् स्पृश्यासुः आ० लिङ् पृच्छ्यात् पृच्छ्यास्ताम् पृच्छ्यासुः

(क) अस्पर्क्ष्यत् (ख) अस्प्रक्ष्यत् (दोनों प्रकारसे) लृङ् अप्रक्ष्यत् अप्रक्ष्यताम् अप्रक्ष्यन्

लिट् | लिट्

पस्पर्श	पस्पृशतुः	पस्पृशुः	प्र०	पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः
पस्पर्शिथ	पस्पृशथुः	पस्पृश	म०	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ
पस्पर्श	पस्पृशिव	पस्पृशिम	उ०	पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम

लुङ् (क) (४) | लुङ् (४)

अस्पार्क्षीत्	अस्पार्ष्टाम्	अस्पार्क्षुः	प्र०	अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः
अस्पार्क्षीः	अस्पार्ष्टम्	अस्पार्ष्ट	म०	अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट
अस्पार्क्षम्	अस्पार्क्ष्व	अस्पार्क्ष्म	उ०	अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म

(ख) (४) अस्प्राक्षीत् अस्प्राष्टाम्० (पूर्ववत्)

(ग) (७) अस्पृक्षत् अस्पृक्षताम् अस्पृक्षन् प्र०

अस्पृक्षः अस्पृक्षतम् अस्पृक्षत म०

अस्पृक्षम् अस्पृक्षाव अस्पृक्षाम उ०

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधि-लिङ् में प्रच्छ् को पृच्छ् हो जाता है ।

(५३) लिख् (लिखना) (देखो अ० १)

(५४) मृ (मरना) (देखो अ० ५०)

सूचना—लृट्, लुट्, लृङ् और लिट् मे मृ परस्मै० है, अन्यत्र आत्मनेपदी।

	लट्				लट्	
लिखति	लिखतः	लिखन्ति	प्र०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
लिखसि	लिखथः	लिखथ	म०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
लिखामि	लिखावः	लिखामः	उ०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
	लोट्				लोट्	
लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु	प्र०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
लिख	लिखतम्	लिखत	म०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
लिखानि	लिखाव	लिखाम	उ०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै
	लङ्				लङ्	
अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्	प्र०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
अलिखः	अलिखतम्	अलिखत	म०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम	उ०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः	प्र०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
लिखेः	लिखेतम्	लिखेत	म०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
लिखेयम्	लिखेव	लिखेम	उ०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति	लृट्	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
लेखिता	लेखितारौ	लेखितारः	लुट्	मर्ता	मर्तारौ	मर्तारः
लिख्यात्	लिख्यास्ताम्	लिख्यासुः	आ० लिङ्	मृषीष्ट	मृषीयास्ताम्	मृषीरन्
अलेखिष्यत्	अलेखिष्यताम्	अलेखिष्यन्	लृङ्	अमरिष्यत्	अमरिष्यताम्	अमरिष्यन्
	लिट्				लिट्	
लिलेख	लिलिखतुः	लिलिखुः	प्र०	ममार	मम्रतुः	मम्रुः
लिलेखिथ	लिलिखथुः	लिलिख	म०	ममर्थ	मम्रथुः	मम्र
लिलेख	लिलिखिव	लिलिखिम	उ०	ममार, ममर	मम्रिव	मम्रिम
	लुङ् (५)				लुङ् (४)	
अलेखीत्	अलेखिष्टाम्	अलेखिषुः	प्र०	अमृत	अमृषाताम्	अमृषत
अलेखीः	अलेखिष्टम्	अलेखिष्ट	म०	अमृथाः	अमृषाथाम्	अमृढ्वम्
अलेखिषम्	अलेखिष्व	अलेखिष्म	उ०	अमृषि	अमृष्वहि	अमृष्महि

(५५) मुच् (छोडना) (देखो अभ्यास ५१)

परस्मैपद लट्				**आत्मनेपद** लट्		
मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति	प्र०	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
मुञ्चसि	मुञ्चथ.	मुञ्चथ	म०	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
मुञ्चामि	मुञ्चाव	मुञ्चाम	उ०	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे

लोट्				लोट्		
मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु	प्र०	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत	म०	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
मुञ्चानि	नुञ्चाव	मुञ्चाम	उ०	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै

लङ्				लङ्		
अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्	प्र०	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
अमुञ्च:	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत	म०	अमुञ्चथा	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम	उ०	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयु	प्र०	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
मुञ्चे	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत	म०	मुञ्चेथा	मुञ्चेयाथाम्	मुञ्चेध्वम्
मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम	उ०	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि

मोक्ष्यति	मोक्ष्यत	मोक्ष्यन्ति	लृट्	मोक्ष्यते	मोक्ष्येते	मोक्ष्यन्ते
मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः	लुट्	मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः
मुच्यात्	मुच्यास्ताम्	मुच्यासु	आ०लिङ्	मुक्षीष्ट	मुक्षीयास्ताम्	मुक्षीरन्
अमोक्ष्यत्	अमोक्ष्यताम्	अमोक्ष्यन्	लृङ्	अमोक्ष्यत	अमोक्ष्येताम्	अमोक्ष्यन्त

लिट्				लिट्		
मुमोच	मुमुचतु	मुमुचु.	प्र०	मुमुचे	मुमुचाते	मुमुचिरे
मुमोचिथ	मुमुचथु	मुमुच	म०	मुमुचिषे	मुमुचाथे	मुमुचिध्वे
मुमोच	मुमुचिव	मुमुचिम	उ०	मुमुचे	मुमुचिवहे	मुमुचिमहे

लुङ् (२)				लुङ् (४)		
अमुचत्	अमुचताम्	अमुचन्	प्र०	अमुक्त	अमुक्षाताम्	अमुक्षत
अमुचः	अमुचतम्	अमुचत	म०	अमुक्था.	अमुक्षाथाम्	अमुग्ध्वम्
अमुचम्	अमुचाव	अमुचाम	उ०	अमुक्षि	अमुक्ष्वहि	अमुक्ष्महि

(७) रुधादिगण

(उभयपदी धातुएँ)

(५६) रुध् (ढकना, रोकना)

(देखो अभ्यास ५२)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	प्र०	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	म०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	उ०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे
	लोट्				लोट्	
रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	प्र०	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध	म०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	उ०	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै
	लङ्				लङ्	
अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	प्र०	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध	म०	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	उ०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	प्र०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	म०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	उ०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि
रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति	लृट्	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः	लुट्	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासुः	आ० लिङ्	रुत्सीष्ट	रुत्सीयास्ताम्	रुत्सीरन्
अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	अरोत्स्यन्	लृङ्	अरोत्स्यत	अरोत्स्येताम्	अरोत्स्यन्त
	लिट्				लिट्	
रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः	प्र०	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
रुरोधिथ	रुरुधथुः	रुरुध	म०	रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिध्वे
रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम	उ०	रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे
	लुङ् (क) (६)				लुङ् (४)	
अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सुः	प्र०	अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत
अरौत्सीः	अरौद्धम्	अरौद्ध	म०	अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुद्ध्वम्
अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म	उ०	अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि
	लुङ् (ख) (२)					
अरुधत्	अरुधताम्	अरुधन्	प्र०			
अरुधः	अरुधतम्	अरुधत	म०			
अरुधम्	अरुधाव	अरुधाम	उ०			

सूचना.—रुन्धः, रुन्ध्वे आदि दो ध् वाले स्थानों पर 'झरो झरि सवर्णे' से एक ध् का विकल्प से लोप । रुन्द्धः, रुन्द्ध्वे आदि भी बनते हैं।

(५७) भुज् (१. पालन करना, २ भोजन करना) (देखो अ० ५३)

सूचना—भुज् धातु पालन करने अर्थ मे परस्मैपदी होती है और भोजन करना, उपभोग करना अर्थ म आत्मनेपदी ही होती है ।

परस्मैपद	लट्			**आत्मनेपद**	लट्	
भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति	प्र०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
भुनक्षि	भुङ्क्थ	भुङ्क्थ	म०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्म	उ०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे
	लोट्				लोट्	
भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु	प्र०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त	म०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम	उ०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै
	लङ्				लङ्	
अभुनक्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्	प्र०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
अभुनक्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त	म०	अभुङ्क्था	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म	उ०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः	प्र०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
भुञ्ज्या	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात	म०	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम	उ०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि
भोक्ष्यति	भोक्ष्यत	भोक्ष्यन्ति	लृट्	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः	लुट्	भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः
भुज्यात्	भुज्यास्ताम्	भुज्यासुः	आ०लिङ्	भुक्षीष्ट	भुक्षीयास्ताम्	
अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्यताम्	अभोक्ष्यन्	लृङ्	अभोक्ष्यत	अभोक्ष्येताम्	
	लिट्				लिट्	
बुभोज	बुभुजतुः	बुभुजुः	प्र०	बुभुजे	बुभुजाते	बुभुजिरे
बुभोजिथ	बुभुजथुः	बुभुज	म०	बुभुजिषे	बुभुजाथे	बुभुजिध्वे
बुभोज	बुभुजिव	बुभुजिम	उ०	बुभुजे	बुभुजिवहे	बुभुजिमहे
	लुङ् (४)				लुङ् (४)	
अभौक्षीत्	अभौक्ताम्	अभौक्षुः	प्र०	अभुक्त	अभुक्षाताम्	अभुक्षत
अभौक्षीः	अभौक्तम्	अभौक्त	म०	अभुक्थाः	अभुक्षाथाम्	अभुग्ध्वम्
अभौक्षम्	अभौक्ष्व	अभौक्ष्म	उ०	अभुक्षि	अभुक्ष्वहि	अभुक्ष्महि

(८) तनादिगण

(उभयपदी धातुएँ)

(५८) तन् (फैलाना)

(देखो अभ्यास ५४)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	प्र०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
तनोषि	तनुथः	तनुथ	म०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
तनोमि	तनुवः तन्वः	तनुमः तन्मः	उ०	तन्वे	तनुवहे तन्वहे	तनुमहे तन्महे
	लोट्				लोट्	
तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	प्र०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
तनु	तनुतम्	तनुत	म०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
तनवानि	तनवाव	तनवाम	उ०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै
	लङ्				लङ्	
अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	प्र०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	म०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
अतनवम्	अतनुव अतन्व	अतनुम अतन्म	उ०	अतन्वि	अतनुवहि अतन्वहि	अतनुमहि अतन्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	प्र०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	म०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	उ०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि
तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति	लृट्	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
तनिता	तनितारौ	तनितारः	लुट्	तनिता	तनितारौ	तनितारः
तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः	आ०लिङ्	तनिषीष्ट	तनिषीयास्ताम्	०
अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्	लृङ्	अतनिष्यत	अतनिष्येताम्	०
	लिट्				लिट्	
ततान	तेनतुः	तेनुः	प्र०	तेने	तेनाते	तेनिरे
तेनिथ	तेनथुः	तेन	म०	तेनिषे	तेनाथे	तेनिध्वे
ततान, ततन	तेनिव	तेनिम	उ०	तेने	तेनिवहे	तेनिमहे
	लुङ् (क) (५)				लुङ् (५)	
अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः	प्र०	अतत, अतनिष्ट	अतनिषाताम्	अतनिषत
अतानीः	अतानिष्टम्	अतानिष्ट	म०	अतथाः, अतनिष्ठाः	अतनिषाथाम्	अतनिध्वम्
अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म	उ०	अतनिषि	अतनिष्वहि	अतनिष्महि

(ख) अतनीत्० (रूप अतानीत् के तुल्य चलावें)

(५९) कृ (करना) (देखो अभ्यास २२)

परस्मैपद लट्				आत्मनेपद लट्		
करोति	कुरुत	कुर्वन्ति	प्र०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
करोषि	कुरुथ:	कुरुथ	म०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
करोमि	कुर्व	कुर्म	उ०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लोट्				लोट्		
करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्र०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
कुरु	कुरुतम्	कुरुत	म०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
करवाणि	करवाव	करवाम	उ०	करवै	करवावहै	करवामहै
लङ्				लङ्		
अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्र०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
अकरो:	अकुरुतम्	अकुरुत	म०	अकुरुथा:	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उ०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
विधिलिङ्				विधिलिङ्		
कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:	प्र०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात	म०	कुर्वीथा:	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	उ०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

करिष्यति	करिष्यत	करिष्यन्ति	लृट्	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
कर्ता	कर्तारौ	कर्तार:	लुट्	कर्ता	कर्तारौ	कर्तार:
क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासु:	आ०लिङ्	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्	लृङ्	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
लिट्				लिट्		
चकार	चक्रतु:	चक्रु:	प्र०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
चकर्थ	चक्रथु:	चक्र	म०	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
चकार, चकर	चकृव	चकृम	उ०	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे
लुङ् (४)				लुङ् (४)		
अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षु:	प्र०	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
अकार्षी:	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	म०	अकृथा:	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	उ०	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

(९) क्र्यादिगण

(उभयपदी धातुएँ)

(६०) क्री (मोल लेना)

(देखो अभ्यास ५५)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	प्र०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	म०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	उ०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे
	लोट्				लोट्	
क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	प्र०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत	म०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	उ०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै
	लङ्				लङ्	
अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	प्र०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	म०	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम	उ०	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः	प्र०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	म०	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	उ०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि
क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति	लृट्	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः	लुट्	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः	आ०लिङ्	क्रेषीष्ट	क्रेषीयास्ताम्	क्रेषीरन्
अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम्	अक्रेष्यन्	लृङ्	अक्रेष्यत	अक्रेष्येताम्	अक्रेष्यन्त
	लिट्				लिट्	
चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः	प्र०	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
चिक्रयिथ, चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय	म०	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे
चिक्राय, चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम	उ०	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे
	लुङ् (४)				लुङ् (४)	
अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः	प्र०	अक्रेष्ट	अक्रेषाताम्	अक्रेषत
अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट	म०	अक्रेष्ठाः	अक्रेषाथाम्	अक्रेढ्वम्
अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म	उ०	अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि

(६१) ग्रह् (पकड़ना) (देखो अभ्यास ५६)

सूचना—ग्रह् धातु को दोनो पदो मे लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् मे गृह् हो जाता है।

परस्मैपद लट्				आत्मनेपद लट्		
गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति	प्र०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ	म०	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः	उ०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे
लोट्				लोट्		
गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु	प्र०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत	म०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम	उ०	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै
लङ्				लङ्		
अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्	प्र०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत	म०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम	उ०	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि
विधिलिङ्				विधिलिङ्		
गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः	प्र०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात	म०	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम	उ०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति	लृट्	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः	लुट्	ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः
गृह्यात्	गृह्यास्ताम्	गृह्यासुः	आ० लिङ्	ग्रहीषीष्ट	ग्रहीषीयास्ताम्	०
अग्रहीष्यत्	अग्रहीष्यताम्	अग्रहीष्यन्	लृङ्	अग्रहीष्यत	अग्रहीष्येताम्	०
लिट्				लिट्		
जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः	प्र०	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह	म०	जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिध्वे
जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम	उ०	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे
लुङ् (५)				लुङ् (५)		
अग्रहीत्	अग्रहीष्टाम्	अग्रहीषुः	प्र०	अग्रहीष्ट	अग्रहीषाताम्	अग्रहीषत
अग्रहीः	अग्रहीष्टम्	अग्रहीष्ट	म०	अग्रहीष्ठाः	अग्रहीषाथाम्	अग्रहीढ्वम्
अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्म	उ०	अग्रहीषि	अग्रहीष्वहि	अग्रहीष्महि

(६२) ज्ञा (जानना) (देखो अभ्यास ५७)

सूचना—ज्ञा धातु को दोनो पदो मे लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् मे 'जा' हो जाता है।

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
जानाति	जानीतः	जानन्ति	प्र०	जानीते	जानाते	जानते
जानासि	जानीथः	जानीथ	म०	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
जानामि	जानीवः	जानीमः	उ०	जाने	जानीवहे	जानीमहे
	लोट्				लोट्	
जानातु	जानीताम्	जानन्तु	प्र०	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
जानीहि	जानीतम्	जानीत	म०	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
जानानि	जानाव	जानाम	उ०	जानै	जानावहै	जानामहै
	लङ्				लङ्	
अजानात्	अजानीताम्	अजानन्	प्र०	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
अजानाः	अजानीतम्	अजानीत	म०	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
अजानाम्	अजानीव	अजानीम	उ०	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः	प्र०	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात	म०	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम	उ०	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति	लृट्	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः	लुट्	ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः

(क) ज्ञायात् (ख) ज्ञेयात् (दोनो प्रकार से) आ०लिङ् ज्ञासीष्ट ज्ञासीयास्ताम् ज्ञासीरन्

अज्ञास्यत्	अज्ञास्यताम्	अज्ञास्यन्	लृङ्	अज्ञास्यत	अज्ञास्येताम्	अज्ञास्यन्त
	लिट्				लिट्	
जज्ञौ	जज्ञतुः	जज्ञुः	प्र०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञथुः	जज्ञ	म०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
जज्ञौ	जज्ञिव	जज्ञिम	उ०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे
	लुङ् (६)				लुङ् (४)	
अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः	प्र०	अज्ञास्त	अज्ञासाताम्	अज्ञासत
अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट	म०	अज्ञास्थाः	अज्ञासाथाम्	अज्ञाध्वम्
अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म	उ०	अज्ञासि	अज्ञास्वहि	अज्ञास्महि

(१०) चुरादिगण (उभयपदी धातुएँ)

(६३) चुर् (चुराना) (देखो अभ्यास ३१-३३)

परस्मैपद लट्				आत्मनेपद लट्		
चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	प्र०	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	म०	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	उ०	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे
	लोट्				लोट्	
चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु	प्र०	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
चोरय	चोरयतम्	चोरयत	म०	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	उ०	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै
	लङ्				लङ्	
अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	प्र०	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
अचोरय	अचोरयतम्	अचोरयत	म०	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	उ०	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः	प्र०	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत	म०	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम	उ०	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि
चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति	लृट्	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	०
चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः	लुट्	चोरयिता	चोरयितारौ	०
चोर्यात्	चोर्यास्ताम्	चोर्यासुः	आ०लिङ्	चोरयिषीष्ट	चोरयिषीयास्ताम्	०
अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम् ०		लृङ्	अचोरयिष्यत	अचोरयिष्येताम्	०

लिट् (क) (चोरया + कृ) (कृ लिट् के तुल्य) लिट् (क) (चोरया + कृ) (कृ लिट्वत्)

चोरयाचकार	-चक्रतुः	-चक्रुः	प्र०	चोरयाचक्रे	-चक्राते	-चक्रिरे

(ख) (चोरया + भू) (भू लिट् के तुल्य) (ख) (चोरया + भू) (भू लिट् के तुल्य)

चोरयाबभूव	-बभूवतुः	-बभूवुः	प्र०	चोरयाबभूव	-बभूवतुः	बभूवुः

(ग) (चोरयाम् + अस्) (ग) (चोरयाम् + अस्)

चोरयामास	-आसतुः	-आसुः	प्र०	चोरयामास (परस्मैपद के तुल्य)
-आसिथ	-आसथुः	-आस	म०	
-आस	-आसिव	-आसिम	उ०	

	लुङ् (३)				लुङ् (३)	
अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्	प्र०	अचूचुरत	अचूचुरेताम्	अचूचुरन्त
अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत	म०	अचूचुरथाः	अचूचुरेथाम्	अचूचुरध्वम्
अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम	उ०	अचूचुरे	अचूचुरावहि	अचूचुरामहि

(६४) चिन्त् (सोचना) (चुर् धातु के तुल्य रूप चलेंगे)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
चिन्तयति	चिन्तयत'	चिन्तयन्ति	प्र०	चिन्तयते	चिन्तयेते	चिन्तयन्ते
चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ	म०	चिन्तयसे	चिन्तयेथे	चिन्तयध्वे
चिन्तयामि	चिन्तयाव'	चिन्तयामः	उ०	चिन्तये	चिन्तयावहे	चिन्तयामहे
	लोट्				लोट्	
चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु	प्र०	चिन्तयताम्	चिन्तयेताम्	चिन्तयन्ताम्
चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत	म०	चिन्तयस्व	चिन्तयेथाम्	चिन्तयध्वम्
चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम	उ०	चिन्तयै	चिन्तयावहै	चिन्तयामहै
	लङ्				लङ्	
अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्	प्र०	अचिन्तयत	अचिन्तयेताम्	अचिन्तयन्त
अचिन्तय'	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत	म०	अचिन्तयथा॰	अचिन्तयेथाम्	अचिन्तयध्वम्
अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम	उ०	अचिन्तये	अचिन्तयावहि	अचिन्तयामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयु'	प्र०	चिन्तयेत	चिन्तयेयाताम्	चिन्तयेरन्
चिन्तये'	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत	म०	चिन्तयेथाः	चिन्तयेयाथाम्	चिन्तयेध्वम्
चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम	उ०	चिन्तयेय	चिन्तयेवहि	चिन्तयेमहि

चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	०	लट्	चिन्तयिष्यते	चिन्तयिष्येते	०
चिन्तयिता	चिन्तयितारौ	०	लुट्	चिन्तयिता	चिन्तयितारौ	०
चिन्त्यात्	चिन्त्यास्ताम्	०	आ०लिङ्	चिन्तयिषीष्ट	चिन्तयिषीयास्ताम्	०
अचिन्तयिष्यत्	अचिन्तयिष्यताम्	०	लङ्	अचिन्तयिष्यत	अचिन्तयिष्येताम्	०

लिट् (चुर् लिट् के तुल्य)			लिट् (चुर् लिट् के तुल्य)		
(क) चिन्तयाचकार	—चक्रतु	०	(क) चिन्तयाचक्रे	—चक्राते	०
(ख) चिन्तयाबभूव	—बभूवतुः	०	(ख) चिन्तयाबभूव	—बभूवतु	०
(ग) चिन्तयामास	—आसतु॰	०	(ग) चिन्तयामास	—आसतु॰	०

लुङ् (३)			लुङ् (३)		
अचिचिन्तत्	अचिचिन्तताम्	अचिचिन्तन्	अचिचिन्तत	अचिचिन्तेताम्	अचिचिन्तन्त
अचिचिन्त'	अचिचिन्ततम्	अचिचिन्तत	अचिचिन्तथा'	अचिचिन्तेथाम्	अचिचिन्तध्वम्
अचिचिन्तम्	अचिचिन्ताव	अचिचिन्ताम	अचिचिन्ते	अचिचिन्तावहि	अचिचिन्तामहि

(६५) कथ् (कहना) (चुर् धातु के तुल्य रूप चलेंगे)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
कथयति	कथयतः	कथयन्ति	प्र०	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
कथयसि	कथयथः	कथयथ	म०	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
कथयामि	कथयावः	कथयामः	उ०	कथये	कथयावहे	कथयामहे
	लोट्				लोट्	
कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु	प्र०	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
कथय	कथयतम्	कथयत	म०	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
कथयानि	कथयाव	कथयाम	उ०	कथयै	कथयावहै	कथयामहै
	लङ्				लङ्	
अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्	प्र०	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
अकथयः	अकथयतम्	अकथयत	म०	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम	उ०	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः	प्र०	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
कथयेः	कथयेतम्	कथयेत	म०	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
कथयेयम्	कथयेव	कथयेम	उ०	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति	लृट्	कथयिष्यते	कथयिष्येते	०
कथयिता	कथयितारौ	कथयितारः	लुट्	कथयिता	कथयितारौ	०
कथ्यात्	कथ्यास्ताम्	कथ्यासुः	आ०लिङ्	कथयिषीष्ट	कथयिषीयास्ताम्	०
अकथयिष्यत्	अकथयिष्यताम्	अकथयिष्यन्	लृङ्	अकथयिष्यत	अकथयिष्येताम्	०

लिट् (चुर् लिट् के तुल्य)			लिट् (चुर् लिट् के तुल्य)		
(क) कथयाचकार	—चक्रतुः	०	(क) कथयाञ्चक्रे	—चक्राते	०
(ख) कथयाबभूव	—बभूवतुः	०	(ख) कथयाबभूव	—बभूवतुः	०
(ग) कथयामास	—आसतुः	०	(ग) कथयामास	—आसतुः	०

	लुङ् (३)				लुङ् (३)	
अचकथत्	अचकथताम्	अचकथन्	प्र०	अचकथत	अचकथेताम्	अचकथन्त
अचकथः	अचकथतम्	अचकथत	म०	अचकथथाः	अचकथेथाम्	अचकथध्वम्
अचकथम्	अचकथाव	अचकथाम	उ०	अचकथे	अचकथावहि	अचकथामहि

(६६) भक्ष् (खाना) (चुर् के तुल्य रूप चलेंगे)

परस्मैपद लट्				आत्मनेपद लट्		
भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति	प्र०	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
भक्षयसि	भक्षयथ	भक्षयथ	म०	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः	उ०	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे
लोट्				लोट्		
भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु	प्र०	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत	म०	भक्षयस्व	भक्षयेथाम्	भक्षयध्वम्
भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम	उ०	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै
लङ्				लङ्		
अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्	प्र०	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत	म०	अभक्षयथाः	अभक्षयेथाम्	अभक्षयध्वम्
अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम	उ०	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि
विधिलिङ्				विधिलिङ्		
भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः	प्र०	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत	म०	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम	उ०	भक्षयेय	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति	लृट्	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	०
भक्षयिता	भक्षयितारौ	भक्षयितारः	लुट्	भक्षयिता	भक्षयितारौ	०
भक्ष्यात्	भक्ष्यास्ताम्	भक्ष्यासुः	आ०लिङ्	भक्षयिषीष्ट	भक्षयिषीयास्ताम्	०
अभक्षयिष्यत्	अभक्षयिष्यताम्	अभक्षयिष्यन्	लृङ्	अभक्षयिष्यत	अभक्षयिष्येताम्	०

लिट् (चुर् के तुल्य)			लिट् (चुर् के तुल्य)		
(क) भक्षयाञ्चकार	—चक्रतुः	०	(क) भक्षयाञ्चक्रे	—चक्राते	०
(ख) भक्षयाम्बभूव	—बभूवतुः	०	(ख) भक्षयाम्बभूव	—बभूवतुः	०
(ग) भक्षयामास	—आसतुः	०	(ग) भक्षयामास	—आसतुः	०

लुङ् (३)				लुङ् (३)		
अबभक्षत्	अबभक्षताम्	अबभक्षन्	प्र०	अबभक्षत	अबभक्षेताम्	अबभक्षन्त
अबभक्षः	अबभक्षतम्	अबभक्षत	म०	अबभक्षथाः	अबभक्षेथाम्	अबभक्षध्वम्
अबभक्षम्	अबभक्षाव	अबभक्षाम	उ०	अबभक्षे	अबभक्षावहि	अबभक्षामहि

प्रेरणार्थक णिच् प्रत्यय

(देखो अभ्यास २८-२९)

(६७) कारि (कृ + णिच् , करवाना) (चुर् के तुल्य रूप चलेंगे)

परस्मैपद	लट्			आत्मनेपद	लट्	
कारयति	कारयत.	कारयन्ति	प्र०	कारयते	कारयेते	कारयन्ते
कारयसि	कारयथः	कारयथ	म०	कारयसे	कारयेथे	कारयध्वे
कारयामि	कारयाव.	कारयाम.	उ०	कारये	कारयावहे	कारयामहे
	लोट्				लोट्	
कारयतु	कारयताम्	कारयन्तु	प्र०	कारयताम्	कारयेताम्	कारयन्ताम्
कारय	कारयतम्	कारयत	म०	कारयस्व	कारयेथाम्	कारयध्वम्
कारयाणि	कारयाव	कारयाम	उ०	कारयै	कारयावहै	कारयामहै
	लङ्				लङ्	
अकारयत्	अकारयताम्	अकारयन्	प्र०	अकारयत	अकारयेताम्	अकारयन्त
अकारय.	अकारयतम्	अकारयत	म०	अकारयथा.	अकारयेथाम्	अकारयध्वम्
अकारयम्	अकारयाव	अकारयाम	उ०	अकारये	अकारयावहि	अकारयामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
कारयेत्	कारयेताम्	कारयेयु	प्र०	कारयेत	कारयेयाताम्	कारयेरन्
कारयेः	कारयेतम्	कारयेत	म०	कारयेथाः	कारयेयाथाम्	कारयेध्वम्
कारयेयम्	कारयेव	कारयेम	उ०	कारयेय	कारयेवहि	कारयेमहि

कारयिष्यति	कारयिष्यत	कारयिष्यन्ति	लृट्	कारयिष्यते	कारयिष्येते	०
कारयिता	कारयितारौ	कारयितार	लुट्	कारयिता	कारयितारौ	०
कार्यात्	कार्यास्ताम्	कार्यासु.	आ०लिङ्	कारयिषीष्ट	कारयिषीयास्ताम्	०
अकारयिष्यत्	अकारयिष्यताम्	अकारयिष्यन्	लृङ्	अकारयिष्यत	अकारयिष्येताम्	०

लिट् (चुर् के तुल्य)		लिट् (चुर् के तुल्य)	
(क) कारयाञ्चकार	—चक्रतुः ०	(क) कारयाञ्चक्रे	—चक्राते ०
(ख) कारयाबभूव	—बभूवतु ०	(ख) कारयाबभूव	—बभूवतु. ०
(ग) कारयामास	—आसतु. ०	(ग) कारयामास	—आसतुः ०

	लुङ् (३)				लुङ् (३)	
अचीकरत्	अचीकरताम्	अचीकरन्	प्र०	अचीकरत	अचीकरेताम्	अचीकरन्त
अचीकर.	अचीकरतम्	अचीकरत	म०	अचीकरथाः	अचीकरेथाम्	अचीकरध्वम्
अचीकरम्	अचीकराव	अचीकराम	उ०	अचीकरे	अचीकरावहि	अचीकरामहि

---

(४) संक्षिप्त धातुकोष

आवश्यक-निर्देश

(पुस्तक मे प्रयुक्त धातुओ के रूप, अकारादिक्रम से)

१. इस पुस्तक मे जिन धातुओं का प्रयोग हुआ है, उनके सक्षिप्त रूप यहाँ पर दिए गए है। प्रचलित लट् आदि ५ लकारो के ही रूप दिए गए है। प्रत्येक लकार का प्रथम रूप अर्थात् प्रथम पुरुष एकवचन का रूप दिया गया है। जो धातु जिस गण की है, उस धातु के रूप उस गण की धातुओ के तुल्य चलेंगे। धातुरूप-सग्रह मे उनके सक्षिप्त रूपो का निर्देश किया जा चुका है। जो उभयपदी धातुएँ परस्मैपद मे ही अधिक प्रचलित है, उनके परस्मैपद के ही रूप दिए गए है।

२ प्रत्येक धातु के रूप इस क्रम से दिए गए है। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट्। अन्त मे कर्मवाच्य या भाववाच्य का प्र० पु० एक० का रूप दिया गया है।

३. प्रत्येक धातु के बाद कोठ मे निर्देश कर दिया गया है कि वह किस गण की है तथा किस पद मे उसके रूप चलते है। अन्त मे कोष्ठ मे सख्याएँ दी है, वे इस बात का निर्देश करती है कि उस धातु का उस अभ्यास मे प्रयोग हुआ है। सभी धातुएँ अकारादि क्रम से दी गई है।

४. सक्षेप के लिए निम्नलिखित सकेतो का प्रयोग किया गया है.—प० = परस्मैपदी। आ० = आत्मनेपदी। उ० = उभयपदी। १ = भ्वादिगण। २ = अदादिगण। ३ = जुहोत्यादिगण। ४ = दिवादिगण। ५ = स्वादिगण। ६ = तुदादिगण। ७ = रुधादिगण। ८ = तनादिगण। ९ = क्र्यादिगण। १० = चुरादिगण। ११ = कण्ड्वादिगण।

५ धातु के साथ उपसर्ग हो तो लङ् मे शुद्ध धातु से पहले अ या आ लगावे। उपसर्ग से पूर्व नही। (देखो नियम ९६)।

अद् (२ प०, खाना) अत्ति, अत्तु, आदत्, अद्यात्, अत्स्यति। अद्यते। (२३)

अय् (१ आ०, जाना) अयते, अयताम्, आयत, अयेत, अयिष्यते। अय्यते। (१८)

अर्च् (१ प०, पूजना) अर्चति, अर्चतु, आर्चत्, अर्चेत्, अर्चिष्यति। अर्च्यते। (१४)

अश् (९ प०, खाना) अश्नाति, अश्नातु, आश्नात्, अश्नीयात्, अशिष्यति। अश्यते (५५)

अस् (२ प०, होना) अस्ति, अस्तु, आसीत्, स्यात्, भविष्यति। भूयते (४)

अस् (४ प०, फेकना) अस्यति, अस्यतु, आस्यत्, अस्येत्, असिष्यति। अस्यते। (१७,४१)

असूय (११प०,द्रोह०) असूयति, असूयतु, आसूयत्, असूयेत्, असूयिष्यति। असूय्यते(११)

आप् (५ प०, पाना) आप्नोति, आप्नोतु, आप्नोत्, आप्नुयात्, आप्स्यति। आप्यते। (१८, ४८)

आस् (२ आ०, बैठना) आस्ते, आस्ताम्, आस्त, आसीत, आसिष्यते। आस्यते। (३६)
इ (अधि+, २ आ०, पढना) अधीते, अधीताम्, अध्यैत, अधीयीत, अध्येष्यते। अधीयते। (१२)
इ (२ प०, जाना) एति, एतु, ऐत्, इयात्, एष्यति। ईयते। (३०)
इष् (६ प०, चाहना) इच्छति, इच्छतु, ऐच्छत्, इच्छेत्, एषिष्यति। इष्यते। (५)
ईक्ष् (१ आ०, देखना) ईक्षते, ईक्षताम्, ऐक्षत, ईक्षेत, ईक्षिष्यते। ईक्ष्यते। (१६)
ईर् (१० उ०, प्रेरणा०) ईरयति, ईरयतु, ऐरयत्, ईरयेत्, ईरयिष्यति। ईर्यते। (३१)
ईर्ष्य् (१ प०, ईर्ष्या०) ईर्ष्यति, ईर्ष्यतु, ऐर्ष्यत्, ईर्ष्येत्, ईर्ष्यिष्यति। ईर्ष्यते। (११)
ईह् (१ आ०, चाहना) ईहते, ईहताम्, ऐहत, ईहेत, ईहिष्यते। ईह्यते। (१६)
कथ् (१० उ०, कहना) प०—कथयति, कथयतु, अकथयत्, कथयेत्, कथयिष्यति। आ०—कथयते, कथयताम्, अकथयत, कथयेत, कथयिष्यते। कथ्यते। (४)
कम्प् (१ आ०, काँपना) कम्पते कम्पताम्, अकम्पत, कम्पेत, कम्पिष्यते। कम्प्यते। (१६)
कुप् (४ प०, क्रोध०) कुप्यति, कुप्यतु अकुप्यत्, कुप्येत्, कोपिष्यति। कुप्यते। (११)
कुर्द् (१ आ०, कूदना) कूर्दते, कूर्दताम्, अकूर्दत, कूर्देत, कूर्दिष्यते। कूर्द्यते। (१६)
कृ (८ उ०, करना) प०—करोति, करोतु अकरोत्, कुर्यात्, करिष्यति। आ०—कुरुते, कुरुताम्, अकुरुत, कुर्वीत, करिष्यते। क्रियते। (४, २२)
कृप् (१ आ०, समर्थ होना) कल्पते कल्पताम् अकल्पत कल्पेत, कल्पिष्यते। कल्प्यते। (१८)
कृष् (१ प०, खींचना) कर्षति, कर्षतु, अकर्षत्, कर्षेत्, कर्क्ष्यति। कृष्यते। (७)
कॄ (६ प०, बखेरना) किरति, किरतु, अकिरत्, किरेत्, करिष्यति। कीर्यते। (५०)
कॄत् (१० उ०, नाम लेना) कीर्तयति, कीर्तयतु, अकीर्तयत्, कीर्तयेत्, कीर्तयिष्यति। कीर्त्यते। (३३)
क्रन्द् (१ प०, रोना) क्रन्दति, क्रन्दतु, अक्रन्दत्, क्रन्देत्, क्रन्दिष्यति। क्रन्द्यते। (११)
क्रम् (१ प०, चलना) क्रामति, क्रामतु, अक्रामत्, क्रामेत्, क्रमिष्यति। क्रम्यते। (२९)
क्री (९ उ०, खरीदना) प०—क्रीणाति, क्रीणातु, अक्रीणात्, क्रीणीयात्, क्रेष्यति। आ०—क्रीणीते, क्रीणीताम्, अक्रीणीत, क्रीणीत, क्रेष्यते। क्रीयते। (५५)
क्रीड् (१ प०, खेलना) क्रीडति, क्रीडतु, अक्रीडत्, क्रीडेत्, क्रीडिष्यति। क्रीड्यते। (६)
क्रुध् (४ प०, क्रुद्ध होना) क्रुध्यति, क्रुध्यतु, अक्रुध्यत्, क्रुध्येत्, क्रोत्स्यति। क्रुध्यते। (११)
क्लम् (४ प०, थकना) क्लाम्यति, क्लाम्यतु, अक्लाम्यत्, क्लाम्येत्, क्लमिष्यति। क्लम्यते। (४४)
क्लिश् (४ आ०, खिन्न होना) क्लिश्यते, क्लिश्यताम् अक्लिश्यत, क्लिश्येत, क्लेशिष्यते। क्लिश्यते। (४७)
क्लिश् (९ प०, दुःख देना) क्लिश्नाति, क्लिश्नातु, अक्लिश्नात्, क्लिश्नीयात्, क्लेशिष्यति। क्लिश्यते। (५५)

क्षम् (१ आ०, क्षमा करना) क्षमते, क्षमताम्, अक्षमत, क्षमेत, क्षमिष्यते। क्षम्यते। (१९)
क्षल् (१० उ०, धोना) प०—क्षालयति, क्षालयतु, अक्षालयत्, क्षालयेत्, क्षालयिष्यति।
आ०—क्षालयते, क्षालयताम्, अक्षालयत, क्षालयेत, क्षालयिष्यते। क्षाल्यते। (३१)
क्षिप् (६ उ०, फेंकना) क्षिपति, क्षिपतु, अक्षिपत्, क्षिपेत्, क्षेप्स्यति। क्षिप्यते। (१७, ५०)
क्षुभ् (१ आ०, क्षुब्ध होना) क्षोभते, क्षोभताम्, अक्षोभत, क्षोभेत, क्षोभिष्यते। क्षुभ्यते। (२४)
खण्ड् (१० उ०, खंडन करना) खण्डयति, खण्डयतु, अखण्डयत्, खण्डयेत्, खण्डयिष्यति।
खण्ड्यते। (३२)
खन् (१ उ०, खोदना) खनति, खनतु, अखनत्, खनेत्, खनिष्यति। खन्यते। (१४)
खाद् (१ प०, खाना) खादति, खादतु, अखादत्, खादेत्, खादिष्यति। खाद्यते। (६)
गण् (१० उ०, गिनना) गणयति, गणयतु, अगणयत्, गणयेत्, गणयिष्यति। गण्यते। (३१)
गम् (१ प०, जाना) गच्छति, गच्छतु, अगच्छत्, गच्छेत्, गमिष्यति। गम्यते। (१)
गर्ज् (१ प०, गरजना) गर्जति, गर्जतु, अगर्जत्, गर्जेत्, गर्जिष्यति। गर्ज्यते। (१५)
गर्ह् (१० उ०, निन्दा करना) गर्हयति, गर्हयतु, अगर्हयत्, गर्हयेत्, गर्हयिष्यति।
गर्ह्यते। (३३)
गवेष् (१० उ०, खोजना) गवेषयति, गवेषयतु, अगवेषयत्, गवेषयेत्, गवेषयिष्यति।
गवेष्यते। (३३)
गाह् (१ आ०, घुसना) गाहते, गाहताम्, अगाहत, गाहेत, गाहिष्यते। गाह्यते (१९)
गुप् (१ आ०, निन्दा करना) जुगुप्सते, जुगुप्सताम्, अजुगुप्सत, जुगुप्सेत, जुगुप्सिष्यते।
जुगुप्स्यते। (१३)
गॄ (६ प०, निगलना) गिरति, गिरतु, अगिरत्, गिरेत्, गरिष्यति। गीर्यते। (२७, ५०)
गै (१ प०, गाना) गायति, गायतु, अगायत्, गायेत्, गास्यति। गीयते। (८)
ग्रस् (१ आ०, खाना) ग्रसते, ग्रसताम्, अग्रसत, ग्रसेत, ग्रसिष्यते। ग्रस्यते। (२३)
ग्रह् (९ उ०, पकड़ना) प०—गृह्णाति, गृह्णातु, अगृह्णात्, गृह्णीयात्, ग्रहीष्यति।
आ०—गृह्णीते, गृह्णीताम्, अगृह्णीत, गृह्णीत, ग्रहीष्यते। गृह्यते (२७, ५६)
घट् (१ आ०, लगना) घटते, घटताम्, अघटत, घटेत, घटिष्यते। घट्यते। (२९)
घुष् (१० उ०, घोषित करना) घोषयति, घोषयतु, अघोषयत्, घोषयेत्, घोषयिष्यति।
घोष्यते। (३२)
घ्रा (१ प०, सूँघना) जिघ्रति, जिघ्रतु, अजिघ्रत्, जिघ्रेत्, घ्रास्यति। घ्रायते। (३)
चर् (१ प०, चलना) चरति, चरतु, अचरत्, चरेत्, चरिष्यति। चर्यते। (८)
चल् (१ प०, चलना) चलति, चलतु, अचलत्, चलेत्, चलिष्यति। चल्यते। (६)
चि (५ उ०, चुनना) चिनोति, चिनोतु, अचिनोत्, चिनुयात्, चेष्यति। चीयते (७)
चिन्त् (१० उ०, सोचना) प०—चिन्तयति, चिन्तयतु, अचिन्तयत्, चिन्तयेत्, चिन्तयिष्यति।
आ०—चिन्तयते, चिन्तयताम्, अचिन्तयत, चिन्तयेत, चिन्तयिष्यते। चिन्त्यते। (४)
चुर् (१० उ०, चुराना) प०—चोरयति, चोरयतु, अचोरयत्, चोरयेत्, चोरयिष्यति।
आ०—चोरयते, चोरयताम्, अचोरयत, चोरयेत, चोरयिष्यते। चोर्यते। (४)।

चेष्ट् (१ आ०, चेष्टा करना) चेष्टते, चेष्टताम्, अचेष्टत, चेष्टेत, चेष्टिष्यते। चेष्ट्-यते। (१८)।

छिद् (७ उ०, काटना) छिनत्ति, छिनत्तु, अच्छिनत्, छिन्द्यात्, छेत्स्यति। छिद्यते (५२)

जन् (४ आ०, पैदा होना) जायते, जायताम्, अजायत, जायेत, जनिष्यते। जायते। (१३, २९, ४६)

जप् (१ प०, जपना) जपति, जपतु, अजपत्, जपेत्, जपिष्यति। जप्यते। (१४)

जि (१ प०, जीतना) जयति जयतु, अजयत्, जयेत्, जेष्यति। जीयते। (३)

जीव् (१ प०, जीना) जीवति, जीवतु, अजीवत्, जीवेत्, जीविष्यति। जीव्यते। (१४)

जॄ (४ प०, वृद्ध होना) जीर्यति, जीर्यतु, अजीर्यत्, जीर्येत्, जरिष्यति। जीर्यते। (२७)

ज्ञा (९ उ०, जानना) प०—जानाति, जानातु, अजानात्, जानीयात्, ज्ञास्यति।
आ०—जानीते, जानीताम्, अजानीत, जानीत, ज्ञास्यते। ज्ञायते। (५७)

ज्वल् (१ प०, जलना) ज्वलति, ज्वलतु, अज्वलत्, ज्वलेत्, ज्वलिष्यति। ज्वल्यते। (८)

डी (४ आ०, उड़ना) डीयते, डीयताम्, अडीयत, डीयेत, डयिष्यते। डीयते। (४५)

तड् (१० उ०, पीटना) ताडयति, ताडयतु, अताडयत्, ताडयेत्, ताडयिष्यति। ताड्-यते। (३२)

तन् (८ उ०, फैलाना) प०—तनोति, तनोतु, अतनोत्, तनुयात्, तनिष्यति।
आ०—तनुते, तनुताम्, अतनुत, तन्वीत, तनिष्यते। तायते—तन्यते। (५४)

तप (१ प०, तपना) तपति, तपतु, अतपत्, तपेत्, तप्स्यति। तप्यते। (८)

तर्क् (१० उ०,सोचना) तर्कयति, तर्कयतु,अतर्कयत्,तर्कयेत्,तर्कयिष्यति। तर्क्यते। (३३)

तर्ज् (१० आ०, डाँटना) तर्जयते, तर्जयताम्, अतर्जयत, तर्जयेत, तर्जयिष्यते। तर्ज्यते। (३३)

तुद् (६ उ०, दुःख देना) तुदति-ते, तुदतु, अतुदत्, तुदेत्, तोत्स्यति। तुद्यते। (५)

तुल् (१० उ०, तोलना) तोलयति, तोलयतु, अतोलयत्, तोलयेत्, तोलयिष्यति। तोल्यते। (३२)

तुष् (४ प०, तुष्ट होना) तुष्यति, तुष्यतु, अतुष्यत्, तुष्येत्, तोक्ष्यति। तुष्यते। (४२)

तृप् (४ प०, तृप्त होना) तृप्यति, तृप्यतु, अतृप्यत्, तृप्येत्, तर्पिष्यति। तृप्यते। (४२)

तृप् (१० उ०, तृप्त करना) तर्पयति-ते, तर्पयतु, अतर्पयत्, तर्पयेत्, तर्पयिष्यति। तर्प्यते। (३२)

तॄ (१ प०, तैरना) तरति, तरतु, अतरत्, तरेत्, तरिष्यति। तीर्यते। (१०, १४)

त्यज् (१ प०, छोड़ना) त्यजति, त्यजतु, अत्यजत्, त्यजेत्, त्यक्ष्यति। त्यज्यते। (७)

त्रप् (१ आ०, लजाना) त्रपते, त्रपताम्, अत्रपत, त्रपेत, त्रपिष्यते। त्रप्यते। (१८)

त्रै (१ आ०, बचाना) त्रायते, त्रायताम्, अत्रायत, त्रायेत, त्रास्यते। त्रायते। (१२)

त्वर् (१ आ०, जल्दी करना) त्वरते, त्वरताम्, अत्वरत, त्वरेत, त्वरिष्यते। त्वर्यते (२४)

दण्ड् (१० उ०, दंड देना) दण्डयति-ते, दण्डयतु, अदण्डयत्, दण्डयेत्, दण्डयिष्यति। दण्ड्यते। (७)

दम् (४ प०, दमन करना), दाम्यति, दाम्यतु, अदाम्यत्, दाम्येत्, दमिष्यति। दम्यते। (२९, ४४)
दह् (१ प०, जलाना) दहति, दहतु, अदहत्, दहेत्, धक्ष्यति। दह्यते। (८)
दा (३ उ०, देना) प०—ददाति, ददातु, अददात्, दद्यात्, दास्यति।
आ०—दत्ते, दत्ताम्, अदत्त, ददीत, दास्यते। दीयते। (१०, ४०)
दिव् (४ प०, जुआ खेलना) दीव्यति, दीव्यतु, अदीव्यत्, दीव्येत्, देविष्यति। दीव्यते (४१)
दिश् (६ उ०, देना, कहना) दिशति-ते, दिशतु, अदिशत्, दिशेत्, देक्ष्यति। दिश्यते। (११, ५०)
दीक्ष् (१ आ०, दीक्षा देना) दीक्षते, दीक्षताम्, अदीक्षत, दीक्षेत, दीक्षिष्यते। दीक्ष्यते। (१९)
दीप् (४ आ०, चमकना) दीप्यते, दीप्यताम्, अदीप्यत, दीप्येत, दीपिष्यते। दीप्यते। (४५)
दुह् (२ उ०, दुहना) दोग्धि, दोग्धु, अधोक्, दुह्यात्, धोक्ष्यति। दुह्यते। (७, २७)
दृ (६ आ०, आदर करना) आ+, आद्रियते, आद्रियताम्, आद्रियत, आद्रियेत, आदरिष्यते। आद्रियते (१७)
दृश् (१ प०, देखना) पश्यति, पश्यतु, अपश्यत्, पश्येत्, द्रक्ष्यति। दृश्यते। (३)
द्युत् (१ आ०, चमकना) द्योतते, द्योतताम्, अद्योतत, द्योतेत, द्योतिष्यते। द्युत्यते। (१८)
द्रुह् (४ प०, द्रोह करना) द्रुह्यति, द्रुह्यतु, अद्रुह्यत्, द्रुह्येत्, द्रोहिष्यति। द्रुह्यते। (११)
धा (३ उ०, धारण करना) प०—दधाति, दधातु, अदधात्, दध्यात्, धास्यति।
आ०—धत्ते, धत्ताम्, अधत्त, दधीत, धास्यते। धीयते। (२७, ४०)
धाव् (१ उ०, दौड़ना) धावति-ते, धावतु, अधावत्, धावेत्, धाविष्यति। धाव्यते। (६)
धृ (१० उ०, पहनना, रखना) धारयति, धारयतु, अधारयत्, धारयेत् धारयिष्यति। धार्यते। (१९)
ध्यै (१ प०, ध्यान करना) ध्यायति, ध्यायतु, अध्यायत्, ध्यायेत्, ध्यास्यति। ध्यायते। (१४)
ध्वस् (१ आ०, नष्ट होना) ध्वसते, ध्वसताम्, अध्वसत, ध्वसेत, ध्वसिष्यते। ध्वस्यते। (१९)
नम् (१ प०, झुकना) नमति, नमतु, अनमत्, नमेत्, नस्यति। नम्यते। (२)
नश् (४ प०, नष्ट होना) नश्यति, नश्यतु, अनश्यत्, नश्येत्, नशिष्यति। नश्यते। (४३)
निन्द् (१ प०, निन्दा करना) निन्दति, निन्दतु, अनिन्दत्, निन्देत्, निन्दिष्यति। निन्द्यते। (१४)
नी (१ उ०, ले जाना) प०—नयति, नयतु, अनयत्, नयेत्, नेष्यति।
आ०—नयते, नयताम्, अनयत, नयेत, नेष्यते। नीयते। (७, १२, २१)
नुद् (६ उ०, प्रेरणा देना) नुदति-ते, नुदतु, अनुदत्, नुदेत्, नोत्स्यति। नुद्यते। (५०)
नृत (४ प०, नाचना) नृत्यति नृत्यतु, अनृत्यत नृत्येत्, नर्तिष्यति। नृत्यते। (४२)

पच् (१ उ०, पकाना) पचति-ते, पचतु, अपचत्, पचेत्, पक्ष्यति। पच्यते। (२)
पठ् (१ प०, पढना) पठति, पठतु, अपठत्, पठेत्, पठिष्यति। पठ्यते। (१)
पत् (१ प०, गिरना) पतति, पततु, अपतत्, पतेत्, पतिष्यति। पत्यते। (२)
पद् (४ आ०, जाना) पद्यते, पद्यताम्, अपद्यत, पद्येत, पत्स्यते। पद्यते। (४६)
पा (१ प०, पीना) पिबति, पिबतु, अपिबत्, पिबेत्, पास्यति। पीयते। (३)
पा (२ प०, रक्षा करना) पाति, पातु, अपात्, पायात्, पास्यति। पायते। (२९)
पाल् (१० उ०, रक्षा करना) पालयति-ते, पालयतु, अपालयत्, पालयेत्, पालयिष्यति। पाल्यते। (३१)
पीड् (१० उ०, दुःख देना) पीडयति-ते, पीडयतु, अपीडयत्, पीडयेत्, पीडयिष्यति। पीड्यते। (३१)
पुष् (४ प०, पुष्ट करना) पुष्यति, पुष्यतु, अपुष्यत्, पुष्येत्, पोक्ष्यति। पुष्यते। (३२, ४२)
पॄ (१० उ०, पालना) पारयति-ते, पारयतु, अपारयत्, पारयेत्, पारयिष्यति। पार्यते। (२७)
प्रच्छ् (६ प०, पूछना) पृच्छति, पृच्छतु, अपृच्छत्, पृच्छेत्, प्रक्ष्यति। पृच्छ्यते। (५)
प्रथ् (१ आ०, फैलना) प्रथते, प्रथताम्, अप्रथत, प्रथेत, प्रथिष्यते। प्रथ्यते। (२४)
प्र + ईर् (१० उ०, प्रेरणा देना) प्रेरयति, प्रेरयतु, प्रैरयत्, प्रेरयेत्, प्रेरयिष्यति। प्रेर्यते। (३१) [(२७, ५५)
बन्ध् (९ प०, बाँधना) बध्नाति, बध्नातु, अबध्नात्, बध्नीयात्, भन्त्स्यति। बध्यते।
बाध् (१ आ०, पीडा देना) बाधते, बाधताम्, अबाधत, बाधेत, बाधिष्यते। बाध्यते (२३)
बुध् (४ आ०, जानना) बुध्यते, बुध्यताम्, अबुध्यत, बुध्येत, भोत्स्यते। बुध्यते। (२९)
ब्रू (२ उ० बोलना) ब्रवीति, ब्रवीतु, अब्रवीत्, ब्रूयात्, वक्ष्यति। उच्यते। (७, २५)
भक्ष् (१० उ०, खाना) प०—भक्षयति, भक्षयतु, अभक्षयत्, भक्षयेत्, भक्षयिष्यति। आ०—भक्षयते, भक्षयताम्, अभक्षयत, भक्षयेत, भक्षयिष्यते। भक्ष्यते (४)
भज् (१ उ०, सेवा करना) भजति-ते, भजतु, अभजत्, भजेत्, भक्ष्यति। भज्यते। (११, २७)
भा (२ प०, चमकना) भाति, भातु, अभात्, भायात्, भास्यति। भायते (२९)
भाष् (१ आ०, बोलना) भाषते, भाषताम्, अभाषत, भाषेत, भाषिष्यते। भाष्यते। (१६)
भास् (१ आ०, चमकना) भासते, भासताम्, अभासत, भासेत, भासिष्यते। भास्यते (१९)
भिक्ष् (१ आ०, माँगना) भिक्षते, भिक्षताम्, अभिक्षत, भिक्षेत, भिक्षिष्यते। भिक्ष्यते (१६)
भिद् (७ उ०, तोडना) भिनत्ति, भिनत्तु, अभिनत्, भिन्द्यात्, भेत्स्यति। भिद्यते। (५२)
भी (३ प०, डरना) बिभेति, बिभेतु, अबिभेत्, बिभीयात्, भेष्यति। भीयते। (१२)
भुज् (७ उ०, पालना) प०—भुनक्ति, भुनक्तु, अभुनक्, भुञ्ज्यात्, भोक्ष्यति।
(७ आ०, खाना) आ०—भुङ्क्ते, भुङ्क्ताम्, अभुङ्क्त, भुञ्जीत, भोक्ष्यते। भुज्यते। (२८, ५३)
भू (१ प०, होना) भवति, भवतु, अभवत्, भवेत् भविष्यति। भूयते। (१)

भृ (१ उ०, पालन करना)भरति-ते, भरतु, अभरत् , भरेत् , भरिष्यति । भ्रियते । (१५)
भ्रम् (१ प०, घूमना) भ्रमति, भ्रमतु, अभ्रमत् , भ्रमेत् , भ्रमिष्यति । भ्रम्यते । (७)
भ्रम् (४ प०, घूमना) भ्राम्यति, भ्राम्यतु, अभ्राम्यत् , भ्राम्येत् , भ्रमिष्यति । भ्रम्यते ।(४४)
भ्रश् (१ आ०, गिरना) भ्रशते, भ्रशताम् , अभ्रशत, भ्रशेत, भ्रशिष्यते । भ्रश्यते । (२४)
भ्राज् (१ आ०, चमकना) भ्राजते, भ्राजताम् , अभ्राजत, भ्राजेत् , भ्राजिष्यते । भ्राज्यते । (२४)
मण्ड् (१० उ०, मडन करना) मण्डयति, मण्डयतु, अमण्डयत् , मण्डयेत् , मण्डयिष्यति । मण्ड्यते । (३२)
मथ् (१ प०, मथना) मथति, मथतु, अमथत् , मथेत् , मथिष्यति । मथ्यते (७)
मद् (४ प०, खुश होना) माद्यति, माद्यतु, अमाद्यत् , माद्येत् , मदिष्यति । मद्यते ।(१३)
मन् (४ आ०, मानना) मन्यते, मन्यताम् , अमन्यत, मन्येत, मस्यते । मन्यते (४६)
मन्त्र् (१० आ०, मत्रणा करना) मन्त्रयते, मन्त्रयताम् , अमन्त्रयत, मन्त्रयेत, मन्त्रयिष्यते । मन्त्र्यते । (परस्मै०) मन्त्रयति, मन्त्रयतु, अमन्त्रयत् , मन्त्रयेत् , मन्त्रयिष्यति । (३३)
मन्थ् (९ प०, मथना) मथ्नाति, मथ्नातु, अमथ्नात् , मथ्नीयात् , मन्थिष्यति । मथ्यते । (२७, ५५)
मा (२ प०, नापना) माति, मातु, अमात् , मायात् , मास्यति । मीयते । (२७)
मुच् (६ उ०, छोडना) प०—मुञ्चति, मुञ्चतु, अमुञ्चत् , मुञ्चेत् , मोक्ष्यति ।
आ०—मुञ्चते, मुञ्चताम् , अमुञ्चत, मुञ्चेत, मोक्ष्यते । मुच्यते (१७, ५१)
मुद् (१ आ०, खुश होना) मोदते, मोदताम् , अमोदत, मोदेत, मोदिष्यते । मुद्यते ।(१६)
मुष् (९ प०, चुराना) मुष्णाति, मुष्णातु, अमुष्णात् , मुष्णीयात् , मोषिष्यति । मुष्यते । (७, ५५)
मुह् (४ प०, मुग्ध होना) मुह्यति, मुह्यतु, अमुह्यत् , मुह्येत् , मोहिष्यति । मुह्यते । (४३)
मूर्च्छ् (१ प०, मूर्छित होना) मूर्च्छति, मूर्च्छतु, अमूर्च्छत् , मूर्च्छेत् , मूर्च्छिष्यति । मूर्च्छ्यते । (१५)
मृ (६ आ०, मरना) म्रियते, म्रियताम् , अम्रियत , म्रियेत, मरिष्यति । म्रियते । (५०)
म्लै (१ प०, मुरझाना) म्लायति, म्लायतु, अम्लायत् , म्लायेत् , म्लास्यति । म्लायते । (३१)
यज् (१ उ०, यज्ञ करना) यजति-ते, यजतु, अयजत् , यजेत् , यक्ष्यति । इज्यते । (२७)
यत् (१ आ०, यत्न करना) यतते, यतताम् , अयतत, यतेत, यतिष्यते । यत्यते । (१६)
या (२ प०, जाना) याति, यातु, अयात् , यायात् , यास्यति । यायते । (२९)
याच् (१ उ०, माँगना) प०—याचति, याचतु, अयाचत् , याचेत् , याचिष्यति ।
आ०—याचते, याचताम् , अयाचत, याचेत, याचिष्यते । याच्यते । (७)
यापि (या + णिच् , प०, बिताना) यापयति, यापयतु, अयापयत् , यापयेत् , यापयिष्यति । याप्यते । (२९)

युज् (१० उ०, लगाना) योजयति, योजयतु, अयोजयत्, योजयेत्, योजयिष्यति। योज्यते। (३१)

युध् (४ आ०, लड़ना) युध्यते, युध्यताम्, अयुध्यत, युध्येत, योत्स्यते। युध्यते। (४५)

रक्ष् (१ प०, रक्षा करना) रक्षति, रक्षतु, अरक्षत्, रक्षेत्, रक्षिष्यति। रक्ष्यते। (२)

रच् (१० उ०, बनाना) रचयति-ते, रचयतु, अरचयत्, रचयेत्, रचयिष्यति। रच्यते। (३१)

रञ्ज् (४ उ०, खुश होना) रज्यति ते, रज्यतु, अरज्यत्, रज्येत्, रङ्क्ष्यति। रज्यते। (४२)

रम् (१ आ०, रमना) रमते, रमताम्, अरमत, रमेत, रंस्यते। रम्यते। (१६)

(वि+रम्, पर०) विरमति, विरमतु, व्यरमत्, विरमेत्, विरंस्यति। (१३)

राज् (१ उ०, चमकना) प०—राजति, राजतु, अराजत्, राजेत्, राजिष्यति। आ०—राजते, राजताम्, अराजत, राजेत, राजिष्यते। राज्यते। (२३)

रुच् (१ आ०, अच्छा लगना) रोचते, रोचताम्, अरोचत, रोचेत, रोचिष्यते। रुच्यते। (११)

रुद् (२ प०, रोना) रोदिति, रोदितु, अरोदीत्, रुद्यात्, रोदिष्यति। रुद्यते। (२६)

रुध् (७ उ०, रोकना) प०—रुणद्धि, रुणद्धु, अरुणत्, रुन्ध्यात्, रोत्स्यति। आ०—रुन्धे, रुन्धाम्, अरुन्ध, रुन्धीत, रोत्स्यते। रुध्यते। (७, ५२)

रुह् (१ प०, उगना) रोहति, रोहतु, अरोहत्, रोहेत्, रोक्ष्यति। रुह्यते। (७)

लघ् (१ आ०, लाँघना) लघते, लघताम्, अलघत, लघेत, लघिष्यते। लघ्यते। (२३)

लप् (१ प०, बोलना) लपति, लपतु, अलपत्, लपेत्, लपिष्यति। लप्यते। (१४)

लभ् (१ आ०, पाना) लभते, लभताम्, अलभत, लभेत, लप्स्यते। लभ्यते (१६)

लम्ब् (१ आ०, लटकना) लम्बते, लम्बताम्, अलम्बत, लम्बेत, लम्बिष्यते। लम्ब्यते। (१९)

लष् (१ उ०, चाहना) लषति-ते, लषतु, अलषत्, लषेत्, लषिष्यति। लष्यते। (१४)

लिख् (६ प०, लिखना) लिखति, लिखतु, अलिखत्, लिखेत्, लेखिष्यति। लिख्यते। (१)

लिप् (६ उ०, लीपना) लिम्पति-ते, लिम्पतु, अलिम्पत्, लिम्पेत्, लेप्स्यति। लिप्यते। (५१)

ली (४ आ०, लीन होना) लीयते, लीयताम्, अलीयत, लीयेत, लेष्यते। लीयते। (१३)

लुप् (६ उ०, नष्ट करना) लुम्पति-ते, लुम्पतु, अलुम्पत्, लुम्पेत्, लोप्स्यति। लुप्यते। (५१)

लुभ् (४ प०, लोभ करना) लुभ्यति, लुभ्यतु, अलुभ्यत्, लुभ्येत्, लोभिष्यति। लुभ्यते। (४४)

लोक् (१० उ०, देखना) लोकयति-ते, लोकयतु, अलोकयत्, लोकयेत्, लोकयिष्यति। [लोक्यते। (३२)

लोच् (१० उ०, देखना) लोचयति-ते, लोचयतु, अलोचयत्, लोचयेत्, लोचयिष्यति। लोच्यते। (३२)

वद् (१ प०, बोलना) वदति, वदतु, अवदत्, वदेत्, वदिष्यति। उद्यते। (२)

वन्द् (१ आ०, प्रणाम करना) वन्दते, वन्दताम्, अवन्दत, वन्देत, वन्दिष्यते। वन्द्यते। (१६)

वप् (१ उ०, बोना) वपति-ते, वपतु, अवपत्, वपेत्, वप्स्यति। उप्यते। (२७, ४९)
वस् (१ प०, रहना) वसति, वसतु, अवसत्, वसेत्, वत्स्यति। उष्यते। (७)
वह (१ उ०, ढोना) वहति-ते, वहतु, अवहत्, वहेत्, वक्ष्यति। उह्यते (७)
वा (२ प०, हवा चलना) वाति, वातु, अवात्, वायात्, वास्यति। वायते। (२९)
विद् (२ प०, जानना) वेत्ति, वेत्तु, अवेत्, विद्यात्, वेदिष्यति। विद्यते। (२९)
विद् (४ आ० होना) विद्यते, विद्यताम्, अविद्यत, विद्येत, वेत्स्यते। विद्यते। (४६)
विद् (६ उ०, पाना) विन्दति-ते, विन्दतु, अविन्दत्, विन्देत्, वेदिष्यति। विद्यते (५१)
विद् (१० आ०, कहना) वेदयते, वेदयताम्, अवेदयत, वेदयेत, वेदयिष्यते। वेद्यते। (११)
विश् (६ प०, घुसना) विशति, विशतु, अविशत्, विशेत्, वेक्ष्यति। विश्यते। (२८)
वृ (५ उ०, चुनना) वृणोति, वृणोतु, अवृणोत्, वृणुयात्, वरिष्यति। व्रियते। (२७)
वृत् (१ आ०, होना) वर्तते, वर्तताम्, अवर्तत, वर्तेत, वर्तिष्यते। वृत्यते। (१६)
वृध् (१ आ०, बढना) वर्धते, वर्धताम्, अवर्धत, वर्धेत, वर्धिष्यते। वृध्यते (१६)
वृष् (१ प०, बरसना) वर्षति, वर्षतु, अवर्षत्, वर्षेत्, वर्षिष्यति। वृष्यते। (८)
वे (१ उ०, बुनना) वयति-ते, वयतु, अवयत्, वयेत्, वास्यति। ऊयते (१५)
वेप् (१ आ०, कॉपना) वेपते, वेपताम्, अवेपत, वेपेत, वेपिष्यते। वेप्यते। (१८)
व्यथ् (१ आ०, दुःखित होना) व्यथते, व्यथताम्, अव्यथत, व्यथेत, व्यथिष्यते।
व्यथ्यते। (१९)
व्यध् (४ प०, बीधना) विध्यति, विध्यतु, अविध्यत्, विध्येत्, व्यत्स्यति। विध्यते। (४२)
शक् (५ प०, सकना) शक्नोति, शक्नोतु, अशक्नोत्, शक्नुयात्, शक्ष्यति। शक्यते। (४९)
शङ्क् (१ आ०, शंका करना) शङ्कते, शङ्कताम्, अशङ्कत, शङ्केत, शङ्किष्यते। शङ्क्यते।
(१९)
शप् (१ उ०, शाप देना) शपति-ते, शपतु, अशपत्, शपेत्, शप्स्यति। शप्यते। (२७)
शम् (४ प०, शान्त होना) शाम्यति, शाम्यतु, अशाम्यत्, शाम्येत्, शमिष्यति। शम्यते।
(२९, ४४)
शास् (२ प०, शिक्षा देना) शास्ति, शास्तु, अशात्, शिष्यात्, शासिष्यति। शिष्यते। (७)
शिक्ष् (१ आ०, सीखना) शिक्षते, शिक्षताम्, अशिक्षत, शिक्षेत, शिक्षिष्यते। शिक्ष्यते।
(१६)
शी (२ आ०, सोना) शेते, शेताम्, अशेत, शयीत, शयिष्यते। शय्यते। (६, ३७)
शुच् (१ प०, शोक करना) शोचति, शोचतु, अशोचत्, शोचेत्, शोचिष्यति। शुच्यते। (१४)
शुध् (४ प०, शुद्ध होना) शुध्यति, शुध्यतु, अशुध्यत्, शुध्येत्, शोत्स्यति। शुध्यते। (४२)
शुभ् (१ आ०, अच्छा लगना) शोभते, शोभताम्, अशोभत, शोभेत, शोभिष्यते।
शुभ्यते। (१६)
शुष् (४ प०, सूखना) शुष्यति, शुष्यतु, अशुष्यत्, शुष्येत्, शोक्ष्यति। शुष्यते। (४२)
शॄ (९ प०, नष्ट करना) शृणाति, शृणातु, अशृणात्, शृणीयात्, शरिष्यति। शीर्यते। (२७)
श्रि (१ उ०, आश्रय लेना) श्रयति-ते, श्रयतु, अश्रयत्, श्रयेत्, श्रयिष्यति। श्रीयते। (१५)

श्रु (१ प०, सुनना) शृणोति, शृणोतु, अशृणोत्, शृणुयात्, श्रोष्यति। श्रूयते। (२८,४९)

श्लिष् (४ प०, आलिंगन करना) श्लिष्यति, श्लिष्यतु, अश्लिष्यत्, श्लिष्येत्, श्लेषिष्यति। श्लिष्यते (३१, ४२)

श्वस् (२ प०, साँस लेना) श्वसिति, श्वसितु, अश्वसीत्, श्वस्यात्, श्वसिष्यति। [श्वस्यते। (१७)

सद् (१ प०, बैठना) सीदति, सीदतु, असीदत्, सीदेत्, सत्स्यति। सद्यते। (३)

सह् (१ आ०, सहना) सहते, सहताम्, असहत, सहेत, सहिष्यते। सह्यते। (१६)

सान्त्व् (१० उ०, धैर्य बँधाना) सान्त्वयति, सान्त्वयतु, असान्त्वयत्, सान्त्वयेत्, सान्त्वयिष्यति। सान्त्व्यते। (३२) [(५१)

सिच् (६ उ०, सींचना) सिञ्चति-ते, सिञ्चतु, असिञ्चत्, सिञ्चेत्, सेक्ष्यति। सिच्यते।

सिव् (४ प०, सीना) सीव्यति, सीव्यतु, असीव्यत्, सीव्येत्, सेविष्यति। सीव्यते। (४९)

सु (५ उ०, निचोडना) प०—सुनोति, सुनोतु, असुनोत्, सुनुयात्, सोष्यति।
आ०—सुनुते, सुनुताम्, असुनुत, सुन्वीत, सोष्यते। सूयते (४७)

सृ (१ प०, चलना) सरति, सरतु, असरत्, सरेत्, सरिष्यति। स्रियते। (१५)

सृज् (६ प०, बनाना) सृजति, सृजतु, असृजत्, सृजेत्, स्रक्ष्यति। सृज्यते। (५०)

सेव् (१ आ०, सेवा करना) सेवते, सेवताम्, असेवत, सेवेत, सेविष्यते। सेव्यते। (१६)

सो (४ प०, नष्ट होना) स्यति, स्यतु, अस्यत्, स्येत्, सास्यति। सीयते। (२७)

स्तु (२ उ०, स्तुति करना) स्तौति, स्तौतु, अस्तौत्, स्तुयात्, स्तोष्यति। स्तूयते। (२७)

स्था (१ प०, रुकना) तिष्ठति, तिष्ठतु, अतिष्ठत्, तिष्ठेत्, स्थास्यति। स्थीयते। (३, ६)

स्ना (२ प०, नहाना) स्नाति, स्नातु, अस्नात्, स्नायात्, स्नास्यति। स्नायते। (२९)

स्निह् (४ प०, स्नेह करना) स्निह्यति, स्निह्यतु, अस्निह्यत्, स्निह्येत्, स्नेहिष्यति। स्निह्यते। (१७)

स्पन्द् (१ आ०, हिलना) स्पन्दते, स्पन्दताम्, अस्पन्दत, स्पन्देत, स्पन्दिष्यते। स्पन्द्यते। (२४) [(१८)

स्पर्ध् (१ आ०, स्पर्धा करना) स्पर्धते, स्पर्धताम्, अस्पर्धत, स्पर्धेत, स्पर्धिष्यते। स्पर्ध्यते।

स्पृश् (६ प०, छूना) स्पृशति, स्पृशतु, अस्पृशत्, स्पृशेत्, स्पर्क्ष्यति। स्पृश्यते। (५)

स्पृह् (१० उ०, चाहना) स्पृहयति, स्पृहयतु, अस्पृहयत्, स्पृहयेत्, स्पृहयिष्यति। स्पृह्यते। (११)

स्मृ (१ प०, सोचना) स्मरति, स्मरतु, अस्मरत्, स्मरेत्, स्मरिष्यति। स्मर्यते। (३)

स्रस् (१ आ०, गिरना) स्रसते, स्रसताम्, अस्रसत, स्रसेत, स्रसिष्यते। स्रस्यते। (१९)

स्वद् (१० उ०, स्वाद लेना) आ +, आस्वादयति, आस्वादयतु, आस्वादयत्, आस्वादयेत्, आस्वादयिष्यति। आस्वाद्यते। (३३)

स्वप् (२ प०, सोना) स्वपिति, स्वपितु, अस्वपत्, स्वप्यात्, स्वप्स्यति । सुप्यते । (२८)
हन् (२ प०, मारना) हन्ति, हन्तु, अहन्, हन्यात्, हनिष्यति । हन्यते । (२९)
हस् (१ प०, हसना) हसति, हसतु, अहसत्, हसेत्, हसिष्यति । हस्यते । (१)
हा (३ प०, छोडना) जहाति, जहातु, अजहात्, जह्यात्, हास्यति । हीयते । (२७)
हु (३ प०, यज्ञ करना) जुहोति, जुहोतु, अजुहोत्, जुहुयात्, होष्यति । हूयते । (२७)
हृ (१ उ०, ले जाना, चुराना) प०—हरति, हरतु, अहरत्, हरेत्, हरिष्यति ।
आ०—हरते, हरताम्, अहरत, हरेत, हरिष्यते । ह्रियते । (७, २१)
हृष् (४ प०, खुश होना) हृष्यति हृष्यतु, अहृष्यत्, हृष्येत्, हर्षिष्यति । हृष्यते । (४४)
ह्वे (१ उ०, बुलाना) आ+, आह्वयति, आह्वयतु, आह्वयत्, आह्वयेत्, आह्वयिष्यति ।
आहूयते । (१४)

(१) अकर्मक धातुएँ

लज्जासत्तास्थितिजागरणं, वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् ।
शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्थं, धातुगणं तमकर्मकमाहुः ॥

इन अर्थो वाली धातुएँ अकर्मक (कर्म-रहित) होती हैं —लज्जा, होना, रुकना या बैठना, जागना, बढना, घटना, डरना, जीना, मरना, सोना, खेलना, चाहना, चमकना ।

(२) अनिट् धातुएँ (जिनमे बीच मे इ नही लगता)

ऊ ऋदन्त औ' शी श्रि डी को छोडकर एकाच् सब ।
शक् पच् वच मुच् सिच् प्रच्छ् त्यज् भज्, भुज् यज सृज् मस्ज युज ॥
अद् पद्य खिद् छिद् विद्य तुद् नुद्, भिद् सद क्रुध् क्षुध् बुध ।
बन्ध् युध् रुध् राध् व्यध् शुध् सिध् मन्य हन् क्षिप् आप् तप ॥१॥
तृप्य दृप् लिप् लुप् वप स्वप्, शप् सृप रभ् लभ् गम ।
नम् यम् रम क्रुश् दंश् दिश् दृश्, मृश् विश स्पृश् पुष्य दुष ॥
कृष्, तुष्, द्विष, श्लिष् शुष्य शिष् वस्, दह् दिह् लिह औ' रुह वह ।
धातु ये सब अनिट् है, परिगणन इनका है यह ॥२॥

सूचना—अन्त्याक्षरो के क्रम से ये धातुएँ पद्यबद्ध है । दिवादिगणी धातुओ मे, इस प्रकार की अन्य धातुओ से अन्तर के लिए, अन्त मे य लगा है । पहले क् अन्तवाली शक् धातु, बाद मे च् अन्तवाली, इसी प्रकार क्रमशः धातुएँ है । अजन्त धातुओ मे ऊकारान्त और दीर्घ ऋकारान्त तथा शी श्रि डी धातु सेट् है, शेष अनिट् है, जैसे चि, जि, कृ, हृ, धृ, भृ, आदि । केवल विशेष प्रचलित धातुओ का ही सग्रह है । अप्रचलित ३० धातुओ का सग्रह नही है ।

(५) प्रत्यय-विचार

(१) क्त (२) क्तवतु प्रत्यय (देखो अभ्यास ३१, ३२, ३३)

सूचना—क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में होते हैं। क्त का त और क्तवतु का तवत् शेष रहता है। क्त कर्मवाच्य या भाववाच्य में होता है, क्तवतु कर्तृवाच्य में। धातु को गुण, वृद्धि नहीं होती है। सम्प्रसारण होता है। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास ३१-३३। क्त प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में रामवत्, स्त्रीलिंग में आ लगाकर रमावत् और नपुंसक लिंग में गृहवत् चलेंगे। यहाँ केवल पुंलिंग के रूप ही दिए गए हैं। क्त प्रत्ययान्त का क्तवतु प्रत्ययान्त रूप बनाने का सरल प्रकार यह है कि क्त प्रत्ययान्त के बाद में 'वत्' और जोड दो। अभ्यास ३३ में दिए नियमानुसार तीनों लिंगों में रूप चलाओ। **प्रत्यय-विचार में आगे सर्वत्र धातुएँ अन्तिम अक्षर के अकारादिक्रम में दी गई हैं।**

घ्रा	घ्रात.	प्र + हि	प्रहित	वे	उत	याच्	याचित
	घ्राण.	क्री	क्रीत	आह्वे	आहूत	रच्	रचित
ज्ञा	ज्ञात	उत् + डी	उड्डीन	गै	गीत	रुच्	रुचित
दा	दत्त	नी	नीत	त्रै	त्रात.	वच्	उक्त.
धा	हित	भी	भीत	व्यै	व्यात	शुच्	शुचित
ध्मा	ध्मात.	शी	शयित	दो	दितः	सिच्	सिक्त
पा	पीत	श्रु	श्रुत	सो	सित.	प्रच्छ्	पृष्ट
मा	मित	स्तु	स्तुत	गद्	गत्त.	मूर्च्छ्	मूर्च्छित
या	यातः	ब्रू	उक्त	शक्	शकित	गर्ज्	गर्जितः
वा	वात.	भू	भूतः	ईक्ष्	ईक्षित	त्यज्	त्यक्त
स्था	स्थित	कृ	कृत	भक्ष्	भक्षित	पूज्	पूजितः
स्ना	स्नात.	वृ	वृत	रक्ष्	रक्षितः	भज्	भक्तः
हा (३५०)	हीन.	भृ	भृत	शिक्ष्	शिक्षित	भञ्ज्	भग्नः
अधि + इ	अधीत	हृ	हृत.	लिख्	लिखित.	भुज्	भुक्तः
इ	इत	कॄ	कीर्ण.	अर्च्	अर्चित	मृज्	मृष्ट
क्षि	क्षीण	गॄ	गीर्ण	पच्	पक्व	यज्	इष्ट.
चि	चित.	जॄ	जीर्ण	मुच्	मुक्त	युज्	युक्त
जि	जितः	पॄ	पूर्ण.			रञ्ज्	रक्तः
श्रि	श्रितः	शॄ	शीर्ण				

सृज	सृष्ट
चेष्ट्	चेष्टितः
पठ्	पठितः
क्रीड्	क्रीडितः
दण्ड्	दण्डितः
गण्	गणितः
भण	भणितः
चिन्त्	चिन्तितः
द्युत्	द्योतितः
नृत्	नृत्तः
पत्	पतितः
यत्	यतितः
वृत्	वृत्तः
कथ्	कथितः
प्रथ्	प्रथितः
मन्थ्	मन्थितः
व्यथ्	व्यथितः
अद्	जग्धः (अन्नम्)
कूर्द्	कूर्दितः
क्रन्द्	क्रन्दितः
खाद्	खादितः
छिद्	छिन्नः
निन्द्	निन्दितः
पद्	पन्नः
भिद्	भिन्नः
मद्	मत्तः
मुद्	मुदितः

रुद्	रुदितः
वद्	उदितः
वन्द्	वन्दितः
विद् (२५)	विदितः
विद् (१०)	वेदितः
सद्	सन्नः
क्रुध्	क्रुद्धः
बन्ध्	बद्धः
बुध्	बुद्धः
युध्	युद्धः
रुध्	रुद्धः
वृध्	वृद्धः
व्यध्	विद्धः
साध्	साधितः
सिध्	सिद्धः
खन्	खातः
जन्	जातः
तन्	ततः
मन्	मतः
सन्	सातः
हन्	हतः
आप्	आप्तः
कम्प्	कम्पितः
कुप्	कुपितः
क्षिप्	क्षिप्तः
तप्	तप्तः
तृप्	तृप्तः
दीप्	दीप्तः
वप्	उप्तः

शप्	शप्तः
स्वप्	सुप्तः
आलम्ब्	आलम्बितः
क्षुभ्	क्षुब्धः
आरभ्	आरब्धः
लभ्	लब्धः
लुभ	लुब्धः
शुभ्	शोभितः
कम	कान्तः
क्रम्	क्रान्तः
गम्	गतः
दम्	दान्तः
नम्	नतः
भ्रम्	भ्रान्तः
यम्	यत
रम्	रतः
शम्	शान्तः
पलाय्	पलायितः
दय्	दयितः
चर्	चरितः
चुर्	चोरितः
प्रेर्	प्रेरितः
चल्	चलितः
ज्वल्	ज्वलितः
पाल्	पालितः
मिल्	मिलितः
जीव्	जीवितः
दिव्	द्यूनः, द्यूतः
धाव्	धावितः
सिव्	स्यूतः
सेव्	सेवित

दश्	दष्टः
दिश्	दिष्टः
दृश्	दृष्टः
नश्	नष्टः
विश्	विष्टः
स्पृश्	स्पृष्टः
इष्	इष्टः
कृष्	कृष्टः
तुष्	तुष्टः
पुष्	पुष्ट
भाष	भाषितः
लष्	लषितः
शुष्	शुष्कः
श्लिष्	श्लिष्टः
हृष्	हृष्ट
अस्	भूतः
विकस्	विकसितः
ग्रस्	ग्रस्तः
ध्वस्	ध्वस्तः
वस्	उषित
शास्	शिष्ट
हस्	हसितः
ग्रह्	गृहीतः
दह्	दग्धः
दुह्	दुग्धः
मुह्	मुग्धः, मूढः
रुह्	रूढः
लिह्	लीढः
वह्	ऊढः
सह्	सोढः
स्निह्	स्निग्धः

(३) शतृ प्रत्यय (देखो अभ्यास ३४)

सूचना—परस्मैपदी धातुओं को लट् के स्थान पर शतृ होता है। शतृ का अत् शेष रहता है। पुलिंग में पठत् के तुल्य, स्त्रीलिंग में ई लगाकर नदी के तुल्य और नपुंसक लिंग में जगत् के तुल्य रूप चलेंगे। यहाँ पर केवल पुलिंग के रूप दिए हैं। रूप बनाने के नियमों के लिए देखो अभ्यास ३४। **धातुएँ अन्त्याक्षरानुसार दी गई हैं।**

घ्रा	जिघ्रन्	भक्ष्	भक्षयन्	भिद्	भिन्दन्	पाल्	पालयन्
पा (१५०)	पिबन्	रक्ष्	रक्षन्	रुद्	रुदन्	मिल्	मिलन्
स्था	तिष्ठन्	लिख्	लिखन्	वद्	वदन्	जीव्	जीवन्
इ	यन्	अर्च्	अर्चन्	सद्	सीदन्	दिव्	दीव्यन्
चि	चिन्वन्	रच्	रचयन्	क्रुध्	क्रुध्यन्	धाव्	धावन्
जि	जयन्	सिच्	सिचन्	बन्ध्	बध्नन्	सिव्	सीव्यन्
श्रि	श्रयन्	प्रच्छ्	पृच्छन्	व्यध्	विध्यन्	दिश्	दिशन्
श्रु	शृण्वन्	गर्ज्	गर्जन्	खन्	खनन्	दृश्	पश्यन्
स्तु	स्तुवन्	त्यज्	त्यजन्	हन्	हनन्	नश्	नश्यन्
हु	जुह्वत्	पूज्	पूजयन्	आप्	आप्नुवन्	विश्	विशन्
भू	भवन्	भज्	भजन्	कुप्	कुप्यन्	स्पृश्	स्पृशन्
धृ	धरन्	सृज्	सृजन्	क्षिप्	क्षिपन्	इष्	इच्छन्
भृ	भरन्	पठ्	पठन्	जप्	जपन्	कृष्	कर्षन्
सृ	सरन्	क्रीड्	क्रीडन्	तप्	तपन्	तुष्	तुष्यन्
स्मृ	स्मरन्	दण्ड्	दण्डयन्	सृप्	सर्पन्	लष्	लषन्
कॄ	किरन्	गण्	गणयन्	स्वप्	स्वपन्	वृष्	वर्षन्
गॄ	गिरन्	नृत्	नृत्यन्	क्रम्	क्राम्यन्	अस्	सन्
तॄ	तरन्	पत्	पतन्	क्षम्	क्षाम्यन्	वस्	वसन्
आह्वे	आह्वयन्	अद्	अदन्	गम्	गच्छन्	हस्	हसन्
गै	गायन्	क्रन्द्	क्रन्दन्	नम्	नमन्	दह्	दहन्
ध्यै	ध्यायन्	खाद्	खादन्	भ्रम्	भ्रमन्, भ्राम्यन्	दुह्	दुहन्
शक्	शक्नुवन्	छिद्	छिन्दन्	चर्	चरन्	आरुह्	आरोहन्
		तुद्	तुदन्	प्रेर्	प्रेरयन्	लिह्	लिहन्
		निन्द्	निन्दन्	चल्	चलन्	वह्	वहन्
				ज्वल्	ज्वलन्		

(४) शानच् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३५)

सूचना—आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शानच् होता है। उभयपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शतृ और शानच् दोनों होते हैं। शानच् का आन शेष रहता है। शानच् प्रत्ययान्त के रूप पु० में रामवत्, स्त्री० में आ लगाकर रमावत् और नपु० में गृहवत् चलेंगे। यहाँ पर पुंलिंग के ही रूप दिए हैं। धातुएँ अन्त्याक्षरानुसार दी गई हैं।

आत्मनेपदी धातुएँ				उभयपदी धातुएँ		
अधि + इ	अधीयानः	बाध्	बाधमानः	ज्ञा	जानन्	जानानः
उड्डी	उड्डयमानः	युध्	युध्यमानः	दा	ददत्	ददानः
शी	शयानः	वृध्	वर्धमानः	धा	दधत्	दधानः
मृ	म्रियमाणः	जन्	जायमानः	क्री	क्रीणन्	क्रीणानः
त्रै	त्रायमाणः	मन्	मन्यमानः	नी	नयन्	नयमानः
शक्	शकमानः	कम्प्	कम्पमानः	सु	सुन्वन्	सुन्वानः
ईक्ष्	ईक्षमाणः	आलम्ब्	आलम्बमानः	ब्रू	ब्रुवन्	ब्रुवाणः
भिक्ष्	भिक्षमाणः	आरभ्	आरभमाणः	कृ	कुर्वन्	कुर्वाणः
शिक्ष्	शिक्षमाणः	लभ्	लभमानः	हृ	हरन्	हरमाणः
याच्	याचमानः	शुभ्	शोभमानः	पच्	पचन्	पचमानः
रुच्	रोचमानः	पलाय्	पलायमानः	मुच्	मुञ्चन्	मुञ्चमानः
शुच्	शोचमानः	दय्	दयमानः	भुज्	भुञ्जन्	भुञ्जान
विराज्	विराजमानः	त्वर्	त्वरमाणः	यज्	यजन्	यजमानः
चेष्ट्	चेष्टमानः	सेव्	सेवमानः	चिन्त्	चिन्तयन्	चिन्तयमानः
द्युत्	द्योतमानः	आस्	आसीनः	कथ्	कथयन्	कथयमानः
यत्	यतमानः	ग्रस्	ग्रसमानः	रुध्	रुन्धन्	रुन्धानः
वृत्	वर्तमानः	ध्वस्	ध्वसमानः	तन्	तन्वन्	तन्वानः
प्रथ्	प्रथमानः	भास्	भासमानः	चुर्	चोरयन्	चोरयमाण
व्यथ्	व्यथमान	ईह्	ईहमानः	ग्रह्	गृह्णन्	गृह्णानः
कूर्द्	कूर्दमानः	गाह्	गाहमानः	वह्	वहन्	वहमानः
सपद्	सपद्यमानः	सह्	सहमानः			
मुद्	मोदमानः					
वन्द्	वन्दमानः					

(५) तुमुन् (६) तव्यत् (७) तृच् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३६, ३९, ४२)

सूचना—(क) तुमुन् प्रत्यय 'को' 'के लिए' अर्थ मे होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। तुमुन् प्रत्ययान्त अव्यय होता है, अतः रूप नही चलते। धातु को गुण होता है। विशेष नियमो के लिए देखो अभ्यास ३६। (ख) तव्यत् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् प्रत्यय वाले रूप मे तुम् के स्थान पर तव्य लगा दो। तव्यत् प्रत्यय 'चाहिये' अर्थ मे होता है। तव्यत् का तव्य शेष रहता है। पु० मे तव्य प्रत्ययान्त के रूप मे रामवत्, स्त्री० मे आ लगाकर रमावत्, नपु० मे गृहवत् चलेंगे। विशेष नियमो के लिए देखो अभ्यास ३९। (ग) तृच् प्रत्यय कर्ता या 'वाला' अर्थ मे होता है। तृच् का तृ शेष रहता है। तृच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् प्रत्यय वाले रूप मे तुम् के स्थान पर तृ लगा दो। तृच् प्रत्ययान्त के रूप पु० मे कर्तृ के तुल्य, स्त्री० मे ई लगाकर नदी के तुल्य और नपु० मे कर्तृ नपु० के तुल्य चलेंगे। तृच् प्रत्यय के विशेष नियमो के लिए देखो अभ्यास ४२। उदाहरणार्थ—तुम्, तव्य, तृ लगाकर इन धातुओ के ये रूप होगे। कृ—कर्तुम्, कर्तव्य, कर्तृ। हृ—हर्तुम्, हर्तव्य, हर्तृ। लिख्—लेखितुम्, लेखितव्य, लेखितृ। तव्य और तृच् मे तुम् के तुल्य ही सन्धि के कार्य होगे। धातुएँ अन्त्याक्षरानुमार दी गई है।

घ्रा	घ्रातुम्	चि	चेतुम्	ब्रू	वक्तुम्	तॄ	तरितुम्
ज्ञा	ज्ञातुम्	जि	जेतुम्	भू	भवितुम्	वे	वातुम्
दा	दातुम्	श्रि	श्रयितुम्	कृ	कर्तुम्	आह्वे	आह्वातुम्
धा	धातुम्	क्री	क्रेतुम्	धृ	धर्तुम्	गै	गातुम्
पा	पातुम्	डी	डयितुम्	भृ	भर्तुम्	त्रै	त्रातुम्
मा	मातुम्	नी	नेतुम्	मृ	मर्तुम्	ध्यै	ध्यातुम्
या	यातुम्	भी	भेतुम्	वृ	वारयितुम्	शक्	शक्तुम्
स्था	स्थातुम्	शी	शयितुम्	सृ	सर्तुम्	शक्	शकितुम्
स्ना	स्नातुम्	श्रु	श्रोतुम्	स्मृ	स्मर्तुम्	ईक्ष्	ईक्षितुम्
हा	हातुम्	सु	सोतुम्	हृ	हर्तुम्	दीक्ष्	दीक्षितुम्
अधि+इ	अध्येतुम्	स्तु	स्तोतुम्	कॄ	करितुम्	भक्ष्	भक्षयितुम्
इ	एतुम्	हु	होतुम्	गॄ	गरितुम्	रक्ष्	रक्षितुम्
						शिक्ष्	शिक्षितुम्

लिख्	लेखितुम्	अद्	अत्तुम्	क्षिप्	क्षेप्तुम्	जीव्	जीवितुम्
अर्च्	अर्चितुम्	कूर्द्	कूर्दितुम्	जप्	जपितुम्	धाव	धावितुम्
पच्	पक्तुम्	क्रन्द्	क्रन्दितुम्	तप्	तप्तुम्	सिव्	सेवितुम्
मुच्	मोक्तुम्			तृप्	तपितुम्	सेव	सेवितुम्
याच्	याचितुम्	खाद्	खादितुम्	आलप्	आलपितुम्	दश्	दष्टुम्
रच्	रचयितुम्	छिद्	छेत्तुम्	वप्	वप्तुम्	दिश्	देष्टुम्
रुच्	रोचितुम्	निन्द्	निन्दितुम्	शप्	शप्तुम्	नश्	नष्टुम्
वच्	वक्तुम्	पद्	पत्तुम्	सृप	सर्प्तुम्	विश्	वेष्टुम्
शुच्	शोचितुम्	भिद्	भेत्तुम्	स्वप्	स्वप्तुम्	स्पृश्	स्प्रष्टुम्
सिच्	सेक्तुम्	मुद्	मोदितुम्	लम्ब्	लम्बितुम्	इष्	एषितुम्
प्रच्छ्	प्रष्टुम्	रुद्	रोदितुम्	आरभ्	आरब्धुम्	कृष	कर्ष्टुम्
गर्ज्	गर्जितुम्	वद्	वदितुम्	लभ्	लब्धुम्	पुष्	पोषितुम्
त्यज्	त्यक्तुम्	वन्द्	वन्दितुम्	लुभ्	लोभितुम्	भाष्	भाषितुम्
पूज	पूजयितुम्	विद्	वेत्तुम्	शुभ्	शोभितुम्	लष्	लषितुम्
भज्	भक्तुम्	क्रुध्	क्रोद्धुम्	कम्	कमितुम्	वृष्	वर्षितुम्
भुज्	भोक्तुम्	बन्ध्	बद्धुम्	क्रम्	क्रमितुम्	श्लिष्	श्लेष्टुम्
यज्	यष्टुम्	बाध्	बाधितुम्	क्षम्	क्षमितुम्	हृष्	हर्षितुम्
युज्	योक्तुम्	बुध्	बोद्धुम्	गम्	गन्तुम्	अस्	भवितुम्
राज्	राजितुम्	युध्	योद्धुम्	नम्	नन्तुम्	आस्	आसितुम्
सृज्	स्रष्टुम्	रुध	रोद्धुम्	भ्रम्	भ्रमितुम्	ग्रस	ग्रसितुम्
चेष्ट्	चेष्टितुम्	वृध	वर्धितुम्	यम्	यन्तुम्	ध्वस्	ध्वसितुम्
पठ्	पठितुम्	सिध्	सेद्धुम्	रम्	रन्तुम्	वस्	वस्तुम्
क्रीड्	क्रीडितुम्	स्पर्ध	स्पर्धितुम्	शम्	शमितुम्	हस्	हसितुम्
गण्	गणयितुम्	खन्	खनितुम्	पलाय्	पलायितुम्	ग्रह्	ग्रहीतुम्
चिन्त्	चिन्तयितुम्	जन्	जनितुम्	चर्	चरितुम्	दह्	दग्धुम्
द्युत्	द्योतितुम्	मन्	मन्तुम्	चुर्	चोरयितुम्	दुह्	दोग्धुम्
नृत्	नर्तितुम्	हन्	हन्तुम्	प्रेर्	प्रेरयितुम्	द्रुह	द्रोग्धुम्
पत्	पतितुम्	आप्	आप्तुम्	चल्	चलितुम्	आरुह्	आरोढुम्
यत्	यतितुम्	कम्प	कम्पितुम्	ज्वल्	ज्वलितुम्	लिह्	लेढुम्
वृत्	वर्तितुम्	कुप्	कोपितुम्	पाल्	पालयितुम्	वह्	वोढुम्
कथ	कथयितुम्	कृप	कल्पितुम्	मिल	मेलितुम्	सह्	सोढुम्

(८) क्त्वा (९) ल्यप् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३७, ३८)

सूचना—'कर' या 'करके' अर्थ मे क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय होते है। क्त्वा का त्वा और ल्यप् का य शेष रहता है। धातु से पहले उपसर्ग नहीं होगा तो क्त्वा होगा। यदि उपसर्ग पहले होगा तो ल्यप् होगा। दोनो प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते है, अतः इनका रूप नही चलता। दोनो प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के नियमो के लिए देखो अभ्यास ३७ और ३८। जिन उपसर्गो के साथ ल्यप् वाला रूप अधिक प्रचलित है, वही यहाँ दिए गए है। धातुएँ अन्त्याक्षरानुसार दी गई हैं।

घ्रा	घ्रात्वा	आघ्राय	ब्रू	उक्त्वा	प्रोच्य
ज्ञा	ज्ञात्वा	विज्ञाय	भू	भूत्वा	सभूय
दा	दत्त्वा	आदाय	कृ	कृत्वा	उपकृत्य
धा	हित्वा	विधाय	आदृ	—	आदृत्य
पा	पीत्वा	निपाय	धृ	धृत्वा	आधृत्य
मा	मित्वा	प्रमाय	भृ	भृत्वा	सभृत्य
या	यात्वा	प्रयाय	निवृ	—	निवृत्य
स्था	स्थित्वा	प्रस्थाय	स्मृ	स्मृत्वा	विस्मृत्य
स्ना	स्नात्वा	प्रस्नाय	हृ	हृत्वा	प्रहृत्य
हा	हित्वा	विहाय	कॄ	कीर्त्वा	प्रकीर्य
इ	इत्वा	प्रेत्य	गॄ	गीर्त्वा	उद्गीर्य
अधि+इ	—	अधीत्य	तॄ	तीर्त्वा	उत्तीर्य
चि	चित्वा	सचित्य	पॄ	पूर्त्वा	आपूर्य
जि	जित्वा	विजित्य	ह्वे	हूत्वा	आहूय
श्रि	श्रित्वा	आश्रित्य	गै	गीत्वा	प्रगाय
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय	ध्यै	ध्यात्वा	सध्याय
उड्डी	—	उड्डीय	ईक्ष्	ईक्षित्वा	निरीक्ष्य
नी	नीत्वा	आनीय	भक्ष्	भक्षयित्वा	सभक्ष्य
ली	लीत्वा	निलीय	रक्ष्	रक्षित्वा	सरक्ष्य
शी	शयित्वा	सशय्य	लिख्	लिखित्वा	आलिख्य
श्रु	श्रुत्वा	सश्रुत्य	अर्च्	अर्चित्वा	समर्च्य
स्तु	स्तुत्वा	प्रस्तुत्य	पच्	पक्त्वा	सपच्य

मुच्	मुक्त्वा	विमुच्य	वन्द्	वन्दित्वा	अभिवन्द्य
याच्	याचित्वा	अनुयाच्य	विद् (२५०)	विदित्वा	संविद्य
रच्	रचयित्वा	विरचय्य	विद् (१०)	वेदयित्वा	निवेद्य
सिच्	सिक्त्वा	अभिषिच्य	सद्	सत्त्वा	निषद्य
प्रच्छ्	पृष्ट्वा	सपृच्छ्य	क्रुध	क्रुद्ध्वा	सक्रुध्य
त्यज्	त्यक्त्वा	परित्यज्य	बन्ध्	बद्ध्वा	आबध्य
पूज्	पूजयित्वा	सपूज्य	बुध्	बुद्ध्वा	प्रबुध्य
भज्	भक्त्वा	विभज्य	युध्	युद्ध्वा	प्रयुध्य
भुज	भुक्त्वा	उपभुज्य	रुध्	रुद्ध्वा	विरुध्य
यज्	इष्ट्वा	समिज्य	व्यध्	विद्ध्वा	आविध्य
युज	युक्त्वा	प्रयुज्य	साध्	साद्ध्वा	प्रसाध्य
सृज्	सृष्ट्वा	विसृज्य	सिध्	सिद्ध्वा	निषिध्य
पठ्	पठित्वा	सपठ्य	खन्	खनित्वा खात्वा	उत्खन्य उत्खाय
क्रीड्	क्रीडित्वा	प्रक्रीड्य	जन्	जनित्वा	सजाय
गण	गणयित्वा	विगणय्य	तन्	तनित्वा	वितत्य
चिन्त्	चिन्तयित्वा	सचिन्त्य	मन्	मत्वा	अनुमत्य
नृत	नर्तित्वा	प्रनृत्य	हन्	हत्वा	निहत्य
पत्	पतित्वा	निपत्य	आप्	आप्त्वा	प्राप्य
वृत्	वर्तित्वा	निवृत्य	क्षिप्	क्षिप्त्वा	प्रक्षिप्य
कूर्द्	कूर्दित्वा	प्रकूर्द्य	जप्	जपित्वा	सजप्य
क्रन्द्	क्रन्दित्वा	आक्रन्द्य	तप्	तप्त्वा	सतप्य
खाद्	खादित्वा	सखाद्य	दीप्	दीपित्वा	सदीप्य
छिद्	छित्त्वा	उच्छिद्य	लप्	लपित्वा	विलप्य
नुद्	नुत्त्वा	प्रणुद्य	वप्	उप्त्वा	समुप्य
पद्	पत्त्वा	सपद्य	शप्	शप्त्वा	अभिशप्य
भिद	भित्त्वा	प्रभिद्य	स्वप	सुप्त्वा	सषुप्य
वद्	उदित्वा	अनूद्य	लम्ब्	लम्बित्वा	आलम्ब्य
			क्षुभ्	क्षुभित्वा	प्रक्षुभ्य

रभ्	रब्ध्वा	आरभ्य
लभ्	लब्ध्वा	उपलभ्य
लुभ्	लुब्ध्वा	प्रलुभ्य
कम्	कमित्वा	सकाम्य
क्रम्	क्रमित्वा क्रान्त्वा	सङ्क्रम्य
क्षम्	क्षमित्वा	सक्षम्य
गम्	गत्वा	आगम्य आगत्य
नम्	नत्वा	प्रणम्य
भ्रम्	भ्रमित्वा भ्रान्त्वा	सम्भ्रम्य
यम्	यत्वा	सयम्य
रम्	रत्वा	विरम्य
शम्	शान्त्वा	निशम्य
पलाय्	—	पलाय्य
चर्	चरित्वा	आचर्य
चुर्	चोरयित्वा	सचोर्य
चल्	चलित्वा	प्रचल्य
ज्वल्	ज्वलित्वा	प्रज्वल्य
पाल्	पालयित्वा	सपाल्य
मिल्	मिलित्वा	समिल्य
जीव्	जीवित्वा	सजीव्य
दिव्	देवित्वा	सदीव्य
धाव्	धावित्वा	प्रधाव्य
सिव्	सेवित्वा	ससीव्य
सेव्	सेवित्वा	निषेव्य
दश्	दष्ट्वा	सदश्य
दिश्	दिष्ट्वा	उपदिश्य
दृश्	दृष्ट्वा	सदृश्य
नश्	नष्ट्वा	विनश्य
भ्रश	भ्रष्ट्वा	प्रभ्रश्य
विश्	विष्ट्वा	प्रविश्य
स्पृश्	स्पृष्ट्वा	सम्पृश्य
इष्	इष्ट्वा	समिष्य
कृष्	कृष्ट्वा	आकृष्य
तुष्	तुष्ट्वा	सतुष्य
पुष्	पुष्ट्वा	सपुष्य
भाष्	भाषित्वा	सभाष्य
लष्	लषित्वा	अभिलष्य
वृष्	वर्षित्वा	प्रवृष्य
शुष्	शुष्ट्वा	परिशुष्य
श्लिष्	श्लिष्ट्वा	आश्लिष्य
हृष्	हृषित्वा	प्रहृष्य
अस्	भूत्वा	सम्भूय
आस्	आसित्वा	उपास्य
ग्रस्	ग्रसित्वा	सग्रस्य
वस्	उषित्वा	उपोष्य
शास्	शिष्ट्वा	अनुशिष्य
श्वस्	श्वसित्वा	विश्वस्य
हस्	हसित्वा	विहस्य
ग्रह्	गृहीत्वा	सगृह्य
दह्	दग्ध्वा	सदह्य
दुह्	दुग्ध्वा	सदुह्य
मुह्	मुग्ध्वा	समुह्य
रुह्	रूढ्वा	आरुह्य
लिह्	लीढ्वा	आलिह्य
वह्	ऊढ्वा	प्रोह्य
सह्	सहित्वा	ससह्य
स्निह्	स्निग्ध्वा	उपस्निह्य

१०. ल्युट् , ११. अनीयर् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३९, ४३)

सूचना—ल्युट् प्रत्यय भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से लगता है। ल्युट् का 'अन' शेष रहता है। धातु को गुण होता है। ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिंग होता है। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास ४३। 'चाहिए' अर्थ में अनीयर् प्रत्यय होता है। अनीयर् का 'अनीय' शेष रहता है। अनीयर् प्रत्यय वाला रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि ल्युट् के अन के स्थान पर अनीय लगा दो। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास ३९। जैसे—कृ का करण, करणीय। दा—दान, दानीय। पठ्—पठन, पठनीय। **धातुएँ अन्त्याक्षरानुसार दी गई हैं।**

ज्ञा	ज्ञानम्	ब्रू	वचनम्	पच्	पचनम्	नृत्	नर्तनम्
दा	दानम्	भू	भवनम्	मुच्	मोचनम्	पत्	पतनम्
विधा	विधानम्	कृ	करणम्	याच्	याचनम्	यत्	यतनम्
पा	पानम्	धृ	धरणम्	सिच्	सेचनम्	वृत्	वर्तनम्
मा	मानम्	भृ	भरणम्	गर्ज्	गर्जनम्	कथ्	कथनम्
या	यानम्	मृ	मरणम्	त्यज्	त्यजनम्	ग्रन्थ्	ग्रन्थनम्
स्था	स्थानम्	स्मृ	स्मरणम्	पूज्	पूजनम्	मन्थ्	मन्थनम्
स्ना	स्नानम्	हृ	हरणम्	भज्	भजनम्	अद्	अदनम्
अधि+इ	अध्ययनम्	निगृ	निगरणम्	भज्	भजनम्	कूर्द्	कूर्दनम्
चि	चयनम्	तृ	तरणम्	भुज्	भोजनम्	क्रन्द्	क्रन्दनम्
जि	जयनम्	आह्वे	आह्वानम्	यज्	यजनम्	खाद्	खादनम्
श्रि	श्रयणम्	गै	गानम्	युज्	योजनम्	छिद्	छेदनम्
क्री	क्रयणम्	त्रै	त्राणम्	रज्	रजनम्	नन्द्	नन्दनम्
उड्डी	उड्डयनम्	ध्यै	ध्यानम्	सृज्	सर्जनम्	निन्द्	निन्दनम्
नी	नयनम्	ईक्ष्	ईक्षणम्	चेष्ट्	चेष्टनम्	नुद्	नोदनम्
शी	शयनम्	भक्ष्	भक्षणम्	पठ्	पठनम्	भिद्	भेदनम्
श्रु	श्रवणम्	रक्ष्	रक्षणम्	क्रीड्	क्रीडनम्	मद्	मदनम्
सु	सवनम्	शिक्ष्	शिक्षणम्	दण्ड्	दण्डनम्	मुद्	मोदनम्
स्तु	स्तवनम्	लिख्	लेखनम्	गण्	गणनम्	रुद्	रोदनम्
हु	हवनम्	अर्च्	अर्चनम्	चिन्त्	चिन्तनम्	वद्	वदनम्

धातु	रूप	धातु	रूप	धातु	रूप	धातु	रूप
वन्द्	वन्दनम्	सृप्	सर्पणम्	सेव्	सेवनम्	शास्	शासनम्
निविद्	निवेदनम्	स्वप्	स्वपनम्	प्रकाश्	प्रकाशनम्	विश्वस्	विश्वसनम्
सद्	सदनम्	लम्ब्	लम्बनम्	क्लिश्	क्लेशनम्	स्रस्	स्रसनम्
बन्ध्	बन्धनम्	आरभ्	आरभणम्	दश्	दशनम्	प्रहस्	प्रहसनम्
बाध्	बाधनम्	लभ्	लभनम्	संदिश्	संदेशनम्	गाह्	गाहनम्
बुध्	बोधनम्	लुभ्	लोभनम्	दृश्	दर्शनम्	ग्रह्	ग्रहणम्
युध्	योधनम्	शुभ्	शोभनम्	विनश्	विनशनम्	दह्	दहनम्
रुध्	रोधनम्	आक्रम्	आक्रमणम्	भ्रश्	भ्रशनम्	दुह्	दोहनम्
वृध्	वर्धनम्	गम्	गमनम्	प्रविश्	प्रवेशनम्	मुह्	मोहनम्
साध्	साधनम्	दम्	दमनम्	स्पृश्	स्पर्शनम्	आरुह्	आरोहणम्
निषिध्	निषेधनम्	नम्	नमनम्	प्रेष्	प्रेषणम्	लिह्	लेहनम्
खन्	खननम्	भ्रम्	भ्रमणम्	अन्विष्	अन्वेषणम्	वह्	वहनम्
जन्	जननम्	नियम्	नियमनम्	कृष्	कर्षणम्	सह्	सहनम्
मन्	मननम्	रम्	रमणम्	तुष्	तोषणम्	स्निह्	स्नेहनम्
हन्	हननम्	शम्	शमनम्	पुष्	पोषणम्		
प्राप्	प्रापणम्	पलाय्	पलायनम्	भाष्	भाषणम्		
कम्प्	कम्पनम्	आचर्	आचरणम्	मुष्	मोषणम्		
क्लृप्	कल्पनम्	चुर्	चोरणम्	वृष्	वर्षणम्		
जप्	जपनम्	प्रेर्	प्रेरणम्	शुष्	शोषणम्		
तप्	तपनम्	चल्	चलनम्	हृष्	हर्षणम्		
तृप्	तर्पणम्	ज्वल्	ज्वलनम्	अस् (२)	भवनम्		
दीप्	दीपनम्	पाल्	पालनम्	अस् (४)	असनम्		
विलप्	विलपनम्	संमिल्	संमेलनम्	आस्	आसनम्		
वप्	वपनम्	जीव्	जीवनम्	विकस्	विकसनम्		
वेप्	वेपनम्	दिव्	देवनम्	ग्रस्	ग्रसनम्		
शप्	शपनम्	धाव्	धावनम्	ध्वंस्	ध्वंसनम्		
				निवस्	निवसनम्		

१२. घञ् (देखो अभ्यास ४१)

सूचना—भाव अर्थ मे घञ् प्रत्यय होता है। घञ् का 'अ' शेष रहता है। घञन्त शब्द पुलिग होता है। घञ् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के नियमो के लिए देखो अभ्यास ४१। घञ् प्रत्ययान्त शब्द उपसर्गो के साथ बहुत प्रचलित है। स्वय उपसर्ग लगाकर अन्य रूप बनावे। **धातुएँ अन्त्याक्षरानुसार दी गई है।**

दा	दायः	यज्	याग.	कुप्	कोप.	नश्	नाशः
धा	धायः	युज्	योग.	वि + कृप्	विकल्प	प्र + विश्	प्रवेशः
अधि+इ	अध्याय.	रञ्ज्	राग'	आ+क्षिप्	आक्षेप.	स्पृश्	स्पर्शः
नि + इ	न्याय.	वि + सृज्	विसर्गः	जप्	जाप	प्र + कृष	प्रकर्षः
चि	कायः	पठ्	पाठः	तप्	ताप.	स + तुष्	सन्तोष'
श्रि	श्रायः	पत्	पातः	वि + लप्	विलाप'	पुष्	पोषः
श्रु	श्रावः	आ + वृत्	आवर्तः	शप्	शापः	अभिलष्	अभिलाषः
प्रस्तु	प्रस्तावः	छिद्	छेद.	सृप्	सर्प.	वृष्	वर्षः
प्रभू	प्रभावः	उत्+पद्	उत्पादः	स्वप्	'स्वाप'	शुष्	शोष'
प्र + कृ	प्रकारः	भिद्	भेदः	क्षुभ्	क्षोभः	श्लिष्	श्लेषः
आ + धृ	आधार'	आ+मुद्	आमोदः	लभ्	लाभः	हृष्	हर्षः
स + भृ	सभारः	वद्	वादः	लुभ्	लोभ.	अस्	भावः
प्र + सृ	प्रसार.	विद्	वेद.	कम्	काम	वि + कस्	विकासः
प्र + हृ	प्रहारः	प्र + सद्	प्रसाद	आ+गम्	आगम'	ग्रस्	ग्रासः
अव + तॄ	अवतारः	क्रुध्	क्रोध.	प्र + नम्	प्रणाम.	नि + वस्	निवासः
लिख्	लेख	बुध्	बोधः	स + यम्	सयम'	वि + श्वस्	विश्वासः
पच्	पाकः	युध्	योधः	रम्	राम	हस्	हासः
शुच्	शोकः	रुध्	रोधः	शम्	शमः	ग्रह्	ग्राह'
सिच्	सेकः	नि + सिध्	निषेध'	आ+चर्	आचार.	दह्	दाहः
त्यज्	त्यागः	स + तन्	सन्तान'	चुर्	चोर'	दुह्	दोहः
भज्	भाग'	स + मन्	समानः	चल्	चालः	द्रुह्	द्रोहः
भुज्	भोगः	आ+हन्	आघातः	मिल्	मेलः	मुह्	मोहः
मृज्	मार्गः			दिव्	देवः	आ + रुह्	आरोहः
				प्र+काश्	प्रकाशः	अव + लिह्	अवलेहः
				उप+दिश्	उपदेशः	वि + वह्	विवाहः
				आ+दृश्	आदर्शः	उत् + सह्	उत्साहः
						स्निह्	स्नेहः

१३. ण्वुल् प्रत्यय (देखो अभ्यास ४३)

सूचना—कर्ता या 'वाला' अथ मे ण्वुल् प्रत्यय होता है। ण्वुल् के स्थान पर 'अक' शेष रहता है। धातु को गुण या वृद्धि होगी। कर्ता के अनुसार तीनो लिग होते है। विशेष नियम के लिए देखो अभ्यास ४३। धातुएँ अन्त्याक्षरानुसार दी गई है।

प्र + दा	प्रदायकः	पच्	पाचकः	उत्+मद्	उन्मादकः	उप+दिश्	उपदेशकः
वि + धा	विधायकः	मुच्	मोचकः	मुद्	मोदक	दृश्	दर्शकः
पा	पायकः	याच्	याचकः	नि+विद्	निवेदकः	नश्	नाशकः
अध्यापि	अध्यापकः	रुच्	रोचकः	बाध्	बाधकः	प्र+विश	प्रवेशकः
नी	नायकः	सिच्	सेचकः	बुध्	बोधकः	कृष्	कर्षकः
श्रु	श्रावकः	पूज्	पूजकः	रुध्	रोधकः	पुष्	पोषकः
प्र+स्तु	प्रस्तावकः	वि+भज्	विभाजकः	वृध्	वर्धकः	वृष्	वर्षक
ब्रू	वाचकः	भुज्	भोजकः	साध्	साधकः	शुष्	शोषकः
भू	भावकः	यज्	याजकः	नि+सिध्	निषेधकः	हृष्	हर्षक
कृ	कारकः	स+युज्	सयोजकः	जन्	जनकः	उपास्	उपासकः
धृ	धारकः	रज्	रजकः	हन्	घातकः	वि+कस्	विकासकः
मृ	मारकः	पठ्	पाठकः	प्र+क्षिप्	प्रक्षेपकः	शास्	शासकः
नि+वृ	निवारकः	क्रीड्	क्रीडकः	स+तप्	सतापकः	ग्रह्	ग्राहकः
प्र+सृ	प्रसारकः	गण्	गणकः	दीप्	दीपकः	दह्	दाहकः
स्मृ	स्मारकः	चिन्त्	चिन्तकः	गम्	गमक	द्रुह्	द्रोहकः
स+हृ	सहारकः	द्युत्	द्योतक	यम्	यमकः	मुह्	मोहकः
तॄ	तारकः	नृत्	नर्तकः	प्र + चर्	प्रचारकः	वह्	वाहकः
गै	गायकः	पत्	पातकः	प्रेर्	प्रेरकः		
परि+ईक्ष्	परीक्षकः	खाद्	खादकः	स+चल्	सचालकः		
भक्ष्	भक्षकः	छिद्	छेदकः	पाल्	पालकः		
रक्ष्	रक्षकः	निन्द्	निन्दकः	धाव्	धावकः		
शिक्ष्	शिक्षकः	उत्+पद्	उत्पादकः	सेव्	सेवकः		
लिख्	लेखकः	भिद्	भेदकः	प्र+काश्	प्रकाशकः		

१४. क्तिन्, १५. यत् प्रत्यय (देखो अभ्यास ४५, ४०)

सूचना—(१) भाववाचक सज्ञा बनाने के लिए धातु से क्तिन् प्रत्यय होता है। क्तिन् का 'ति' शेष रहता है। 'ति' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग होते है। विशेष नियमो के लिए देखो अभ्यास ४५। (२) 'चाहिए' अर्थ मे अजन्त धातुओ से यत् प्रत्यय होता है। यत् का 'य' शेष रहता है। तीनो लिगो मे रूप चलते है। विशेष नियमो के लिए देखो अभ्यास ४०। धातुएँ अन्त्याक्षरानुसार दी गई हैं।

क्तिन् प्रत्यय						यत् प्रत्यय	
पा	पीतिः	भज्	भक्तिः	उपलभ्	उपलब्धिः	ज्ञा	ज्ञेयम्
मा	मितिः	भुज्	भुक्तिः	कम्	कान्तिः	दा	देयम्
स्था	स्थितिः	यज्	इष्टिः	क्रम्	क्रान्तिः	वि + धा	विधेयम्
नी	नीतिः	युज्	युक्तिः	क्षम्	क्षान्तिः	पा	पेयम्
प्री	प्रीतिः	आ + सज्	आसक्तिः	गम्	गतिः	उप + मा	उपमेयम्
भी	भीतिः	सृज्	सृष्टिः	नम्	नतिः	स्था	स्थेयम्
श्रु	श्रुतिः	कृत्	कीर्तिः	भ्रम्	भ्रान्तिः	हा	हेयम्
स्तु	स्तुतिः	वृत्	वृत्तिः	यम्	यतिः	अधि + इ	अध्येयम्
आ+हु	आहुतिः	सं + पद्	संपत्तिः	रम्	रतिः	क्षि	क्षेयम्
ब्रू	उक्तिः	आ+सद्	आसत्तिः	शम्	शान्तिः	चि	चेयम्
भू	भूतिः	ऋध्	ऋद्धिः	वि + श्रम्	विश्रान्तिः	जि	जेयम्
कृ	कृतिः	बुध्	बुद्धिः	दृश्	दृष्टिः	क्री	क्रेयम्
धृ	धृतिः	वृध्	वृद्धिः	वि + नश्	विनष्टिः	नी	नेयम्
सं+सृ	संसृतिः	शुध्	शुद्धिः	तुष्	तुष्टिः	श्रु	श्रव्यम्
स्मृ	स्मृतिः	सिध्	सिद्धिः	पुष्	पुष्टिः	सु	सव्यम्
सं + हृ	संहृतिः	जन्	जातिः	वृष्	वृष्टिः	हु	हव्यम्
पॄ	पूर्तिः	मन्	मतिः	रुह्	रूढिः	भू	भव्यम्
गै	गीतिः	प्र + आप्	प्राप्तिः				
शक्	शक्तिः	तृप्	तृप्तिः				
पच्	पक्तिः	दीप्	दीप्तिः	——			
मुच्	मुक्तिः	स्वप्	सुप्तिः				

(६) सन्धि-विचार (क)

(क) स्वर-सन्धि (१) यण् सन्धि (देखो अभ्यास १०)

(इको यणचि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ ॠ को र्, ल को ल् हो जाता है, यदि बाद मे कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नही। जैसे :—

(१)	(२)	(३)
प्रति + एकः = प्रत्येकः	पठतु + एक = पठत्वेकः	पितृ + आ = पित्रा
पठति + अत्र = पठत्यत्र	अनु + अय. = अन्वयः	मातृ + ए = मात्रे
इति + अत्र = इत्यत्र	मधु + अरि = मध्वरिः	धातृ + अगः = धात्रश.
इति + आह = इत्याह	गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा	कर्तृ + आ = कर्त्रा
यदि + अपि = यद्यपि	पठतु + अत्र = पठत्वत्र	कर्तृ + ई = कर्त्री
नदी + औ = नद्यौ	वधू + औ = वध्वौ	(४) ऌ + आकृतिः = लाकृतिः
सुधी + उपास्य. = सुध्युपास्यः		

(२) अयादिसन्धि (देखो अभ्यास ११)

(एचोऽयवायावः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् हो जाता है, बाद मे कोई स्वर हो तो। (पदान्त ए या ओ के बाद अ होगा तो नही।) जैसे—

(१)	(२)	(३)
हरे + ए = हरये	भो + अति = भवति	नै + अक. = नायकः
कवे + ए = कवये	पो + अन. = पवन.	गै + अक. = गायकः
ने + अनम् = नयनम्	गुरो + ए = गुरवे	गै + अति = गायति
शे + अनम् = शयनम्	भानो + ए = भानवे	(४) द्वौ + एतौ = द्वावेतौ
जे + अः = जय·	भो + अनम् = भवनम्	पौ + अक. = पावकः
सचे + अ. = सचयः	श्रो + अणम् = श्रवणम्	भौ + अकः = भावकः

(३) गुणसन्धि (देखो अभ्यास १२)

(आद्गुण) (१) अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनो को 'ए' होगा। (२) अ या आ के बाद उ या ऊ हो तो दोनो को 'ओ' होगा। (३) अ या आ के बाद ऋ या ॠ हो तो दोनो को 'अर्' होगा। (४) अ या आ के बाद ऌ होगा तो दोनो को अल् होगा। जैसे—

(१)	(२)	(३)
महा + ईशः = महेश.	पर + उपकार· = परोपकारः	महा + ऋषि. = महर्षिः
गण + ईशः = गणेशः	महा + उत्सवः = महोत्सवः	राज + ऋषिः = राजर्षि.
रमा + ईशः = रमेशः	हित + उपदेश· = हितोपदेशः	ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तु.
तथा + इति = तथेति	गगा + उदकम् = गगोदकम्	ब्रह्म + ऋषि. = ब्रह्मर्षिः
न + इदम् = नेदम्	पश्य + उपरि = पश्योपरि	(४) तव + ऌकारः = तवल्कारः

(४) वृद्धिसन्धि (देखो अभ्यास १३)

(वृद्धिरेचि) (१) अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनो को 'ऐ' होगा। (२) अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनो को 'औ' होगा। जैसे—

(१)	
अत्र + एक॰	= अत्रैक॰
पश्य + एतम्	= पश्यैतम्
सा + एषा	= सैषा
राज + ऐश्वर्यम्	= राजैश्वर्यम्

(२)	
तण्डुल + ओदनम्	= तण्डुलौदनम्
जल + ओघः	= जलौघ॰
महा + ओषधि॰	= महौषधि॰
देव + औदार्यम्	= देवौदार्यम्

(५) पूर्वरूपसन्धि (देखो अभ्यास १४)

(एङ पदान्तादति) पद (अर्थात् सुबन्त या तिङन्त) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो उसको पूर्वरूप (अर्थात् ए या ओ जैसा रूप) हो जाता है। (अ हटा है, इस बात के सूचनार्थ ऽ (अवग्रह चिह्न) लगा दिया जाता है।) जैसे—

(१)	
हरे + अव	= हरेऽव
लोके + अस्मिन्	= लोकेऽस्मिन्
विद्यालये + अस्मिन्	= विद्यालयेऽस्मिन्

(२)	
विष्णो + अव	= विष्णोऽव
रामो + अधुना	= रामोऽधुना
लोको + अयम्	= लोकोऽयम्

(६) सवर्णदीर्घसन्धि (देखो अभ्यास १५)

(अकः सवर्णे दीर्घः) अ इ उ ऋ के बाद कोई सवर्ण (सदृश) अक्षर हो तो दोनो के स्थान पर उसी वर्ण का दीर्घ अक्षर हो जाता है। अर्थात् (१) अ या आ + अ या आ = आ। (२) इ या ई + इ या ई = ई। (३) उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ। (४) ऋ या ॠ + ऋ या ॠ = ॠ।

(१)		(२)		(३)	
हिम+आलय	=हिमालयः	गिरि + ईशः	= गिरीशः	गुरु+उपदेशः	=गुरूपदेशः
विद्या+आलय	=विद्यालयः	श्री + ईश॰	= श्रीश	भानु+उदय॰	=भानूदयः
तथा +अपि	=तथापि	इति + इदम्	= इतीदम्	लघु +ऊर्मिः	=लघूर्मि
शिष्ट+आचार	=शिष्टाचारः	पठति + इदम्	=पठतीदम्	(४) होतृ+ऋकार॰	=होतॄकारः

(ख) हल्सन्धि (७) श्चुत्वसन्धि (देखो अभ्यास १६)

(स्तो श्चुना श्चु) स् या तवर्ग से पहले या बाद मे श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमश॰ श् और चवर्ग हो जाता है। जैसे—

रामस् + च	=रामश्च	तत् + च	=तच्च	सद् + जनः	= सज्जनः
कस् + चित्	=कश्चित्	सत् + चित्	=सच्चित्	उद् + ज्वलः	= उज्ज्वलः
दुस् +चरित्र॰	=दुश्चरित्रः	सत् +चरित्र॰	=सच्चरित्रः	याच् + ना	= याच्ञा
हरिस्+शेते	=हरिश्शेते	उत्+चारणम्	=उच्चारणम्	शार्ङ्गिन् + जय	= शार्ङ्गिञ्जय

(८) ष्टुत्वसन्धि (देखो अभ्यास १७)

(ष्टुना ष्टु) स् या तवर्ग के पहले या बाद मे ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमश. ष् और टवर्ग हो जाता है। जैसे,

इष् + तः = इष्टः	रामस् + षष्ठ. = रामष्षष्ठः	विष् + नु = विष्णु·
पेष् + ता = पेष्टा	उद् + डीनः = उड्डीन.	कृष् + न· = कृष्ण
दुष् + तः = दुष्टः	तत् + टीका = तट्टीका	उष् + त्र. = उष्ट्र·

(९) जश्त्वसन्धि (१) (देखो अभ्यास १८)

(झलां जशोऽन्ते) झलो (वर्ग के १, २, ३, ४ और ऊष्म) को जश् (३ अर्थात् अपने वर्ग का तृतीय अक्षर) होते है, झल् पद के अन्तिम अक्षर हो तो। (पद अर्थात् सुबन्त या तिङन्त।) जैसे,

सुप् + अन्तः = सुबन्त·	चित्+आनन्द. = चिदानन्द	षट् + एव = षडेव
अच् + अन्त. = अजन्त·	दिक् + अम्बरः = दिगम्बर	षट् + आनन. = षडाननः
जगत् + ईश = जगदीश.	उत् + देश्यम् = उद्देश्यम्	दिक् + गज = दिग्गज

(१०) जश्त्वसन्धि (२) (देखो अभ्यास १९)

(झलां जश् झशि) झलो (वर्ग के १, २ ३, ४, ऊष्म) को जश् (३, अपने वर्ग का तृतीय अक्षर) होते है, बाद मे झश् (वर्ग के ३, ४) हो तो। (यह नियम पद के बीच मे लगता है, पहला नियम (९) पद के अन्त मे।)

बुध् + धिः = बुद्धि.	दघ् + ध. = दग्ध	युध् + ध = युद्ध.
सिध् + धिः = सिद्धि.	दुघ् + धम् = दुग्धम्	वृध् + धि. = वृद्धि·
क्षुभ् + धः = क्षुब्ध.	लभ् + धः = लब्ध·	शुध् + धि. = शुद्धिः

(११) चर्त्व सन्धि (देखो अभ्यास २०)

(खरि च) झलो (१, २, ३, ४, ऊष्म) को चर् (१, उसी वर्ग का प्रथम अक्षर) होते है, बाद मे खर् (१, २, श, ष, स) हो तो। जैसे,

सद् + कारः = सत्कार·	तद् + पर· = तत्पर.	सद् + पुत्रः = सत्पुत्र·
उद् + पन्नः = उत्पन्नः	उद् + साह = उत्साह.	तज् + छिव· = तच्छिवः

(१२) अनुस्वारसन्धि (देखो अभ्यास ९)

(मोऽनुस्वार) पदान्त म् के बाद कोई हल् (व्यजन) हो तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है, बाद मे स्वर हो तो नही। जैसे,

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे	कम् + चित् = कंचित्	सत्यम् + वद = सत्यं वद
गुरुम्+नमति = गुरुं नमति	कार्यम् + कुरु = कार्यं कुरु	धर्मम् + चर = धर्मं चर

(ग) विसर्गसन्धि (१३) विसर्गसन्धि (देखो अभ्यास २१)

(विसर्जनीयस्य स) विसर्ग के बाद खर् (वर्ग के १, २, श, ष, स) हो तो विसर्ग को स् हो जाता है। (श् या चवर्ग के बाद मे हो तो श्चुत्व सन्धि भी।) जैसे,

हरिः + त्रायते = हरिस्त्रायते।	बालः + चलति = बालश्चलति।
रामः + तिष्ठति = रामस्तिष्ठति।	रामः + शेते = रामश्शेते।
कः + चित् = कश्चित्।	जनाः + तिष्ठन्ति = जनास्तिष्ठन्ति।
निः + चलः = निश्चलः।	रामः + च = रामश्च।

(१४, १५) उत्व सन्धि (१) (देखो अभ्यास २२)

(१४) (ससजुषो रु) पद के अन्तिम स् को रु (ः) होता है। सजुष् शब्द के ष् को भी रु होता है। (**सूचना**—इस रु का साधारणतया विसर्ग : ही बचता है। इसी रु को सन्धिनियम १५, १६ और १७ से उ या य् होता है। जहाँ उ या य् नही होगा, वहाँ पर या तो विसर्ग बचेगा या र् बचेगा।)

(१५) (अतो रोरप्लुतादप्लुते) ह्रस्व अ के बाद रु (ः या र्) को उ हो जाता है, बाद मे ह्रस्व अ हो तो। (**सूचना**—इस उ को पूर्ववर्ती अ के साथ सन्धि नियम ३ से गुणसन्धि करके ओ हो जाता है और बाद के अ को सन्धि-नियम ५ से पूर्वरूप सन्धि होती है। अतएव अः + अ = ओऽ होता है।) जैसे,

रामः + अस्ति = रामोऽस्ति।	रामः + अवदत् = रामोऽवदत्।
कः + अपि = कोऽपि।	नृपः + अगच्छत् = नृपोऽगच्छत्।
सः + अपि = सोऽपि।	देवः + अधुना = देवोऽधुना।
सः + अपठत् = सोऽपठत्।	कः + अयम् = कोऽयम्।

सूचना—स्मरण रक्खे कि रामः कः आदि मे सब स्थानो पर स् का ही सन्धि-नियम १४ के अनुसार विसर्ग (:) दीखता है। यह विसर्ग मूलरूप मे सु (स्) है, उसी को रु (र् या :) होता है। जहाँ पर उ या य् नही होगा, वहाँ पर र् शेष रहता है। अतः सन्धि-नियम १४ से अ आ के अतिरिक्त अन्य स्वरो के बाद विसर्ग का 'र्' शेष रहता है, बाद मे कोई स्वर या व्यजन (३, ४, ५) हो तो। जैसे,

हरिः + अवदत् = हरिरवदत्।	लक्ष्मीः + इयम् = लक्ष्मीरियम्।
गुरुः + अस्ति = गुरुरस्ति।	वधूः + एषा = वधूरेषा।
शिशुः + आगच्छत् = शिशुरागच्छत्।	गुरोः + भाषणम् = गुरोर्भाषणम्।
पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा।	हरेः + द्रव्यम् = हरेर्द्रव्यम्।

(१६) उत्व सन्धि (देखो अभ्यास २३)

(हशि च) ह्रस्व अ के बाद रु (र् या :) को उ हो जाता है, बाद मे हश् (वर्ग के ३, ४, ५, ह, य, व, र, ल) हो तो। (**सूचना**—सन्धि-नियम १५ बाद मे अ हो तब लगता है, यह बाद मे हश हो तो। उ करने के बाद सधि-नियम ३ से गुण होकर ओ होगा। अतः अः + हश् = ओ + हश् होगा, अर्थात् अः को ओ) जैसे—

रामः + वन्द्यः = रामो वन्द्यः।	देवः + गच्छति = देवो गच्छति।
कृष्ण. + वदति = कृष्णो वदति।	बाल. + हसति = बालो हसति।
बाल + लिखति = बालो लिखति।	नृपः + रक्षति = नृपो रक्षति।
राम. + जयति = रामो जयति।	शिष्यः + यजति = शिष्यो यजति।

(१७) यत्वसन्धि (देखो अभ्यास २४)

(भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि) भोः, भगो., अघोः शब्द और अ या आ के बाद रु (र् या) को य् होता है, बाद मे अश् (स्वर, ह, य, व, र, ल, वर्ग के ३, ४, ५) हो तो। (**सूचना**—१. हलि सर्वेषाम्, २ लोप. शाकल्यस्य। य् के बाद यदि कोई व्यजन होगा तो य् का लोप अवश्य होगा। य् के बाद यदि कोई स्वर होगा तो य् का लोप ऐच्छिक है। यदि लोप करेंगे तो कोई दीर्घ, गुण, वृद्धि आदि सन्धि-कार्य नही होगा। अर्थात् अ. या आ. + अश् = अ या आ + अश्।) जैसे,

देवा. + गच्छन्ति = देवा गच्छन्ति।	राम. + इच्छति = राम इच्छति।
नराः + हसन्ति = नरा हसन्ति।	शिष्याः + एते = शिष्या एते।
देवाः + इह = देवा इह, देवायिह।	छात्रा + लिखन्ति = छात्रा लिखन्ति।
कन्या' + इच्छन्ति = कन्या इच्छन्ति।	पुत्र + आगच्छति = पुत्र आगच्छति।

(१८) सुलोपसन्धि (देखो अभ्यास २५)

(एतत्तदो. सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि) सः और एषः के विसर्ग का लोप होता है, बाद मे कोई हल् (व्यजन) हो तो। (सक', एषकः, असः, अनेष. के विसर्ग का लोप नही होगा।) (**सूचना**—सः, एष. के बाद अ होगा तो सन्धि-नियम १५ से 'ओ ऽ' होगा। अन्य स्वर बाद मे होगे तो सधिनियम १७ से विसर्ग का लोप)।

(१) सः + पठति = स पठति।	(२) सः + अयम् = सोऽयम्।
स' + लिखति = स लिखति।	स. + आगत. = स आगतः।
एषः + वदति = एष वदति।	स. + इच्छति = स इच्छति।
एषः + गच्छति = एष गच्छति।	एषः + अपि = एषोऽपि।

सन्धि-विचार (ख)

(१९) (एङि पररूपम्) अकारान्त उपसर्ग के बाद धातु का ए या ओ हो तो दोनों के स्थान पर पररूप (अर्थात् ए या ओ जैसा रूप) हो जाता है। अर्थात् (१) अ + ए = ए, (२) अ + ओ = ओ। जैसे—(१) प्र + एजते = प्रेजते। (२) उप + ओषति = उपोषति।

(२०) (ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्) ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त द्विवचन के रूप की प्रगृह्य सज्ञा होती है अर्थात् उनके साथ कोई सन्धि का कार्य नही होगा। जैसे—

हरी + एतौ = हरी एतौ	गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू
विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ	पचेते + इमौ = पचेते इमौ

(२१) (यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) पदान्त यर् (ह् को छोड कर सभी व्यञ्जन) के बाद अनुनासिक (वर्ग का पञ्चम अक्षर) हो तो यर् को अपने वर्ग का पचम अक्षर हो जायगा। यह नियम ऐच्छिक है। जैसे—

वाक् + मयम् = वाङ्मयम्	सद् + मतिः = सन्मति.
दिक् + नागः = दिङ्नागः	पद् + नगः = पन्नग·
तत् + न = तन्न	षट् + मुखः = षण्मुख.
तत् + मयम् = तन्मयम्	अप् + मयम् = अम्मयम्

(२२) (तोर्लि) तवर्ग के बाद ल हो तो तवर्ग को भी ल् हो जाता है। अर्थात् (१) त् या द् + ल = ल्ल, (२) न् + ल = ँल्ल। जैसे—

उत् + लेख· = उल्लेखः	पद् + लव. = पल्लव·
तत् + लीनः = तल्लीनः	विद्वान् + लिखति = विद्वाँल्लिखति

(२३) (शश्छोऽटि) पदान्त झय् (वर्ग के १, २, ३, ४) के बाद श् हो तो उसको छ् हो जाता है, यदि उस श् के बाद अट् (स्वर, ह्, य्, व्, र्) हो तो। यह नियम ऐच्छिक है। श् को छ् होने पर पूर्ववर्ती त् को श्चुत्वसन्धि (नियम ७) से च् हो जायगा। जैसे—

तत् + शिवः = तच्छिवः	सत् + शीलः = सच्छीलः
तत् + शिला = तच्छिला	उत् + श्रायः = उच्छ्राय.

(२४) (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः) अनुस्वार के बाद यय् (य, र, ल, व, वर्ग के १, २, ३, ४, ५) हो तो अनुस्वार को परसवर्ण (अगले वर्ण का पञ्चम अक्षर) हो जाता है। जैसे—

अं + कः = अङ्कः	अं + चितः = अञ्चितः	शां + तः = शान्तः
शं + का = शङ्का	कं + ठः = कण्ठः	सं + मानः = सम्मान

(२५) (नश्छव्यप्रशान्) पदान्त न् को रु (ं, स्) होता है, यदि छव् (च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्) बाद मे हो और छव् के बाद अम् (स्वर, ह, अन्तःस्थ, वर्ग के पञ्चम अक्षर) हो तो। प्रशान् शब्द मे नियम नही लगेगा। इस नियम के साथ कुछ अन्य नियम भी लगते है, अतः इस नियम का रूप होगा—न् + छव् = ँस् + छव् या ंस् + छव्। श्चुत्व-नियम यदि प्राप्त होगा तो लगेगा। जैसे—

कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित्	शार्ङ्गिन् + छिन्धि = शार्ङ्गिंश्छिन्धि
धीमान् + च = धीमांश्च	चक्रिन् + त्रायस्व = चक्रिंस्त्रायस्व
अस्मिन् + तरौ = अस्मिंस्तरौ	तस्मिन् + तथा = तस्मिंस्तथा

(२६) (वा शरि) विसर्ग के बाद शर् (श, ष, स) हो तो विसर्ग को विसर्ग और स् दोनो होते है। श्चुत्व या ष्टुत्व (नियम ७, ८) यदि प्राप्त होगे तो लगेगे। जैसे—

हरिः + शेते = हरिः शेते, हरिश्शेते	रामः + षष्ठः = रामष्षष्ठः
रामः + शेते = रामः शेते, रामश्शेते	बालः + स्वपिति = बालस्स्वपिति

(२७) (रो रि) र् के बाद र् हो तो पहले र् का लोप हो जाता है।

(२८) (ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः) ढ् या र् का लोप हुआ हो तो उससे पूर्ववर्ती अ, इ, उ को दीर्घ हो जाता है। जैसे—

पुनर् + रमते = पुना रमते	शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते
हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः	अन्तर् + राष्ट्रियः = अन्ताराष्ट्रियः

(७) पत्रादिलेखनप्रकार

आवश्यक-निर्देश

पत्रो के लेखन मे निम्नलिखित बातो का अवश्य ध्यान रक्खे :—

१ पत्र-लेखन बहुत सरल और स्पष्ट भाषा मे होना चाहिए। इसमे प्रायः वार्तालाप मे व्यवहृत भाषा का ही रूप अपनाया जाता है, जिससे पत्र का भाव सरलता से हृदयगम हो सके।

२ पत्रो मे अनावश्यक विशेषणो का परित्याग करना चाहिए। पाण्डित्य-प्रदर्शन का प्रयत्न पत्र मे अनुचित है, यह निबन्ध आदि का विषय है।

३. जिस उद्देश्य से पत्र लिखा गया है, उसका स्पष्ट उल्लेख करना चाहिए।

४ पत्र यथासम्भव सक्षिप्त होना चाहिए। उसमे आवश्यक बातो का ही उल्लेख करना चाहिए। अनावश्यक बातो का उल्लेख और विस्तार उचित नही है।

५ साधारणतया पत्रो को ४ श्रेणी मे बॉट सकते है। तदनुसार ही उनका लेखन होता है। (क) अतिपरिचित व्यक्तियो को। (ख) सामान्यतया परिचित व्यक्तियो को। (ग) अपरिचित व्यक्तियो को। (घ) केवल व्यावहारिक पत्र।

(क) १. पिता, पुत्र, माता, मित्र, पत्नी, पति आदि के लिए ऐसे पत्र होते है। इनमे प्रारम्भ मे ऊपर दाहिनी ओर स्व-स्थान-नाम तथा तिथि या दिनाक देना चाहिए। २ उसके नीचे अपने से बडे को प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते आदि। समान आयुवालो को नमस्ते, छोटो को स्वस्ति, आशीर्वाद आदि। (३) पत्र के अन्त मे बडो के लिए 'भवदाज्ञाकारी', 'भवत्कृपाकाक्षी' आदि, समान आयुवालो को 'भवदीयः', 'भावत्कः' आदि, छोटो को 'शुभाकाक्षी', 'शुभचिन्तकः' आदि लिखना चाहिए। ४. पत्र का पता लिखने मे पहली पक्ति मे व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए, उसके नीचे उपाधि आदि। दूसरी पक्ति मे ग्राम नाम आदि, तीसरी पक्ति मे पोस्ट आफिस (डाकखाना) का नाम, चौथी पक्ति मे जिले का नाम। यदि दूसरे प्रान्त या देश के लिए हो तो अन्त मे प्रान्त या देश का नाम।

(ख) सामान्य परिचित मे सम्बोधन मे व्यक्ति का नाम-निर्देश करे। शेष पूर्ववत्।

(ग) अपरिचितो को सम्बोधन मे 'श्रीमान्', 'महोदय' आदि लिखे। अन्त मे 'भवदीयः'। शेष पूर्ववत्।

(घ) केवल व्यावहारिक पत्रो मे (१) प्रारम्भ मे अधिकारी, व्यक्ति या कम्पनी आदि का नाम एव कार्यालय सम्बन्धी पता लिखे। (२) तदनन्तर सबोधन मे 'श्रीमन्' या 'महोदय'। (३) प्रणाम, नमस्ते आदि न लिखे। (४) अन्त मे 'भवदीय'। (५) केवल कार्य-सम्बन्धी बात लिखे। पारिवारिक या वैयक्तिक नही।

(१) पिता को पत्र ।

प्रयागतः
तिथिः चैत्र शुक्ला ९, २०१३ वि०

श्रीमतो मान्यस्य पितृवर्यस्य पादपद्मेषु ! सादर प्रणतिः ।

अत्र श तत्रास्तु । मया भवदीय कृपापत्र प्राप्तम् । अखिल च वृत्त ज्ञातम् । अद्यत्वे मम वार्षिकी परीक्षा भवति । अहम् अध्ययने सम्यक्तया दत्तचित्तोऽस्मि । साम्प्रत यावत् परीक्षायाः प्रश्नपत्राणि साधु लिखितानि सन्ति । आशासे परीक्षायामवश्य सफलो भविष्यामि । परीक्षानन्तर शीघ्रमेव गृह प्रति प्रस्थास्ये । पूज्याया मातुश्चरणयो. मम प्रणति. कथनीया ।

भवदाज्ञाकारी पुत्रः—
देवदत्तः ।

(२) मित्र को पत्र ।

गुरुकुल-महाविद्यालय-ज्वालापुरतः
दिनाकः २–११–५६ ईसवीयः

प्रियमित्र शिवकुमार ! सप्रेम नमस्ते ।

अत्र कुशल तत्रास्तु । भवत्पत्र समासाद्य मम चेतोऽतीव हर्षमनुभवति । अद्य दीपमालिकाया. पर्व विद्यते । सर्वेऽपि छात्रा अद्य प्रसन्नचेतसो दीपमालिकामहोत्सव-सम्पादनसलग्नाः सन्ति । एतत् ज्ञात्वा सर्वेऽपि प्रसन्नाः सन्ति, यद् भवान् बी० ए० परीक्षामुत्तीर्णः । सर्वे छात्राः अध्यापकाश्च साधुवादान् वितरन्ति । शेषमन्यत् कुशलम् । सद्य एव पत्रोत्तर प्रेषणीयम् ।

भवद्बन्धुः—
रामदत्तः ।

(३) विश्वविद्यालय के एक छात्र को

काशी-विश्वविद्यालयतः,
दिनाकः १०–७–५६

श्रीयुत सन्तोषकुमार ! नमस्ते ।

अत्र श तत्रास्तु । अहमत्रैव गृहात् समायातोऽस्मि । एतत्तु भवतो ज्ञातमेवास्ति यत् ममानुजः विज्ञानविषयमङ्गीकृत्य इन्टर० परीक्षामुत्तीर्णः । स दुर्भाग्यवशात् तृतीयश्रेण्यामुत्तीर्ण', अतएव तस्य प्रवेशो नात्र आशास्यते । भवतो महती कृपा भविष्यति यदि भवान् स्वीये प्रयागविश्वविद्यालये तस्य बी० एस-सी० कक्षाया प्रवेशार्थं प्रयतिष्यते । भवतो गृहे सर्वेऽपि कुशलिन' सन्ति । पत्र सद्य एव प्रेष्यम् ।

भावत्कः—विनयकुमारः ।

(४) अवकाश के लिए आचार्य को प्रार्थनापत्र

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदया.,
सेंट एड्रयूज कालेज, गोरखपुर ।

मान्यवर !

अहमद्य दिनद्वयाद् अतीव रुग्णोऽस्मि । विद्यालयमागन्तु न शक्नोमि । अतो दिवसद्वयस्यावकाश स्वीकृत्य मामनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः ।

भवतमाज्ञाकारी शिष्य'—
प्रेमनाथः (इन्टर० प्रथमवर्षस्थः)

(५) पुस्तक के लिए प्रकाशक को पत्र

श्री प्रबन्धकमहोदय.,
विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर ।

श्रीमन् !

मया भवत्प्रकाशित 'रचनानुवादकौमुदी' नाम पुस्तक दृष्टम् । कृपया पञ्च पुस्तकानि अधोनिर्दिष्टस्थाने वी० पी० पी० द्वारा शीघ्रमेव प्रेषणीयानि ।

दिनाक —१–११–५६ ई० भवदीयः—रूपनारायणशास्त्री, प्रकाशन-विभागः,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागः ।

(६) निमन्त्रणपत्रम्

श्रीमन्महोदय !

एतद् विदित्वा भवन्तो नून हर्ष प्राप्स्यन्ति यत् परेशस्य महत्याऽनुकम्पया मम ज्येष्ठाया दुहितुः कुमार्या विमलादेव्याः शुभपाणिग्रहणसस्कारः काशीवास्तव्यस्य श्रीमतः निखिलचन्द्रशर्मणो ज्येष्ठपुत्रेण सुरेशचन्द्रशर्मणा सह २०–११–५६ दिनाके रात्रौ १० वादने सम्पत्स्यते । भवन्त. सपरिवार निर्दिष्टसमये समागत्यास्मान् अनुग्रहीष्यन्ति ।

६०० मुट्ठीगज, भवद्दर्शनाभिलाषी—
प्रयागः । दीनबन्धुः शर्मा

दिनाकः—१०–११–५६

(स्वीकृति-सूचनयाऽनुग्राह्यः)

(७) परिषद् की सूचना

श्रीमन्तो मान्याः !

सविनयमेतद् निवेद्यते यद् आस्माकीनाया विद्यालयीयसस्कृतपरिषदः साप्ताहिक-मधिवेशनम् अगामिनि शुक्रवासरे (दिनाकः २६–१०–५६ ई०) सायकाले चतुर्वादने विद्यालस्य महाकक्षे (हॉल) भविष्यति। सर्वेषामपि छात्राणाम् अध्यापकाना च उपस्थितिः सविनय सादर प्राथ्यते।

निवेदक.—

दिनाक.—२०–१०–५६ गणेशदत्तपाण्डेय. (मन्त्री)

(८) (क) प्रस्ताव (ख) अनुमोदन (ग) समर्थन

(क) (१) आदरणीयाः सभासद', प्रियाः विद्यार्थिबन्धवश्च !

अद्य सौभाग्यमेतद् अस्माक यद् (गुरुकुलमहाविद्यालय-ज्वालापुरस्य आचार्यवर्याः श्रीमन्तो हरिदत्तशास्त्रिण', सप्ततीर्था', व्याकरणवेदान्ताचार्याः, एम० ए० आदि विविधोपाधिविभूषिताः) अत्र समायाता. सन्ति। अतोऽहं प्रस्ताव करोमि यत् श्रीमन्तो मान्या विद्वद्वरेण्या आचार्यवर्याः अद्यतन्या अस्या' सभायाः सभापतिपद-मलङ्कुर्वन्तु इति। आशासे एतेषा सभापतित्वे सभायाः सर्वमपि कार्य सुचारुरूपेण सम्पत्स्यते इति। आशासे अन्येऽपि अस्य प्रस्तावस्य अनुमोदन समर्थन च करिष्यन्ति।

(क) (२) मान्या. सभासदः !

अहमेतस्याः सभाया मन्त्रिपदार्थ (सभापतिपदार्थम्, उपसभापतिपदार्थम्, कोषाध्यक्षपदार्थम्) श्रीमतः नाम प्रस्तवीमि।

(ख) अहमेतस्य प्रस्तावस्य हृदयेन अनुमोदन करोमि।

(ग) अहमेतस्य प्रस्तावस्य हार्दिक समर्थन करोमि।

(९) व्याख्यान

श्रीमन्तः परमसमाननीयाः सभापतिमहोदयाः ! आदरणीया. सभासदश्च !

अद्य अह भवता पुरस्तात् (विद्या, अहिंसा, सत्य, परोपकार-) विषयमङ्गीकृत्य किञ्चिद् वक्तुमिच्छामि। सस्कृतभाषाभाषणस्य अनभ्यासवशाद् या' काश्चन त्रुट्यो भवेयुः, ता भवद्भिः क्षन्तव्याः। (तदनन्तर व्याख्यानस्य प्रारम्भः।)

(८) निबन्ध-माला

आवश्यक-निर्देश

१. किसी विषय पर अपने विचारो और भावो को सुन्दर, सुगठित, सुबोध एव क्रमबद्ध भापा मे लिखने को निवन्ध कहते है। निबन्ध के लिए दो बातो की आवश्यकता होती है—१. निबन्ध की सामग्री। २. निबन्ध की शैली।

निबन्ध की सामग्री एकत्र करने के ३ साधन हैं—१. निरीक्षण अर्थात् प्रकृति को स्वय देखना और ज्ञान एकत्र करना। २ अध्ययन अर्थात् पुस्तको आदि से उस विपय का ज्ञान प्राप्त करना। ३. मनन अर्थात् स्वय उस विषय पर विचार करना।

२. निबन्व-लेखन मे इन बातो का सदा ध्यान रक्खे —१. प्रस्तावना या आरम्भ—प्रारम्भ मे विषय का निर्देश, उसका लक्षण आदि रक्खे। २. विवेचन—बीच मे विषय का विस्तृत विवेचन करे। उस वस्तु के लाभ, हानि, गुण, अवगुण, उपयोगिता, अनुपयोगिता आदि का विस्तृत विचार करे। अपने कथन की पुष्टि मे सूक्ति, पद्य या श्लोक उद्धरणरूप मे दे सकते है। ३. उपसहार—अन्त मे अपने कथन का साराश सक्षेप मे दे। प्रस्तावना और उपसहार एक या दो सदर्भ (पैराग्राफ) मे ही हो। अधिक स्थान विवेचन मे दे।

३. निबन्व की शैली के विपय मे इन बातो का ध्यान रक्खे :—१. भापा व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो। २. भापा प्रारम्भ से अन्त तक एक-सी हो। ३ भाषा मे प्रवाह हो। स्वाभाविकता हो। ४. उपयुक्त और असदिग्ध शब्दो का प्रयोग करे। ५. भापा सरल, सरस, सुबोध और आकर्पक हो। ६. लोकोक्ति एव अलकारो को भी स्थान दे। ७. अनावश्यक विस्तार, पुनरुक्ति, पाण्डित्य-प्रदर्शन तथा क्लिष्टता का त्याग करे।

४. निबन्व के मुख्यतया तीन भेद है :—

१ **वर्णनात्मक निबन्ध**—इनमे पशु, पक्षी, नदी, ग्राम, नगर, पर्वत, समुद्र, ऋतु-वर्णन, यात्रा, पर्व, रेल, तार, विमान आदि का स्पष्ट एव विस्तुत वर्णन होता है।

२. **विवरणात्मक निबन्ध**—इनमे घटित घटनाओ, युद्धो, प्राचीन कथाओ, ऐतिहासिक वर्णनो, जीवन-चरितो आदि का सग्रह होता है।

३. **विचारात्मक निबन्ध**—इनमे आध्यात्मिक, मनोविज्ञान-सम्बन्धी, सामाजिक, राजनीतिक तथा अमूर्त विषयो चिन्ता, क्रोध, अहिंसा, सत्य, परोपकार आदि का सग्रह होता है। इन निबन्धो मे इन विषयो के गुण, दोष, लाभ, हानि आदि का विचार होता है।

उदाहरण के लिए २० निबन्ध अतिप्रसिद्ध विषयों पर सरल सस्कृत मे दिए जाते है।

१. विद्याविहीनः पशुः । (विद्या)

[१. प्रस्तावना, २ विद्याया लाभाः, ३. विद्याया महत्त्वम्, ४. विद्या-प्राप्तेरुपायाः, ५. उपसहारः ।]

ज्ञानार्थकविद्धातोः विद्याशब्दः सिध्यति । यस्य कस्यचिदपि वस्तुनः सम्यक्तया ज्ञान विद्येति कथ्यते । वेददर्शनसाहित्यविज्ञानादीना विषयाणा पठन सम्यग् ज्ञान च विद्येति अभिधीयते ।

यद्यपि ससारे बहूनि वस्तूनि सन्ति, परन्तु विद्येव सर्वश्रेष्ठ धनमस्ति । अत एवोच्यते—'विद्याधन सर्वधनप्रधानम्' । विद्यया मनुष्यः स्वकीय कर्तव्य जानाति । विद्ययैव मनुष्यो जानाति यत् को धर्मः, कोऽधर्म', किं कर्तव्यम्, किम् अकर्तव्यम्, कि पुण्यम्, कि पापम्, किं कृत्वा लाभो भविष्यति, केन कार्येण वा हानि. भविष्यति । स विद्याप्राप्त्या सन्मार्गम् अनुवर्तितु प्रयतते । एव विद्ययैव मनुष्यो मनुष्योऽस्ति । यो मनुष्यो विद्याहीनोऽस्ति स कर्तव्याकर्तव्यस्य अज्ञानात् पशुवद् आचरति, अत. स पशुरित्यभिधीयते । 'विद्याविहीनः पशु.' इति ।

विद्या सर्वेषु धनेषु श्रेष्ठमस्ति, यतो हि विद्यैव व्यये कृते वर्धते । अन्यद् धन व्यये कृते क्षय प्राप्नोति । अत एवोक्तम्—

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽय विद्यते तव भारति ।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सचयात् ॥ १ ॥

न चोरहार्यं न च भ्रातृभाज्य, न राजहार्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्य, विद्याधन सर्वधनप्रधानम् ॥ २ ॥

विद्यैव जगति मनुष्यस्य उन्नति करोति । दु'खेषु विपत्तिषु च तस्य रक्षा करोति । विद्यैव कीर्ति धन च ददाति । विद्या वस्तुतः कल्पलता विद्यते ।

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते, कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम् ।
लक्ष्मी तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्ति, किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥३॥

विद्ययैव मनुष्य. सर्वत्र समान प्राप्नोति । राजानोऽपि तस्य पुरस्तात् नतशिरसो भवन्ति । विद्वास एव ससारस्य दुःखानि दूरीकुर्वन्ति । त एव उपदेशका विचारका ऋषयो महर्षयो मन्त्रिणो नेतारश्च भवन्ति । विद्वास एव विविधान् आविष्कारान् कृत्वा ससारस्य श्रिय वर्धयन्ति, लोकान् च सुखिन. कुर्वन्ति । अत. सर्वैरपि आलस्यप्रमादादिक त्यक्त्वा विद्याध्ययनम् अवश्य कर्त्तव्यम् । विद्ययैव मोक्षप्राप्तिः भवति । उक्त च—'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' ।

२ सत्यमेव जयते नानृतम् । (सत्यम्)

[(१) प्रस्तावना, (२) सत्यस्योपयोगिता, (३) दृष्टान्ताः, (४) सत्यत्यागे हानयः, (५) उपसंहारः ।]

सते अर्थात् कल्याणाय हितं सत्यं भवति । यद् वस्तु यथा विद्यते, तस्य तेनैव रूपेण कथनं प्रकाशनं लेखनं वा सत्यमिति अभिधीयते । परमेश्वरेण जिह्वा सदुपयोगार्थं दत्ता, अतः जिह्वायाः सदुपयोगः सत्यभाषणेन कर्तव्यः ।

जगति सत्यस्य यादृशी आवश्यकता विद्यते, न तादृशी अन्यस्य कस्यचिद् वस्तुनः । सत्येनैव समाजस्य स्थितिः वर्तते । यदि सर्वेऽसत्यवादिनो भवेयुस्तर्हि न लोकस्य स्थितिः क्षणमात्रमपि भवितुं शक्नोति । सत्यस्यैव एष महिमा यद् वयं समाजे मनुष्येषु विश्वासं कुर्मः । अतः सिध्यति यत् सत्यं लोकस्याधारोऽस्ति । अत एवोच्यते—

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः ।
अलुब्धैर्दानशूरैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥ १ ॥

सत्यभाषणेन मनुष्यो निर्भीको भवति । सत्यभाषणेन तस्य तेजो यशः कीर्तिः विद्या गौरवं च वर्धते । यः सत्यं वदति, स सर्वेभ्यः पापेभ्योऽपि निवृत्तो भवति । यदा स कस्मिंश्चित् पापे प्रवर्तते, तदा स चिन्तयति यद् अहं सत्यमेव वदिष्यामि, अतः सर्वेषां दृष्टिषु हीनो भविष्यामि, अतः स पापाद् विरमति । सत्यभाषणं वस्तुतो जीवने सर्वोत्तमं तपो वर्तते । अत एवोक्तम्—

अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम् ।
अश्वमेधसहस्राद् हि सत्यमेव विशिष्यते ॥ २ ॥

सत्यस्य प्रतिष्ठयैव संसारस्य कल्याणम्, अभ्युदयः, उन्नतिश्च भवति । यः कश्चित् सत्यमाश्रयति, तस्य जीवनं सफलं भवति । अत उच्यते—'सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्' । ये सत्यं पालयन्ति, ते सर्वोत्तमं धर्मं कुर्वन्ति । ये च सत्यं परित्यज्य असत्यं भजन्ते ते महापातकं कुर्वन्ति । यतो हि असत्यभाषणेन स्वस्य हानिः नाशश्च भवति । समाजस्य देशस्य लोकस्य च मिथ्याभाषणेन नाशो भवति । अत एवोच्यते—नहि सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम् ।

सत्यस्य पालनार्थमेव महाराजो दशरथः प्रियं पुत्रं रामं वनं प्रैषयत् । राजा हरिश्चन्द्रः सत्यपालनार्थमेव सर्वाणि दुःखानि असहत । युधिष्ठिरः सत्यभाषणस्य प्रभावादेव विजयमलभत । महात्मा गान्धिमहोदयः सत्यस्यैव सदा शिक्षामदात् । भारतस्य राजचिह्नेऽपि 'सत्यमेव जयते' इत्यादरेण उल्लिख्यते ।

अतः सर्वैरपि लौकिकपारलौकिकाभ्युदयाय सत्यमेव सदा भाषणीयम् ।

३. अहिंसा परमो धर्मः । (अहिसा)

[१. प्रस्तावना, २ अहिसाया उपयोगिता लाभाश्च, ३ दृष्टान्ताः, ४. हिसाया दोषाः, ५. उपसहारः ।]

हिसन हिसेति । कस्यापि पीडन दुःखदान वा हिसेति कथ्यते । हिसा त्रिविधा भवति–मनसा, वाचा, कर्मणा च । मनुष्यो यदि कस्यचित् जनस्य अशुभ हानि वा चिन्तयति, सा मानसिकी हिसा वर्तते । यदि कठोरभाषणेन, कटुप्रलापेन, दुर्वचनेन, असत्यभाषणेन वा कमपि दु·खित करोति, तर्हि सा वाचिकी हिसा भवति । यदि जनः कस्यापि जीवस्य हनन करोति, ताडनादिना वा दु ख ददाति, तर्हि सा कायिकी हिसा भवति । एतासा तिसृणा हिसाना परित्यागोऽहिसेति निगद्यते ।

ससारेऽहिसाया महती उपयोगिता वर्तते । गवादीना पशूना यदि हनन न स्यात्तर्हि देशे धनधान्यस्य दुग्धादीना च न्यूनता न स्यात् । अहिंसया पशवोऽपि मनुष्येषु प्रेम कुर्वन्ति । शत्रवोऽपि अहिसया मित्राणि भवन्ति । मनुष्यस्य आत्माऽपि अहिंसया सुख-मनुभवति । अहिसायाः प्रतिष्ठाया सर्वे सर्वत्र ससुख निर्भय च विचरन्ति । एतत्तु सर्वैरनु-भूयते एव यत् न कोऽपि जगति स्वविनाशमिच्छति । सर्वे जनाः सुखमिच्छन्ति । यदि एवमेव पशुपक्षिणामपि विषये चिन्त्येत तर्हि न कस्यचिद् हनन कश्चित् करिष्यति । अतएव ऋषिभिः महर्षिभिश्च 'अहिंसा परमो धर्म' इत्यङ्गीकृतः । उच्यते च—

श्रूयता धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत् ॥ १ ॥
आत्मौपम्येन भूतेषु दया कुर्वन्ति साधवः ॥ २ ॥
आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति ॥ ३ ॥

अहिसैव धर्ममार्गः । अतएव भगवान् बुद्धः, भगवान् महावीरः, महात्मा गान्धि-महोदयश्च अहिंसाया एवोपदेश दत्तवन्तः । अहिंसायाः प्रचारे एवैतेषा जीवन व्यतीतम् । महात्मनो गाधिमहोदयस्य सरक्षणे अहिसाशस्त्रेणैव भारतवर्षः पराधीनतापाश छित्त्वा स्वतन्त्रतामलभत । अहिंसाशस्त्रेणैव भीता विदेशीया भारत त्यक्त्वा पलायिताः । एषोऽ-हिसाया एव महिमास्ति ।

यदि ससारे हिसायाः प्रसारः स्यात् तदा न कोऽपि मनुष्यो देशो वा ससारे सुखेन शान्त्या च स्थातु शक्नोति । हिसया मनुष्य· क्रूर· निर्दयः सद्भावहीनश्च भवति । हिंसके सत्यं त्यागः तपस्या दया क्षमा प्रेम पवित्रता विमलबुद्धिश्च न भवन्ति ।

अतः सर्वैरपि सर्वदा सर्वभावेन अहिसाधर्मः पालनीयः, लोकस्य च कल्याण कर्तव्यम् ।

४ परोपकाराय सतां विभूतयः। (परोपकारः)

[१. प्रस्तावना, २. परोपकारस्य लाभाः, गुणा., महत्त्व च, ३. दृष्टान्ताः, ४ उपसहारः।]

परेषाम् उपकार. परोपकारोऽस्ति। अन्येभ्यो मनुष्येभ्यो जीवेभ्यो वा तेषा हितसम्पादनार्थ यत् किंचिद् दीयते, तेषां साहाय्य वा क्रियते, तत् सर्व परोपकारशब्देन गृह्यते।

ससारे परोपकार एव स गुणो विद्यते, येन मनुष्येषु जीवेषु वा सुखस्य प्रतिष्ठा वर्तते। समाजसेवाया भावना, देशप्रेमभावना, देशभक्तिभावना, दीनोद्धरणभावना, परदु:खकातरता, सहानुभूतिगुणस्य सत्ता च परोपकारगुणस्य ग्रहणेनैव भवति। परोपकारकरणेन हृदय पवित्र सत्त्वभावसमन्वित सरल विनयोपेत सरस सदय च भवति। परोपकारिणः परेषा दुःख स्वीय दुःख मत्वा तन्नाशाय यतन्ते। ते दीनेभ्यो दान ददति, निर्धनेभ्यो धनम्, वस्त्रहीनेभ्यो वस्त्रम्, पिपासितेभ्यो जलम्, बुभुक्षितेभ्योऽन्नम्, अशिक्षितेभ्यः शिक्षाम्। सज्जनाः परोपकारेणैव प्रसन्ना भवन्ति। ते परोपकारकरणे स्वीय दुःख न गणयन्ति। उच्यते च—

> श्रोत्र श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कंकणेन।
> विभाति कायः खलु सज्जनाना, परोपकारेण न चन्दनेन ॥ १ ॥

प्रकृतिरपि परोपकारस्यैव शिक्षा ददाति। परोपकारार्थमेव सूर्यः तपति, चन्द्रो ज्योत्स्ना वितरति, वृक्षाः फलानि वितरन्ति, नद्यो वहन्ति, मेघा वर्षन्ति। उक्त च—

> परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
> परोपकाराय दुहन्ति गाव., परोपकारार्थमिद शरीरम् ॥ २ ॥
> भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमै., नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः।
> अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभि., स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥ ३ ॥

शास्त्रेषु परोपकारस्य बहु महत्त्व गीतमस्ति। परोपकारः सर्वेषामुपदेशाना सारो वर्तते। परोपकारेणैव जगतोऽभ्युदयो भवति, शान्तिः सुख च वर्धते। उक्त च—

> अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
> परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥ ४ ॥

परोपकारभावनयैव महाराजो दधीचिः देवाना हिताय स्वीयानि अस्थीनि ददौ। महाराजः शिबिः कपोतरक्षणार्थ स्वमास श्येनाय प्रादात्। महर्षिः दयानन्दः, महात्मा गान्धिश्च भारतभूमिहितायैव प्राणान् दत्तवन्तौ। अतः सर्वैरपि सर्वदा सर्वथा परोपकारः करणीयः। निगदित चैतत्—

> धनानि जीवित चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।
> सन्निमित्ते वर त्यागो विनाशे नियते सति ॥ ५ ॥
> परोपकारः कर्तव्यः प्राणैरपि धनैरपि।
> परोपकारज पुण्य न स्यात् क्रतुशतैरपि ॥ ६ ॥

५ उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः । (उद्योगः)

(१. प्रस्तावना, २. उद्योगस्योपयोगिता, लाभाश्च, ३. दृष्टान्ताः, ४. अनुद्योगेन हानयः, ५. उपसहारः ।)

ससारे सर्वेऽपि जनाः सुख शान्ति चेच्छन्ति । सुख शान्तिश्च विना उद्योगेन पुरुषार्थेन वा न सिध्यति । उद्योगेनैव मनुष्यो धन विद्या कलासु कुशलता च लभते । येऽनुद्योगिनः सन्ति ते सुख शान्ति समृद्धि न जातु लभन्ते । अत उच्यते—

उद्योगिन पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मीर्दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति ।
दैव निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या, यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ॥ १ ॥

भगवद्गीताया भगवता कृष्णेन प्रतिपादितमेतद् यद् मनुष्यैः ससारेऽवश्यमेव कर्म कर्तव्यम् । अकर्मणि कदापि प्रवृत्तिर्न कर्तव्या । पुरुषार्थेनैव जीवन चलति ।

नियत कुरु कर्म त्व कर्म ज्यायो ह्यकर्मण' ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः ॥ २ ॥

ससारेऽनुद्योग आलस्य वा मनुष्यस्य महाशत्रु. वर्तते, येन मनुष्यः सदा दुःख प्राप्नोति । उद्यमिन एव दुःखानि त्यक्त्वा सुख समृद्धि च प्राप्नुवन्ति । उक्त च—

आलस्य हि मनुष्याणा शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा य नावसीदति ॥ ३ ॥

जगति दृश्यते एतद्यद् जना' सर्वविधसुख काक्षन्ति, परन्तु तदर्थं यत्न न कुर्वन्ति, विना प्रयत्नेन किञ्चिदपि कदाचिदपि न सिध्यतीति सुनिश्चितम् । अतएवोक्तम्—

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै' ।
नहि सुप्तस्य सिहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ ४ ॥
योजनाना सहस्र तु शनैर्गच्छेत् पिपीलिका ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेक न गच्छति ॥ ५ ॥

उद्यमेनैव निर्धना धनिनो भवन्ति, अज्ञानिनो ज्ञानवन्त', अकुशलाः कुशला', निर्बलाः सबलाः, दीनाः हीनाश्च सर्वविधसम्पत्तिसमन्विता' भवन्ति । महाकवि' कालिदास उद्यमेनैव कविकुलगुरुः बभूव, वाल्मीकिव्यासादयश्च कविवराः सजाताः । सर्वमुद्योगेनैव सिध्यति । अनुद्योगेन भाग्यनिर्भरतया च दु.खमेव प्राप्नोति । अत. सर्वैः सर्वदा उद्योगः करणीयः । परेशोऽपि उद्योगिन एव साहाय्य करोति । उक्त च—

न दैवमिति सचिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मन. ।
अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्तुमर्हति ॥ ६ ॥
उद्यम' साहस धैर्य बुद्धिः शक्ति' पराक्रम' ।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र साहाय्यकृद् विभुः ॥ ७ ॥

६ धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्। (आरोग्यम्)

(१ प्रस्तावना, २ आरोग्यस्योपयोगिता, लाभाः, प्रकाराश्च, ३. तदभावे दोषाः, ४ उपसंहार.।)

ससारे सर्वे जनाः सुखार्थं प्रयतन्ते। मनुष्यः तदैव सुखी भवति, यदा स नीरोगो भवति। तदैव स प्रयत्न पुरुषार्थमपि कर्तुं शक्नोति। यो मनुष्यो रुग्णो वर्तते, यस्य शरीरे वा शक्तिर्नास्ति, स कथमपि ससारस्य सुखमनुभवितु न शक्नोति। शरीरस्यारोग्य नीरोगता वा व्यायामेन भवति। स्वस्था एव जनाः सर्वमपि कार्यकलाप धर्मादिक च कुर्वन्ति। अतएवोक्त महाकविना कालिदासेन—

शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्।

स्वास्थ्यस्योपयोगिता सर्वत्रैव दृश्यते। ये स्वस्था हृष्टा पुष्टाश्च भवन्ति, ते सोत्साह स्वीय कर्म कुर्वन्ति। ते न कुतश्चिद् भीता भवन्ति। सभासु समाजेषु च तेषा शरीर वीक्ष्य जनाः प्रसन्ना भवन्ति। ये च रुग्णा निर्बला भवन्ति, ते सर्वत्र हीनदृष्ट्याऽवलोक्यन्ते। तेषा सर्वत्रापमानो भवति। ते निर्बलत्वात् सदा दुःखमेव लभन्ते। अतो यथा विद्याध्ययनादिकमावश्यकम्, तथैव स्वास्थ्यरक्षापि अतीवावश्यकी विद्यते।

स्वास्थ्यलाभस्य व्यायामा बहुविधाः सन्ति। भ्रमण धावन क्रीडन तरणम् अश्वारोहण मल्लयुद्धम् इत्यादयः। बालकेभ्यः क्रीडन धावन तरण च विशेषतो हितकरमस्ति। क्रीडासु च पादकन्दुकेन क्रीडन, यष्टिकया (हॉकी) क्रीडनम्, करकन्दुकेन (वॉली बॉल) क्रीडन विशेषतो रुचिकर स्वास्थ्यवर्धक चास्ति। प्रात साय च भारतीया व्यायामा अपि करणीयाः, यथा—दण्डसाधनम् (डड), उत्थानोपवेशनक्रिया (बैठक), योगासनेषु च कानिचिदासनानि। योगासनेषु पश्चिमोत्तानासन मयूरासन शरीरासन धनुरासन सर्वांगासन शीर्षासन च सर्वेभ्य एव मनुष्येभ्य. स्वास्थ्यलाभाय विशेषतो हितकराणि सन्ति। बालिकाभ्य. स्त्रीभ्यश्च भ्रमण विशेषोपयोगि वर्तते। युवकेभ्योऽश्वारोहणमपि हितकरमस्ति। वृद्धेभ्यो भ्रमण योगासनानि च लाभप्रदानि सन्ति। प्राणायामस्तु सर्वैरपि अवश्यमेव स्वास्थ्यलाभाय करणीयः। अन्ये व्यायामा' शक्त्यनुसारेण करणीयाः। स्वास्थ्यलाभाय शरीरस्य स्वच्छताऽपि अत्यावश्यकी वर्तते। अत' प्रतिदिन स्नानमपि अवश्य करणीयम्।

सर्वैश्वर्यसमन्विताः धनधान्यपरिपूर्णा अपि जनाः स्वास्थ्यस्याभावे स्वकीयस्य ऐश्वर्यस्य सुख नानुभववितु शक्नुवन्ति। अत. सर्वैरपि स्वास्थ्यलाभाय नीरोगतायै च प्रतिदिनमवश्य व्यायामः करणीयः।

७ आचारः परमो धर्मः। (सदाचारः)

(१. प्रस्तावना, २ सदाचारस्योपयोगिता, लाभाः, तत्साधनोपायाः, ३. दृष्टान्ताः, ४. उपसहारः।)

सताम् आचार. सदाचार इत्युच्यते। सज्जनाः विद्वासो यथा आचरन्ति तथैव आचरण सदाचारो भवति। सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टतापूर्वक व्यवहार कुर्वन्ति। ते सत्य वदन्ति, असत्यभाषणाद् विरमन्ति, मातुः पितुः गुरुजनाना वृद्धाना ज्येष्ठाना च आदर कुर्वन्ति, तेषाम् आज्ञा पालयन्ति, सत्कर्मणि प्रवृत्ता भवन्ति, असत्कर्मभ्यश्च निवृत्ता भवन्ति। तद्वत् आचरणेन मनुष्य. सदाचारी धार्मिकः शिष्टो विनीतो बुद्धिमान् च भवति।

सदाचारस्य सत्तयैव ससारे जन उन्नति करोति। देशस्य राष्ट्रस्य समाजस्य जनस्य च उन्नत्यै सदाचारस्य महती आवश्यकता वर्तते। सदाचारेणैव जना ब्रह्मचारिणो भवन्ति। सदाचारेणैव शरीर परिपुष्ट भवति। सदाचारेण बुद्धि. वर्धते। सदाचारेणैव मनुष्यः परोपकारकरण सत्यभाषणम् अन्यच्च सत्कर्म कर्तुं प्रवृत्तो भवति। सदाचारी न पापानि चिन्तयति, अतः तस्य बुद्धि. निर्मला भवति। निर्मलबुद्धिश्च लोकस्य देशस्य च हितचिन्तने प्रवृत्तो भवति। अतएव पूर्वै महर्षिभिः 'आचार' परमो धर्म.' इत्युक्तम्। ससारे सदाचारस्यैव महत्त्व सर्वत्र दृश्यते। ये सदाचारिणो भवन्ति, त एव सर्वत्र आदर लभन्ते। महाभारतेऽपि अतएवोक्त यद् मनुष्यै. सदा स्ववृत्तस्य रक्षा कार्या, धनमायाति याति च। य. सदाचारेण हीनोऽस्ति स वस्तुतः पतितोऽस्ति, धनहीनो न पतितोऽस्ति।

वृत्त यत्नेन सरक्षेद् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्तत. क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हत. ॥ १ ॥

ब्रह्मचर्यस्य वेदेऽपि महिमा वर्णितोऽस्ति, यद् ब्रह्मचर्यस्य सदाचारस्य वा महिम्ना देवा मृत्युमपि स्ववशेऽकुर्वन्।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत ॥ २ ॥

मनुष्यस्तदा सच्चरित्रो भवति यदा स मातृवत् परदारेषु व्यवहरति, कन्या. बालिकाश्च स्वभगिनीवत् पश्यति। कामवासना निगृह्य सयत इवाचरति। यो नैवमाचरति स दुश्चरित्रः दुराचार इति कथ्यते।

सदाचारपालनेनैव श्रीरामचन्द्रो मर्यादापुरुषोत्तमोऽभवत्। एतदर्थमेव लक्ष्मणेन शूर्पणखाया नासिका छिन्ना। सदाचाराभावेनैव चतुर्वेदविदपि रावणो राक्षस इति कथ्यते। अतः सर्वैः स्वोन्नत्यै सदा सदाचारः पालनीय.।

८ सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् । (सत्सगतिः)

(१ प्रस्तावना, २ सत्सगतेरुपयोगिता लाभाश्च, ३. तदभावे दोषाः, ४ उपसहार. ।)

सता सज्जनाना संगतिः सत्सगतिः कथ्यते । ये सज्जनाः साधवः पवित्रात्मानः सन्ति, तेषा सगत्या मनुष्यः सज्जनः साधुः शिष्टश्च भवति । ये दुर्जनाः सन्ति तेषा सगत्या मनुष्यो दुर्जनो भवति, पतन विनाश च प्राप्नोति । ये सज्जनैः सह उपविशन्ति उत्तिष्ठन्ति खादन्ति पिबन्ति च, ते तथैव स्वभाव धारयन्ति । मनुष्यस्योपरि सगतेः महान् प्रभावो भवति । यादृशैः पुरुषैः सह स निवसति, तादृश एव स भवति । अत एवोच्यते—

ससर्गजा दोषगुणा भवन्ति ॥ १ ॥

हीयते हि मतिस्तात हीनैः सह समागमात् ।
समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम् ॥ २ ॥

सज्जनाना सगत्या मनुष्य उन्नति प्राप्नोति । तस्य विद्या कीर्तिश्च वर्धेते । अतएव नीतिकारैः वारवारम् एतदुक्तमस्ति यद्—

सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सगतिम् ।
सद्भिर्विवाद मैत्री च नासद्भि' किंचिदाचरेत् ॥ ३ ॥

पण्डितैः सह सागत्य पण्डितैः सह सकथाः ।
पण्डितैः सह मित्रत्व कुर्वाणो नावसीदति ॥ ४ ॥

बाल्यकाले विशेषतो बालकस्योपरि ससर्गस्य प्रभावो भवति । बालको यादृशैः बालकैः सह सगति करिष्यति तादृश एव भविष्यति । अतो बाल्यकाले दुर्जनैः सह संगतिः कदापि न करणीया । दुर्जनाना ससर्गेण बहवो हानयो भवन्ति । यथा—दुर्जन-ससर्गेण मनुष्योऽसद्वृत्तो भवति, दुर्विचारयुक्तो भवति, तस्य बुद्धिर्दूषिता भवति, अत' बुद्धिः क्षीयते, दुर्व्यसनग्रस्तो भवति अतस्तस्य शरीर क्षीण निर्बल च भवति, तस्य कीर्तिः नश्यति, सर्वत्रानादरो भवति, सर्वत्राप्रतिष्ठाभाजन च भवति ।

अतः स्वयशोवृद्धये ज्ञानवृद्धये सुखस्य शान्तेश्च प्राप्तये सर्वैरपि सर्वदा सत्सगतिः करणीया, दुर्जनसगतिश्च हेया । अतएव सत्सगतिमाहात्म्ये उच्यते ।

जाड्य धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्य,
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति,
सत्सगतिः कथय कि न करोति पुसाम् ॥ ५ ॥

९. संघे शक्तिः कलौ युगे। (एकता)

(१. प्रस्तावना, २. एकताया उपयोगिता लाभाश्च, तत्साधनोपायाः, ३. तदभावे दोषाः, ४. उपसहारः।)

एकमुद्देश्य लक्ष्यीकृत्य बहूना जनानाम् एकत्वभावनया कार्यकरणम् 'एकता' इत्युच्यते। एकता मनुष्ये शक्तिमादधाति, एकतयैव देश. समाजो लोकश्च उन्नतिपथ प्राप्नोति। यस्मिन् देशे समाजे वा एकताऽस्ति, स एव देशः सकललोकसम्माननीयो भवति।

ससारे एकतायाः अतीवावश्यकता वर्तते, विशेषतश्चाद्यत्वे। अद्यत्वे ससारे यस्मिन् राष्ट्रे एकताया अभावोऽस्ति, तद् राष्ट्र सद्य एव परतन्त्रतापाशबद्ध भवति। भारतवर्ष एवैकताया अभावात् कतिपयवर्षपूर्व यावत् पराधीन आसीत्। यदा भारतीयेषु एकताभावनाया जागृतिरभूत्, तदा ते स्वाधीनतामलभन्त। अत एवोच्यते—'सघे शक्तिः कलौ युगे।'

ऋग्वेदस्यान्तिमसूक्ते एकताया महत्वावश्यकता महत्त्व च प्रतिपादित वर्तते। सर्वे जना एकत्वभावनया युक्ताः स्युः। तेषा गमन भाषण मनासि हृदयानि सकल्पा विचाराः मन्त्रणादिक चैकत्वभावेनैव प्रेरितानि स्यु.। एवकरणेनैव जगति सुखस्य शान्तेश्च सप्राप्तिः सभवति। उक्त च .—

स गच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम्॥ १॥
समानो मन्त्रः समिति. समानी समान मनः सह चित्तमेषाम्।
समान मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥ २॥
समानी व आकूति· समाना हृदयानि व·।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥ ३॥

हितोपदेशे मित्रलाभप्रकरणे एकताया लाभा· साधु प्रतिपादिताः सन्ति। क्षुद्राणि तृणानि यदा रज्जुभाव प्राप्नुवन्ति, तदा गजोऽपि तेन बद्धु शक्यते। जलबिन्दुसमूह एव नदी सागरश्च भवति। मृत्तिकाकणसमूह एव महापर्वतो भवति। तन्तुसमूह एव सुदृढ· पटो भवति। इत्येष एकताया एव महिमा। अत एवोक्तम्—'सहतिः श्रेयसी पुसाम्'।

अल्पानामपि वस्तूना सहतिः कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः॥ ४॥

यत्रैकताया अभावोऽस्ति, तत्र क्षयो नाशो विनाशोऽधोगतिः हानिश्च दृश्यते। अतः सुखशान्तिसमृद्धिप्राप्त्यै एकता धारणीया। उक्त चापि महाभारते—

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्म, न वै सुख प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः।
न वै भिन्ना गौरव प्राप्नुवन्ति, न वै भिन्ना· प्रशम रोचयन्ति॥ ५॥

१० जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

(१ प्रस्तावना, २ मातृभक्तेः देशभक्तेश्चोपयोगिता, लाभाश्च, ३ तदभावे दोषाः, ४. उपसहारः ।)

अस्मिन् ससारे माता मातृभूमिश्च द्वे एवैते सर्वोत्तमे स्तः । बालकस्योपरि मातुः यादृश नैसर्गिक प्रेम भवति, न तादृश क्वापि द्रष्टु शक्यते । माता बालकस्य कृते सर्वस्वमपि त्यक्तु शक्नोति । मातुः सर्वदैव एषेच्छा भवति यद् बालकः सदा सुखी समृद्धो गुणगणविभूषितश्च भवेत् । सा स्वीय कष्टजात नैव चिन्तयति, बालकस्य सुखचिन्तैव सदा तस्याः समक्ष भवति । अतएव पुत्रस्यापि मातुरुपरि नैसर्गिकमसाधारण च प्रेम भवति । बाल्यकालात् प्रभृति मातरमेव सर्वतोऽधिक मन्यते । बालकस्य कृते मातैव सर्वस्वमस्ति । मनुष्यः कदाचिदपि मातुरनृणता प्राप्तु न शक्नोति । अत एवोपनिषत्सु आदिश्यते—'मातृदेवो भव' । अतएव मनुनाऽप्युक्तम्—

य मातापितरौ क्लेश सहेते सभवे नृणाम् ।
न तस्य निष्कृतिः कर्तुं शक्या वर्षशतैरपि ॥

अत एव मनुष्यै. मातृपूजा मातृभक्तिश्च सर्वदा करणीया ।

यो मनुष्यो यत्र जन्म लभते, सा तस्य जन्मभूमिः । जन्मभूमिः मनुष्यस्य सर्वदैव आदरस्य पात्र भवति । यत्र कुत्रापि गतो मनुष्यो जन्मभूमि सदा स्मरत्येव, तद्दर्शनस्याभिलाषः तस्य हृदये वर्तते । भारतवर्षोऽयमस्माक जन्मभूमिः । भारतवर्षश्चास्माक देशः । स्वदेशस्य कृते सर्वेषा हृदये समान आदरश्च भवति । अस्मिन् ससारे सर्वे देशाः स्वदेशस्योन्नतिसाधने सलग्नाः सन्ति । ते साभिमानमेतद् वदन्ति यद् वयम् एतद्देशीयाः स्म. । वय भारतीया अपि साम्प्रत स्वाधीना' स्म । सर्वस्मिन् ससारे भारतवर्षस्य साम्प्रतमादरो भवति ।

देशस्योन्नत्यै देशभक्तिभावनाया महत्यावश्यकता भवति । देशभक्तिभावनयैव मनुष्यो देशस्योन्नत्यै यतते, समाजस्योद्धार करोति, अशिक्षितान् शिक्षितान् करोति, देशस्य दरिद्रता हीनावस्था च दूरीकरोति, स्वदेशीयव्यापारस्योन्नति करोति, स्वदेशनिर्मितानि वस्तूनि परिदधाति, आवश्यकताया सत्या स्वकीयान् प्राणानपि मातृभूमिरक्षार्थ परित्यजति । यदा सर्वेष्वपि देशवासिषु एतादृशी भावना भवति, तदा देशो नूनमुन्नति प्राप्नोति । भारतीयेषु स्वदेशाभिमान. सर्वदा आसीत्, अस्ति च । अस्माभिरपि देशभक्तैः भाव्यम्, देशस्य चोन्नतिः करणीया । लक्ष्य च स्यात् :—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवाः ॥

११ संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्।

(१. प्रस्तावना, २. सस्कृतभाषाया उपयोगिता, महत्त्व लाभाश्च, ३. तत्साहित्यम्, ४. उपसहार. ।)

सस्कृता परिष्कृता परिशुद्धा व्याकरणसम्बन्धिदोषादिरहिता भाषा सस्कृतभाषेति निगद्यते। सवविधदोषशून्यत्वादिय भाषा देवभाषा, गीर्वाणगीः इत्यादिभिः शब्दैः सबोध्यते। अतोऽन्या भाषा प्राकृतभाषापदवी प्राप्ता।

सस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा सर्वोत्तमसाहित्यसयुक्ता चास्ति। सस्कृतभाषाया उपयोगिता एतस्मात् कारणाद् वर्तते यद् एषैव सा भाषाऽस्ति यतः सर्वासां भारतीयानाम् आर्यभाषाणाम् उत्पत्तिर्बभूव। सर्वासामेतासा भाषाणाम् इय जननी। सर्वभाषाणा मूलरूपज्ञानाय एतस्या आवश्यकता भवति। प्राचीने समये एषैव भाषा सर्वसाधारणा आसीत्, सर्वे जनाः सस्कृतभाषाम् एव वदन्ति स्म। अतः ईसवीयसवत्सरात्पूर्व प्रायः समग्रमपि साहित्य सस्कृतभाषायामेव उपलभ्यते। सस्कृतभाषायाः सर्वे जनाः प्रयोग कुर्वन्ति स्म, इति तु निरुक्तमहाभाष्यादिग्रन्थेभ्यः सर्वथा सिद्धमेव। आधुनिक भाषाविज्ञानमपि एतदेव सनिश्चय प्रमाणयति।

सस्कृतभाषायामेव विश्वसाहित्यस्य सर्वप्राचीनग्रन्था· चत्वारो वेदा· सन्ति, येषा महत्त्वमद्यापि सर्वोपरि वर्तते। वेदेषु मनुष्याणा कर्तव्याकर्तव्यस्य सम्यक्तया निर्धारण वर्तते। वेदाना व्याख्यानभूता ब्राह्मणग्रन्थाः सन्ति। तदनन्तरम् अध्यात्मविषयप्रतिपादिका उपनिषदः सन्ति, यासा महिमा पाश्चात्त्यैरपि नि·सकोच गीयते। ततश्च भारतगौरवभूताः षड्दर्शनग्रन्था· सन्ति, ये विश्वसाहित्येऽद्यापि सर्वसमान्याः सन्ति। ततश्च श्रौतसूत्राणा गृह्यसूत्राणा धर्मसूत्राणा, वेदस्य व्याख्यानभूताना षडङ्गाना गणना भवति। महर्षिवाल्मीकिकृतवाल्मीकीयरामायणस्य, महर्षिव्यासकृतमहाभारतस्य च रचना विश्वसाहित्येऽपूर्वा घटना आसीत्। सर्वप्रथम विशदस्य कवित्वस्य, प्रकृतिसौन्दर्यस्य, नीतिशास्त्रस्य, अध्यात्मविद्यायाः तत्र दर्शन भवति। तदनन्तर कौटिल्यसदृशाः अर्थशास्त्रकाराः, भासकालिदासाश्वघोषभवभूतिदण्डिसुबन्धुबाणजयदेवप्रभृतयो महाकवयो नाट्यकाराश्च पुरतः समायान्ति, येषा जन्मलाभेन न केवल भारतभूमिरेव, अपितु समस्त विश्वमेतत् धन्यमस्ति। एतेषा कविवराणा गुणगणस्य वर्णने महाविद्वासोऽपि असमर्था· सन्ति, का गणना साधारणाना जनानाम्। भगवद्गीता, पुराणानि, स्मृतिग्रन्थाः, अन्यद्विषयक च सर्व साहित्य सस्कृतस्य माहात्म्यमेवोद्घोषयति।

सस्कृतभाषैव भारतस्य प्राणभूता भाषाऽस्ति। एषैव समस्त भारतवर्षमेकसूत्रे बध्नाति। भारतीयगौरवस्य रक्षणाय एतस्याः प्रचारः प्रसारश्च सर्वैरेव कर्तव्यः।

१२. आर्याणां संस्कृतिः।

(१. प्रस्तावना, २. आर्यसंस्कृतेः विशेषता, तदुपयोगिता, महत्त्वं च, ३ उपसंहारः।)

संस्करणं परिष्करणं संस्कृतिः भवति। सा संस्कृतिः कथ्यते या दुर्गुणान् दुर्व्यसनानि पापानि पापभावनाश्च हृदयेभ्यो निस्सार्य हृदयानि निष्पापानि निर्मलानि सत्त्वभावोपेतानि च करोति। प्राचीनानाम् आर्याणां संस्कृतेः एता एव विशेषताः सन्ति। तेषां संस्कृतिः मनुष्यान् सर्वविधपापेभ्यो निवारयति, तान् सन्मार्गमुपनयति, तेषां हृदयेषु सत्यस्य अहिंसायाः धर्मस्य दयायाः परोपकारस्य धैर्यस्य त्यागस्य शीलस्य सहानुभूतेः दानादिगुणानां च स्थापनां करोति।

आर्यसंस्कृतेः विशेषताः संक्षेपतः एताः सन्ति।—१. **धर्मप्राधान्यम्**—'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः' इति लक्षणानुसारेण यतो लौकिकं पारलौकिकं च कल्याणं भवति, तदेव कर्म कर्तव्यम्, नान्यत्। धर्म एव मनुष्येषु पशुभ्यो विशेषोऽस्ति, इति तेषां मतम्। २ **वर्णव्यवस्था**—ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः चत्वारो वर्णाः सन्ति। ते स्वं स्वं कर्म कुर्युः। वर्णव्यवस्था गुणकर्मानुसारेण आसीत्, न तु जन्ममात्रेण। ३. **आश्रमव्यवस्था**—ब्रह्मचर्यगृहस्थवानप्रस्थसंन्यासाः चत्वार आश्रमाः सन्ति, ते सर्वैरपि पालनीयाः। ४ **कर्मवादः**—मनुष्यः स्वकर्मानुसारं फलं प्राप्नोति, पुण्यकर्मणा पुण्यं पापकर्मणा च पापम्। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'। 'पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति पापः पापेनैवेति' (बृहदारण्यकम्)। ५ **पुनर्जन्मवादः**—मनुष्यस्य कर्मानुसारं पुनर्जन्म भवति। उक्तं च गीतायाम्—'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः, ध्रुवं जन्म मृतस्य च'। ६ **मोक्षः**—मनुष्यो ज्ञानाग्निना सर्वकर्माणि प्रदह्य मोक्षं लभते। मोक्षप्राप्तौ जीवस्य पुनरावृत्तिर्न भवति। मोक्ष एव परमः पुरुषार्थः। ७ **श्रुतीनां प्रामाण्यम्**—वेदाः परमप्रमाणभूताः सन्ति। वेदोक्तमार्गेण सदा चलनीयम्। ८ **यज्ञस्य महत्त्वम्**—सर्वैर्मनुष्यैः पञ्च यज्ञा अवश्यं कार्याः। ९ **अध्यात्मप्रवृत्तिः**—भौतिकवादं त्यक्त्वा अध्यात्मे प्रवृत्तिः कार्या। १०. **त्यागः**—जनः संसारे विषयेषु असक्तो भूत्वा कर्म कुर्यात्। यथा च गीतायां निष्कामकर्मयोगः प्रतिपादितः। उक्तं च वेदेऽपि 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।' ११. **तपोमयं जीवनम्**—मनुष्याणां जीवनं तपोमयं स्यात्, न तु भोगप्रधानम्। १२. **तपोवनानां महत्त्वम्**—मनुष्यो ब्रह्मचर्यवानप्रस्थसंन्यासाश्रमकाले तपोवनं सेवेत। १३. **मातृपितृगुरुभक्तिः**—'मातृदेवो भव' 'पितृदेवो भव' 'आचार्यदेवो भव' इति। १४ **सत्यनिष्ठता**—सत्यमेव ग्राह्यम्, नासत्यम्। 'सत्यमेव जयते नानृतम्' इति। १५. **अहिंसापालनम्**—'अहिंसा परमो धर्मः' इति।

एतस्मात् स्पष्टमेतदस्ति यदार्यसंस्कृत्यैव विश्वस्य कल्याणं भवितुमर्हति।

१३. गीताया उपदेशामृतम् ।

[१. प्रस्तावना, २. गीताया मुख्या उपदेशाः तेषा व्यवहारोपयोगिता, लाभाश्च, ३. उपसहारः ।]

महाभारतस्य युद्धे अर्जुन विषण्णहृदय दृष्ट्वा तस्य कर्तव्यबोधनार्थं भगवता कृष्णेन य उपदेशो दत्तः, स एव 'श्रीमद्भगवद्गीता' इति नाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति । गीताया भगवता कृष्णेन प्राय. सर्वमपि मनुष्यस्य आवश्यक कर्तव्य प्रतिपादितमस्ति । गीताया ये उपदेशाः सन्ति, तेषा मुख्या एते सन्ति .—

(१) अयमात्माऽजरोऽमरश्चास्ति । नाय जायते न म्रियते । केनापि प्रकारेण नाय नाश प्राप्नोति । यथा जीर्णवस्त्रमुत्तार्य नव वस्त्र धार्यते, तथैव नवशरीरधारणमस्ति ।

वासासि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि सयाति नवानि देही ॥ १ ॥
नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावकः ।
न चैन क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ २ ॥

आत्माऽयम् अजरोऽमरश्चास्ति । अतः कदाचिदपि शोको न करणीयः ।

(२) मनुष्यः स्वकर्मानुसार पुनर्जन्म प्राप्नोति । मर्त्य. कर्मानुसार म्रियते च ।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुव जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्व शोचितुमर्हसि ॥ ३ ॥

(३) मनुष्यैः सदा निष्कामभावनया कर्म करणीयम् । कर्म कदापि न त्याज्यम् ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४ ॥
नियत कुरु कर्म त्व कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्राऽपि च ते न प्रसिध्येदकर्मण. ॥ ५ ॥

(४) सर्वैः मनुष्यैः सदा स्वकर्म पालनीयम् । स्वधर्मो न कदाचिदपि त्याज्यः ।

स्वधर्मे निधन श्रेय. परधर्मो भयावहः ॥ ६ ॥

(५) मनुष्यैः सदा स्वकीर्तिरक्षा करणीया । मरण वरमस्ति, परन्तु न कीर्तिनाशः ।

सभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ७ ॥

(६) शुभाशुभकर्मणः कदापि नाशो न भवति । शुभ कर्म सदा भयात् त्रायते ।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ ८ ॥

गीताया ये एते उपदेशा दत्ताः सन्ति, ते सर्व एव जीवनस्योन्नतिकारकाः । गीताया उपदेशानुकूल्म् आचरण कृत्वा सर्वैरपि स्वजीवनमुन्नत कर्तव्यम् । एतदर्थं गीतायाः पठन पाठन चापि कार्यम् । 'गीता सुगीता कर्तव्या' इति ।

१४ स्त्रीशिक्षाया आवश्यकता ।

[१. प्रस्तावना, २ स्त्रीशिक्षाया आवश्यकता, लाभा., हानयश्च, ३. स्त्रीशिक्षायाः रूपम् , ४ उपसहारः ।]

शिक्षा मनुष्ये स्वकर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानमादधाति । शिक्षयैव जनाः शुभ कर्म कुर्वन्ति, अशुभ च परित्यजन्ति । शिक्षिता एव जना देशसेवा राष्ट्ररक्षा राष्ट्रसचालन पठन पाठन विज्ञानोन्नति च कुर्वन्ति । यथा पुरुषेभ्यः शिक्षा श्रेयस्करी वर्तते, तथैव स्त्रीभ्योऽपि शिक्षाया महती आवश्यकता वर्तते ।

स्त्रीणा कृते शिक्षाया महती आवश्यकता एतस्मात् कारणाद् वर्तते यत् ता एव समये प्राप्ते मातरो भवन्ति । यथा मातरो भवन्ति, तथैव सन्ततिर्भवति । यदि मातरोऽशिक्षिता' विद्याशून्याः कर्तव्यज्ञानहीनाश्च सन्ति तर्हि पुत्राः पुत्र्यश्च तथैवाविद्याग्रस्ता. कुशलतारहिताश्च भविष्यन्ति । यदि नार्यः शिक्षिताः सन्ति तर्हि ता स्वपुत्राणा पालन रक्षण शिक्षणादिक च सम्यक्तया करिष्यन्ति, एव तासा सन्तति विद्यायुक्ता हृष्टा पुष्टा सद्गुणोपेता च भविष्यति । अत एव महानिर्वाणतन्त्रेऽप्युक्तमस्ति—

कन्याऽप्येव लालनीया शिक्षणीया प्रयत्नत. ॥ १ ॥

विवाहे सजाते कन्या. गृहस्थाश्रम प्रविशन्ति । यदि पुरुषो विद्वान् स्त्री च विद्याशून्या भवति तर्हि तयोः दाम्पत्यजीवन सुखकर न भवति । विद्याया अभावात् स्त्री स्वकीय कर्तव्य न जानाति, अतएव बह्वो रोगा व्याधयश्च तत्र स्थान कुर्वन्ति । अतः स्त्रीणामपि शिक्षा पुत्राणा शिक्षावदेव आवश्यकी वर्तते । स्त्रियो मातृशक्ते. प्रतीकभूताः सन्ति, अतस्तासा सदा सम्मानः करणीय' । यस्मिन् देशे समाजे च स्त्रीणामादरो भवति, स देशः समाजश्चोन्नति प्राप्नोति । उक्त च मनुना—

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता.' ॥ २ ॥

बालिकाना शिक्षा बालकैः सहैव स्यात् , पृथग् वा, इत्येष विषयः साम्प्रत यावद् विवादास्पदमेवास्ति । स्त्रीशिक्षाया भारते प्रथम बहुविरोधोऽभवत् । साम्प्रत स समाप्तप्राय एव । स्त्रीशिक्षायाः काश्चन हानयोऽपि दृश्यन्ते, तासा परिमार्जन कर्तव्यम् । शिक्षिता. स्त्रिय. प्रायोऽधिक सुकुमार्यो भवन्ति । तासा चेतो गृहकर्मसम्पादने न तथा संलग्न भवति यथा विलासे आमोदे प्रमोदे च रमते । एतास्त्रुटयः परिमार्जनीयाः । स्त्रीणा सा शिक्षाऽद्यत्वे विशेषतो लाभप्रदा विद्यते, यया ताः गृहकर्मप्रवीणाः कुलाङ्गनाः सत्यः पतिव्रताः साध्व्यो विदुष्यो मातरश्च भवन्ति । यथा ता देशस्य समाजस्य च कल्याणसम्पादने प्रवृत्ता भवन्ति, सैव शिक्षा हितकरी वर्तते ।

देशस्य समाजस्य चोन्नत्यै श्रीवृद्धये स्त्रीशिक्षाऽत्यावश्यकी वर्तते ।

१५. शठे शाठ्यं समाचरेत् ।

(१. प्रस्तावना, २ शाठ्यस्यावश्यकता, उपयोगिता, लाभा हानयश्च, ३ दृष्टान्ताः, ४ उपसंहारः ।)

यो जनः परस्यापकारं हानिं वा करोति, शिष्टाचारस्य सदाचारस्य च नियमान् न पालयति, दुर्वृत्तः कुकर्मसु प्रवृत्तश्च भवति, स 'शठ' इत्युच्यते । एतादृशाः पुरुषाः समाजस्य हानिं कुर्वन्ति, देशस्योन्नतिमार्गं बाधामुपस्थापयन्ति, जातेः समाजस्य राष्ट्रस्य चावनतेः कारणं भवन्ति, अत एतादृशानां पुरुषाणां नियन्त्रणं दण्डनं ताडनादिकं चावश्यकमस्ति ।

मनुना मनुस्मृतौ ये महापातकिनः सन्ति, तेषां गणना आततायिषु कृता वर्तते । तेषां वधे न कोऽपि दोषो भवति । आततायिनश्च षड्विधा भवन्ति :—गृहादिदाहकः, विषप्रदः, वधकर्ता, धनहर्ता, क्षेत्रहर्ता, स्त्रीहर्ता च ।

आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् ॥१॥
अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रोन्मत्तो धनापहः ।
क्षेत्रदारहरश्चैतान् षड् विद्यादाततायिनः ॥२॥

लोके सदा दृश्यत एतद् ये जना अतीव साधवः सरला भवन्ति, तेषामादरो न भवति । दुष्टास्तेषां धनादिकमपि हरन्ति, कार्यबाधां च कुर्वन्ति । अत एवोच्यते—'मृदुर्हि परिभूयते' । राजनीतौ च विशेषतः शठेषु शठतायाः प्रयोगः करणीयः । अन्यथा कार्यसिद्धिर्न भविष्यति । उक्तं च नैषधचरिते—"आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः ।" महाकविभारविनाऽपि किरातार्जुनीये एतस्यैव प्रतिपादनं कृतमस्ति ।

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः ।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गान् निशिता इवेषवः ॥३॥
अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः ।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः ॥४॥

इमां नीतिमेव स्वीकृत्य रामः पापिनो रावणस्य वधमकरोत्, पाण्डवाश्च दुर्योधनादीनां कौरवाणाम् । एषा नीतिः शठेष्वेव प्रयोज्या, न तु सज्जनेषु । ये सज्जनाः सन्ति तैः सह सद्भावपूर्वकमेव व्यवहर्तव्यम् । उक्तं च महाभारतेऽपि—

यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यस्तस्मिन् तथा वर्तितव्यं स धर्मः ।
मायाचारो मायया वर्तितव्यः साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः ॥५॥
अन्या चापि सूक्तिरस्ति—पयःपानं भुजगानां केवलं विषवर्धनम् ॥६॥

अतो मनुष्यैः स्वकल्याणाय शठेषु शठतापूर्ण एव व्यवहारः कार्यः, सज्जनेषु च सज्जनतापूर्णः । एषैव नीतिविदां समतिरस्ति । उक्तं च कालिदासेन—

शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ।

१६. मानवजीवनस्योद्देश्यम् ।

(१. प्रस्तावना, २ जीवनोद्देश्य परोपकरण समाजसेवादि, ३. उद्देश्याभावे दोषाः, ४. उपसंहार ।)

विदुषा कथनमस्ति यत् 'प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते'। साधारणो जनोऽपि प्रयोजन विना कस्मिश्चिदपि कार्ये न प्रवृत्तो भवति। मनुष्यो जन्म धारयति। तस्य जीवनस्य किंचिदुद्देश्यमवश्यमेव भवेत्। ससारे ये उद्देश्यहीना भवन्ति, ते कदापि सफला न भवन्ति।

जीवनस्य किमुद्देश्य स्यादिति विचारे प्रथममेतत् समक्ष समायाति यत् जीवनस्योद्देश्य समुन्नत स्यात्, येन जीवनस्य सफलता स्यात्। समुन्नतेषु उद्देश्येषु देशसेवायाः समाजसेवायाः परोपकारस्य जातेरुद्धरणस्य विद्योन्नतेश्च भावना सम्मुखमायाति। मनुष्यः सामाजिक प्राणी वर्तते, अतो यदि समाज. समुन्नतोऽस्ति तर्हि सर्वेऽपि सुखिनो भविष्यन्ति। यदि समाजो न समुन्नतोऽस्ति तर्हि सर्वेऽपि विपत्तिग्रस्ता दीना हीनाश्च भविष्यन्ति। यदि देशः पराधीनोऽस्ति तर्हि मनुष्येषु स्वाभिमानस्य भावना न भविष्यति। अतो मनुष्यजीवनस्य मुख्यमुद्देश्य भवति यत् स मानवजीवनस्य साफल्याय परोपकार कुर्यात्, देशसेवा कुर्यात्, समाजसेवा कुर्यात्, विद्यायाश्चोन्नति कुर्यात्। एवप्रकारेणैव जीवन सफल भवति।

जीवनस्य सफलतायै एतदपि सदा प्रयतनीय यत् स कदाचिदपि पाप न कुर्यात्, कुत्सित कर्म न कुर्यात्। पवित्रजीवनस्य यापनेनैव जीवन सफल भवति। उक्त च—

> मुहूर्तमपि जीवेत नर. शुक्लेन कर्मणा।
> न कल्पमपि कृष्णेन लोकद्वयविरोधिना ॥१॥

मनुष्यजीवने सदा सर्वैरेष प्रयत्नः करणीयो यत् स महाविद्वान् महापराक्रमी महायशस्वी सच्चरित्रो दानी परोपकारी समाजसेवी लोकहितकारी धर्मात्मा च स्याद्, अन्यथा मनुष्यजीवने पशुजीवने च न कोऽपि भेदोऽस्ति। साधूक्त च—

> यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथित मनुष्यैर्विज्ञानविक्रमयशोभिरभज्यमानम्।
> तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञा., काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुक्ते ॥२॥

> यो नात्मजे न च गुरौ न च भृत्यवर्गे, दीने दया न कुरुते न च बन्धुवर्गे।
> किं तस्य जीवितफलेन मनुष्यलोके, काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुक्ते ॥३॥

मनुष्यो जीवननिर्वाहाय या कामपि आजीविका ग्रहीतु शक्नोति, पठन पाठन कृषिः वाणिज्य सेवाकर्म समाजसेवादिक वा। परन्तु स सदा जीवनसाफल्याय सत्कर्म अवश्य कुर्यात्। निरुद्देश्य जीवन विनश्यति। अतः कदाचिदपि उद्देश्यत्यागो न विधेयः। मनुष्यस्य सदुद्योगेन सदुद्देश्यमपि अवश्य पूर्ण भवति।

१७. आचार्यदेवो भव ।

(१. प्रस्तावना, २. गुरुभक्तेरुपयोगिता लाभाश्च, ३. तदभावे दोषा., ४ दृष्टान्ताः, ५. उपसहारः ।)

भारतीयशास्त्रेषु गुरोर्माहात्म्य बहु गीतमस्ति । स ईश्वरस्य प्रतिमूर्तिरिति मन्यते। अतएवोच्यते—'आचार्यदेवो भव' इति । आचार्यो देवतावत् पूज्यो मान्यश्च । य. शिष्येभ्यो विद्या ददाति, कर्तव्याकर्तव्य च बोधयति, सदाचारस्य सयमस्य त्यागस्य तपसश्च शिक्षा ददाति, स आचार्यो गुरुर्वा भवति ।

गुरोर्माहात्म्यमेतस्माद् ज्ञायते यद् बालको यदा गुरोः समीप शिक्षार्थ याति, यज्ञोपवीत च धारयति, शिक्षा च प्राप्नोति, तदैव स द्विजो द्विजन्मा द्विजातिर्वा भवति । अन्यथा स शूद्र एव भवति । माता पिता च बालकस्य शरीरमेव सृजत', गुरुस्तु त विद्यया शिक्षया दीक्षया कर्तव्योद्बोधनेन च मनुष्य करोति । अतो मातुः पितुश्च गुरुः गरीयान् भवति । उक्त च महाभारते—

> शरीरमेव सृजतः पिता माता च भारत ।
> आचार्यशिष्टा जातिः सा दिव्या सा चाऽजराऽमरा ॥१॥
> गुरुर्गरीयान् पितृतो मातृतश्चेति मे मति. ॥२॥

गुरु. भक्त्या सेवया शुश्रूषया च तुष्यति, आज्ञापालनेन तत्कथनानुरूपव्यवहारेण च स प्रीतो भवति । गुरुः यदा प्रीतो भवति, स यत् किंचिदपि जानाति, तत्सर्व स्वशिष्याय समर्पयितुमिच्छति । अतो विद्याप्राप्त्यै गुरुभक्तेः महती आवश्यकता वर्तते । सत्यमेतदुक्त च—

> गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा ।
> अथवा विद्यया विद्या चतुर्थान्नोपलभ्यते ॥३॥

न केवलमेतदेव, अपि तु गुरुभक्त्या मनुष्यस्य चतुर्मुखी उन्नतिर्भवति । उक्त च—

> अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः ।
> चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥४॥

गुरुभक्त्यैव आरुणि. ब्रह्मज्ञ. सजातः, एकलव्यश्च महाधनुर्धरो जात. । गुरुशुश्रूषया गुरुभक्त्यैव च कालिदासादयो महाकवयो जाता , अन्ये च केचन ऋषयो महर्षय. सिद्धाः कलाविदो विविधशास्त्रविशारदाश्च समभवन् । एष गुरुभक्तेरेव महिमा । ये गुरुभक्ति न कुर्वन्ति, न वा जानन्ति, तेषा विद्या न प्रकाशते, तेषा यशो न वर्धते, तेषा तेजः क्षीयते, शरीरमायुश्चापि क्षयमुपैति । ये गुरुभक्ता भवन्ति तेषा विद्या सदा प्रकाशते, तेषा यशश्च प्रथते, तेषा तेजो विराजते, शरीरमायुश्चापि वृद्धिमेति । अत' सर्वैः सर्वदा गुरवः पूज्या मान्याश्च ।

१८. मम महाविद्यालयः।

(१ प्रस्तावना, २ विद्यालयस्य शिक्षा, छात्राणा गुरूणा च सख्यादिकम्, विशेषताश्च, ३ उपसहार.)

मम महाविद्यालयो नगराद् बहिः एकान्ते सुन्दरे प्रदेशे स्थितोऽस्ति। महाविद्यालयस्य भवन निरीक्ष्य चेतो नितान्त हर्षमनुभवति। महाविद्यालयस्य रमणीयता च न कस्य चेतो बलाद् हरति। महाविद्यालयोऽस्माक कृते न केवल पाठशालाऽस्ति, अपि तु अस्माक सर्वस्वमस्ति। आस्माभिरत्रैव अध्ययन क्रियते, सदाचारस्य पाठः पठ्यते, विनयस्य अनुशासनस्य च शिक्षण गृह्यते, समाजसेवाया देशभक्तेश्च भावनाऽत्रैव प्राप्यते। किमन्यत्, जीवनस्य यत् कर्तव्यमस्ति, तत् सर्वमपि अत्रैव लभ्यते। अत एव महाविद्यालयोऽयम् अस्माक कृते 'विद्यामन्दिरम्' अस्ति।

मम महाविद्यालयेऽध्यापकाना प्राध्यापकाना च सख्या पञ्चाशतोऽधिका वर्तते। छात्राणा च सख्या सहस्रादधिका विद्यते। प्राय. शतद्वयी बालिकानामपि वर्तते। महाविद्यालयस्य आचार्यवर्या अतीवप्रखरा विविधविद्यापारगता विद्वासः सन्ति। तेषा तेजोमय वदन वीक्ष्य छात्रा. श्रद्धावनता भक्तिभावोपेताश्च भवन्ति। अध्यापकेषु च बहवो महाविद्वास. सन्ति। सर्वेऽपि स्वस्वविषयेऽतीव विशारदाः सन्ति। तेषा शिक्षापद्धतिरपि बहु मनोरमा वर्तते। छात्रा अपि प्रायो व्युत्पन्नबुद्धय सन्ति। शिक्षायाः समीचीनत्वादेव अन्यप्रान्तेभ्योऽपि छात्रा अत्रैवाध्ययनार्थमागच्छन्ति। राजकीयपरीक्षासु च विशिष्ट स्थानम् अस्मद्विद्यालयीया छात्रा लभन्ते। न केवल पठने एव छात्रा योग्यतमाः सन्ति, अपि तु क्रीडने तरणे धावने वाक्प्रतियोगितासु अनुशासने सयमे समाजसेवाया देशसेवायामपि च तेषा स्थान सर्वप्रथममेव विद्यते। अस्माक महाविद्यालये विद्यार्थिना क्रीडनार्थं क्रीडाक्षेत्र सुविस्तृतमस्ति। विविधभाषासु भाषणपाटवार्थं विविधाः परिषदः सन्ति। सैनिकशिक्षाया अपि प्रबन्धोऽस्ति। ये क्रीडनादिषु प्रथमस्थान लभन्ते, ते पुरस्कारादिकमपि लभन्ते। ये किमपि शोभन कर्म कुर्वन्ति, ते सदा पुरस्कृता भवन्ति, विद्यालये समानमादर च लभन्ते। छात्राणा स्वास्थ्यवृद्ध्यर्थं व्यायामस्य, मल्लयुद्धस्य, अन्येषा चोपयोगिवस्तूना प्रबन्धोऽस्ति, अतएव छात्रा हृष्टाः पुष्टाश्च सन्ति। छात्राणा स्वास्थ्य निरीक्ष्य सर्वेषामपि जनाना चेतः प्रहर्षमाप्नोति।

साम्प्रतमस्माकमेतत् कर्तव्य भवति यत् सर्वथा वय महाविद्यालयस्य कीर्ति दिक्षु विस्तृता कुर्याम। एवमस्माकमपि यशो वृद्धि प्राप्स्यति।

---

२०. सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् । [सन्तोषः]

(१. प्रस्तावना, २ सन्तोषस्योपयोगिता लाभाश्च, ३ असन्तोषेन हानयः, ४ उपसहारः ।)

ससारे सर्वे जनाः सुखमिच्छन्ति । सुख शान्तिश्च तदैव भवति यदा मनुष्यः सन्तुष्टो भवति । यत् किंचित् स्वकीयेन परिश्रमेण प्रयत्नेन च प्राप्नोति, तत्रैव सुखानुभूतिकरण सन्तोष इत्युच्यते । ये जनाः सन्तोपहीना भवन्ति, ते धनलाभेऽपि पर्याप्तसुखसामग्रीसत्त्वेऽपि असन्तुष्टा· सन्तोऽन्यदपि धन प्राप्तुमिच्छन्तो भ्रमन्ति । एव तेषा जीवन दुःखमयम् अशान्तियुक्त च भवति ।

जीवने सुखशान्तिलाभाय सन्तोषस्य महत्यावश्यकता वर्तते । सन्तोषस्य सद्भावादेव ऋषयो मुनयो महर्षयश्च जगद्वन्द्या भवन्ति । सन्तोषे एव सुखमस्ति, न चासन्तोषे । असन्तुष्टा मृगतृष्णिकामिव मायामनुसरन्तः सदा दु·खिता भवन्ति । उक्त च—

सन्तोषामृततृप्ताना यत्सुख शान्तचेतसाम् ।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ॥१॥

महाभारते भगवता व्यासेनापि सन्तोषस्य महत्त्व प्रतिपादयतोक्तमस्ति—

अन्तो नास्ति पिपासायाः सन्तोषः परम सुखम् ॥२॥

ये एव विचारयन्ति यद् यदि वय सन्तोषमाश्रयिष्यामस्तर्हि अस्माकमुन्नतिर्न भविष्यतीति ते वस्तुतो मूर्खा एव सन्ति । सन्तोषोऽपि महती श्रीरस्ति । तथा हि—

सर्पा· पिबन्ति पवन न च दुर्बलास्ते, शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति ।
कन्दैः फलैर्मुनिवराः क्षपयन्ति काल, सन्तोष एव पुरुषस्य पर निधानम् ॥३॥

ये सन्तोषयुक्ता भवन्ति तेषा कृते जगदेतत् सुखमय भवति । यतो हि—

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्व च लक्ष्म्या, सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः ।
स हि भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला, मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ॥४॥

अपि च— अकिंचनस्य दान्तस्य शान्तस्य समचेतसः ।
सदा सन्तुष्टमनस सर्वा· सुखमया दिशः ॥५॥

केचन सन्तोषस्य इममर्थं गृह्णन्ति यद् मनुष्यः सर्वं कर्म त्यजेत्, तेऽपि अतत्त्वज्ञाः सन्ति । सन्तोषस्य केवलमय भावोऽस्ति यद् यत्किंचित् श्रमेण प्राप्नुयात्, तत्रैव सन्तोष कुर्यात् । अनुचितैः प्रकारै· धनस्योपार्जने यत्न न कुर्यात् । धनस्य कृते वा स्वकीय स्वास्थ्य न विनाशयेत्, सर्वेषामप्रियो न स्यात् । धन सुखार्थं शान्त्यर्थं चास्ति, धन चास्माक कृते वर्तते, न तु वय धनार्थं स्मः । अतस्तावदेव धन हितकर वर्तते, यतः स्वास्थ्यमपि सुरक्षित भवति, सुख शान्तिश्च प्राप्नोति । अत· सर्वैरपि सुखशान्तिप्राप्त्यै सन्तोष उपादेयः ।

(९) अनुवादार्थ गद्य-संग्रह

(१) संस्कृत भाषा

शुद्ध और परिष्कृत भाषा को संस्कृत कहते है । इसी के नाम देवभाषा, देववाणी, गीर्वाणवाणी आदि है । यह भारत की एक अमूल्य और अनुपम निधि है । भारतवर्ष का समस्त प्राचीन ज्ञान-भडार इसी भाषा मे सुरक्षित है । वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थ इसी भाषा मे है । कुछ विद्वानो को यह भ्रम है कि संस्कृत भाषा केवल ग्रन्थो की ही भाषा थी और इसका केवल पठन-पाठन मे ही उपयोग होता था । जिस प्रकार आज-कल खडी बोली नामक साहित्यिक हिन्दी शिष्ट-समाज के व्यवहार और उपयोग की भाषा है, उसी प्रकार प्राचीन समय मे संस्कृत-भाषा शिष्ट-वर्ग के दैनिक व्यवहार की भाषा थी । यास्क के निरुक्त, पाणिनि की अष्टाध्यायी और पतजलि के महाभाष्य के अध्ययन से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि उनके समय मे संस्कृत दैनिक व्यवहार की भाषा थी । यास्क और पाणिनि ने वेदो की भाषा से इसको पृथक् करते हुए इसको 'भाषा' अर्थात् दैनिक व्यवहार की भाषा कहा है । जिस प्रकार आज-कल जन-साधारण मे प्रचलित भाषा साहित्यिक हिन्दी से भिन्न है, उसी प्रकार प्राचीन समय मे जन-साधारण मे व्यवहृत भाषा को प्राकृत कहते थे ।

(२) रामायण

रामायण संस्कृत-साहित्य का उच्च कोटि का महाकाव्य है । इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि है । इसमे मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन-चरित का वर्णन है । यह संस्कृत मे सर्व प्रथम लौकिक-भावो से युक्त काव्य-ग्रन्थ है, अतः इसको आदि-काव्य कहा जाता है । इसमे भारतीय संस्कृति का सुन्दरतम रूप वर्णित है । काव्य की दृष्टि से यह बहुत सुन्दर काव्य है । इसकी भाषा प्रारम्भ से अन्त तक परिष्कृत और प्रसाद-गुण युक्त है । इसमे भाव बहुत उच्च और मनोरम है । कविता सरल, सरस और मनोहर है । अलकारो का सुन्दर सम्मिश्रण हुआ है और रसो का परिपाक भी उत्तम हुआ है । इसमे करुण रस प्रधान है । यह हिन्दुओ का आचारशास्त्र है । इसकी शिक्षाएँ व्यावहारिक है । परकालीन कवियो और नाटककारो पर इसका बहुत गम्भीर प्रभाव पडा है । उन्होने इससे भाव लिए है । इस पर आश्रित बहुत से काव्य और नाटक है । संसार की बहुत-सी भाषाओ मे इसका अनुवाद हो चुका है । वाल्मीकि की कीर्ति आज भी अजर और अमर है ।

(३) भास

आजतक जो साहित्य उपलब्ध हुआ है, उसकी दृष्टि मे भास को सर्वप्रथम नाटककार कहा जा सकता है। उसने १३ नाटक लिखे है। ये नाटक विभिन्न विषयो पर है। इससे ज्ञात होता है कि वह एक सफल और कुशल नाटककार था। उसके नाटको मे जो विशेषताएँ विशेष रूप से दृष्टि-गोचर होती है, वे है—भाषा की सरलता, अकृत्रिम शैली, वर्णनो मे यथार्थता, नाटकीय पात्रो के चरित्र-चित्रण मे व्यक्ति-वैचित्र्य और नाटकीय गुण प्रवाह, सजीवता और शक्तिमत्ता की सत्ता। उसके नाटक अत्यन्त रोचक और रगमच की दृष्टि से विशेष सफल हुए है। उसके नाटको मे मौलिकता और कल्पना-वैचित्र्य विशेष रूप से प्राप्त होता है। सस्कृत मे सर्वप्रथम एकाकी नाटक लिखने का श्रेय भास को है। उसने ५ एकाकी नाटक लिखे है। उसकी शैली मे माधुर्य, ओज और प्रसाद ये तीनो गुण है। उसकी भाषा मे सरसता, सरलता, सुबोधता, स्वाभाविकता और प्रवाह है। वह मनोवैज्ञानिक विवेचन मे बहुत दक्ष है। वह भारतीय भावो का कवि है।

(४) कालिदास

महाकवि कालिदास सस्कृत का सर्वश्रेष्ठ कवि है। वह नाटककार, महाकाव्य-निर्माता और गीतिकाव्य-कर्ता था। उसके प्रमुख ग्रन्थ ये है—(क) नाटक—मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशाकुन्तल। (ख) महाकाव्य—कुमारसभव, रघुवश। (ग) गीतिकाव्य—ऋतुसहार, मेघदूत। वह वैदर्भी रीति का सर्वोत्तम कवि था। उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। उसकी कृतियो मे प्रसाद और माधुर्य गुणो का अपूर्व सम्मिश्रण है। उसमे कृत्रिमता और क्लिष्टता का अभाव है। उसके काव्यो मे उच्च कोटि की व्यजकता है। रसो का परिपाक भी उत्तम रूप से हुआ है। वह नीरस कथानक को भी सरस और मनोरम बना देता है। उसकी लोकप्रियता का कारण उसकी प्रसाद-गुण-युक्त ललित और परिष्कृत शैली है। उसके काव्यो मे शब्द-लाघव उसकी कलात्मक रुचि का परिचायक है। वह चरित्र-चित्रण मे असाधारण पटु है। उसकी भाषा और भाव पात्रो के अनुकूल है। वह उपमाओ के लिए बहुत प्रसिद्ध है। उसका मत है कि तपस्या से प्रेम निर्मल और पुष्ट होता है। परकालीन कवियो के लिए उसके ग्रन्थ आदर्श रहे है।

(५) बाण भट्ट

संस्कृत साहित्य मे गद्य-लेखको मे महाकवि बाण भट्ट का स्थान सर्वोत्कृष्ट है। उसने दो गद्य-ग्रन्थ लिखे है—हर्षचरित और कादम्बरी। ये दोनो ही ग्रन्थ गद्य की दृष्टि से अनुपम है। हर्षचरित मे कुछ क्लिष्टता दृष्टिगोचर होती है। कवि की प्रतिभा का चरम उत्कर्ष कादम्बरी मे दिखाई देता है। उसकी शैली मे शब्द और अर्थ, भाव और भाषा का सुन्दर समन्वय है। उसने विषय के अनुकूल ही शब्दावली का प्रयोग किया है। अलकारो का भी उचित रूप से समावेश किया है। उसका प्रकृति चित्रण विशद, सजीव और अलकृत होता है। प्रकृति-वर्णनो मे उसने अपनी सूक्ष्म-निरीक्षण-शक्ति का परिचय दिया है। वह पाचाली रीति का कवि है। प्रसग के अनुसार कही लम्बे समास-युक्त पद देता है और कही बहुत छोटे-छोटे वाक्य। उसके वर्णन सर्वाङ्गीण और पूर्ण होते है। उसमे वर्णन की अपूर्व शक्ति है। उसका भाषा और शब्दकोष पर असाधारण अधिकार था।

(६) ग्राम्य-जीवन

भारतवर्ष ग्राम प्रधान देश है। अधिक जनता गाँवो मे ही रहती है। ग्राम-निवासियो को ग्रामीण कहा जाता है। इनका जीवन बहुत सरल और निष्कपट होता है। इनकी वेषभूषा भी साधारण होती है। इनका लक्ष्य होता है—सादा जीवन और उच्च विचार। ये बहुत परिश्रमी होते है। इनके कठोर परिश्रम का ही फल है कि हमे अनायास अन्नादि प्राप्त होते है। ग्रामो की जलवायु स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद होती है। अतएव ग्रामीण जन स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट होते है। ग्रामो मे शिक्षा का उचित प्रचार नही है, अत ग्रामो की अवस्था आजकल अत्यन्त शोचनीय है।

(७) शिष्टाचार

शिष्टो अर्थात् सज्जनो के आचार को शिष्टाचार कहते है। सज्जन पुरुष सदा दूसरो का उपकार करते है। अपने से बडो का आदर और सम्मान करते है। दूसरो के दुःख मे दुःखी होते हैं। अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए दूसरो को हानि नही पहुँचाते। मधुर वचन बोलते हैं। प्रत्येक मनुष्य को शिष्टाचार का पालन करना चाहिये। उसका कर्तव्य है कि वह बडो की आज्ञा का पालन करे, उनका आदर करे। अपने सम्बन्धियो से प्रेम करे। असत्य न बोले। निरर्थक विवाद न करे। सबसे स्नेह का व्यवहार करे।

(८) महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द का जन्म १८२४ ई० मे गुजरात प्रान्त के टकारा नगर म हुआ था। इनके पिता श्री करसनजी तिवारी शिवभक्त ब्राह्मण थे। अपने चाचा और बहिन की मृत्यु को देखकर इनके हृदय मे वैराग्य उत्पन्न हुआ। ये सत्य शिव को ढूँढने के लिए घर से निकल पडे। इन्होने वेदोक्त परम्परा की प्रतिष्ठा के लिए आर्य-समाज की स्थापना की। वेदो का भाष्य करके वेदो का महत्त्व प्रदर्शित किया। इन्होने समाज-सुधार के अनेको कार्य किए। जैसे—अस्पृश्यो का उद्धार, स्त्री-शिक्षा का प्रचार, गोशाला और अनाथालयो की स्थापना, गोरक्षा आदि कार्य। ये पूर्ण ब्रह्मचारी, त्यागी, तपस्वी, देशभक्त, समाज सुधारक, दीनरक्षक, वेदो के अद्वितीय विद्वान्, असाधारण वक्ता, सत्यवादी और निर्भीक सन्यासी थे।

(९) महात्मा गांधी

महात्मा गान्धी का जन्म २ अक्टूबर १८६९ ई० को काठियावाड के पोरबन्दर स्थान मे हुआ था। आपके पिता कर्मचन्द और माता पुतलीबाई था। ये दोनो बहुत सज्जन प्रकृति के थे। गान्धी जी भी बचपन से ही अत्यन्त साधु स्वभाव के थे। भारतवर्ष और विदेश मे शिक्षा प्राप्त करके ये देश-सेवा के कार्य मे लग गए। इन्होने भारतवर्ष को स्वतन्त्र करने का प्रण किया। इनके ही भगीरथ प्रयत्न से भारतवर्ष स्वतन्त्र हुआ है। अतएव इनको 'राष्ट्रपिता' कहा जाता है। ये सत्य और अहिसा की साक्षात् मूर्ति थे। इन्होने हरिजनोद्धार, स्त्री-शिक्षा, भारतीय-कला-कौशल की उन्नति आदि अनेको प्रशसनीय कार्य किए है। भारतवर्ष सदा इनका ऋणी रहेगा।

(१०) श्री जवाहरलाल नेहरू

श्री नेहरू जी का जन्म १४ नवम्बर १८८९ ई० को पवित्र प्रयाग नगर मे हुआ। इनके पिता श्री मोतीलाल नेहरू और माता स्वरूपरानी थी। इनकी अधिकाश शिक्षा विदेश मे ही हुई है। महात्मा गान्धी के सम्पर्क मे आकर ये देश-सेवा मे लग गए। उस समय से लेकर आज तक देश-सेवा मे ही लग्न है। इनमे असाधारण प्रतिभा और कार्यशक्ति है। इनके त्याग तपस्या और देश-सेवा से भारतीय इन पर इतने मुग्ध है कि ये जहाँ भी जाते है, वहाँ लाखो की भीड एकत्र हो जाती है। ये चार बार कांग्रेस के अध्यक्ष रहे है। इनकी कीर्ति देश और विदेशो मे सर्वत्र व्याप्त है। ये भारत के प्रधानमन्त्री है।

(११) श्रावणी पर्व

श्रावणी हिन्दुओं के मुख्य पर्वों में से एक है। यह पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन होता है। यह ब्राह्मणों का मुख्य पर्व है। इस अवसर पर वे वेदों का पठन-पाठन और वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करते हैं। नवीन यज्ञोपवीत धारण करते हैं। इस समय वर्षा ऋतु के आगमन के कारण यातायात की असुविधा के कारण ऋषि मुनि भी गाँवों और नगरों में रहकर चातुर्मास्य बिताते हैं और जनता को वैदिक धर्म की शिक्षा देते हैं। आर्य-संस्कृति में स्वाध्याय का बहुत महत्त्व है। इसको रक्षाबन्धन पर्व भी कहते हैं। इस अवसर पर बहिनें भाइयों के हाथों में स्व-रक्षार्थ रक्षाबन्धन बाँधती हैं।

(१२) दशहरा

दशहरा आर्यों का सबसे बड़ा पर्व है। इसको विजय-दशमी भी कहते हैं। यह पर्व आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की दशमी को होता है। यह क्षत्रियों का मुख्य पर्व माना जाता है। इस पर्व के विषय में जनश्रुति है कि श्री रामचन्द्र जी ने राक्षसों के राजा रावण पर इसी दिन विजय पायी थी। अतएव इस पर्व पर रामलीला का आयोजन करके राम की विजय और पापी रावण का वध दिखाया जाता है। यह पर्व शिक्षा देता है कि धर्मात्मा की सदा विजय और पापी का नाश होता है। क्षत्रिय इस अवसर पर अपने शस्त्रों और अस्त्रों की पूजा करते हैं। क्षात्र बल की उन्नति से ही देश की सुरक्षा होती है और उसका यश फैलता है। बंगाल में इस अवसर पर दुर्गापूजा विशेष रूप से होती है।

(१३) दीपावली

दीपावली भी आर्यों का अत्यन्त प्रसिद्ध और मुख्य पर्व है। इसको दीपमालिका भी कहते हैं। यह कार्तिक मास की अमावस्या के दिन विशेष समारोह के साथ मनाई जाती है। यह वैश्यों का मुख्य पर्व है। इस अवसर पर रात्रि में सभी छोटे और बड़े घर दीपों की माला से सुशोभित और अलंकृत होते हैं। चारों ओर दीपकों की पंक्ति ही दिखाई देती है। इस पर्व के विषय में जनश्रुति है कि राम रावण को जीतकर जब अयोध्या लौटे, तब इसी दिन विजय-महोत्सव का आयोजन हुआ था। इस अवसर पर सभी हिन्दू अपने मकानों की स्वच्छता और पुताई कराते हैं। वैश्य इस दिन लक्ष्मी-पूजा करते हैं और श्री-वृद्धि के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

(१४) स्वदेश-प्रेम

जिस देश मे हमने जन्म लिया है। जिसकी गोद मे निरन्तर खेले है। जिसके अन्न और जल से पालित और पोषित हुए है। जिसकी वायु ने हमारे अन्दर जीवन का सचार किया है। उसके ऋण से हम कभी भी उऋण नही हो सकते है। इसीलिए कहा गया है कि माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढकर है। पशुओ और पक्षियो मे भी अपने जन्म स्थान के लिए प्रेम देखा जाता है। अपने देश की उन्नति स्वदेश-प्रेम पर ही अवलम्बित है। अपने तुच्छ स्वार्थ को छोडकर जीवन मे सत्य व्यवहार को अपनाने से ही देश उन्नत होता है। महात्मा गान्धी, सुभाष बोस, नेहरू जी आदि ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश के लिए दे दिया, अत वे महापुरुष हो गए है। सभी भारतीयो को पूर्ण देशभक्त होना चाहिए।

(१५) स्वावलम्बन

स्वावलम्बन एक दिव्य गुण है, जो बडे से बडे विघ्नो और कष्टो को नष्ट करके जीवन के मार्ग को सुखमय बना देता है। यह एक ऐसी अपूर्व शक्ति है, जिसके आगे ससार की सभी शक्तियॉ तुच्छ है। जहॉ स्वावलम्बन है वहॉ उन्नति है, जहॉ परमुखापेक्षिता है वहॉ अवनति है। इसीलिए कहा गया है कि परमात्मा भी उसकी ही सहायता करता है, जो अपनी सहायता स्वय करता है। जो मनुष्य, जो समाज, जो राष्ट्र स्वावलम्बी होता है, वही ससार मे उन्नति के शिखर पर चढता है। जो दूसरो के आश्रित रहते है, वे कभी भी उन्नति नही कर सकते। प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह स्वावलम्बी, पुरुषार्थी और अध्यवसायी हो। परिश्रम करने मे गौरव समझे और अपनी तथा देश की उन्नति करे।

(१६) कर्तव्य-पालन

कर्तव्य-पालन जीवन की आधार-शिला है। ससार की प्रत्येक वस्तुऍ अपने कर्तव्य का पालन करती है। सूर्य निरन्तर प्रकाश देता है, हवा चलती है और पृथ्वी प्राणिमात्र को धारण करती है। सभी अपने-अपने कर्तव्य का पालन कर रहे है। जीवन को सुखमय बनाने के लिए प्रत्येक मनुष्य के कुछ कर्तव्य निश्चित किए गए है। प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने कर्तव्यो का पालन करे। माता-पिता गुरुओ की सेवा, विद्याध्ययन, चरित्र की उन्नति, देश जाति और समाज की सेवा, सदाचार का पालन, परोपकार करना, ये सभी के कर्तव्य है। कर्तव्य-पालन से ही सदा उन्नति होती है, अतः कर्तव्य-पालन मे कभी भी आलस्य नही करना चाहिए।

---

(१७) समाज-सेवा

मनुष्य समाज का एक अग है। समाज की उन्नति के साथ उसकी उन्नति होती है और समाज की अवनति से उसकी भी अवनति होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह ऐसा कार्य करे, जिससे समाज सदा उन्नति की ओर अग्रसर हो। समाज सेवा का भाव बाल्यकाल से ही जागृत करना चाहिए। समाजसेवक विनम्र होता है। वह दूसरो की सहायता और सेवा से प्रसन्न होता है। उसका लक्ष्य सदा यह रहता है कि समाज के सभी व्यक्ति सदा सुखी, स्वस्थ और प्रसन्न रहे। वह समाज और देश की उन्नति के सभी कार्यो मे अतिप्रसन्नता से भाग लेता है। समाज-सेवा एक महान् व्रत है। ससार मे जितने भी महापुरुष हुए है, उन सबने समाज सेवा का व्रत मुख्य रूप से लिया था, अतएव वे अपने समाज को उन्नत कर सके। हमारा कर्तव्य है कि हम भी सच्चे समाजसेवक हो।

(१८) अतिथि-सेवा

अतिथि-सेवा का अर्थ है आगन्तुक व्यक्ति का स्वागत और सत्कार करना। अतिथि-सत्कार एक सामाजिक, नैतिक और धार्मिक कार्य माना गया है। शास्त्रो ने अतिथि को देवता माना है, क्योकि वह समाज का प्रतिनिधि होता है। अतः अतिथि की यथाशक्ति पूजा करनी चाहिए। कुछ विशेष परिस्थितियों मे ही व्यक्ति किसी के घर अतिथि के रूप मे पहुँचता है, अतः उसका जैसा स्वागत होता है, तदनुसार ही वह उस व्यक्ति के विषय मे अपने विचार बनाता है। सभी व्यक्ति किसी न किसी समय अतिथि के रूप मे किसी के यहाँ जाते है। अतः अतिथि-सत्कार का भाव जागृत होने से सभी व्यक्तियो को लाभ होता है। ससार मे भारतीय अतिथि-सेवा के कार्य मे सदा अग्रणी रहे है। हमारा कर्तव्य है कि सदा अतिथि की उचित सेवा करे।

(१९) नम्रता

नम्रता एक दिव्य गुण है। दूसरो के साथ शिष्ट और विनीत व्यवहार का नाम नम्रता है। नम्र व्यक्ति दूसरो का सदा हित चाहता है और प्रयत्न करता है कि उसके किसी भी कार्य से किसी को हानि न पहुँचे। विनीत व्यक्ति परोपकारी, परहितचिन्तक और परदुखकातर होता है। वह अपने से बडो की आज्ञा का पालन करता है। ऐसे वचन कभी भी उच्चारण नही करता है, जिससे किसी की आत्मा को दुःख पहुँचे। विद्या का लक्ष्य बताया गया है कि वह मनुष्य को नम्रता प्रदान करती है। वस्तुतः शिक्षित वही व्यक्ति है, जिसमे नम्रता है। नम्रता मनुष्य को लोकप्रिय बना देती है। नम्र व्यक्ति सदा उन्नति की ओर अग्रसर होता है। सभी उसके शुभचिन्तक होते है। सभी महापुरुषो मे नम्रता का गुण पाया जाता था। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह विनम्र हो।

(२०) मित्रता

दो हृदयों के निःस्वार्थभाव से मिलन का नाम मित्रता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह चाहता है कि जीवन में उसका ऐसा कोई साथी हो, जो सुख और दुःख में सदा उसका साथ दे। जिसको अपने सुख और दुःख की सभी बातें निःसंकोच बता सके। अतएव आवश्यकता होती है कि मनुष्य का कोई मित्र अवश्य होना चाहिए। मित्र का निर्णय करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह स्वार्थी न हो, दुर्जन न हो और वंचक न हो। सच्चा मित्र वही है जो बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी साथ न छोड़े। दुःख में साथ दे और सुख में प्रसन्न हो। सदा उत्तम सम्मति दे, कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लावे, विपत्ति में धन और अपने प्राणों से भी सहायता करे। दुर्जनों से कभी भी मित्रता न करे। सदा सज्जन से ही मित्रता करे। सज्जनों की मित्रता सदा बढ़ती जाती है। श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता संसार भर में विख्यात है। समान आयु, समान बल और समान गुणों वालों की ही मित्रता स्थायी होती है।

(२१) मधुर-भाषण

किसी भी मनुष्य को कोई कटु वचन न कहना ही मधुर-भाषण कहा जाता है। मधुर-भाषण वह गुण है, जिससे मनुष्य संसार भर को अपने वश में कर सकता है। मधुरभाषी व्यक्ति को सभी मनुष्य प्रेम, श्रद्धा, प्रतिष्ठा और विश्वास की दृष्टि से देखते हैं। वह सबसे प्रेम करता है और सब उससे प्रेम करते हैं। मधुर-भाषण सब गुणों की आधार-शिला है। भाषण में मधुरता के साथ ही सत्य का भी सम्मिश्रण होना चाहिए। मधुर और सत्य वचन ही बोलना चाहिए। ऐसे वचन को सूनृत कहते हैं। मधुर-भाषण से अपना भी मन प्रसन्न रहता है और दूसरे की आत्मा को भी सुख पहुँचता है। मृदु-भाषी सदा सुखी रहता है। अतः सदा मधुर वचन ही बोलने चाहिएँ।

(२२) अनुशासन-पालन

निर्धारित नियमों के पालन और अपने से बड़ों की आज्ञा के पालन को अनुशासन-पालन कहते हैं। अनुशासन पालन जीवन की सफलता की कुंजी है। अनुशासन-पालन का अभ्यास बाल्यकाल से ही करना चाहिए। अनुशासन या नियन्त्रण के पालन से ही मनुष्य का जीवन उच्च होता है। जो देश और समाज अनुशासन का पालन करता है, वही उन्नति को प्राप्त करता है। घर, विद्यालय, महाविद्यालय और समाज में सर्वत्र ही अनुशासन पालन की आवश्यकता है। जहाँ अनुशासन नहीं है, वहाँ अव्यवस्था का निवास होता है। अतः देश और समाज की उन्नति के लिए अनुशासन पालन अनिवार्य है।

(२३) धैर्य

विपत्ति के समय भी अपने मन को स्थिर रखना धैर्य कहलाता है। मन चचल है, अतः विपत्ति के समय वह और अधिक चचल हो उठता है। ससार मे मनुष्य को प्राय. सभी कार्यों मे विपत्तियो का सामना करना पडता है। जो मनुष्य कोई भी बडा काम करना चाहते है, उनमे धैर्य गुण का होना अनिवार्य है। धैर्य ही वह गुण है, जो विपत्ति मे मनुष्य को मार्ग दिखाता है। ससार मे जितने भी महापुरुष हुए है, उनमे धैर्य असाधारण कोटि का था। धैर्यवान् मनुष्य विपत्ति मे चचल नही होता है और शान्तिपूर्वक अपने कर्तव्य का निश्चय करता है। बडे से बडे विघ्न भी धीर के सामने नष्ट हो जाते है। जीवन की सफलता के लिए धैर्य को धारण करना अत्यावश्यक है। धीर मनुष्य ही जीवन के कठोर सग्राम मे विजयी होते है।

(२४) विद्यार्थी-जीवन

प्राचीन शास्त्रो के अनुसार जीवन को चार भागा म बॉटा गया है—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है, वही विद्यार्थी-जीवन का काल है। विद्यार्थी-जीवन जीवन की आधार-शिला है। मनुष्य अपने भावी जीवन के लिए इस काल मे ही ज्ञान, आचार-विचार, सयम, शील, सत्य तथा अन्य सभी गुणो का सग्रह करता है। यही समय है जब विद्यार्थी अपनी आध्यात्मिक, नैतिक, शारीरिक और मानसिक शक्तियो का विकास करता है। विद्यार्थी अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का जितनी सावधानी और तत्परता के साथ उपयोग करेगा, उतना ही वह महान् पुरुष होगा। विद्या और सद्गुणो के सग्रह का यही शुभ अवसर है। जो इस समय को हाथ से निकल जाने देते है, वे जीवन भर पछताते है।

(२५) प्रकृति-सौन्दर्य

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य का प्रकृति के साथ अटूट सबन्ध है। प्रकृति मनुष्य को जीवन-शक्ति प्रदान करती है। निराश, खिन्न और असहाय हृदय मे भी आशा का अपूर्व सचार करती है। एक ओर प्रकृति-नटी हमारे सुखसाधन के लिए नदी, वृक्ष, फूल और फलो का साज लेकर खडी है, दूसरी ओर विविध पशु और पक्षी अपने मनोरम काया से हमको सदा के लिए ऋणी बना रहे है। वाटिका मे फूलो और फलो का अनुपम सौन्दर्य किसके मन को मुग्ध नही करता है। सूर्योदय और सूर्यास्त की निराली छटा निर्जीव हृदय को भी सजीव बना देती है। रात्रि मे आकाश की अपूर्व छटा, चन्द्रोदय, शुभ्र ज्योत्स्ना, मुक्तासदृश हिमकण-पात, मन्द-स्मित करती हुई तारा-पक्ति किस सहृदय के हृदय को आवर्जित नही करती है। प्रकृति-सौन्दर्य सदा सुखद और मनोरम है।

(२६) शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक सत्प्रवृत्तियो को विकसित करती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य मे विवेकशक्ति आती है, जिसके द्वारा वह अपने कर्तव्य और अकर्तव्य को समुचित रूप से समझ पाता है। शिक्षा ही मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियो को दूर करके उसे मनुष्य बनाती है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—मनुष्य मे विवेकशक्ति को जाग्रत करना, उसके चरित्र को शुद्ध और पवित्र बनाना, उसकी बौद्धिक शक्ति का विकास करना, शारीरिक मानसिक और आत्मिक उन्नति करना, निकृष्ट स्वार्थभाव को नष्ट करके नि.स्वार्थभाव को जाग्रत करना और जीवन को सर्वप्रकारेण उन्नत करना। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति से ही मनुष्य की पूर्ण उन्नति होती है, अत. तीनो शक्तियो का विकास अनिवार्य है। वही शिक्षा श्रेयस्करी है, जो अर्थकरी हो, जिससे मनुष्य अपना जीवन-यापन सरलता से कर सके।

(२७) आत्म-संयम

आत्मसयम का अर्थ है, अपने मन और इन्द्रियो को विषयो से रोकना और अपनी इच्छाओ को वश मे रखना। मन ही सब इन्द्रियो का स्वामी है, वही अपनी इच्छा के अनुसार इन्द्रियो को चलाता है। अतएव आवश्यक है कि मन को विशेषरूप से वश मे किया जाए। शास्त्रो मे कहा गया है कि मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है। मन को वश मे रखने से मनुष्य की सदा उन्नति होती है और वह मोक्ष को प्राप्त करता है। यदि मनुष्य मन के वश मे रहता है तो वह सदा दु.खित रहता है और बन्धन मे पडता है। मन को इन साधनो से वश मे किया जा सकता है—विषयो से विरक्ति, नियम से रहना, आत्मचिन्तन, मन को सत्कार्य मे लगाना, सद्ग्रन्थो का अध्ययन और आस्तिकता। आत्मसयम से ही मनुष्य उन्नति कर सकता है, अन्यथा नही।

(२८) ईश्वर-भक्ति

ईश्वर सृष्टि का कर्ता धर्ता और सहर्ता है। वही जगत् का नियन्ता है। सभी धर्मा के अनुयायी किसी न किसी रूप मे उसके अस्तित्व को मानते है। मनुष्य-जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए ईश्वर भक्ति अत्यावश्यक और अनिवार्य है। ईश्वर-भक्ति का अर्थ है ईश्वर के प्रति अनुराग। ससार मे सबसे बडी वही शक्ति है। उसके चिन्तन से मनुष्य अपने अन्दर सभी उत्तम गुणो का समावेश करता है। ईश्वर सर्वव्यापक है, अतः वह किसी भी पाप-कर्म को नही करता। निष्काम-भाव से ही ईश्वर की भक्ति सर्वश्रेष्ठ है। ईश्वर-भक्ति के बिना मनुष्य-जीवन ऐसा ही है, जैसे बिना गन्ध का फूल। ईश्वर-भक्ति से सद्गुणो का विकास होता है। ससार के प्रायः सभी महापुरुषो ने ईश्वर-भक्ति को अपनाकर ही अपना जीवन उच्च बनाया है।